

श्रीस्था-		सामान्य केवलीओना स्वामी श्री महावीरप्रभुने नमस्कार करीने स्थानांग (ठाणांग ) खूत्रना केटलाएक पदोतुं, प्रायः	१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र		अन्य शास्रोवडे जेम जोवाएछं छे तेम ( अन्य शास्रों जोईने ), हुं कंईक विवरण-विवेचन करुं छुं.	ध्ययने
सानुवाद		शास्त्रप्रस्तावना.	शास्त्रप्रसा-
11 8 11		अहिं महान् राजानी जेम उत्कृष्ट आत्मिक इक्तिवडे दबाव्या छे पराक्रमवाला रागादि इात्रुओ जेणे, आज्ञानुं पालन करवामां	वना.
		चतुर एवा सेंकडो राजाओवडे हंमेशां सेवायेल छे चरणकमल जेना, समस्त पदार्थना समूहने प्रत्यक्ष करवामां दक्ष एवा	
İ		केवळज्ञान अने केवळदर्शनरूप श्रेष्ठ उपयोगवडे जाण्यो छें सर्व विषयग्राम( समूह )नो स्वभाव जेणे, समस्त त्रण सुवनमां	
	Se la companya de la comp	अतिशयवाळं छे साम्राज्य जेनुं, तथा संपूर्ण न्यायप्रवर्त्तक, इक्ष्वाकु कुलनी वृद्धि करनार, प्रसिद्ध एवा सिद्धार्थ राजाना पुत्र,	
		अमण भगवान श्रीमान् महावीर-वर्द्धमानस्वामीना अतिशय गंभीर अने महान् अर्थ छे जेने विषे एवा ( त्रिपदीरूप )	श्वास्त्रप्रस्ता- कि कि
	S.	उपदेशथी क्रुशल बुद्धचादि गुणना समूहरूप माणिक्यनी रोहणाचल भूमि समान, नियुक्त थयेल भंडारीनी माफक श्री	
	¥ <u>sun</u> ssyssyssyssyssyssyssyssyssyssyssyssyssy	रचायेल तथा अनेक प्रकारना अर्थरूप श्रेष्ठ रत्नो छे जेमां, वली देवता अधिष्ठित एवा ( महानिधान समान) ठाणांग सूत्रनो )	
		ज्ञान अने क्रियामां बलवान छतां य कोई पण (पूर्व) पुरुषवडे कंई पण कारणवद्यात् अप्रकाशित (व्याख्या न करावेल) अने ए	
		ज कारणथी केटलाक भवभीरुना ( कदाच अर्थनो अनर्थ थाय एवा भयथी ) विचारमां ( व्याख्या करवानुं ) नहिं आवेल एवा	
×		मोरा खनानामा आ मार्गांगमनाने (अन्योग आगानने काय ले) ये के नेग प्रकारण नायति का पति कर्ता एक रेजन	
3			

धृष्टतामां प्रधान एवा अने स्व-परना उपकारने माटे अर्थनी रचनाना अभिलापवाळा होवाथी ज नथी विचारेल पोतानी योग्यता जेणे तेमज जुगार आदि व्यसनोमां जोडायेलानी जेम ( एवा अमारावडे ) कुशल एवा प्राचीन पुरुषोना प्रयोगने अनुसरी, तेम ज कंइक पोतानी मतिवडे विचारीने तेमज तथारूप वर्तमानकालीन गीतार्थ पुरुषो पासेथी तेना उपायोने सारी रीते पूछीने विकासनी जेवो अनुयोग प्रारंभ कराय छे. ते अनुयोगनी फलादि द्वारना निरूपण करवाथी प्रवृत्ति थाय छे. यत उक्तम्— " क्षत्स्स फल्जेजोगैमंगँल-समुँदायत्था तहेव दॉराइं । तब्भेर्यानिरुँत्तिर्क्कम-पयोयणाइं च वच्चाइं ॥ १ ॥ " १. फल. अर्थशास्त्रना विषयमां बुद्धिमान् मनुष्योनी प्रवृत्ति माटे फल अवश्य कहेवुं जोईए, अन्यथा आ प्रंथनुं कंई प्रयोजन ( फल ) नथी एवी आशंका करनारा श्रोताओ कंटकशाखा( बावल )ना मर्दननी जेम प्रवृत्ति न करे. वळी ते फल वे प्रका- रास्त्रन र, र परंपर. ते बेमां अर्थनुं जाणवुं ते अनंतर फल छे, अने अर्थना जाणवापूर्वक अनुष्टानथी जे मोक्षनी प्राप्ति थाय ते परंपर फल कहेवाय छे. ( १ )	
रनुं छे-१ अनंतर, २ परंपर. ते बेमां अर्थनुं जाणवुं ते अनंतर फल छे, अने अर्थना जाणवापूर्वक अनुष्टानथी जे मोक्षनी प्राप्ति	

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ २ ॥	२. योग-संबंध. तथा योग एटले संबंध, ते जो उपाय उपेयरूप लहीए तो अनुयोग ए उपाय अने अर्थावंगमादि उपेय, तो ते संबंध प्रयो- जनना कथनथी ज कहेवायो छे, तेथी ' अवसर लक्षण ' अनुयोगनो संबंध कहेवा योग्य छे अर्थात् आ अनुयोगना दानमां ( देवामां ) कोण संबंध एटले अवसर छे ? अथवा अनुयोगनो देवामां कोण लायक छे ? तेमां अनुयोगना दानमां भच्य, मोक्ष- मार्गमां अभिलापावाळो, गुरुनां उपदेशमां निश्चल-स्थिर अने आठ वर्ष जेने दीक्षा लीधे थया होय एवा जे प्राणी ( साधु ) होय तेने ज स्रत्रथी ( मूलपाठर्था ) पण आपवा योग्य छे-ए आ अवसर छे अने योग्य पण ते ज छे. यत उक्तम्- तिवरस्तपरियागस्स उ, आयारपकप्पनाममज्झयणं। चउवारिसस्स य सम्मं, सूयगडं नाम अंगंति॥ १॥ दसकप्पटववहारा, संवच्छरपणगदिक्सियस्सेव । ठाणं समवाओऽवि य, अंगे ते अट्ट वासस्स ॥ २॥ अर्थत्रण वर्षना पर्यायवालाने तो आचार प्रकल्प नामनुं अध्ययन अर्थात् निशीथस्त्र, अने चार वर्षना पर्यायवालाने सारी रीते स्रयाडांग नामे स्रत्र, (२) पांच वर्षनी दीक्षावालाने ज दशाश्रुतस्कंघ, बृहद्कल्प अने व्यवहारसत्र, तेमज आठ वर्षनी दीक्षावालाने ठाणांग तथा समवायांग सत्रनी वाचना आपवा योग्य छे. (३) अन्यथा बीजी रीते आ सत्रनो अनुयोग देवामां आज्ञाभंग आदि दोष थवा पामे छे. <u>१</u> . अर्थनो बोध.	१ स्थाना- ध्ययने योगद्वार.	
--	--	----------------------------------	--

68	३. मंगल.	3.5
	तथा आ अनुयोग ( सत्र ) श्रेयभूत होवाथी विन्न थवानो संभव छते विन्नवडे हणायेल छे शक्ति जेओनी एवा शिष्यो,	
	एमां प्रदृत्तिं न करी शके ते हेतुथी विघनी शांति माटे मंगल करवुं उचित छे. उक्तं च—	
	बहुविग्घाइं सेयाइं, तेण कयमंगलोवयारेहिं। घेत्तव्वो सो सुमहा–निहिव्व जह वा महाविज्जा ॥४॥	
	र्श्वभ कार्यो घणा विघ्नोवाळा होय छे, ते कारणथी मंगलेपचार करीने ते उत्तम रत्न-निधान अथवा महाविद्यानी पेठे	
Sec.	ग्रहण करवा योग्य छे( ४)	
Ŵ	्वळी मंगळ कमशः शास्त्रनी शरूआतमां, मध्यमां अने अंतमां शास्तार्थनी विघरहित समाप्ति माटे, तेनी ज स्थिरता माटे	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	अने तेनी ज अविच्छित्र परंपरा माटे (आदि, मध्य अने अंत्य मंगल ) करवुं जोईए । तदुक्तं—	
	आदिमंगल	
	तं मंगलमाईए, मज्झे पज्जंतए य सत्थस्स । पढमं सत्थत्था-विग्घपारगमणाय निद्दिं ॥ ५ ॥	
	तस्सेव य थिजत्थं,मज्झिमयं अंतिमंपि तस्सेव। अव्वोच्छित्तिनिमित्तं, सिस्सपासिस्साइवंसस्स ॥ ६ ॥	
	आ बंने गाथाओनो भावार्थ उपर कहेल छे. तेमां आदि मंगल-'सुयं मे आउसं! तेणं भगवया' इत्यादि सत्र छे अथवा	
	आयुष्मता भगवता (आयुष्मान् भगवानवडे ) आ शब्द, भगवाननुं बहुमान गर्भमां होवाथी मंगलरूप छे. अर्थात् नंदी अने	
		े हुए १

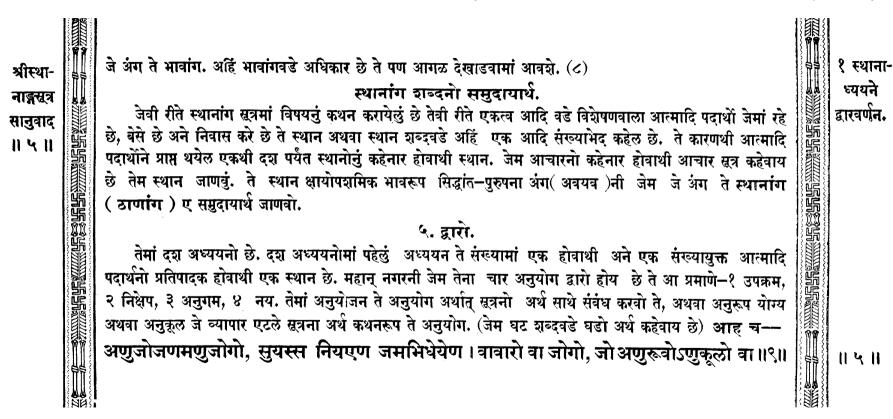
For Private and Personal Use Only

શ્રીસ્થા-		भगवत्वहुमानने विषे मंगलपणुं छे. मंग्यते एटले जेनावडे वांछित प्राप्त कराय ते. अहिं मंगल शब्दना अर्थनो घटमान होवाथी आदि मंगल जाणवुं.	१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र		દાવાયા આવ મપછ આપેલું.   મધ્યમંगਲ	ध्ययने
सानुवाद्		पांचमा अध्ययननुं पहेलुं सूत्र-' पंच महव्वए ' इत्यादि-क्षायिकादि भावपणाने लईने महाव्रतोनुं मंगलपणुं होवाथी,	📲 मंगलद्वार-
11311	i i i i i i i i i i i i i i i i i i i	क्षायिकादि भाव मंगलरूप छे. यदुक्तं-' नोआगमओ भावो सुविसुद्धो खाइयाइओ '-नोआगमथी क्षायिकादि सुवि-	व्ययन मंगलद्वार- त्रणन.
		शुद्ध भाव मंगलरूप छे, अथवा छठा अध्ययननुं आदि सत्र ' छहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहई गणं धारत्तए '	
	ŝ	इत्यादि वचनथी अणगारने। पंचपरमेष्ठिमां समावेश करवावडे मंगलपणुं होवाथी अथवा सूत्रमां कहेल गणधरस्थानोने	
		क्षायांपश्चामिकादि भाव विशिष्टपणाएं मगलरूप होवाथ। आ मध्य मगल जाणवु.	
	ŝ	अंत्यमंगल	
		छेल्छं मंगल तो दशमा अध्ययनुनुं अत्य सत्र-' दुसगुणलुक्खा पोग्गलूा अणंता पण्णत्ते.' अहिं अनंत शब्द,	
		'वृद्धि' शब्दनी जेम मंगलरूप होवाथी अंत्य मंगल जाणवुं. अथवा सर्व शास्त्र ज निर्ज्जराना कारणभूत होवाथी तपनी जेम मंगलरूप	
		छे. मंगलरूप शासनुं पण जे मंगलनुं कथन करेल छे ते शिष्योनी बुद्धिमां मंगलत्वनुं ग्रहण करवा माटे. मंगलपणे ग्रहण करेलुं	
		द्यास्त्र मंगल होय-जेम साधु ( साधु मंगलरूप छे तथापि मंगलनी बुद्धिए ग्रहण करवाथी मंगलरूप थाय छे ), अहिं एटलुं	
		कथन बस छे. जेम शास्नोचुं मंगलादि निरूपण करेल छे तेम तेना अनुयोगनुं पण जाणवुं, कारण शास्ननुं अने अनुयोगनुं	
		कथांचित् अभेदपणुं होय छे.	

८. समुदायार्थ. फल (प्रयोजन), योग अने मंगल ए त्रण द्वारोठुं कथन करवा पछी हवे समुदायार्थनो विचार कराय छे. त्यां स्थानांग ए बास्तुर्गुं नाम छे. यथार्थादि भेदथी नाम त्रण प्रकारना छे. तेआ प्रमाणे-१ यथार्थ, २ अयथार्थ, ३ अर्थज्ञत्य. तेमां यथार्थ नाम ते प्रदीप, घट विगेरे, अययार्थ नाम ते पलाज ( खाखरो ) वगेरे अने अर्थज्ञत्य ते व्युत्पत्ति अर्थ रहित डित्थादि. ते त्रणमां ज समुदायार्थनी परिसमाप्ति होवाथी ग्रास्त नाम यथार्थ छे. जे कारणधी एम ज छे ते ज कारणथी तेतुं निरूपण कराय छे. 'स्थान ' अने 'अंग ' ए वे पद निक्षेप करवा योग्य छे. तेमां स्थान ग्रब्द नाम, स्थापनादि भेदथी पंदर प्रकारचुं कह्युं छे. नौमंठवणादविएँखेर्त्तेऽध्धां उड्वँ उवरँती वर्स्ति । संजैमपग्गहैंजोहे,'' अचलेर्ठेगणेणासंधर्णीामावे <sup>94</sup> ॥ ७॥ १. तेमां स्थान एवं जे नाम ते नामस्थान, जे सचेतन अथवा अचेतन वस्तुनुं स्थान एत्रुं नाम कराय छे, ते वस्तुनामवडे स्थान एटले नामस्थान कहेवाय छे. २. तेमज स्थापाय छे ते स्थापना प्रैक्षदि, ते स्थानना आग्रयवडे जे स्थपायेल ते स्थान कहेवाय छे. तेथी स्थापना ए ज स्थान ते स्थापना स्थान. ३. द्रव्य-सचित्त, अचित्त अने मिश्र भेदरूप छे. ते गुणपर्यायनो १. चंदनक (एक इांखनी जात) वगेरे जे स्थापनाचार्थ तरीके स्थपाय छे.	
---	--

श्रीस्था- नाङ्गस्तत्र सानुवाद् ॥ ४ ॥	आश्रय होवाथी स्थान ते द्रव्य स्थान. ते कारणथी कर्मधारय छे. ४. क्षेत्र-आकाश, द्रव्योनो आश्रय होवाथी क्षेत्र एवुं जे स्थान ते क्षेत्रस्थान. ५. अध्या-काल ते ज स्थान, ते वे प्रकारनो छे. १ भर्वस्थिति ते भावकाल अने २ कार्यस्थिति ते कायकाल, स्थिति ए ज स्थान. ६. ऊर्ध्वपणाए जे पुरुषनुं स्थान ते ऊर्ध्वस्थान-कायोत्सर्ग. अहिं स्थान श्रब्द क्रियावचन छे एवी रीते ऊर्ध्व शब्दना उपलक्षणथी बेसवुं, स्रवुं वगेरे पण स्थान जाणवुं. ७. उपरति-विरति, विविध गुणोनो आश्रय होवाथी विरति ज स्थान छे अथवा अहिं स्थान श्रब्द विशेषार्थमां छे. तेथी विरतिनो जे विशेष ते विरतिस्थान ते देशविरति अने सर्वविरतिरूप छे तेम. ८. वसति-स्थान कहेवाय छे. जेमां स्थिर थवाय छे ते स्थान. ९. संयमनुं स्थान ते संयमस्थान. अहिं स्थान शब्द भेद अर्थवालो छे. संयम-शुद्धिनी वृद्धि अने हानिथी थयेल विशेषभेदरूप (असंख्यात) संयम स्थान. १०. प्रगह-आदेयवचन होवाथी जेनुं वचन मान्य थाय ते नायक. ते वे प्रकारना छे-१ लौकिक अने २ लोकोत्तर. तेमां लौकिक राजा, युवराज, महत्तर (श्रेष्ठ पुरुष), प्रधान अने कुमाररूप छे अने लोकोत्तर आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर अने गणावच्छेदकरूप छे. तेनुं जे स्थान ते प्रग- हस्थान. ११. योधाओतुं स्थान-१ आलीढ, २ प्रत्यालिढ, ३ वैश्वाख, ४ मंडल अने ५ समपादरूप शरीरनु विशेष न्यासरूप योध-	१ स्थाना- ध्ययने स्थानोउं स्वरूप.
E.	संयम—ग्रुद्धिनी दृद्धि अने हानिथी थयेल विशेषभेदरूप ( असंख्यात ) संयम स्थान. १०. प्रगह—आदेयवचन होवाथी जेनुं वचन मान्य थाय ते नायक. ते बे प्रकारना छे—१ लौकिक अने २ लोकोत्तर. तेमां लौकिक राजा, युवराज, महत्तर (श्रेष्ठ पुरुष), प्रधान अने कुमाररूप छे अने लोकोत्तर आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर अने गणावच्छेदकरूप छे. तेनुं जे स्थान ते प्रग- हस्थान. ११. योधाओनुं स्थान—१ आलीढ, २ प्रत्यालीढ, ३ वैद्याख, ४ मंडल अने ५ समपादरूप शरीरनुं विशेष न्यासरूप योध स्थान. १२. योधाओनुं स्थान—१ आलीढ, २ प्रत्यालीढ, ३ वैद्याख, ४ मंडल अने ५ समपादरूप शरीरनुं विशेष न्यासरूप योध स्थान. १२. अचलत्व लक्षणवालो जे धर्म ते सादि सपर्यवसित ( अंत सहित ) इत्यादि चतुर्भगरूप छे, तेनुं जे स्थान ते अचलता १. भवस्थिति ते मनुष्यादि भवना आयुष्यनो स्थिति सुधो रहेवुं ते. २. मनुष्यादिना शरीरमांधी मरीने पुनः ते न कायमां उत्पन्न थवुं ते कायस्थिति. जेम मनुष्यनी कायस्थिति उत्कट्यी त्रण पच्योपम ने कोडपूर्व पृथकृत्व होय छे.	

स्थान. १३. गणना-एक वेथी लड्ने इीर्षप्रहेलिका पर्यंत जे गणित ते गणना स्थान. १४. संधान-ट्रव्यथी कटका करायेल कांचळी वगेरेनुं जे जोडाण ते छिन्नद्रव्यसंधान अने रुनी पुंणीथी उत्पद्यमान तंतु ( तांतणा ) आदिनुं जोडाण ते अच्छिन्नद्रव्यसंधान. भावथी तो १. प्रयसत्च्छिन्नभावसंधान-ते अप्रशस्तभावमां जइने करीथी प्रशस्तभावनुं जे जोडाण ( प्रसन्नचंद्र राजर्भिनी जेम ) ते अने २. अप्रशस्तच्छिन्नभावसंधान-ते औदयिक भावथी चडीने औपशमिकादि भावमां आवीने पुनः औदयिक भावमां जन्नुं ते हवे ३. अच्छिन्नप्रश्नस्तभावसंधान-ते प्रशस्त भावमां क्षपकादिनी माफक ( भरत महाराजानी जेम ) आगळ ( उपर ) चडता जन्नुं. ४. अप्र्रिज्जन्नप्रशस्तभावसंधान-अप्रशस्तभावमां नीचे छेक ऊतरतां जन्रुं ते. उपशमश्रेणिथी पडतां मिथ्यात्व पर्यंत जनारा विगेरे ते (उपरोक्त) प्रशस्तादि भावनुं जे संधान ते ज स्थान, वस्तुनुं एकत्रितपणे जे अवस्थान ते संधान स्थान. १५. भावस्थान-औदयिकादि भावोनुं स्थान एटले अवस्थिति रहेवुं ते भावस्थान. एवी रीते आईं स्थान शब्द अनेकार्थ छे. प्रस्तुत विषयमां वसतिस्थान अने गणनास्थानवडे अधिकार छे ते बताववामां आवशे. (७) हवे अंग शब्दनो निश्चिप कहेवाय छे. तन्त्र गाथा— नामंगं ठवणंगं, द्व्वंगं चेव होइ भावंगं । एसो खलु अंगस्सा, निक्खेवो चउव्विहो होइ ॥ ८ ॥ तेमां नाम अने स्थापना प्रसिद्ध छे, मद्य औषधादि द्रव्यनुं अंग कारण अथवा अवयव ते द्रव्यांग, क्ष्रेपश्नमादि भावनुं १. प्रशतच्छित्रभावसंगनादि चार भेरनुं वर्णन टीकामां संक्षेत्र होवाणी आचारांगनी टीकाथो स्पष्टोकरण करेल् छे.	



<u></u>	आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. अथवा अर्थनी अपेक्षाए (अनंत अर्थ होवाथी) सत्र लघु ( थोड़ छे ) माटे अणु कहेवाय छे अने तीर्थंकरोक्त त्रिपदीरूप अर्थ सांभळीने पछी गणधरो सत्र रचे छे तेथी अनु ( एटले पाछळ छे ) ए बंने विदेषणं: योग शब्दने आपेल छे. अनु शब्दना वाच्य जे सत्र तेनो विपय साथे संबंध ते अणुयोग अथवा अनुयोग कहेवाय छे. आह च- अहवा जमस्थओ, थोवपच्छभावेहि सुयमणुं तस्स । अभिधेये वावारो, जोगो तेणं व संबंधो ॥ १०॥ आ ( भाष्यनी ) गाथानें भावार्थ उपर कहेल छे तेना दरवाजाओनी जेम द्वारो-ज्यांथी जड़-आवी शकाय ते-एक स्थानक अध्ययनरूप नगरना अर्थ जाणवाना उपायरूप उपकमादि चार द्वारो जाणवा. दरवाजा वगरनुं नगर ते अनगर ज होय छे. जो एक दरवाजो होय तो दुःखे प्रवेश करी शकाय अने कार्यनी हानि माटे ते थवा पामे छे, परंतु चार दरवाजा होय तो गमे ते दरवाजो अनुकूळ थाय अने कार्यनी सिद्धि माटे थवा पामे छे. एवी रीते एक स्थानक अध्ययनरूप नगर पण अर्थाधिगम्ना उपायरूप द्वारोवडे रहित होय तो अर्थनुं जाणां अश्वक्य थाय छे. ६. तद्भेदद्वार. एक दारवार्छ शास्त पण दुःखे जाणी शकाय छे अने विशेष भेद सहित चार द्वारवार्छ होय तो अर्थ सुखे जाणी शकाय छे. ७. निरूत्तिद्वार. अ कारणथी द्वारनो उपन्यास फलवालो छे. ते उपक्रमादि द्वारोह द्वारा क्रमशः वे, त्रण, वे अने वे भेद थाय छे. 'निरू-	

श्रीस्था-	🕴 क्तिस्तु'-व्युत्पत्ति तो आ प्रमाणे छे-'उपऋमणं' उपक्रम ए(१) भाव साघन छे. शास्त्रने न्यास देश (जे स्थाने लाववुं छे ते )	१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र	स्थाने नजिकमां लाववुं. जे द्वारा गुरुना वचनयोगथी उपक्रम कराय छे ते (२) करण साधन, शिष्यनो श्रवण भाव छते जेमां	ध्ययने क्रमद्वार- वर्णन.
सानुवाद	📲 उपक्रम कराय छे ते (३) अधिकरण साधन, आर्था उपक्रम कराय छे अथवा विनीत शिष्यना विनयथी उपक्रम कराय छे ते	ाः कमद्वार-
11 & 11	स्थाने नजिकमां लाववुं. जे द्वारा गुरुना वचनयोगथी उपक्रम कराय छे ते (२) करण साधन, शिष्यनो श्रवण भाव छते जेमां उपक्रम कराय छे ते (३) अधिकरण साधन, आधी उपक्रम कराय छे अथवा विनीत शिष्यना विनयथी उपक्रम कराय छे ते (४) अपादान साधन. एवी रीते 'निक्षेपणं निक्षिप्यते वाऽनेनास्मिन्नस्मादिति वा निक्षेपो न्यासः ' निक्षेपण ते निक्षेप, जेवडे, जेमां, अने जेनाथी निक्षेप करायेल छे ते निक्षेपना न्यास अने स्थापना ए पर्यायनाम छे. एम ज अनुगमनमनुगम् १ इत्यादि जेवडे, जे छते अने जेथी सत्रना न्यासने अनुकूल व्याख्या करवी ते अनुगम. एम ज नयनं नय इत्यादि वस्तुनुं जाणवुं ते नय, अथवा जेवडे जे छते अने जेथी वस्तु जणाय ते नय, अनंत धर्मात्मक वस्तुना एक अंग्रनुं जे ज्ञान ते नय कहेवाय छे. आ उपक्रमादि द्वारोनो आवी रीते क्रम करवामां शुं प्रयोजन छे ? ते कहेवाय छे. ८. कमद्वार. जे उपक्रम रहित छे ते समीपभूत् नथी, जे समीपभूत नथी तेनो निक्षेप नथी करातो, जे नामादिवडे निक्षेप नथी करायेल ते अर्थथी अनुगम करातो नथी, जे अर्थथी नथी जाणेल ते नयोथी विचारातुं नथी. एवी रीते एक ज क्रम छे. उक्त च-	वर्णन.
	🔋 जेवडे, जेमां, अने जेनाथी निक्षेप करायेल छे ते निक्षेपना न्यास अने स्थापना ए पर्यायनाम छे. एम ज अनुगमनमनुगम्	
	🚆 १ इत्यादि जेवडे, जे छते अने जेथी सत्रना न्यासने अनुक्रूल व्याख्या करवी ते अनुगम. एम ज नयनं नय इत्यादि वस्तुनुं	
	📆 जाणवुं ते नय, अथवा जेवडे जे छते अने जेथी वस्तु जणाय ते नय, अनंत धर्मात्मक वस्तुना एक अंशनुं जे ज्ञान ते नय	
5	📲 कहेवाय छे. आ उपकमादि द्वारोनो आवी रीते कम करवामां छं प्रयोजन छे ? ते कहेवाय छे.	
	८. जमद्वार.	
	📲 ्रे उपक्रम रहित छे ते समीपभूत् नथी, जे समीपभूत नथी तेनो निक्षेप नथी करातो, जे नामादिवडे निक्षेप नथी करायेल	
	ते अर्थथी अनुगम करातो नथी, जे अर्थथी नथी जाणेल ते नयाथी विचारातुं नथी. एवी रीते एक ज कम छे. उक्तं च-	
	दारकमोऽयमेव उ, निक्लिप्पइ जेण नासमीवत्थं ।	
	अणुगम्मइ नानत्थं, नाणुगमो नयमयविहुणो ॥ ११ ॥	
Č.		

	आ ( माष्य ) गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. ए प्रमाणे ते फलादिक द्वारो कहेवाया, हवे अनुयोगद्वारना भेद कथनपूर्वक ए ज अध्ययन विचाराय छे. त्यां उपक्रम वे प्रकारनो छे: १ लौकिक अने २ शास्त्रीय. त्यां १ नाम, २ स्थापना, ३ ट्रच्य, ७ क्षेत्र, ५ काल अने ६ भाव भेदथी लौकिक छ प्रकारनो छे. तेमां नाम अने स्थापना सुगम छे. ट्रच्योपक्रम वे प्रकारनो छे: १ परिकर्म ने २ विनाशउपक्रम. सचेतन, अचेतन अने मिश्र अथवा द्विपद, चतुष्पद अने अपद( इक्षादि )रूप जे ट्रच्यनुं गुणांतर गुणविशेषनुं उत्पादन ते परिकर्म, अने ट्रच्यनो नाश ते विनाश [ जेम घृत, रसायण वगेरेना प्रयोगथी मनुष्य बलवान थवा पामे छे ते परिकर्म अने तलवार वगेरेथी नाश कराय छे ते विनाश ]. एम ज क्षेत्र–शालिक्षेत्रादिनो हल वगेरे खेडवाथी परिकर्म अने हाथी वगेरे बांधवाथी नाश पामे छे ते विनाश, अज्ञात स्वरूप कालने नाडिकादि श्रंछनी छाया अथवा घटिका वगेरेथी जाणवुं ते परिकर्म अने [ नक्षत्रादिनी गतिवडे काल जे अनिष्ट फलदायक थाय छे ते काल विनाश एटले विपर्यास ], न जणायेल गुरु प्रमुखना चित्तने इंगितआकारादिवडे जाणवुं ते भाव परिकर्म (उपक्रम ). शास्त संबंधी उपक्रमो ६ प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–१ आनुपूर्वी, २ नाम, ३ प्रमाण, ४ वक्तव्यता, ५ अर्थाधिकार अने ६ समवतार.	
	खेडवाथी परिकर्म अने हाथी वगेरे बांधवाथी नाश पामे छे ते विनाश, अज्ञात स्वरूप कालने नाडिकादि रंाकुनी छाया अथवा घटिका वगेरेथी जाणवुं ते परिकर्म अने [ नक्षत्रादिनी गतिवडे काल जे अनिष्ट फलदायक थाय छे ते काल विनाश	S.S.I.S.
Shur all and a second		
	बीजे' स्थळे आनुपूर्वी दरा प्रकारे कहेल छे, तेमां उत्कीर्त्तन अने गणनाअनुपूर्वीमां आ अध्ययननो समवतार थाय छे. १. महाभाष्यनी टीकामां दरा प्रकारनो कहेल छे ते आ प्रमाणे-१ नाम, २ स्थापना, ३ द्रव्य, ४ क्षेत्र, ५ काल, ६ गणना,	
	७ उत्कीर्त्तन, ८ संस्थान, ९ सामाचारी अने १० भावानुपूर्वी । २	

श्रीस्था-	उत्कीर्त्तन ते एक स्थान अध्ययन, द्विस्थान अध्ययन अने त्रिस्थान अध्ययन इत्यादि गणन, ते केवल संख्या एक, बे, त्रण	१ स्थाना-
नाङ्गस्त्र 🐰	इत्यादि ते गणना अनुपूर्वी त्रण प्रकारनी छे-१ पूर्वानुपूर्वी, २ पश्चानुपूर्वी, ३ अनानुपूर्वी. पूर्वानुपूर्वीवडे विद्यमान प्रथम	ध्ययने
सानुवाद	अध्ययन कहेवाय छे, पश्चानुपूर्वावडे दग्नमुं अध्ययन अने अनानुपूर्वीवडे आनियत छे.	उपऋम-
រេ ១ រេ ទែ	२. नामकथन.	वर्णन.
	्रतेमज नाम दश प्रकारे छे. एक नाम, दिनाम इत्यादि दश नाम पर्यंत. तेमां छ नाममां आ अध्ययननो अवतार थाय छे.	
	तेमां पण क्षायोपशमिक-भावमां समग्रश्रुत क्षायोपशमिक भावरूप होवाथी कह्युं छे के	
	छव्विहनामे भावे, खओवसमिए सुयं समोयरति। जं सुयणाणावरण–क्खओवसमजं तयं सब्वं ॥१२॥	
	[ अनुयोग द्वार सत्रमां ] छ प्रकारना नामोमां औदयिकादिक छ भावो कहेला छे. तेमांनां क्षायोपज्ञमिक भावमां सर्व	
	अतनो समवतार थाय छे. कारण १ श्रुतज्ञानावरण कर्मना क्षयोपञ्चमथी सर्व श्रुत उत्पन्न थाय छे.	
	३. प्रमाणकथन.	
	तथा द्रच्यादि भेदथी प्रमाण चार प्रकारे छे, तेमां आ अध्ययन, क्षायोपञमिक भावरूप होवाथी, भाव प्रमाणमां अवतरे	
	छे. यत् आह—	
	द्व्वादि चउब्भेयं, पमीयते जेण तं पमाणंति। इणमज्झयणं भावोात्ते, भावमाणे समोयरति॥ १३॥	

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ८ ॥	अने लोकोत्तररूप वे भेदमां परम गुरुए रचित होवाथी सत्र, अर्थ अने उभयात्मक त्रण प्रकाररूप लोकोत्तर आगममां आनो समवतार थाय छे. तथा चाह— जीवाणण्णत्तणओ, जीवगुणे बोहभावओ णाणे । लोगुत्तरसुत्तत्थो—भयागमे तस्स भावाओ ॥ १५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. लोकोत्तर आगम पण आत्मागम, अनंतरागम अने परंपरागमना भेदथी त्रण प्रकारे छे. तेमां अर्थथी तीर्थकरो, गणधरो अने तेना शिष्योनी अपेक्षाए अने सत्रथी गणधरो, तेना शिष्यो अने शिष्योना शिष्योनी अपेक्षा करीने क्रमशः आत्मागम, अनंतरागम अने परंपरागमने विषे आ अध्ययननो अवतार थाय छे. संख्याप्रमाण अन्यन्न ( अनुयोग द्वारमां ) विस्तृत कहेल् छे तेमां आ अध्ययननो परिमाण (सातमी) संख्यामां अवतार थाय छे. तेमां पण कालिक- अत अने दष्टिवादश्रुत परिमाणरूप वे प्रकारमां ए कालिकश्रुत होवाथी कालिकश्रुत परिमाण संख्यामां अने तेमां पण शब्दनी अपेक्षाए संख्यात अक्षर, पदादि स्वरूपवडे संख्यातपरिमाणमां अवतरे छे तथा पर्यायनी अपेक्षाए आगम अनंतराम पर्या- यरूप होवार्थी अनंतपरिमाणात्मक संख्यामां अवतरे छे. तेमज कर्धु छे के-'अणंना गमा अणंना पज्जवा' इत्यादि. ४. वक्तच्यता.	ध्य अम्मिक्सि उप	थाना ायने कम र्गन.
	वक्तव्यता १ स्वसमय, २ परसमय अने ३ स्वपरसमयना भेदथी त्रण प्रकारनी छे. तेमां आ अध्ययन स्वसमय वक्तच्य-		

\* १.नाम, २ स्थापना, ३ द्रव्य, ४ क्षेत्र, ९ काल, ६ उपमा, ७ परिनाण अने ८ भाव ए आठ प्रकारे संख्याप्रमाण कहेल छे.

##

तामां ज अवतरे छे. कारण १ सर्व अध्ययनो स्वसमयरूप होवाथी. भाष्यकारे कह्युं छे के— परसमओ उभयं वा, सम्मद्दिद्विस्स समओ जेणं। ता सव्वज्झयणाइं, ससमयवत्तव्वनिययाइं ॥१६॥ परसमय अने उभय( स्वरर) समय, ते सम्यण्द्रिटेने स्वसमय ज छे, कारण के ते सम्यग्द्रि तेनो यथार्थ विषय– विभाग करे छे. जो के केटलाएक अध्ययनोमां परसमय अने उभयसमयनी वक्तव्यता संभळाय छे, तो एण सम्यग्द्रिए प्रहण करेल होवाथी सर्व अध्ययनो स्वसमय वक्तव्यतामां नियत छे. तथा अर्थाधिकार वक्तव्यता विश्वेष ज छे, ते एकत्व विशिष्ट आत्मादि पदार्थना कथन लक्षणरूप छे. प्रत्येक द्वारमां अंगीकृत अध्ययन समवतार लक्षणरूप छे ते लाघव माटे अनुप्रीं आदि द्वारोमां वर्णन करेल होवाथी पुनः आई कहेता नथी. वळी पण कर्यु छे के— अहुणा य समोयारो, जेण समोयारियं पइद्दारं। एगट्ठाणमणुगओ, सो लाघवओ ण पुण वच्चो ॥१९०॥ आ गाथानो भावार्थ उपरोक्त छे. १ ओधनिष्पन्न, २ नामनिष्पन्न, ३ खत्रालापकनिष्पन्न भेदथी त्रण प्रकारे निक्षेप कराय छे. कर्यु छे के— भण्णइ घेप्पइ य सुद्दं, निक्खेवपयाणुसारओ सत्त्थं। ओहो नामं सुत्तं, निखेत्तव्वं तओऽवस्सं ॥१८॥ निक्षेप पदना अनुसारथी अध्ययन वा उद्शक सुावर्ध्वक भणाय छे अने ब्रहण कराय छे, ते कारणथी १ ओघ, २ नाम अने ३ खत्रालाकनिष्पन्न आ त्रणे अवश्य निक्षेप करवा योग्य छे. तेमां आंघनुं सरूप नीचे प्रमाणे छे—
---

MENI-			
श्रीस्था-	\$ <b>T</b> T }	१. ओघ.	१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र		ओहो जं सामन्नं, सुयाभिहाणं चउव्विहं तं च। अज्झयणं अज्झीणं, आओ झवणा य पत्तेयं ॥१९॥ 📗	ध्ययने
सानुवाद		१. ओघ. ओहो जं सामन्नं, सुयाभिहाणं चउव्विहं तं च। अज्झयणं अज्झीणं, आओ झवणा य पत्तेयं ॥१९॥ नामाइ चउब्भेयं, वन्नेऊणं सुआणुसारेणं। एगट्ठाणं जोड्झं, चउसुंपि कमेण भावेसुं ॥२०॥ (युग्मं) श्रुततुं जे सामान्य नाम तेने ओघ कहेवाय छे. ते चार प्रकारे छे-१ अध्ययन, २ अक्षीण, ३ आय अने ४ क्षपणा. ते प्रत्येक अध्ययनादितुं श्रुतानुसारे नामादिक चार प्रकारे वर्णन करीने क्रमश्चः तेओना भाव निक्षेपामां एक स्थाननी योजना करवी. त्यां अध्यात्म मन ते ग्रुभ मनने विषे गमन थत्रुं अर्थात् जेथी आत्मानुं गमन थाय छे अने जेथी अध्यात्म शब्दवाच्य जे शुभ मन तेनुं आत्माने विषे लई आववुं थाय छे अर्थवा बोध, संयम अने मोक्ष ए त्रणनी जेथी अधिक प्राप्ति श्राय छे ते अध्ययन जाणनुं. प्राक्रुत* शैलीवडे अज्झयण कहेवाय छे. भाष्यकारे आ संबंधमां कह्युं छे के जेण सुहृष्पज्झयणं, अज्झप्पाणयणमहियमयणं वा। बोहस्स संजमस्स व, मोवस्वस्स व तो तमज्झयणं॥२९ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. भणाय, विशेषपणे स्मरण कराय अने जणाय ते अध्ययन छे तथा निरंतर आपवा छतां पण जे क्षीण न थाय ( अथवा अव्युच्छित्तिनयथी आ लोकनी माफक कदी पण क्षीण न थाय ) ते अक्षीण, ज्ञाना- दिकना लाभनो हेतु होवार्थी आय, पापकर्मोना नाञनो हेतु होवार्थी क्षपणा कहेवाय छे. कहां छे के	उपक्रम-
11 8 11		अतुतुं जे सामान्य नाम तेने ओघ कहेवाय छे. ते चार प्रकारे छे-१ अध्ययन, २ अक्षीण, ३ आय अने ४ क्षपणा. ते	वर्णन.
		प्रत्येक अध्ययनादिनं श्रतानुसारे नामादिक चार श्रकारे वर्णन करीने कुमुशः तेओना भाव निक्षेपामां एक स्थाननी योजना	
		करवी त्यां अध्यात्म मन ते काभ मनने विषे गमन शवं अर्थात जेथी आत्मानं गमन शाय के अने जेशी अध्यात्म	
	SS:		
		िशब्दवाच्य ज रेंग मन तनु आत्मान विषे लेड् आवेषु याय छ अथुंबा बांध, संयम अन माक्ष ए त्रणना जथा आधक प्राप्त हिल्ल	
		थाय छे ते अध्ययन जाणवुं. प्राकृत* शैलीवर्ड अज्झयण कहेवाय छे. भाष्यकारे आ संबंधमां कह्युं छे के—–	
		े जेण सुहप्पज्झयणं, अज्झप्पाणयणमहियमयणं वा। बोहरस संजमस्स व, मोवखस्स व तो तमज्झयणं॥२१	
	5	आ गाथाने। भावार्थ उपर कहेल छे. भणाय, विशेषपणे स्मरण कराय अने जणाय ते अध्ययन छे तथा निरंतर आपवा	1
		छतां पण जे क्षीण न थाय ( अथवा अव्युच्छित्तिनयथी आ लेकनी माफक कदी पण क्षीण न थाय ) ते अक्षीण. ज्ञाना-	
		दिकना लाभनो हेतु होवाथी आय, पापकर्मीना नाजनो हेतु होवाथी क्षपणा कहेवाय छे. कहां छे के	
		* मल अउझप्पाणयण शब्द छे परंत प्राकृत शैलीघी प्या अने णनारनो लोप घवाशी अज्जयणं शाय छे.	

अज्झीणं दिउजंतं, अव्वोध्छित्तिनयतो अलोगोव्व । आओ नाणाईणं, झवणा पावाण खवणंति (कम्माणं) भावार्थ उपर ग्रुडब छे. नाम निष्पन्न निक्षेपामां तो आ अध्ययनचुं एक स्थानक एवुं नाम छे ते माटे एक शब्द अने स्थान शब्दनो निक्षेप कहेवा योग्य छे. तेमां एक शब्द नामादि सात प्रकारनो छे. तदुक्तं— २. नाम. नौमं ठैवणा दैविए, माउयपॅय संगहेकॅए चेव । पर्ज्जंव भाँवे य तहा, सत्तेते एक्कगा होति ॥ २३ ॥ तेमां १ जेचुं 'एक' एवुं नाम होय ते नाम एक, २ पुस्तकादिने विपे स्थापन करेल एकेक अंक ते स्थापना एक, ३ द्रव्य एक ते निसचित, अचित्त अने मिश्र भेदरूप त्रण प्रकार छे. ४ मातृकापद एक तो १ उप्पन्नेइ वा २ विगमेइ वा ५ धुवेइ वा-ए मातानी माफक सकल शास्तना मूलभूत होवाथी अवस्थित त्रिपदमांथी केई पण एक विवक्षित पर, अथवा अकारादि अक्षरात्मक मातृकामांथी कोई पण अकारादि एक अक्षर ते मातृकापद एक, ५ संग्रह एक एटले एक शब्दना उचारवडे पण वणा अर्थनो संग्रह कराय छे. जेम जातिना प्राधान्यवडे वीहि अर्थात् वीहि शब्दथी अनेक जातना चोखानो संग्रह थाय छे ते संग्रह एक, ६ पर्याय एक-घट द्रव्यना शिविकादि एक पर्यायरूप, ७ भाव एक-औदयिकादि छ भावमांथी कोई पण एक मावरूप, संख्या अहिं माव एकवडे अधिकार छे जेथी गणना लक्षण विधिष्ट स्थान विपय आ एक छे. वली गणना ते संख्या, संख्या + सचित द्रव्य ते पुरुष, अचित्त द्रव्य ते रूपीओ अने मिश्र द्रव्य ते आभूषणयुक्त पुरुष इत्याहि.	
+ सचित द्रव्य ते पुरुष, अचित्त द्रव्य ते रूपोओ अने मिश्र द्रव्य ते आभूषणयुक्त पुरुष इत्यादि.	

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद् ॥ १० ॥	ते गुण अने गुण ते भाव, स्थान शब्दनो निक्षप तो प्रथम ज कहेल छे तेमां गणना स्थानवडे अहिं अधिकार छे; तेथी एक लक्षण जे स्थान संख्याभेदरूप एक स्थान, अने एक स्थान विशिष्ट जीवादि अर्थना प्रतिपादनमां समर्थरूप अध्ययन पण एक स्थान छे. ओधनिष्पन्न अने नामनिष्पन्न ए बंने निक्षेप कहेवाया. ३. सूचालापक. हवे सत्रालापक निक्षेप कहेवानो समय आवेल छे तेषुं स्वरूप आ प्रमाणे-श्रुतं मे आयुष्मन ! इत्यादि सत्रपदोनो निक्षेप, नामादिष्ठुं स्थापन ते कहेवानो समय आवेल छे तेषुं स्वरूप आ प्रमाणे-श्रुतं मे आयुष्मन ! इत्यादि सत्रपदोनो निक्षेप, नामादिष्ठुं स्थापन ते कहेवानो समय प्राप्त छे पण ते कहेता नथी. कारण ? सत्र छते तेनो संभव छे. सत्र तो सत्रानुगममां छे अने ते अनुगमनो ज भेद छे, माटे पहेलां अनुगम ज वर्णवाय छे. अनुगम वे प्रकारनो छे ? निर्युक्तिअनुगम अने २ सूत्रानुगम. तेमां निर्युक्ति अनुगम १ निक्षेपनिर्युक्ति, २ उपोद्धातनिर्युक्ति अने ३ सत्रस्पर्शिकनिर्युक्तिना भेदथी त्रण प्रकारनो छे. तेमां पण निक्षेपनिर्युक्ति अनुगम स्थान, अंग, अध्ययनादि एक शब्दना निक्षेपना प्रतिपादनथी निर्युक्ति- अनुगमन्तुं पण प्रतिपादन थयुं ज छे. उपोद्धातनिर्युक्ति अनुगम तो-' *उदेसे निदेसे य निग्गमे ' इत्यादि (महाभाष्यनी) बे	१. स्थाना- ध्ययने उपक्रम- वर्णन.
	* उद्देसे निद्देसे य, निग्गमे खेतकाळपुरिसे य । कारणपञ्चव लक्खग नए, समोयारणाणुमए ॥ ९७३ ॥ कि कहिबिहं कस्स, कहिं केसु कहं के चिरं हवइ काल्ठं । कइ संतरमविरहियं, भवागरिसकोसणनिरुति ॥ ९७४ ॥ (विशेषावश्यकभाष्य) शब्दार्थ-१ उद्देश, २ निर्देश, ३ निर्गम, ४ क्षेत्र, ५ काल, ६ पुरुष, ७ कारण, ८ प्रत्यय, ९ लक्षण, १० नय, ११ समवतार, १२ अनुमत,	
	For Private and Personal Use Only	

66		
44	गाथाथी जाणवो. सत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति अनुगम तो ' व्याख्या ' ना लक्षणरूप संहितादि छ प्रकारमां १ पदार्थ, २ पदविग्रह,	
	३ चालना अने ४ प्रत्यवस्थान लक्षणरूप जे व्याख्यानना चार भेदस्वरूप ते स्त्रानुगमने विषे संहिता अने पद लक्षण विशिष्ट	
影	व्याख्यानना वे भेद छते होय छे. आ कारणथी सत्रानुगम कहेवाय छे. तेमां अल्पग्रंथ (थोडा शब्दवाछं) महान अर्थादि	
	विशिष्ट सत्रना लक्षण सहितं अने स्वलितादि दोष रहित सत्र उच्चार करवा योग्य छे. ते आ प्रमाणे—	
	मू०–सुयं मे आउसं ! तेणं भगवता एकमक्खायं ( सू० १ )	
S.S.	म्लार्थः-श्री सुधर्मास्यामी जंबूस्वामी प्रत्ये कहे छे-हे आयुष्मन् शिष्य ! ते महावीर भगवाने आ प्रमाणे ( आगळ कहे- वाशे तेम ) जे कहेलुं ते में सांभळेलुं छ (ते ज हुं कहुं छुं ).	Since and a second s
۶. IIII	टीकार्थः–आ सत्रनी व्याख्या संहितादिक्रमवर्डे हुं कहुं छुं. ते विषे भाष्यकार कहे छे–	
	सुत्तं १ पयं २ पयत्थे। ३, संभवतो ४ विग्गहो वियारे। य ५। दूसियसिद्धी ६ नयमय-विसेसओ नेयमणुसुत्तं	
Sill.	१ अस्खलितादि गुग सहित सत्र कहेवुं, २ पछी पदच्छेद करवो, ३ पदनो अर्थ कहेवो, ४ जे। समासनो संभव होय तो	
	१३ डां, १४ केटला प्रकारे, १५ कोनुं, १६ क्यां, १७ कोनामां, १८ केवो रीते, १९ केटलो होय, २० केटलुं अंतर, २१ अंतर रहित, २२ भव, २३ आकर्ष, २४ स्पर्शना, २५ निरुक्तिद्वार ए पचोश द्वारोवडे जाणवा येाग्य छे.	
	१. सूत्रना आठ गुणो अने बत्रीग्र दोषना अभावनुं स्वरूप महाभाष्यनी टोकायों जाणो लेवुं.	

Jain Alaunana Kenura	www.kobalitih.org	Acharya Shiri N	allassayarsurr
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ११ ॥	समास (विग्रह) करवो, ५ पछी विचार-तर्क ( शंका ) करवो, ६ पछी दूषणने दूर करवुं (शंकानुं समाधान ) ते प्रत्यवस्थान ते पण नयोना मत विशेषोवडे करवुं. एम दरेक खूत्रवुं व्याख्यान करवुं. तेमां खत्र एटले संहिता ते कहेवायेल छे, केमवे खत्रानुगम संहितारूप छे. कर्खु छे के-''होई कयत्थो वोत्त्तुं, सपयच्छेयं सुग्रं सुयाणुगमो' '' इति. खत्रानुगम पदच्छेत सहित खत्रने कही क्रतार्थ थाय छे. अस्खालेतादि गुण सहित उच्चारेल खत्रमां केटलाएक अर्थो डाह्या पुरुषोने समजायेल ज हे. आ कारणथी संहिता व्याख्यानो भेद थाय छे अने न जाणेल अर्थने जाणवा माटे पदादि, व्याख्याना भेदो प्रवर्त्ते छे त्यां व्याख्या भेदमां-श्रुतं मया आयुष्मन ! तेन भगवता एवमाख्यातम्' इति आवी रीते पदोनी व्यवस्था कर त्यां ख्यालापकनिष्पन्न निक्षेपना अवसर छे. तेमां आ व्यवस्था छे. जत्थ उ जं जाणोज्जा, निवखेवं ानीविखवे निरवसोसं । जरथवि य ण जाणेज्जा, चउकयं निविखवे तत्थ॥ २५ ज्यां जे (जेटला) निक्षेपना जाणी झकाय त्यां ते (तेटला) नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वगेरे निर्विशेष (समस्त निक्षिप्त करवा, अने ज्यां वधारे न जाणी शकाय त्यां ते (तेटला) नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वगेरे निर्विशेष (समस्त निक्षिप्त करवा, अने ज्यां वधारे न जाणी शकाय त्यां चार निक्षेपा ओछामां ओछा अवश्व स्थापन करवा. तेम नामश्रुत अने स्थापनाश्रुन प्रतीत छे. उपयोग रहित भणनारनुं खत्र अथवा पत्रक (पानां) अने पुस्तेकमां रहेलुं-लखेले द्रव्यश्रुत छे अने मावश्रुत तो श्रुतना उपयोगवाठाने होवाथो ते द्रव्यश्रुत छे.		स्थाना- ध्ययने स्त्रम्.
			1 3 5 11

For Private and Personal Use Only

अधिकार छे. तथा 'आउसं'ति-आयुप्य एटले जीवित नामाहि भेदथी दग्न प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे- नामं १ ठवणा २ द्विए ३, ओहे ४ भव ४ तब्भवे य ६ भोगे य ७ । संजम ८ जस ९ कित्ती १०, जीवियं च तं भण्णती दसहा ॥ २६ ॥ तेमां नाम १ अने स्थापना २ सुगम छे. 'दविए'त्ति-सचेतनादि भेदवाळंद्रव्य ज जीवननो हेतु होवाथी जे जीवित छे ते द्रव्यजीवित ३, नारकादि पर्याय विशेष रहित आयुप्य द्रव्य मात्र ( आयुःदलिक ) जे सामान्य जीवित ते आध्वजीवित ४, नार- कादि भव विधिष्ट जीवित ते भवजीवित; जेमके नारकन्तुं जीवन वगेरे ५, समान जातीयपणे पूर्वभवनुं जीवन ते क्ष्तद्भव- जीवित; जेम के मनुष्य मृत्यु पामीने फरीने मनुष्यपणे उत्पन्न थाय ते ६, मोगजीवित चक्रवर्ति वगेरेने होय ७, संयमजीवित साधुओने होय ८, यश्चर्जीवित ९ अने कीर्त्तिजीवित १० जेम महावीर प्रश्चने हतुं तेम. अहीं जीवित× एटले आयुप्य ज छे, तथा आहें संयमआयुष्य, यशआयुष्य अने कीर्त्तिजीवित १० जेम महावीर प्रश्चने हतुं तेम. अहीं जीवित× एटले आयुप्य ज छे, तथा आहें संयमआयुष्य, यशआयुष्य अने कीर्त्तिआयुप्यवडे अधिकार छे. एवी रीते शेष पदोना जेम संभव थाय तेम निक्षेप कहेवा योग्य छे. आ रीते सत्रालापक निक्षेप कहेवायो. पुनः पदार्थ (पदनो अर्थ)चुं वर्णन आ प्रकारे-अहिं पांचमा गणघरदेव श्री सुधर्मास्वामी जंबू नामना पोताना शिष्य प्रत्ये चोकस प्रतिपादन करे छे के-में सांभव्देछं छे 'आउस्र'ति. संयमनी क देव, नारक अने युगलिकने तद्भवर्जीवित होतुं नथी, कारण ते देवादि फरीने तेनी ते न योनिमां उपजता नथी. × वाक्य, निक्षेपना अवसरमां भाषाना निक्षेपनी मांफक अहि आयुप्यना प्रतावमां जीवितनो निक्षेप करेल छे.	
× वाक्य, निक्षपना अवसरमा भाषाना निर्क्षपनी माफक अहि आयुप्यना प्रतावमां जीवितनो निक्षेप करेल छे.	

श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुचाद ॥ १२ ॥	प्रधानतावडे प्रशस्त अथवा घणुं आयुष्य छे विद्यमान जेने ते आयुष्मन् तेना संबोधनमां हे आयुष्मन् शिष्य ! 'तेणं'ति-	१ स्थाना- ध्ययने १ सत्रम्. ॥ १२ ॥
नाङ्गसत्र 📲	जे नजीक, आंतरावाळं, सक्ष्म, बादर, बाह्य अने अभ्यंतर सकल पदार्थोंने विषे अबाधित बोलवापणुं होवाथी यथार्थ वक्तापणे	ध्ययने
सानुवाद 🔐	जगतमां प्रख्यात, अथवा पूर्वभवमां मेळवेल छे तीर्थंकरनामकर्मादि लक्षणरूप परम पुण्यनो समूह जेणे, विनाश थई छ अनादि	हैं १ सत्रम्.
II १२ II	कालनी लागेली मिथ्यादर्शनादि वासना जेनी, छोडेल छे महान् राज्यवैभव जेणे, देवादिना उपसर्गे समूहना संसर्गवडे अविचलित	
	छे शुभ ध्यानमार्ग जेनो, सूर्यनी माफक घनघाती कर्मरूप निविड वादळाना समूहने तोडवावडे प्रकाश पामेल छे निर्मल केवलज्ञान-	
	रूप भाउमंडल जेमतुं, इंद्रोरूप अमरोना समूहे सेव्या छे चरणकमल जेना, मध्यमा नामे नगरीमां प्रथम थयेल छे प्रवचन	
	जेनुं एवा श्री महावीर प्रभु, 'भगवता' अष्ट महाप्रतिहार्य[ अशेकवृक्षादि ]रूप समस्त अैश्वर्यादि सहित ते भगवाने,	
	'एवमि'ति आ आगल कहेवाशे एवा एकत्वादि प्रकारवडे 'आख्यातमि'ति आ एटले जीव, अजीवनां लक्षणनी असंकीर्णता-	
	[ एक वीजामां मळी न जाय ते ] रूप मर्यादावडे, अथवा समस्त पदार्थना विस्तारथी व्यापक लक्षणरूप अभिविधिवेडे	
	'ख्यातं'-आत्मादि वस्तुनो समूह कहेल छे. अहिं ' श्रुतमि'ति-आ निर्णयने कहेनार ज्ञब्दवडे पोते चोकस करेलुं होय ते ज	
	बीजाने कहेवा येाग्य छे एम कहुं; अन्यथा कहेवामां ऊलटो दोषनो संभव छे. कहुं पण छे के-	
	किं एत्तो पावयरं ?, सम्मं अणहिगयधम्मसब्भावो । अन्नं कुदेसणाए, कट्ठयरागांमि पाडेइ ॥२७॥	
	नथी जाणेल सिद्धांतने। सद्भाव जेणे एवो ते उन्मार्गनी देशनावडे बीजाने महाकृष्ठकारी अपराधमां पाडे छे ( अने	11 22 LL

XXXX		
××	पोते तो पडेलो ज छे ), आथी उत्क्रष्ट बीज़ं क्युं पाप छे ? अर्थात् कोई नथी. (२७). 'मये'ति आ ्शब्दवडे उपक्रमद्वारवडे कहेवायेल जे भावप्रमाणद्वारगत आत्मा, अनंतर अने परंपर भेदथी भिन्न	
****	आगमने विषे आ कहेवातो ग्रंथ, अर्थथी अनंतरागम अने सत्रथी तो आत्मागम छे. 'आयुष्मन्नि 'ति आ शब्दवडे तो शिष्यना चित्तने आह्लाद करनार कोमल वचनवडे आचार्ये उपदेश करवो जोइए तेम जणावेल छे. उक्तं च—	
****	धम्ममइएहिं अइ-सुंदरेहिं कारणगुणोवणीएहिं । पल्हायंतो य मणं, सीसं चोएइ आयारिओ ॥२८॥ 🎇	€8
×××)	विगरे बताववावडे शिष्यना चित्तने आनंद करावता आचार्य शिष्यने प्रेरणा करे छे. (२८).	
***	प्राणीओने आयुष्य अतिशय वहाछं होवाथी आयुष्मन् शब्द अत्यंत हर्षजनक छे. कह्युं पण छे के-'सब्वे पाणा पिया- उया अप्पियवहा सुहासाया दुक्खपडिकटा सब्वे जीविउकामा सब्वेमिं जीवियं पियं '-मर्व प्राणीओने	
	आयुष्य प्रिय होय छे अने वध अप्रिय छे, सुख अनुकूल अने दुःख प्रतिकूल होय छे, बधा जीववानी इच्छावाला होय छे	() I -
×××××××××	अन सबन जावित प्रिय हाय छ. तथा मनुष्यां, जीवन माटे पुत्र, स्त्री अने धनसंपत्तिने तृग ( घास ) तुल्य पण नथी मानता, कारण के तेओने आयुष्य अति वहाऌं होय छे. अथवा आयुष्मन्-आ शब्दवडे ग्रहण, धारणादि गुणवाळा शिष्युने शास्त्रने। अर्थ देवा योग्य छे ए अर्थ जणाववा माटे, सर्व गुणोना आधारभूत, समस्त गुणना उपलक्षणरूप लांबा	
***	ર	

श्रीस्था- नाङ्गखत्र सानुवाद ॥ १३]॥	अयुष्यरूप गुणवडे गुरुदारा शिष्यने आमंत्रण करायुं छे. कहुं पण छे के— उट्टेऽवि दोणमेहे, न कण्हभूमाउं लोटए उद्यं । गहणधरणासमत्थे, इय देयमछित्तिकारिम्मि ॥२९॥ होण नामनो मेघ वर्षे छते पण काळी भूमिमांथी पाणी बहार जतुं नथी अर्थात् अंतरमां समाइ जाय छे. एवी रीते जेने ज्ञान आपवाथी नाश न थाय एना ग्रहण अने धारण करवामां समर्थ शिष्यने त्रिपे गुरुए ज्ञान आपवुं जोईए. (२९). पूत्रोंक्त गुणथी विपरीत शिष्यने ज्ञान आपवामां गुरुने दोष छे. आह च— आयरिए सुत्तम्मि य, परिवाओ सुत्तअत्थपलिर्मथो। अन्नेसिंपि य हाणी, पुट्ठावि न दुद्धदा वंझा ॥३०॥ अयोग्य शिष्यने ज्ञान आपवाथी आचार्य अने श्रुतनो अवर्णवाद थाय छे तेमज खत्र अने अर्थनो विनाश थाय छे. वीजा शिष्योने पण ज्ञाननो लाभ मळतो नथी. विशेष काल महेनत करवाथी शिष्य या माटे कंई पण न ग्रहण करे ? एम कोई शंका करे तो तेने आ दृष्टांत कहेवुं के—जेम गायना पग बांधनि तेना स्तनोतुं सागी रीते मर्दन करीए तो पण अने पुष्ट होवा छतां पण बांझणी गाय होय ते द्ध न ज आपे. (३०). 'तेन'ति आ शब्दवडे तो आप्तवादि गुणोथी जाहेरपणे नाम घरावनारवर्ड (कहेतुं) तेथी आ अघययनमां प्रमाणपणुं बतावेल छे. वक्ताना गुणोनी अपेक्षाए चचनतुं प्रामाण्य होय छे. 'भगवते'ति आ शब्दर्था प्रस्तुतःअध्ययन स्वीकारवा योग्य ज्ञणवेल छे. अत्तिश्य यन्य स्वीकारवा योग्य छे,तेनुं वचन पण उपादेय छे.अथवा 'तेर्ण'ति आ शब्द था १. रुज्या भूमियेत्र असी रुष्यभूमः, तस्मात् ।	× × ×	१ स्थाना- घ्ययने १ सत्रम्.	
	वाझणा गाय हाय त दूध न ज आप. (२०). 'तन 'त आ शब्दवड ता आसत्याद गुणाया जाहरपण नाम घरावनारवड' (कहलु) तथा आ अध्ययनमां प्रमाणपणुं बतावेल छे. वक्ताना गुणोनी अपेक्षाए वचननुं प्रामाण्य होय छे. 'भगवते'ति आ शब्दथी प्रस्तुत।अध्ययन स्वीकारवा योग्य जणावेल छे.अतिशयवान् (प्रभु) अवश्य स्वीकारवा योग्य छे,तेनुं वचन पण उपादेय छे.अथवा 'तेणं'ति आ शब्दथी १. ऋष्णा भूमियंत्र असौ रूप्णभूम:, तस्मात् ।	***	॥१३॥	

\*\*\*\*\*\*

*********************************	उपोद्घातनिर्युक्तिमां अंतर्गत त्रीजुं निर्गमद्वार वताव्युं छे. ( द्रव्यथी ) मिथ्यात्वरूप अंधकार आदि दोपोथी निर्गत (नीकळेलो) जे पुरुष, तेथी नीकळेखं आ अध्ययन, क्षेत्रथी अपापा ( मध्यम ) नगरीमां, कालथी वैशाख शुक्क इग्यारंसनी प्रथम पोरसीने विषे अने भावथी क्षायिकभावमां वर्तमान होवाथी-आ प्रमाणे आनो गुरुषर्वक्रम( गुरुषरंपरा )रूप संवंध देखाडेलो छे. वली तथाविध भगवाने जे कहेखं छे ते सप्रयोजन ज छे. एवी रीते सामान्यथी आ अध्ययननी सप्रयोजनता दर्शावी. परम ऐक्षर्य- वान जिनेश्वरो पुरुषार्थने बिनउपयोगी कहेता नथी, कारण के तेम कहेवाथी भगवानपणानी हानि थाय. आ ज कारणथी आनो उपाय-उपेय( कारणकार्य )भावरूप संबंध पण देखाडेल छे. भगवाने जे कहेखं ते आ खत्ररूपे गुंधायेखं ए उपाय अने पुरु- षार्थ ए उपेय जाणवो. आ कारणथी ज श्रोताओ श्रवणमां प्रवर्चेल छे. कहेखं छे के-सांभलनार, सिद्ध छे संबंध जेना एवा निर्णांत अर्थ- वाला शब्दने सांभळवा माटे प्रवर्ते छे. ते कारणथी झाखनी शरुआतमां प्रयोजन सहित संबंध कहेवो जोइए. ' एवमि'ति आ शब्दथी भगवानना वचनथी आत्म ( अमारुं ) वचन छुदुं नथी, आ कारणथी ज स्ववचनसुं प्रमाणपणुं वतावेछं छे. सर्वज्ञ- वचनना अतुवादरूप मात्र अमारुं वचन छे, अथवा एवमिति-शिपयपणाए करी एकत्वादि प्रकार कहेल छे. अविषयपणानी शंका- बडे कागडाना दांतनी परीक्षामां जेम कोई प्रवृत्त थतो नथी तेम श्रोताओनी अन्नवत्ती प्रयत्था र हेतुथी 'आख्यातमि'ति- श शब्दथी कहेछं वचन अपौरुयेय वचनां असंभव होवाथी अपौरुपेय वचनरूप नथी. कह्युं छे के- र. बेशाख शुक्क दशमीना दिवसे महावीर प्रसुने केवल्जान उत्पन्न थयुं अने वैशाख सुद ११ ना तोर्घस्थापना करो तेथी अगी- यारस जणावी छे.
**************************************	

श्रीस्था- नाङ्गस्त्र सानुवाद १। १४ ।।	वेयवयणं न माणं, अपोरुसेयंति निम्मियं (तम्मयं) जेण। इद्मच्चंतविरुद्धं, वयणं च अपोरुसेयं च ॥३१॥ जं वुच्चइात्ति वयणं, पुरिसाभावे उ नेयमेवंति । ता तस्सेवाभावो, नियमेण अपोरुसेयत्ते ।३२। (युग्मम् ) जे हेतुथी अपौरुपेय वेद वचन निर्माण करायेल छे तेथी प्रमाणभूत नथी, कारण के वचन अने अपारुपेय आ बंने परस्पर अत्यंत विरुद्ध छे. जे बोलाय छे ते वचन, पुरुषना अभावमां तो वैचन ज क्यांथी होय ? ते कारणथी अपौरुपेयत्वमां चोकस वचननो ज अभाव छे (३१-३२). अथवा आ (वक्ष्यमाण) भगवाने कहेलुं छे, पण भींत वगेरेथी नीकळेलुं नथी. कोईक आ प्रमाणे स्वीकारे छे-ध्यानमां प्राप्त थयेल अने ते प्रभु स्थिर थये छते चिंतामणि रत्ननी माफक यथाकाम (इच्छित जेम थाय तेम ) भींत वगेरेथी पण देशनाओ नीकळे छे (१). आ वर्णननो अस्वीकार करवा माटे कहे छे के-भींत वगेरेथी नीकळेल देशना- ओ तो आप्तपुरुषबंडे उपदेशायेली नहिं थाय, ते देशनाओमां विश्वास पण नहि थाय. कारण के आ देशनाओ कोणे कहेली छे तेवी शंका पण प्रगटशे. (२) वधा पदना सम्रदायवडे पोतानी उद्धताईनो त्याग करवाथी गरुना गणोनी प्रभावनामां तत्पर एवा पुरुषोए शिष्यो माटे	6	१ स्थाना- ध्ययने १ सूत्रम्. ॥ १४ ॥
	बधा पदना समुदायवडे पोतानी उद्धताईनो त्याग करवाथी गुरुना गुणोनी प्रभावनामां तत्पर एवा पुरुषोए शिष्यो माटे देशना करवी एम कहुं. एवी रीते देशना आपवाथी शिष्यो गुरुओने विषे भक्तिपरायण थाय, भक्तिपरायणतावडे विद्यादिनी पण सफळता थाय. यदुक्तं १. ताल्वादि स्थानजन्य वचन छे अने अपौरुषेयमां ताल्वादि स्थाननो अभाव होवाधी वचननो उच्चार ज थइ शके नहिं.	***	11 88 11

X		×
*****	भत्तीए जिणवराणं, खिज्जंती पुठवसांचिया कम्मा।आयरियनमोक्कारेण, विज्जा मंता य सिउझंति ॥३३॥ जिनेश्वरोनी भक्ति करवाथी पूर्वसंचित कमें क्षय पामे छे. आचार्यने नमस्कार करवाथी विद्या अने मंत्रो सिद्ध थाय छे. (३३). अहिं नमस्कार ए भक्ति ज छे अथवा 'आउसंतेणं'ति ए शब्द भगवाननुं विशेषण छे. आयुष्मान् चिरंजीवी भगवान- वडे ए प्रमाणे तेनो अर्थ छे. आ विशेषणथी भगवाननुं बहुमान मंगळरूप होवाथी भगवाननुं बहुमानगर्भित मंगल कहेछुं छे. अथवा 'आयुष्मत्ते'ति बीजा माटे (परोषकार माटे) देशनादि प्रद्वति वगेरेथी, प्रश्नस्त आयुष्यने धारण करनारा मोक्षप्राप्ति करीने पण	**************************************
****	आयुष्यन चारत बाजा माट (परापकार माट) दुश्चनाद प्रवास वगरथा, प्रश्नस्त आयुष्यन चारण करनारा माक्षशास करान पण तीर्थनो तिरस्कारादि जाइने, अभिमानादि भावथी फरीने आ लोकमां आवनारनी जेम अप्रश्नस्त आयुषने धारणं करता नथी. इतरधर्मी केटलाएकवंडे आम कहेवाय छे के धर्मतीर्थना करनारा ज्ञानीओ, परमपद ( मोक्ष ) पामीने, तीर्थना तिरस्कारथी फरीने पण संसारमां आवे छे. जेमके- [ यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ! । अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥ १ ॥ ]	****
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	एवी रीतें ज रागद्वेपनो समूल नांश न थवाथी तेनुं वचन अप्रमाणिक छे. रागादिनो समूल नांश थये छते कया कारणथी फरी आ लोकमां आगमननो संभव थाय ? अथवा आयुष्मता प्राणने धारण करनारा, परंतु सदा संशुद्ध सिद्धरूपे नहि तेने अकरण(अग्नरीर)पणाथी बोलवानो असंभव छे. अथवा 'आवसंतेणं'ति ए मया शब्दनुं विशेषण छे तेथी आाङि ति–गुरुए	****
****	१. प्रथम 'आउसं ! तेणं' ए बे पदोना भिन्न भिन्न अर्थ कहेल छे. अहि आउसंतेणं एक शब्दरूप कहेल छे ने ते भगवाननुं विशेषण छे. २ मोक्षमां जइने फरी संसारमां अवतार धारण करवो ए अप्रशस्त छे.	****

	देसाडेली मर्यादावडे वसवुं, मर्यादाए वसवाथी-ए शब्दवडे परमार्थथी गुरुनी आज्ञामां रहेवारूप गुरुकुलवासनुं विधान अर्थथी कह्युं छे. गुरुकुलवास ज्ञानादिना हेतुभूत छे. उक्तं च— णाणस्स होइ भागी, थिरयरओ दंसणे चरित्ते य । धन्ना आवकहाए, गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥३८॥ गीयावासो रती धम्मे, अणाययणवज्जणं । निग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सासणं॥३५॥ (युग्मं) गुरुकुलवासमां रहेतो थको ( साधु ) श्रुतज्ञानादिनुं भाजन थाय, सम्यक्त्व अने चारित्रमां अतिशय स्थिर थाय माटे जेओ गुरुकुलवासमें यावत् जीवनपर्यंत छोडता नथी तेओने धन्य छे ने तेओ धर्म-धनने मेळवनारा छे. (३४.) गीतार्थ बहुश्रुत पासे वसनुं, साधुधर्ममां श्रीति, अनायतनो-साधुओने अयोग्य स्थानोनुं वर्जनुं, कषायोनो निग्रह-उदयमां आवेलने निष्फळ करतो. आ शिष्योने ( गुरुकुलवासीओने ) शिखामण छे. अथवा 'आग्रुसंतेणं' ति, आम्टशता-भगवानना चरणकमलने भक्तिपूर्वक इस्तयुगलादिवडे स्पर्श करतां, आऱ्युराता शब्दवडे आ प्रमाणे कहे छे. सर्व शास्तने जाणनार शिष्ये पण <sup>1</sup> गुरुनी पगचंपी बगेरे विनयकार्य न छोडवुं जोईए. उक्तं च— जहाऽऽहिअग्गी जल्णं णमंस्ते, णाणाहुतीमंतपयाभिसित्तं । एवायरीयं उवचिट्टएज्जा, अणंतणाणोवगओऽवि संतो ॥ ३६ ॥ १. आवमसेतेणं अने आमुसतेणं ए बंने पठांतर छे.	*************************************	स्थाना- व्ययने रुकुल- गासः स्रत्रम्.		
	र्षे एवायरीयं उवचिट्टएजा, अणंतणाणोवगओऽवि संतो ॥ ३६ ॥ ४. आवसंतेणं अने आमुसंतेणं ए बंने पठांतर छे.	× ×	શ્રના		
		**** **********	<u>(</u> ~ 11		
For Private and Personal Use Only					

	जेम् आहिताग्नि ( ब्राह्मण ) अनेक प्रकारनी आहुति ( घृतादिनो प्रक्षेप ) अने अग्नये स्वाहा ईत्यादि मंत्रपदो-
	वडे अभिषेक करायेल अग्निने नमन करे छे तेम अनंतज्ञाननो प्राप्त थयो थको शिष्य पण आचार्यने विनयवडे सेवे. अथवा
	'आउसंतेणं' ति-आजुषमाणेन-श्रवणविधिनी मयौदावडे गुरुओनी आसेवनाथी. ए शब्दवडे पण एम सूचन कर्युं छे
;	के शास्रोक्त विधिवडे योग्य स्थाने रहेल शिष्ये गुरु पासेथी सांभळवुं जोईए, जेम तेम नहिं सांभळवुं. कह्युं छे के—
	निद्दाविगहापरिवजिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं । भत्तिबहुमाणपुठ्वं, उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥३७॥
	निद्रा अने विकथाने छोडीने, त्रण योगने काबूमां राखीने, अंजली जोडीने, भक्ति अने बहुमानपूर्वक, जेम थाय तेम एक-
,	चित्ते उपयोगपूर्वक सांभळवुं जोइए. (३७.) एवी रीते पदनो अर्थ कहेवायो. पदविग्रह एटले समास सहित पद, ते आख्यात
	आदि पदोमां दर्शावेल छे. हवे चालना ( तर्क) अने प्रत्यवस्थान ( समाधान ) ते बंने शब्दथी अने अर्थथी कहे छे. तेमां
	शब्दथी ननु ( शंका ) मे आ शब्दनो मम अने मह्यं-छट्ठी अने चोथी विभक्तिनो एकवचनांत छे, अस्मद् शब्दने मे आदेशथी
	मे-मह्यं व्याख्यान करवा योग्य छे. अहिं ग्रंथकार समाधान करे छे के 'मे' तृतीयाना एकवचनांत विभक्तिनो प्रतिरूपक आ
	अव्यय, अस्मद् शब्दना अर्थमां छे माटे दोष नथी. अर्थथी तो चालना ( शंका ) वस्तु नित्य छे के अनित्य छे ? नित्य होय
	तो अप्रच्युत ( नाज्ञ रहित ) उत्पन्न न थयेल, केवल स्थिररूप नित्यनो लक्षण होवाथी जे भगवाननी समीपमां सांभळवापणानो
	स्वभाव ( हतो ) ते ज स्वभाव शिष्यने उपदेशपणामां केम संभवे ? वळी आनो ( श्रोतानो ) पहेला स्वभावना त्यागमां अथवा
l	

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ १६॥	पूर्व स्वभावना नहिं त्यागवामां शिष्यने उपदेशकत्व होय ? जो त्यागवामां कहेशो तो 'हंन ' इति खेदे वस्तुनुं नित्यपणुं नाश थयुं, वस्तु, वस्तुना स्वभावथी भिन्न नथी. कारण के स्वभावनो क्षय थये छते वस्तुनो क्षय धाय छे. ए हेतुथी अपरित्याग पक्ष जो तमे कहेशो तो ते पण नहि घटे, कारण के युगपत् ( एक ज समये ) विरुद्ध वे स्वभावनो असंभव होय छे. जो ए नित्यपक्ष स्वीकारशो तो ते पण योग्य नथी, कारण के सर्वथा नाश पामते छते अोतानो अवणकालमां ज विनाश होवाथी अने कथनना समयमां बीजानी ज उत्पत्ति होवाथी कहेवानो प्रसंग नहि आवे. यज्ञदत्ते सांभळेल देवदत्तना न कहेवानी जेम. अहिं नयना मतवडे समाधान करे छे. ए हेतुथी नयद्वारनुं अवतरण करे छे-नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुस्रत्र, शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत ए सात नयो छे. तेमां पहेला त्रण नयो, द्रव्य ए ज अर्थ छे एम कहेवावडे द्रव्यार्थिक नयमां अवतरे छे. बीजा चार नयो, पर्याय ए ज अर्थ छे एम कहेवावडे पर्यायार्थिक नयमां अवतरे छे. ते ज उभय मतनो आश्रय कीधे छते द्रव्यार्थ- पणाए वस्तु नित्य अने पर्यार्थपणे तो वस्तु अनित्य छे; माटे ( स्याद्वादयक्षे ) नित्य-जनित्य वस्तु छे. जा हेतुथी गोळं अने स्रंटनी माफक प्रत्येक पक्षमां कहेल दोषनो अभाव छे. एवी ज रीते सर्व व्यवहारनी प्रवृत्ति थाय छे. कहेलुं छे के- सटवं चिय पहस्तमयं, उप्पज्जइ नासए य निद्यं च। एवं चेव य सुहदुवस्व-बंधमोवस्वादिसबभावो॥३दा॥	****	१ स्थाना- ध्ययने १ स्रत्रम्.
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	१. कारण ? सांभळनार यज्ञदत्तनो थिनाश हावाथी ते कहा शके नहि, देवदत्त विद्यमान होवा छतां पण सांभळवाना अवसरे नहि होवाथी न सांभळेलुं केम कहो शके ? २. गुडो हि कफहेतुस्त्यात, नागरं पित्तकारणम् । उभयोर्न हि दोषस्या-त्तद्द्रयमोषधं भवेत् ॥ १ ॥	****	॥ १६ ॥

For Private and Personal Use Only

	सर्व यस्तु प्रतिसमये उत्पन्न थाय छे, नाश पामे छे अने नित्य छे. आ बन्ने ( नित्यानित्य ) प्रकारे वस्तुने स्वीकारवाथी
सुर	व, दुःख, वैंध अने मोक्षादिनो सद्भाव घटी शके छे. सृत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति अनुगम कह्यो तेवी रीते स्वीकारेल सत्रनो आश्रय
🕴 कर्र	नि स्त्रानुगम, सत्रालापकानिक्षेप, स्त्रस्पर्शिकनिर्युक्ति, अनुगम अने नयो दर्शावेला छे. क्रमपूर्वक भाष्यकारनुं वचन
	राध्युं छे <del>-स्</del> वीकारेल छे ते भाष्यचुं वचन आ प्रमाणेः—
(I	तं सुत्ताणुगमो, सुत्तालावगकओ य निक्खेवो।सुत्तप्फासियनिज्जुत्ति, नया य समगं तु वचंति ॥३९॥
	आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. ए द्वारोनो विषय भाष्यकारे कहेल छे.
	ोइ कयत्थो वोत्तुं, सपयच्छेयं सुअं सुयाणुगमो । सुत्तालावगनासो, नामाइन्नासविनियोगं ॥ ४० ॥
सु	जिप्फासियनिज्जुत्ति–निओगो सेसओ पयत्थाई।पायं सो चिय नेगम–नयाइमयगोयरो होइ॥४१(यु०)
~	अस्खलितादि गुणयुक्त सत्र अने तेनो पदच्छेद कहीने सत्रानुगम कृतार्थ ( सफल ) थाय छे, नामादि निक्षेपनो संबंध मात्र
	ीने सत्रालापक निक्षेप सफल थाय छे अने शेष पदार्थ, पद्विग्रह, चालना अने प्रत्ययवस्थानरूप व्याख्या सत्रस्पर्शिक-
21	र्युक्तिमां उपयोगी थाय छे. ते पदार्थादि प्रायः नैगमादि नयना अभिप्रायथी जणाय छे. पदार्थादि कहे छते ज नैगमादि
) 	गोनी प्रदृत्ति छे. (४०-४१)
	एवी रीते दरेक सत्रमां पोतानी मेळे अनुसरण करवुं. अमे तो कोई स्थाने कंइक संक्षेप अर्थने कहेछुं. हमणा जे भगवाने
नि नग्	ેમાં હાલ બેરમાં જોવાનાં માળામાં મેળ બેસહારેલ મહેસું. એમ હા માટે દેવામાં મહેસાં હાળવે મહેસું. હેમમાં મે પંચાય વ
3	

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गसत्र	कह्युं ते कहेवाय छे. तेमां सर्व पदार्थोने जाणवा माटे सम्यग् मिथ्याज्ञान, श्रद्धा अने क्रियाद्वारा उपयोग जोडवाथी आत्मानुं सर्व पदार्थमां प्रधानपणुं छे. आ हेतुथी सत्रकार प्रथम आत्मानो विचार कहे छे.	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
सानुवाद 💲	एगे आया । सू० २	💥 एकानेव
॥ १७ ॥ 🌋	मूलार्थः—आत्मा एक छे ( सू० २ )	🌋 त्मासि
****	टीकार्थः-कोइक अपेक्षाए ( संग्रह नयनी अपेक्षाए ) आत्मा एक छे, बे त्रण आदिरूप आत्मा नथी. तन्नं अतति सततमवगच्छति-अहिं ' अत ' धातु सातत्य गमनना अर्थमां छे ए वचनथी 'अत' धातु गतिना अर्थवाळो छे अने गत्यर्थ धातुओ ज्ञानना अर्थवाला होय छे; तेथी करीने '' अनवरतं जानाति '' जे निरंतर जाणे छे ते आत्मा ( जीव ). अहिं आत्मा शब्द निपातथी सिद्ध थयेल छे, केम के आत्मानुं लक्षण उपयोग छे तेथी अर्थात् सिद्ध संसारी ए बे अवस्थामां पण उपयोगभाववडे निरंतर जाणवापणुं छे तेथी. तथा निरंतर बोधनो अभाव मानीए तो अजीवपणानो प्रसंग प्राप्त थाय अने अजीवपणुं थवाथी तेमां फरीथी जीवत्वनो अभाव छे अने फरीथी जीवत्वभाव स्वांकारवामां आका- शादिने पण जीवपणानो प्रसंग आवशे, अने एम मानवाथी जीवनुं अनादिपणुं स्वीकारवानो अभाव उद्भवशे ( अर्थात् जीवनुं अनादिपणुं नहि घटे ) अथवा जे निरंतर पोताना ज्ञानादि पर्यायोने प्राप्त करे छे ते आत्मा. रांका- १. आत्माना विचारमां टीकाकर प्रथम व्युल्पत्त्यर्थ दर्शाव छे.	२ स्व *** *** *** *** *** *** *** *** *** *
****		

<b>***</b> *********************************	मानवाथी आकाशादिने पण आत्म शब्दना व्यवहारनो प्रसंग आवशे, कारण के आकाश विगेरे पण पोताना पर्यायोमां सतत गमन करे छे. जो एम नहि मानीए तो आकाशादिमां पण अपरिणामत्ववडे अवस्तुपणानो प्रसंग आवशे. उत्तर-नैवम्- एम नथी; केम के 'अतति सततं गच्छति ' इत्यादि व्युत्पत्तिमाशतुं निमित्तपणुं छे अने उपयोग ज प्रष्ट्तिमां निमित्त छे तेथी जीव ज आत्मा छे पण आकाशादि आत्मां नथी. अथवा संसारीनी अपेक्षाए भिन्न भिन्न गतिओमां निरंतर जवाथी अने युक्त( सिद्ध )नी अपेक्षाए भूतकालमां जे आत्मा हतो ते ज वर्त्तमानमां होवाथी आत्मा छे. तेतुं एकपणुं कथंचित् ज छे ते बतावे छे:-द्रव्यार्थपणे एकपणुं छे कारण के आत्मात्तुं एक द्रव्यपणुं छे अने प्रदेशार्थपणे तो आत्मात्तुं अत्मरत उत्तर जो छे ते बतावे छे:-द्रव्यार्थपणे एकपणुं छे कारण के आत्मातुं एक द्रव्यपणुं छे अने प्रदेशार्थपणे तो आत्मात्तुं असंख्य प्रदेशपणुं होवाशी अनेकपणुं छे. तेमां द्रव्यरूप अर्थनो जे भाव ते द्रव्यार्थता, प्रदेशगुण अने पर्यायनी आधारता अर्थात् जे अवयवी ते द्रव्यपणुं हे. प्रकृष्ट-जेना बे विभाग केवलीना ज्ञानथी पण न थाय ते प्रदेश अर्थात् निरवयव अंशरूप अर्थनो जे भाव ते प्रदेशार्थता, गुण अने पर्यायनी आधारतारूप अवयव रुक्षण विशिष्ट अर्थपणुं जाणवुं. दांका-अवयवी द्रव्य ज नथी. गघेडाना शींगडानी माफक द्रव्यनो असंभव होवाथी वक्ष्यमाण ( कहेवाता) वे विकल्पवडे अवयवी द्रव्य नथी. कहे छे के-अवयवी द्रव्य अवयवोयी भिन्न छे के आभिन छे ? आभिन्न पक्ष तमे स्वीकारी शकशो नहिः कारण अभेद छेत अवयवी द्रव्यनी जेम अवयवोत्तुं पण एक पणुं थाय अथवा अवयवनी जेम अवयवी द्रव्यत्तुं पण अनेकपणुं थाय. अन्यथा भिन्न पक्ष ज सिद्ध थाय छे, केम के विरुद्ध धर्मां जे आभासन ते भेदतुं कारण छे. जो भिन्न पक्ष स्वीकारशो तो अवयवी द्रव्य अवयवोयी भिन्न छे तो ते सर्व अवयवोमां सर्वथा	××××××××××××××××××××××××××××××××××××××
****	छे के अभिन छे ? अभिन पक्ष तमे स्वीकारी शकशो नहि; कारण अभेद छते अवयवी द्रव्यनी जेम अवयवोनुं पण एक पणं थाय अथवा अवयवनी जेम अवयवी दव्यनुं पण अनेकपणं थाय, अन्यथा भिन्न पक्ष ज सिद्ध थाय के केम के किन्द्र भार्मनं शि	

श्रीस्था- नाङ्गुस्रत्र सानुवाद ॥ १८ ॥ ***	समस्तपणे जणाय छे ? के देशथी भिन्न जणाय छे ? जो सर्वात्मयणे कहेशो तो अवयवनी संख्या प्रमागे अवयवी द्रच्यनी संख्या थाय त्यारे अवयवी द्रच्यनुं एकपणुं केम घटे ? अने देशथी भिन्न कहेशो तो जे देशो(विभागो)वडे अवयवोमां अवयवी द्रच्य वर्त्ते छे ते देशोमां पण ते केवी रीते प्रवर्त्ते छे ? देशथी के सर्वथी ? जो सर्वथी कहेशो तो पूर्वोक्त दोष आवे छे. जो देशथी कहेशो तो ते देशोमां पण केम थाय ? देशथी तेना देशोमां तेना देशोमां, एम विकल्पो करवाथी अनवस्था दोष थाय छे. समाधान-बे विकल्पवडे अवयवी द्रच्यनुं जे अघटमान कह्युं ते तमारुं कथन अयुक्त छे. अमे एकांतथी भेद अथवा अभेदनो स्वीकार ज करता नथी. अवयवो ज तथाविध एकपरिणामपणे (एक पिंडरूपे रहेवाथी) अवयवी द्रच्यपणे व्यवहार कराय छे अने ते ( अवयवो ) ज तथाविध भिन्न भिन्न परिणामोनी अपेक्षाए अवयवो कहेवाय छे. अवयवी द्रव्यपणे व्यवहार कराय छे अने ते ( अवयवो ) ज तथाविध भिन्न भिन्न परिणामोनी अपेक्षाए अवयवो कहेवाय छे. अवयवी द्रव्यनो अभाव स्वीकार कर्ये छते आ घडाना अवयवो छे अने आ वस्त्रना अवयवो छे एम जे भिन्नता अनुभवाय छे ते धई शकशे नहि, तेमज अग्रुक समये अग्रुक ज कार्य करवानी इच्छावाळाओने चोकस करेल वस्तुनुं प्रहण नहि थाय; अन कोई पण जातना कार्यनो नियम् ज नहि रहे. समिवेश( वस्तुविपयना संकेत )थी घटादिना अवयवोनी प्रतिनियतता-प्रत्येकमां नियम-	** १. स्थाना- ध्ययने एकानेका त्मासिद्धिः २ सत्रम्.
****	पणुं थरो एम जो कहो तो ते सत्य छे, कारण के ते ज सन्निवेश विशेष अवयवी द्रव्य छे. वली विरुद्ध धर्मनो अध्यास ए ज मेदउं कारण छे, एम जे कहेछं ते पण वरोबर नथी; केम के प्रत्यक्ष ज्ञानने परमार्थ[ प्रत्यक्ष ]नी अपेक्षाए आंतपणुं छे अने संव्यवहार[ प्रत्यक्ष ]नी अपेक्षाए अआंतपणुं छे. आंतत्व अने अआंतत्वनो अमारावडे स्वीकार कराएलो होवाथी जो तमे कहेशो १. अहि कथंबित् अभेद पक्ष कह्यो. २ अहि कयांचत् भेद कह्यो.	*** *** *** ***

3	प्रांत अने अभ्रांत केम घटे १ एम पण तमे कहेवा माटे इक्तिमान हो तो अमे आ प्रमाणे कहीए छीए के−अवयवनी जेम अथवा
	त्रीत अने अत्रीत फन पट र एन पूर्ण तम कहेंगे नाट शाक्तनान हो तो अने आत्रनाण कहाए छोए क—अवयवना जन अयवा तीलवर्णनी माफक अव्यभिचारीपणे तेमज प्रतिभासमान होवाथी अवयवी द्रव्य विद्यमान छे. आ हेतु असिद्धं नथी, कारण के
	तम छे तेम प्रतिभासनो अनुभव थाय छे. तेमज उक्त हेतु अनैकान्तिक अने विरुद्ध पण नथी, कारण के सर्व वस्तुनी व्यवस्था
	गत छ तम जाताताता. अछतम मान छ तमय उपत हुतु अगमात्तिय अग तिरत्व पर्य गया, मारण म तिया मरता मत्ति । तिभासने आधीन छे, अगर जो एम नहि मानो तो कोई पण वस्तु सिद्ध नहि थाय. पूर्वपक्षी कहे छे के-केवल अवयवी
5 5	रव्य हो, पण आत्मा आत्मानो प्रत्यक्षादि[ प्रमाणो ]वडे साक्षांतुकार न होवाथी विद्यमान नथी. ते आ प्रमाणे–आत्मा
	अतीन्द्रिय होत्रांथी प्रत्यक्षवडे ग्रहण करवा योग्य नथी, अनुमानग्राह्य पण नथी. लिंग ( हेतु ) अने लिंगी (पक्ष) ए बन्नेनो
ि स	ताक्षात्र संबंध देखवावडे अनुमान प्रमाणनी प्रवृत्ति थाय छे. आत्मा आगमप्रमाणवडे पण जणाता नथी, कारण के आगमोनो
q	गररपर विसंवाद [ मतभेद ] छे. समाधान-आ असाक्षात्कारता हुं ? ते एक पुरुषने आश्रित छे अथवा वधा पुरुषोने आश्रित
	s ? जो एक पुरुषने आश्रित कहेशो तो तेथी वस्तु रहेते छते एक पुरुषाश्रित अनुपलम्यपणाने। संभव होवाथी आत्मानो
3	तभाव सिद्ध थता नथी. कोई एक पुरुषविशेषनुं घटादि वस्तुनो ग्राहक जे प्रमाण प्रवर्त्तुं नथी, एटछं ज कहेवाथी सर्वत्र अने
ं स	र्विकालमां घटादि अर्थ ग्राहक प्रमाणनो अभाव छे एम निर्णय करवा माटे तमे शक्तिमान नथी. प्रमाणनी निवृत्तिमां प्रमाणनुं
	ामेय कार्यपणुं होवाथी प्रमेय निवर्त्तन थतुं नथी. कार्य( घटादि )ना अभावमां कारण( दंडादि )ने। अभाव देखातो नथी
प्र म –	गटे अनुपलंभ हेतु अनैकांतिक दोषवाळो छे अने बधा पुरुषोने आश्रित अनुपलंभ पक्ष असिद्ध छे, माटे आ अनुपलंभ हेतु
	र प्रश्नमां हेतूना अभाव ते असिद्ध. २ उपलब्धि,

Jain Aradhana Kend	a www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassagarsuri G
श्रीस्था- बाङ्गसत्र सानुवाद ॥ १९ ॥	असिद्ध छे. तथा असर्वज्ञ हेतुथी बधा मनुष्यो सर्वदा अने सर्व स्थले आत्माने जोता नथी एम कहेवाने तमे समर्थ नथी. वर्ळ कंई विशेष कहे छे-घडानी माफक प्रत्यक्षादि प्रमाणोवडे साक्षात्कार होवाथी आत्मा छे. आ हेतु आसिद्ध नथी जेथी अमार जेवा बगेरेने पण प्रत्यक्षथी आत्मा जणाय छे. आत्मा ज्ञानथी भिन्न नथी, कारण के ज्ञान आत्मानो धर्म छे ज्ञान त्वा बगेरेने पण प्रत्यक्षथी आत्मा जणाय छे. आत्मा ज्ञानथी भिन्न नथी, कारण के ज्ञान आत्मानो धर्म छे ज्ञान स्वसंवेदनरूप छे अने प्रथम नीलनुं ज्ञान उत्पन्न थयेलुं हतुं इत्यादिनी जे स्मृति थवा पामे छे ते ज्ञाननुं स्वैसंवेदनपणुं छे. स्वसंवेदन ज्ञान न थये छते स्मृति थती नथी. ( जो स्मृति थती होय तो ) प्रमाता(जाणनार )ना बीजा ज्ञाननी ( नहिं अनु भवेल ज्ञाननी ) स्मृति थवानो प्रसंग आवशे. ते माटे आत्माथी अच्यतिरिक्त ( अभेद ) ज्ञानरूप गुणनुं प्रत्यक्षपणुं छते गुणी जे आत्मा ते प्रत्यक्ष ज छे. आहें दृष्टांत कहे छे-घटना रूप गुणनो प्रत्यक्ष थये छते गुणी जे घट ते प्रत्यक्ष थाय छे. कह्युं छे के- गुणपाच्चक्स्वत्तणओ, गुणी वि जीवो घडोठव पच्चक्सो । घडओव्व घिष्पइ गुणी, गुणमित्तग्गाहणओ जम्हा ॥ ४२ ॥ अण्णोऽणन्नो व गुणी होज्ज गुणेहिं ?, जइ णाम सोऽणन्नो । णाणगुणमित्तगहणे, घिष्पइ जीवो गुणी सक्स्वं ॥ ४३ ॥ १ पोतानो अनुभव.	ि <sup>*</sup> * ध्ययने अत्म- ** सिद्धिः ** २ स्ट्रत्रम्. * ** * ** * **
	१ पोतानो अनुभव. *	
L L		
	For Drivete and Demonal Line Only	

	अह अन्नो तो एवं, गुणिणो न घडादयो वि पच्चक्खा ।
	गुणमित्तम्गहणाओ, जीवम्मि कुतो विआरोऽयं ? ॥ ४४ ॥
	्गुण–स्मृत्यादि–ना प्रत्यक्ष्पणाथी घडानी माफक गुणी जीवनो प्रत्यक्ष थाय छे. पूर्वपक्षगुणना प्रत्यक्षपणाथी
	ोनों प्रत्यक्ष थाय छे ए हेतु अनैकान्तिक छे, केमके आकाशनो गुण जे शब्द ते प्रत्यक्ष छे परंतु गुणी आकाशनो प्रत्यक्ष
	। नथी. उत्तरपक्ष–रूपादिनी माफक शब्द इंद्रियब्राह्य होवाथी आकाशनो गुण नथी परंतु पुद्गलनो गुण छे, माटे तमे
	ल के हेतु अनैकांतिक छे तेम नथी. गुणोनुं प्रत्यक्षपणुं छते गुणीनुं प्रत्यक्षपणुं केम थाय १ एम जो कहेता हो तो अमो पूछीए
	र के–गुणोथी गुणीने भिन्न माने। छे के अभिन्न १ जो अभिन्न होय तो ज्ञानादि गुणने ग्रहण करवा मात्रथी गुणी
	गत्मा ) साक्षात् ग्रहण थाय ज. जो गुणेाथी गुणी भिन्न छे तो घट आदि गुणी तेना रूपादि गुणोनुं प्रत्यक्ष थवाथी जे ग्रहण
थाय	र छे ते पण न थेवुं जोइए. जेा आ प्रमाणे छे तो केवल जीवना अभावना ज विचार शार्था थाय छे १ (४२–४३–४४.)
	जेओ सर्व पदार्थसमूहना स्वरूपना आविर्भाव( प्रकाश )मां समर्थ ज्ञानीओ छे तेओने ते। सूर्वात्मभावे (सर्वथा ज) प्रत्यक्ष
थाय	ग छे. तेमज अनुमान प्रमाणवडे आत्मा जणाय छे ते आ प्रमाणे-आ शरीर विद्यमान कर्तावडे भोग्यंपणुं होवाथी भात,
वस्त्रे	। वगेरेनी जेम करायेलुं छे. आकाशनुं फ़ुल विपैक्ष दृष्टांत छे. ते विद्यमान कर्ता जीव छे. इांका-ओदनना कर्तानी माफक
	१. आत्मा भोक्ता अने शरीर भाग्य छे. २. ए सपक्ष द्वटांत छे. २. आदान अने आदेयपणुं अर्घात् याहक-याह्य नहि होवाधी.

	**		XXXX	
श्रीस्था-	***	आत्मा मूर्त्त सिद्ध थाय छे, माटे 'भोग्यत्व' हेतु, साध्य जे अमूर्त्त आत्मा ते भोग्यत्वथी विरुद्ध हेत्वाधी साध्यविरुद्ध छे. समा-	*** **	१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र	××	धान-ए तमारुं कथन योग्य नथी. संसारी जीवने मुत्तिपणे पण स्वीकारेल होवाथी भोग्यत्व हेतु साध्यविरुद्ध नथी. भाष्य-	*	ध्ययने
सानुवाद्	×	कार कहे छे केः—	× ×	आत्म-
11 20 11	* *	जोकत्तादि स जीवो, सज्झविरुद्ध(द्वो)त्ति ते मई हुजा।मुत्ताइपसंगाओ, तं नो संसारिणोदोसो॥४५॥	XXXXXX	सिद्धिः
	*	आ गाथानों भावार्थ उपर कहेल छे. लिंग अने लिंगी( हेतु ने पक्ष )ना साक्षात् संबंधना देखवावडे अनुमाननी प्रवृत्ति	* *	२ सूत्रम्.
	×	थाय छे, ए तमारुं कहेवुं अयोग्य छे; कारण के ए हेतु अनैकान्तिक दोषवाळे। छे. लिंगी साथे व्याप्तिवाळे। जे लिंग तेना उपलं-	×	
	× × × ×	भना अभाववडे अनुमाननी ज एकांतथी अप्रवृत्ति छे. हास्य, रुदन वगेरे लिंग (हेतु) विशेष जे, ग्रहाख्य लिंगी( पिशाचादि )ना	*	
		व्याप्ति ज्ञान विना पण थिशाचादिनुं अनुमान करावे छे. जो तमे एम कहेशों के देह ए ज थिशाच छे, परन्तु तेम नथी	* *	
	****	कारण के व्याप्ति ज्ञानना नियामकथी ज्यां ज्यां देह छे त्यां त्यां 4िशाचनुं दर्शन थर्वु जोईए पण बीजाना देहमां पिशाच	****	
	××	देखातो नथी. वली भाष्यकार कहे छे केः—	××	
	***	सोऽणेगंतो जम्हा, लिंगेहि समं अदिद्वपुठ्वोवि। गहलिंगदरिसणातो, गहोऽणुमेयो सरीरांमि ॥४६॥	***	
	5 💥 S	लिंगो( हास्यादि चिह्नो )वडे पूर्वे नहि जोयेल जे पिशाच तेना हास्यादि चिह्नोवडे आ श्वरीरमां पिशाच छे एम अनु-	() () () () () () () () () () () () () (	
	××	१. आत्मा आठ कर्म अने शरोर सहित होवाधी कधंचित्-सापेक्षताए मूर्त्त पण छे.	****	॥ २० ॥
	***		*** *	
	×		×	

••

मान	न करवा योग्य छे, माटे तमारो हेतु अनैकान्तिक छे. आत्मा आगमप्रमाणवडे जणाय छे.
	'एगे आया' ए ज वचनथी अन्य आगमोवडे आत्माना विसंवादनी संभावना करवा योग्य नथी, कारण के आ आगमने
सुनि	तेश्वित आप्तपुरुपे कहेल छे. अहिं घणुं कहेवानुं छे ते स्थानांतरथी जाणवुं. आत्मानो अभाव छते जातिस्मरणादि अने
	यु पामेल पिता, दादा वगेरेथी करायेल अनुग्रह अने उपघात ( लाभ-हानि ) प्राप्त नहिं थाय. आत्मानुं सप्रदेशपणुं
	अवश्य स्वीकारवा योग्य छे. अवयवना अभावमां तो हस्तादि अवयवोना एकत्व( एकपणा )ना प्रसंग आवशे अने दरेक
	यव प्रति स्पर्शादिनी अनुपलब्धिनों प्रसंग आवशे. ग्रीवादि दरेक अवयवमां जणातुं रूप गुणविशिष्ट घडानी जेम चैतन्य-
	उपयोग ) लक्षणरूप आत्माना गुणनो साक्षात्कार थवाथी प्रदेश सहित आत्मा दरेक अवयवमां छे. उक्तरीत्या द्र्च्यार्थपणाए
	5 आत्मा छे ए स्थापन कर्युं. अथवा एक आत्मा कथंचित्-सापेक्षताए दरेक क्षणमां संभवित भिन्न भिन्न कालवडे करायेल
	ारपणुं, तरुणपणुं, नरपणुं अने नारकपणुं वगेरे पर्यायोथी उत्पत्ति अने विनाशनी योग छते पण द्रव्यार्थपणाए आत्मानुं
	वपणुं छे. जो के कालकृत पर्यायोवडे वस्तु उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे तो पण स्वर्पर्याय अने परपर्यायरूप अनंत-
धम	र्गत्मक वस्तु होवाथी वस्तुनो सर्वथा नाज्ञ योग्य नथी. कह्युं छे केः—
ंन	हि सव्वहा विणासो, अद्धापजायामित्तनासंमि। सपरपजायाणंत-धम्मुणो वत्थुणो जुत्तो॥ ४७ ॥
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१. स्वपर्याय स्वद्रव्यादि ते आत्ममां अस्ति स्वभावधी छे अने परपर्याय परद्रव्यादि ते आत्ममां नास्ति स्वभावधी छे.

× ×		
श्रीस्था- 🎇	आ गाथानो अर्थ कहेल छे. ' प्रैतिक्षणं क्षयिणो भावा ' इति–आ वचनथी तमारा प्रतिपाद्य विषयतुं जे क्षणभंगुर-	🌋 १ स्थाना-
नाङ्गस्रत्र 🌋	रूप विज्ञान उत्पन्न थाय छे ते क्षणिक विज्ञान वाक्यार्थ ग्रहण परिणामथी असंख्यात समयोवडे ज थाय छे. दरेक समयमां	🛞 ध्ययने
सानुवार 🎇	बोलनारनो नाश थये छते क्षणिक विज्ञान ज तमे कही शको तेम नथी. जे कारणथी पद संबंधी एक एक अक्षर पण असंख्यात	अात्म-
	समयमां उत्पन्न थाय छे. सूंख्यात अक्षरवाळं पद छे, संख्यात पदवाळुं वाक्य छे; माटे तेना अर्थना ग्रहण परिणामथी समयमां	है। सिद्धिः
	ज नाश पामेल वक्तानों सर्व क्षणभंगुर विज्ञानवाद अयोग्य छे. कह्युं छे केः	हैं २ सूत्रम्.
×	कह वा सव्वं खणियं विन्नायं?, जई मई सुयाओत्ति। तदसंखसमयसुत्तत्थ-गहणपरिणामओ जुत्तं॥४८॥	× × ×· ×·
×	नउ पइसमयविणासे, जेणेकेकक्खरंपि य पयस्स । संखाईयसमइयं, संखेजाइं पयं ताइं ॥ ४९ ॥	१ स्थाना- घ्ययने आत्म- सिद्धिः २ स्रत्रम्.
11 7 7 11 XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	संखेजपयं वक्कं, तदत्थगहणपरिणामओ होजा। सब्वखणभंगनाणं, तद्जुत्तं समयनट्टस्स ॥ ५०॥	
×	आ त्रण गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. सर्वथा नाश स्वीकारे छते तृप्ति, अम, ग्लानि, साधर्म्य, विपक्ष, प्रत्ययादि,	×   ×   ×
8	तथा अध्ययन, ध्यान अने भावना ए सर्रे नहि घटी झके; कारण के पूर्व संस्कारनी अनुद्वत्ति( परंपरा )मां तृप्ति वगेरेनी	X
$\sim$	योग्यता होइ शके [ जेमके भोजन करती वखते भोजन करनार क्षणिक होवाथी प्रत्येक काळ लेतां भोजन करनार भिन्न भिन्न	
	थशे अने भोजनकियाने अंते ते भोक्ता पण रहेशे नहि तो तृप्ति कोने थशे ? एम श्रम वगेरेमां जाणी लेवुं ]. भाष्यकार कहे छे के:-	× :
*	१. दरेक क्षणमां भवो नाशवंत छे.	× II २२ II
×		*    २२    * *
₿ <b>⊘</b>		l, <b>×</b> ,

•...

£	तेत्ती समो किलामो, सारिक्खविवक्खपच्चयाईणि। अज्झयणं झाणं भावणा य का सव्वनासंमि ? ॥ ५१ ॥
1	
	्आ गाथाने। भावार्थ उपर आशी गयेल छे. अहिं घणुं कहेवानुं छे ते तो स्थानांत्रथी जाणवुं. तेवी ज रीते स्थिति (धुव),
	त्पत्ति अने नाशरूप आत्मा, ध्रुवता( सत्ता )नी अपेक्षाए नित्य छे, अने नित्यपणुं होवाथी एक छे. उत्पत्ति अने नाशनी
	षेक्षाए तो आत्मा अनित्य छे अने अनित्यपणुं होवाथी अनेक छे. भाष्यकार पण कहे छे केः—
	।मणंतपज्जयमयं, वत्थुं भवणं च चित्तपरिणामं। ठिइविभवभङ्गरूवं, णिच्चाणिच्चाइ तोऽभिमयं॥ ५२ ॥
स्र	हुदुक्खबंधमोक्खा, उभयनयमयाणुवत्तिणो जुत्ता। एगयरपरिच्चाए, सब्वब्ववहारवुच्छित्ति।५३।(युग्मं)
	दरेक वस्तु अनंतपर्यायवाळी छे, अने त्रिभुवननी पेठे उत्पाद, स्थिति अने नाशरूप नित्यानित्यादि अनेक विचित्र
पां	रिणामवाली मानेल छे माटे उभय नयना मतने अनुसरनाराने ज सुख–दुःख, बंध–मोक्ष वगेरे घटी शके छे, पण
बेग	मांथी एक नयने छोडी देवाथी सर्व व्यवहारनो विच्छेद थाय छे. (५२–५३) वळी कथंचित् आत्मा एक छे ते कारणथी
নী	नोना मतमां पदार्थनो सामान्य विशेष उभयरूप होवाथी कोइपण पदार्थ एक अथवा अनेक सर्वथा नथी. जो कहेशो
के	; वस्तु विशेषरूप ज छे, तो विशेषेथी भेद-अभेदस्वरूपवडे-विचारतां जे सामान्यनो अंसंबंध छे ते आ श्रमाणे-
	१. केमके पर्यायनयना मते सर्वथा नाज्ञ यतो होवाथी मरेलानो पेठे सुखदुःखादि न संभवे अने द्रव्यनयना मते आकाज्ञादिनी
<del>})</del>	रे सर्व नित्य होवाणी सुखदुःखादि न घटी शके.

श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ २२ ॥ *******	सामान्य, विशेषोथी भिन्न छे के आभिन्न ? ते साक्षात् जणातो न होवाथी भिन्न नहि थाय, केमके साक्षात् नहि देखाती वस्तुनो विद्यमानता(सत्ता)वडे व्यवहार करवाने शक्य नथी. जो आविद्यमान वस्तुनो पण व्यवहार स्वीकारशो तो गधेडाना शींगडानो पण प्रसंग आवी जाय. अथवा जो अभिन्न पक्ष ( सामान्य विशेषोथी आभिन्न ) स्वीकारशो तो ते सामान्य मात्र छे के विशेष मात्र छे ? जो सामान्य मात्र होय तो एक(आत्मा)ने विषे सामान्य एक होय नहि, कारण के सामान्य एक ध्वाथी संकीर्ण व्यवस्था थशे. जेम घटमां घटत्व सामान्य छे पण कंबू, प्रीवादि विशेषनी प्रतीति थशे नहि. जो विशेष मात्र स्वीकारशो तो विशेषो अनेक रूप छे तेथी संकीर्ण व्यवस्था थत्रा नहि पामे. तेम एक आत्माने विषे आसन्त्व सामान्य छे अने दुःखसुखादि विशेषो अनेक रूप छे तेथी संकीर्ण व्यवस्था थत्रा नहि पामे. तेम एक आत्माने विषे आत्मत्व सामान्य छे अने दुःखसुखादि विशेषो छे; माटे सामान्य स्वीकार थवाथी दुःखसुखादिनी प्रतीति थशे नहि. आईं टीकाकार कहे छे—अमारावडे सामान्य अने विशेषनो एकांतथी मेद–अभेद स्वीकार करायेल नथी परंतु असदश रूप गौण करीने अने तुल्य रूप मुख्य करीने समपणे जणाता संामान्य रूप कहेवाय छे. कह्युं छे केः—	XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	१ स्थाना- ध्ययने एकात्मनि सामान्य- विशेषवादः
	१. ब्राह्मण क्षत्रियादि जातिविशेषमां मनुष्यमां मनुष्यत्वरूप सामान्यने गोण करी अने क्षत्रियादिनी अपेक्षाए ब्राह्मणने मुख्य करीने विशेषनो व्यवहार कराय छे. २ ब्राह्मण क्षत्रियादि जातिविशेषने गोण करी अने मनुष्यत्वरूप सामान्यने मुख्य करी अर्धात् सर्व मनुष्यो सरखा छे एम सामान्य व्यवहार कराय छे.	****	॥ २२ ॥

निर्विद	ोषं' ग्रहीताश्च, भेदाः सामान्यमुच्यते । ततो विशेषात्सामान्य-विशिष्टत्वं न युज्यते ॥ ५४ ॥
	समभावेन, ज्ञायमाना इमे किल । प्रकल्पयन्ति सामान्य-विशेषस्थितिमात्मनि ॥ ५५ ॥
	ज कारणथी ज सामान्य रूपवडे आत्मा एक छे अने विशेष रूपवडे अनेक छे. व्यतिरेकथी एक आत्माना अभावयडे
-	अनेक ) आत्माओने अनात्मापणानो प्रसंग आववाथी आत्माओ <mark>उ</mark> ं तुल्य रूप नथी. एम कहेवुं नहिं; कारण के तुल्य रूप
	छे−'उपयोगऌक्षणो जीव' इति वचनात् उपयोगरूप एक लक्षणपणुं होवाथी सर्व आत्माओ एक रूपवाळा
छे. एवी	रिति एक रुक्षण होत्राथी एक आत्मा छे अथवा जन्म, मरण अने सुखदुःखादिना संवेदनो (भोगववामां) कोइ पण
अन्य स	हायक नहि होवाथी एक आत्मा छे एम भाववुं. अहिं सर्व सूत्रोनेविषे कथंचित्( कोइक अपेक्षा) नुं स्मरण
करवुं. उ	अगिरोधबडे कथंचित्वादने सर्व वस्तुनी व्यवस्थानुं निबंधन होवाथी. कह्युं छे के-स्याद्वादाय नमस्तरमै, यं
विना क	सकलाः कियाः। लोकद्वितयभाविन्यो, नैव साङ्गत्यमित्रति ॥१॥ ते स्याद्वादने नमस्कार थाओ के जे स्याद्वाद विना
	कमां थनारी सर्व क्रियाओ योग्य संगतिने पामती नथी. तथा-नयास्तव स्यात्पदसत्त्वलाञ्छिता, रसोपविद्धा
	हिधातवः । भवन्त्यभिष्रेतफला यतस्ततो, भवन्तमायाः प्रणता हितैषिणः ॥ २॥ रसवडे सिद्ध करेल लेह
	नी जेम स्यात्पदरूप सत्त्ववडे लांञ्छित तमारा नये। ( नैगमादि ) छे, जेथी इच्छित फळने आपनारा थाय छे, तेथी
	आ बे श्रोकोनो भावार्थ उपरोक्त छे.

श्रीस्था- नाङ्गखत्र सम्नुवाद ॥ २३ ॥	तेमने हितेच्छ आर्यपुरुषो नमस्कार करे छे. ( स. २ ) आत्मानुं एकपणुं उपर कहेल रीतिथी स्वीकार कर्या छतां पण केटलाएक( दर्शनकारो )वडे आत्मानुं निष्क्रियपणुं स्वी- कार करायेलुं छे. आ कारणथी तेनुं निराकरण ( खंडन ) करवा माटे आत्मानुं क्रियावानपणुं कहेवानी इच्छावाळा सत्रकार क्रियाना कारणभूत दंडनुं स्वरूप प्रथम कहे छे: एगे दंडे । सू० ३, एगा किरिया । सू० ४, एगे लोए । सू० ५, एगे अलोए । सू० ६ म्लार्थ:-दंड एक छे. किया एक छे. लोक एक छे. अलोक एक छे. टीकार्थ:दंड एक छे. किया एक छे. लोक एक छे. अलोक एक छे. राहत कराय छे ते दंड, ते द्रव्यथी अने भावथी वे प्रकारे छे. द्रव्यथी लाकडी, भावथी खराब रीते प्रवर्तावेल मन विगेरे. (स०३)	* १. स्थान ध्यय दण्डाक्रि रोक रोकाः ३-४-५ स्रत्रापि	ाने या- त- : । :-६
	मूलार्थः-दंड एक छे. किया एक छे. लोक एक छे. अलोक एक छे. टीकार्थः-'एगे दंडे'-विशेप विवक्षा न करवाथी एक, दंड्यने-ज्ञानादिरूप ऐश्वर्यना हरण करवाथी आत्मा जेनावडे सार रहित कराय छे ते दंड, ते द्रव्यथी अने भावथी बे प्रकारे छे. द्रव्यथी लाकडी, भावथी खराब रीते प्रवर्तावेल मन विगेरे. (स०३) ते दंडवडे आत्मा किया करे छे एटले क्रियाने कहेवामां आवे छे. 'एगा किरिया' विशेष विवक्षा न करवावडे करण मात्रनी विवक्षा होवाथी एक छे. करवुं ते क्रिया. कायिका बगेरे तेनां प्रकारो छे अथवा 'एगे दंडे एगा किरिया' त्ति-आ बन्ने सत्र- बडे अक्रियापणाना निषेधवडे आत्मानुं सक्रियपणुं कहेल छे. जे कारणथी दंड अने क्रिया शब्दवडे तेर क्रियानां स्थानो प्रति- पादन करेल छे तेमां १ अर्थदंड, २ अनर्थदंड, ३ हिंसादंड, ४ अकस्मात्दंड अने ५ टष्टिविपर्यासदंड-ए पांच प्रकारे दंड, ते परना प्राणहरणस्वरूप दंड शब्दथी ग्रहण करेल छे. वधनुं समानपणुं होवाथी दंडनुं एकपणुं जाणवुं. क्रिया शब्दवडे	**** *********************************	11

 $\hat{\mathbf{x}}$ 

	***
ते। १ मृषाप्रत्यया, २ अदत्तादानप्रत्यया, ३ आध्यात्मिकी, ४ मानप्रत्यया, ५ मित्रवे त्यया, ८ ऐर्यापथिकी–आ प्रमाणे आठ प्रकारे क्रिया कहेल छे. तेनुं एकपणुं तो करण म	
कियानुं विशेष स्वरूप तेना विवरण प्रसंगे ज कहेशुं. आत्माने अक्रियवानपणुं मान	नारनुं खंडन आ प्रमाणे छेः-जेओए 🎇
निश्चय आत्मानुं अक्रियवानपणुं स्वीकारेल छे तेम तेओए भाक्तृपणुं स्वीकारेल छे. उत्पत्तिनुं सामर्थ्य छते भोक्तापणुं उत्पन्न थाय छे. ते ज क्रियापणुं छे. हवे वादी कहे	छे केः-प्रकृति करे छे अने पुरुष (आत्मा) 🕌
भोगवे छे. प्रतिबिंब न्यायवडे ए प्रमाणे कहेवुं अयुक्त छे, कारण के कथंचित् सक्रियपणा वि उत्पत्ति नहीं थाय; केमके रूपांतरनुं परिणमनरूप प्रतिबिंब छे. वळी जो कहेशो के प्रकृ	तिना विहाररूप बुद्धिथी ज सुखादि अर्थनुं 🏽 🌋
प्रतिबिंब पडे छे, परंतु आत्माथी प्रतिबिंब पडतुं नथी. त्यारे आत्मानुं ते स्थितिमां रहे आहं घणुं कहेवानुं छे ते तो स्थानांतरथी जाणवुं. (स्र० ४) उक्त स्वरूप विशिष्ट अ	गत्माना आधारनुं स्वरूप निरूपण करवा 🎼 🎇
माटे कहे छेः-' एगे लोए ' असंख्यात प्रदेशवडे अने अधो, तिर्यग् आदि दिशान छे. लोक्यते-केवळज्ञानवडे जे जोवाय छे ते लोक. ते धर्मास्तिकायादि द्रव्योनो आ	धारभूत आकाशविशेष छे. आ संबंधमां 👯
व ह्यु छे-जे क्षेत्रमां धर्मास्तिकायादि द्रव्योनी प्रवृत्ति थाय छे ते क्षेत्र ते द्रव्यो सहित ( एकला आकाशनी प्रवृत्ति होय ) ते अलोक. " अथवा लोक, नामादि भेदथी आठ	गरको से नहां से के
	지역에 한 명· 영· 영· 영· 위··

श्रीस्था- नाङ्गसत्रत्र सानुवाद ॥ २४ ॥	नामं ठवणाद्विए, खित्ते काले भवे य भावे य । पज्जवलोए य तहा, अट्टाविहो लोयनिक्सेवो ॥५६॥ १ नाम अने २ स्थापना सुगम छे. ३ द्रव्यलोक-जीव-अजीवद्रव्यरूप, ४ क्षेत्रलोक-अनंतदेशात्मक आकाशमात्र, ५ काललोक-समय, आवलिकादि,६ भवलोक-नारक वगेरे, पोतपोताना भवमां वर्तता,जेमके मनुष्यलोक, देवलोक, ७ भावलेक- औदयिकादि छ भावो. ८ पर्यायलोक-द्रव्योना पर्यायमात्ररूप. ए आठ प्रकारना लोकन्तुं केवलज्ञानवडे जोवापणुं सामान्य होवाथी एकपणुं कह्युं छे. (सू०५) लोकनी व्यवस्था, तेनो प्रतिपक्षभूत अलोक छते थाय छे माटे हवे अलोक कहे छे-'एगे अलोए' अनंतप्रदेशात्मकपणुं छते पण तेनी विवक्षा न करवावडे एक अलोक छे. लोक शब्दता निषेधथी अलोक छे पण न जोवापणाए नहिः कारण के केवलज्ञानरूप प्रकाशवडे अलोकनुं पण जोवापणुं छे. दांका-लोकना एक देश( विभाग)ना प्रत्यक्षपणाथी अने तेना देशांतरने पण बाधक प्रमाणनो अभाव होवाथी अमे लोकनी संभावना करीए छीए, परंतु जे आ अलोकनुं देशथी पण अप्र- त्यक्षपणुं होवाथी आ अलोक छे एवो निश्वय करवा माटे केम शक्तिमान थशो ? जे कारणथी तमे एकत्रपणाए प्ररूपो छो ? समाधान-अनुमानथी ए प्रमाणे कहीए छीए. ते आ प्रमाणे-लोक, व्युत्पत्तिवाळा शुद्ध पदनुं कथन ( नाम ) होवाथी विद्य- मान विपक्षवालो छे. आहं जे वस्तु व्युत्पत्तिवाला शुद्ध शब्द वहे कहेवाय छे, तेनो विक्षेप होय छे एम जाणवा योग्य छे. जेम	****	१ स्थाना- ध्ययने दण्डक्रि <b>या-</b> लोका- लोकाः । ३-४-५-६ स्रत्राणि.
****	घटनो [ विपक्ष ] अघट छे तेम व्युत्पत्ति विशिष्ट शुद्ध पदवाच्य लोक छे ते कारणथी विपक्ष सहित छे. जे लोकनो विपक्ष ते १. अहिं प्रसह्य प्रतिषेधथी 'नझ्' समास करवो, परंतु पर्युदासथी नहि. न लोक: अलोक: ।	*****	॥ २४ ॥

×××	
×	अलोक, ते कारणथी अलोक छे. बळी दांका–न लोकः अलोकः–एम कहेवाथी घट, पट वगेरेमां ज कोई पण एक वस्तु
*****	( अलोक ) थरो. अहिं बीजी वस्तुनी कल्पनावडे हां ? ( अर्थात अलोकनी ज़ुदी कल्पना शामाटे करवी ? ). समाधान-एम
$\sim$	कहेवुं नहिं. जे हेतुथी निषेधना सद्भावथी निषेध्य–निषेध करवा योग्यना अनुरूपवडे–समानपणे निषेध होवुं जोइए. निषेध्य
$\otimes$	लोक छे, ते आकाशविशेष जीवादि द्रव्यनुं पात्र छे, आथी चोक्कस अलोक पण आकाशविशेषरूप होनुं जोइए. जेम अहिं
X	लोक छे, ते आकाशविशेष जीवादि द्रव्यनुं पात्र छे, आथी चोक्कस अलोक पण आकाशविशेषरूप होवुं जोइए. जेम अहिं 'अपण्डित ' एम कहे छते विशिष्ट ज्ञान रहित चेतन ज जणाय छे परंतु अचेतन घटादि नहिं, तेनी माफक अलोक पण
×	लोक समान हावु जाइए. कह्यु छ कः
××	लोगस्सऽत्थि विवक्लो, सुद्धत्तणओ घडस्स अघडोव्व ।
XXXXXX	[प्रेरकः] स घडादी चेव मती [गुरुः], न निसेहाओतदणुरूवो ॥ ५७ ॥
××	आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. ( स० ६ )
×	लोकअलोकना विभागनो करनार धर्मास्तिकाय होवाथी तेनुं स्वरूप कहे छे
××	एगे धम्मे । सू० ७, एगे अधम्मे । सू० ८, एगे बंधे । सू० ९, एगे मोक्खे ।
***	सू० १०, एगे पुण्णे । सू० ११, एगे पावे । सू० १२, एगे आसवे । सू०
×	१३, एगे संबरे । सू० १४, एगा वेग्रणा । सू० १५, एगा निज्जरा । सू० १६
× ×	
X	

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ २५ ॥		१ स्थाना- ध्ययने धर्माास्तिका- याद्या निर्ज- रान्ताः ७–१६ सूत्राणि.
-----------------------------------------------	--	---------------------------------------------------------------------------------------

अा बन्ने गाथानो भावार्थ कहेवायेल छे. (सू० ७-८) धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायवर्ड उपकार कराएल ज लोकवत्ती संसारी जीव, दंड सहित अने सक्रिय छे ते कर्मवडे बंधाय छे; माटे हवे बंधचुं निरूपण करवामां आवे छे:-'एगे बंधे' बंधाचुं ते 	××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	तेम. तथा स्थितिपरिणामने पामेला( जीव, पुद्गलो )ने माछला वगेरेने पृथिवीनी जेम स्थितिमां सहायक थाय ते अधर्मा- स्तिकाय. अथवा विवक्षावडे जल. अहिं आ अनुमान छे:-गति ने स्थिति, कार्य होवाथी घटनी माफक अपेक्षों कारणवाळी छे. त्रण लोकमां जे पोलाण अथवा अभाव ए विपक्ष दृष्टांत छे. वळी कंइक विशेष अलोकनो स्थीकार कयें छते लोकना परिमा- णने करनारा धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायवडे बन्नेनो स्वीकार अवश्य थवो जोइए. जो स्वीकार नहिं करवामां आवे तो आकाशनुं समतोलपणुं छते लोक अथवा अलोक एवो भेद नहिं रहे. तेमज केवल आकाश छते गतिवाळा जीवो अने पुट्गलोने प्रतिघात( अटकाव)नो अभाव होवाथी कोई चोकस स्थान नहिं रहे; कारण के संवंधना अभावथी सुख, दुःख अने वंध वगरेनो संव्यवहार नहिं थाय. कह्युं छे के: तम्हा धम्माधम्मा, लोगपरिच्छेयकारिणो जुत्ता।इहराऽऽगासे तुल्ले, लोगोऽलोगोत्ति को भेओ?॥५८॥ लोगविभागाभावे, पाडिघाताभावओऽणवत्थाओ । संववहाराभावो, संबंधाभावओ होज्जा ॥५९॥
लोगविभागाभाव, पांडघाताभावआऽणवत्थाआ । सववहाराभावा, सबधाभावआ हाजा ॥९९॥ आ बन्ने गाथानो भावार्थ कहेवायेल छे. (सू० ७-८) धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायवडे उपकार कराएल जे लोकवर्त्ती संसारी जीव, दंड सहित अने सक्रिय छे ते कर्मवडे बंधाय छे; माटे हवे बंधनुं निरूपण करवामां आवे छे:-'एगे बंधे' बंधावुं ते		प्रतिघात( अटकाव )नो अभाव होवाथी कोई चोकस स्थान नहिं रहे; कारण के संबंधना अभावथी सुख, दुःख अने बध वगरेनो संब्यवहार नहिं थाय. कहुं छे केः— तम्हा धम्माधम्मा, लोगपरिच्छेयकारिणो जुत्ता।इहराऽऽगासे तुल्ले, लोगोऽलोगोत्ति को भेओ?॥५८॥
💭 बिध, केषीय सहित होवाथा जान, ज कमने याग्य पुर्गलान प्रहण कर छ ते पेय एवं। तात्पय छ, ते पेय प्रछात, त्रियात, त्रे रा	× × × × × × ×	लोगविभागाभाव, पाडघाताभावआऽणवत्थाआ । सववहाराभावा, संबधाभावआ हाजा ॥ ९९॥ आ बन्ने गाथानो भावार्थ कहेवायेल छे. (सू० ७–८) धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायवडे उपकार कराएल जे लोकवर्त्ती संसारी जीव, दंड सहित अने सक्रिय छे ते कर्मवडे बंधाय छे; माटे हवे बंधनुं निरूपण करवामां आवे छे:-'एगे बंधे' बंधानुं ते बंध. कषाय सहित होवाथी जीव, जे कर्मने योग्य पुद्गलोने ग्रहण करे छे ते बंध एवो तात्पर्य छे. ते बंध प्रकृति, स्थिति, प्रदेश

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ २६ ॥	अने अनुभावना भेदथी चार प्रकारे छे तो पण बंधनुं समानपणुं होवाथी एक बंध छे. अथवा मुक्त थयेलने फरी बंधनो अभाव होवाथी एक बंध छे. वळी द्रव्यथी बंध वेडी वगेरे, भावथी कर्मवडे वंध, ते द्रव्य अने भाव वंधमां बंधननुं समानपणुं होवाथी एक बंध छे. रांका-जो तमने जीव-कर्मनो संयोग ते बंध इच्छित छे तो ते अभिमान के आदिरहित छे ? एम वे विकल्प थाय छे. तेमां जो आदिमान पक्ष स्वीकारशो तो शुं पहेलो आत्मा अने पछी कर्म ? अथवा पहेलां कर्म अने पछी आत्मा ? अथवा कर्म अने आत्मा बने साथे उत्पन्न थाय छे ? आ त्रण विकल्प थाय छे. तेमां गधेडाना शींगडानी माफक हेतुनो अभाव होवाथी आत्मानी उत्पत्ति प्रथम संभवती नथी, कारण सिवाय उत्पन्न थयेल(वस्तु)नो अकारणथी ज नाश थाय. वली वादी कहे छे-अनादि ज आत्मा छे तो पण कारणनो अभाव होवाथी आकाशनी माफक आत्मानो कर्म साथे योग घटमान नहि थाय. जो कारण सिवाय पण कर्म साथे योग थाय तो मुक्त जीवने पण कर्मनो योग थवो जोइए. जो आ आत्मा नित्य मुक्त ज छे तो मोक्षनी जिज्ञासावडे शुं ? अर्थात् मोक्षनी जिज्ञासा ज न होय अने बंधनो अभाव छते मुक्तना कथननो आकाशनी माफक अभाव ज थाय अर्थात् ' आ मुक्त छे' एम कही श्रंकाशे नहि.	२. स्थाना- ध्ययने बंधस्वरूपम् २. सूत्रम् *
****	मुक्तना कथनना आकाशना माफक अमाव ज थाय अथात् आ मुक्त छे एम कहा शकाश नाह. प्रथम कर्म अने पछी आत्मा. आ बीजो विकल्प पण बरोबर नथी; कारण के कर्त्तानो अभाव होवाथी आत्माथी पूर्वे कर्मनी उत्पत्ति न थाय. न करायेल कार्यने कर्म कहेचुं ते पण इष्ट नथी. कारण विना उत्पत्तिनो अकारणथी ज नाश थाय छे. कर्म अने जीवनुं साथे उत्पन्न थवुं ए त्रीजो पक्ष पण योग्य नथी. कारणना अभावथी समकाले बन्नेनी उत्पत्ति छत्ते जमणा–डाबा गायना श्रत्संसारीनीवोनो अपेक्षाए. २ आ त्रण विकल्प आदिमान् पक्षमां ज करेल छे. ३ अहिं प्रथम विकल्प कहो.	*** *** *** *** *** *** *** ***

www.kobatirth.org

शींगडानी जेम, ' आ कर्त्ता, आ कर्म ' आवा प्रकारने। योग्य व्यवहार नहि थाय. वली जीव अने कर्मनो योग आदि रहित छे; ए बीजा (अनादि) पक्षनो स्शीकार करवाथी आत्मा अने कर्मनो वियोग नहि थाय. कारण ? अनादिपणुं होवाथी ज आत्मा अने आकाशना संयोगनी माफक. अहिं समाधान करे छे–आदिमान् संयोग पक्षना दोपो, अमारावडे आदिमान् पक्ष न स्वीकारवाथी ज निपेध करायेल छे; अने अनादि जीव–कर्मना योगने विषे अनादिपणुं होवाथी जीव–कर्मनो वियोग नहिं थाय एम तमे कहेलुं ते अयुक्त छे; केमके संयोगनुं अनादिपणुं छते पण सुवर्ण अने पत्थर( माटी )नी जेम वियोगनी उपलब्धि थाय एम तमे कहेलुं ते अयुक्त छे; केमके संयोगनुं अनादिपणुं छते पण सुवर्ण अने पत्थर( माटी )नी जेम वियोगनी उपलब्धि थाय एन तमे कहेलुं ते अयुक्त छे; केमके संयोगनुं अनादिपणुं छते पण सुवर्ण अने पत्थर( माटी )नी जेम वियोगनी उपलब्धि थाय छ–जणाय छे. भाष्यकार कहे छे:– जह वेह कंचणोवल्ठसंजोगोऽणाइसंतइगओऽवि।वोच्छिज्जइ सोवायं, तह जोगो जीवकम्माणं॥ ६० ॥ जेम कांचन अने उपलनो अनादिकालनो चाल्ये। आवेल संयोग पण, उपाग( अग्नितापादि )थी नाद्य पामे छे तेम जीव अने कर्मनो संयोग ( तप संयमादिथी ) नाघ पामे छे. (६०) तेम बीज अने अंकु.नी परंपरानी जेम अनादि संताननो नाध देखाय छे. भाष्यकार कहे छे के:– अन्नतरमणिव्वत्तियकज्जं बीयंकुराण जं विहयं । तत्थ हुओ संताणो, कुक्कुडियंडाइयाणं च ॥ ६१ ॥ जेम बीज अने अंकुरमांथी केइ पण एक वस्तु, कार्यने उत्पन्न कर्या सिवाय नाध पामे ते। तेमां ( वीज–अंकुरमां ) संता- ननो नाध थाय छे. तेमज क्रुकडी ने इंडुं, अने पुत्र ने पिता बंगरेमां पण समजवुं. ( ६१ ) ( स० ९ )
क्र छे, ए पाजा (अनादि) पक्षना स्वाकार करवाया जातना अने केनना विपान नाह यापर कारण र अनादिपछे होवाया ज जातना क्र क्र अने आकाशना संयोगनी माफक. अहिं समाधान करे छे–आदिमान् संयोग पक्षना दोषो, अमारावडे आदिमान् पक्ष है न स्वीकारवाथी ज निषेध करायेल छे; अने अनादि जीव–कर्मना येगने विषे अनादिपणुं होवाथी जीव–कर्मनो वियोग नहिं हिं
🐐 थाय एम तमे कहेलुं ते अयुक्त छे; केमके संयोगनुं अनादिपणुं छते पण सुवर्ण अने पत्थर( माटी )नी जेम वियोगनी उपलब्धि 🌋 थाय छे–जणाय छे. भाष्यकार कहे छे:–
🤹 जह वेह कंचणोवलसंजोगोऽणाइसंतइगओऽवि।वोच्छिज्जइ सोवायं, तह जोगो जीवकम्माणं॥ ६०॥ 🌋 जेम कांचन अने उपलनो अनादिकालनो चाल्यो आवेल संयोग पण, उपाय( अग्नितापादि )थी नाज्ञ पामे छे तेम जीव 🌋
अने कर्मनो संयोग ( तप संयमादिथी ) नाश पामे छे. (६०) तेम बीज अने अंक्रुनी परंपरानी जेम अनादि संताननो नाश देखाय छे. भाष्यकार कहे छे केः—
देखाय छे. भाष्यकार कहे छे केः— अन्नतरमणिव्वत्तियकज्जं बीयंकुराण जं विहयं । तत्थ हओ संताणो, कुक्कुडियंडाइयाणं च ॥ ६१ ॥ जेम बीज अने अंकुरमांथी कोइ पण एक वस्तु, कार्यने उत्पन्न कयी सिवाय नाश पामे तो तेमां ( वीज-अंकुरमां ) संता ननो नाश थाय छे. तेमज कुकडी ने इंडुं, अने पुत्र ने पिता वगेरेमां पण समजवुं. ( ६१ ) ( स्र० ९ )
ननो नाश थाय छे. तेमज कुकडी ने इंडुं, अने पुत्र ने पिता वगेरेमां पण समजवुं. ( ६१ ) ( स॰ ९ )
8

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ २७ ॥	अनादि बंधनो सद्भाव छते पण कोइक भव्यात्मानो मोक्ष थाय छे, माटे हवे मोक्षतुं स्वरूप कहे छे:-' एगे मोक्खे ' मूकावतुं-कर्मपाञ्चथी छूटवुं ते आत्मानो मोक्ष. वाचकवर्य उमास्वातिकहे छे के-'' कृत्स्नकर्मस्वयान्मोक्षः।'' सर्व कर्मनो क्षय थवाथी मोक्ष थाय छे. ते मोक्ष एक छे. ज्ञानावरणीयादि कर्मनी अपेक्षाए आठ प्रकारे छे तो पण मूकाववाना समानपणाथी, अथवा मुक्त(आत्मा)नो फरी मोक्षनो अभाव होवाथी, अथवा इपत्प्राग्भारा नामे पृथ्वीरूप क्षेत्रलक्षण ते द्रव्यार्थपणाए एक छे. अथवा द्रव्यथी मोक्ष-बेडी बगेरेथी छूटवुं, भावथी मोक्ष-कर्मथी छूटवुं ते बनेमां छूटवानुं समानपणुं होवाथी मोक्ष एक छे. ज्ञांका-	** ** १. स्थाना- घ्ययने भोक्षस्व- ** रूपम् १० सूत्रम्.
	जीव अने कर्मनो संयोग अंतरहित छे, कारण के जीव ने आकाशना संयोगनी जेम अनादि छे तो कर्मना वियोगरूप मोक्ष होवाथी जीवने मोक्ष केम संभवे ? समाधान-अनादित्व हेतु अनैकान्तिक छे. धातु ( सुवर्ण सिवाय ) अने कांचननो संयोग अनादि छे, ते पण क्रिया(तापादि)विशेषथी अंत सहित देखाय छे अर्थात् तेनो वियोग थाय छे. ए प्रमाणे आ जीव अने कर्मनो संयोग पण (अनादि छतां) सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्रवडे अंत सहित थशे. जीव अने कर्मनो वियोग ते मोक्ष कहेवाय हे. रांका-नारक वगेरे पर्यायस्वरूप संसार छे, बीजो संसार नथी, ते नारकादि पर्यायोथी जुदो कोई जीव ज नथी, नारकादि पर्यायो ज जीव छे; कारण के तेनो एक ज अर्थ होवाथी संसारनो अभाव छते नारकादि पर्यायस्वरूपनी जेम जीवनो अभाव ज छे. अर्थात् नारकादि पर्यायस्वरूप संसारा अभाव छते जीवनो अभाव छे माटे मोक्ष असत् पदार्थ छे. भाष्यकार कहे छे:- जं नारगादिभावो, संसारो नारगाइभिन्नो य । को जीवो तं मन्नसि?, तन्नासे जीवनासोत्ति ॥ ६२ <sup>3</sup> ॥	**************************************
	४. आ गाथा भाष्यमां १९७८ मी छे, प्रभास गणधरने उद्देशीने कहेवायेल छे. ** ** **	** ** ** ** **

~~~~		~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
	आ गाथानो भावार्थ कहेवाई गयो छे. अहिं समाधान-नारकादि पर्यायरूप संसारनो अभाव छते अर्थान्तर न होवाथी	
	नारकादि पर्यायस्वरूपनी जेम सर्वथा जीवनो अभाव ज छे तेम जे कहेवुं ते अयुक्त छे, कारण अनर्थान्तर हेतु, अनैकान्तिक छे. 🌋	
ँ	कारण ? सुवर्ण अने मुद्रिकानुं अनर्थान्तरपणुं सिद्ध छे पण मुद्रिका( वींटी )ना आकारनो नाश थये छते सेानानो नाश थतो	
3	नथी, तेनी माफक नारकादि पर्याय मात्रनो नाश थये छते सर्वथा जीवनो नाश थशे नहि. भाष्यकार कहे छे केः-	
	न हि नारगादिपज्जायमेत्तनासंमि सव्वहां नासो । जीवद्दव्वस्स मओ, मुद्दानासेव्व हेमस्स ॥६३॥ 💈	
	आ गाथानो भावार्थ कहेल छे. वळी पण भाष्यकार कहे छे के-	
~~~~	कम्मकओ संसारो, तन्नासे तस्स जुज्जए नासो । जीवत्तमकम्मकयं, तन्नासे तस्स को नासो ?॥ ६४॥ 🏼	
\$	संसार कर्मकृत छे तेथी कर्मने। नाश थये संसारने। नाश घटे छे, पण जीवपणुं कर्मकृत नथी एटले कर्मनो नाश थये छते 👹	
	जीवने। नाज्ञ केवी रीते थाय ? अर्थात् न ज थाय. (स० १०) मोक्ष, पुण्यपापनो क्षय थवाथी थाय छे माटे पुण्य–पापनुं 🎼	
	स्वरूप कहेवा योग्य छे. तेमां पण मोक्ष अने पुण्यना शुभ स्वरूपनुं साधर्म्य होवाथी प्रथम पुण्यनुं स्वरूप कहे छे–'एंगे पुण्णे' 🥻	
	' पुण् ' धातु ग्रुभ अर्थमां छे. पुणति–ग्रुभ करे छे। अथवा ' पुनाति ' आत्माने पवित्र करे। छे, माटे पुण्य शुभ) कर्म छे. 🎼	
	सातावेदनीय वगेरे तेनां वेंतालीश प्रकारो छे. यथोक्तम्-	
	सायं उच्चागोयं, नरतिरिदेवाउ नाम एयाउ । मणुयदुगं देवदुगं, पंचेंदियजाति तणुपणगं ॥ ६५ ॥	
ġ.		
3		

खाना-

**RC II** 

☀ XXXXXXXX श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* 11 26 11

५ देवायु, ६–७ मनुष्यद्विक जाति, ११-१५ औदारिकादि

अने ४२ तीर्थंकरनामकर्म. आ

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	पण, अथवा दरक जीवा विचित्र ( भिन्नभिन्न ) होवाथी अनंत भेद छतां पण पुण्यनुं समानपणुं होवाधी एक पुण्य छे. इांका- ससलाना शींगडानी माफक प्रत्यक्षादि प्रमाणनो विषय न होवाथी कर्म ज विद्यमान नथी, जो कर्म ज नथी तो पुण्यकर्मनी सत्ता क्यांथी होय ? समाधान-आ कहेवुं असत्य छे; कारण के कर्म अनुमानथी सिद्ध छे. ते आ प्रमाणे-कर्म सुख-दुःखना अनुभवनो हेतु छे. कार्य होवाथी जेम बीज अंकुरनो हेतु छे तेम अहिं जाणवुं. जे अनुभवनो हेतु छे ते कर्म. ते कारणथी कर्म छे. कदाच आवी तमारी मति ( दांका ) थाय के-सुख-दुःखना अनुभव तो इष्ट अने अनिष्ट विषयनी प्राप्तिमय दृष्ट ज ( देखातो )हेतु थरे, पण औंद अदृष्ट कर्मनी कल्पना शा माटे करवी ? कारण के प्रत्यक्ष देखाता निमित्तने छोडीने अन्य निमित्तनुं अन्वेषण करवुं ते योग्य नथी. समाधान-ए तमारुं कथन युक्तिवाळुं नथी, कारण के हेतु व्यभिचारी छे. आहिं इष्ट शब्दादि विषयसुखना साधन सहित वे मनुष्योने साधनना फलमां तफावत जोवाय छे अर्थात् एकने दुःखनो अनुभव थाय छे अने बीजाने सुखनो अनुभव थाय छे. तेमज अनिष्ट साधनसंपन्न बन्ने मनुष्योने फलमां भेद जोवाय छे, एकने सुखनो अनुभव थाय छे अने बीजाने दुःखनो अनुभव थाय छे. आ विशेष ( भेद ) हेतु विना संभवी श्वरुगे नहिं. सुख दुःखना अनुभवना हेतरूप जे दृष्ट हेत ते साधनेनो विपर्यास होवाथी योग्य नथी. अविधिष्टर्थी सख-दःखनो अनुभव, कार्यपणं होवाथी
	छे अने बीजाने सुखनो अनुभव थाय छे. तेमज अनिष्ट साधनसंपन्न बन्ने मनुष्योने फलमां भेद जोवाय छे, एकने सुखनो

	***		***	
श्रीस्था-	* *	जो तुछसाहणाणं, फले विसेसो न सो विणा हेउं।		१ स्थाना-
नाङ्गसूत्र	**** ***	कज्जत्तणओ गोयैम !, घडो व्व हेऊ य से कम्मं ॥ ६८ ॥		ध्ययने
सानुवाद	×	आ गाथानो भावार्थ कहेवायो छे. कर्मनी सिद्धि माटे बीजुं अनुमानप्रमाण कहे छे-इंद्रियादि विशिष्ट होवाथी आ बालशरीर		पुण्यसत्ता
11 29 11	×	अन्य देहपूर्वक छे. आ अनुमानमां जे शरीर इंद्रियादिवाळुं छे ते शरीर अन्य शरीरपूर्वक जोवाय छे. जेम युवान शरीर		११ सत्रम्
	*****	बालदेहपूर्वक छे तेम इंद्रियादिवाळं आ बालशरीर छे, ते कारणथी अन्य शरीरपूर्वक छे, अने जे अन्यै शरीरपूर्वक आ	× × × ×	
		बालशरीर छे ते कर्म. ते कारणथी कर्म छे. भाष्यकार कहे छे के-		
	×	बालसरीरं देहंतरपुव्वं इंदियाइमत्ताओ । जह बालदेहपुव्वो, जुवदेहो पुव्वमिह कम्मं ॥ ६९ ॥		
		आ गाथानो भावार्थ कहेवायेल छे. इांका-कर्मनो सद्भाव छते पण एक पाप ज पदार्थ विद्यमान छे, परंतु पुण्य पदार्थ	***	
		नथी. जे पुण्यनुं फल सुख कहेवाय छे ते. तरतमयोगथी अल्प पापनुं ज फल छे, जे कारणथी पापनो परम उत्कर्ष ( वृद्धि )	× × × ×	
		छते अधममां अधम फूल थाय छे. तरतमयोगवडे अपकर्ष( ओछारा )ना मेदरूप पापनी मात्रानी विशेष इद्धि अने हानिथी		
	X	यावत् छेछो अपकर्ष, तेमां जे कांईपण पापनी मात्रा रहे छे तेमां ज अत्यंत शुभफलपणुं छे, पापना घटवाथी अने ते पापनो ज		
		१. आ गाथा, माष्यमां १६१३ मी छे, ते अग्निभूतिने उद्देशोने कहेल छे. २. आदि शब्दथी सुखित्व, दु:खित्व अने प्राणा-		
	****	पातादि हेतुओ जाणवा. २. अहिं अन्य शरीर ते कार्मण शरीर जाणवुं अने ते ज कर्म छे.	l≦ <b>×</b> 31	11 29 11
	X		***	

***	सर्वथा क्षय थवाथी मोक्ष थाय छे. उदाहरण-अत्यंत अपथ्य आहारना सेवनथी रोग थाय छे अने ते ज अपथ्य आहारनो थोडो
	थोडो घटाडो करवाथी छेवट अल्प अपथ्य आहारपणुं आरोग्यने करनारुं छे अने सर्वथा आहारना त्यागथी प्राणनो नाज्ञ थाय
<b>Š</b>	छे. भाष्यकार कहे छे केः— 👘 🖓 👘 👘 👘 👘 👘
***	पानुक्करिसेऽधमया, तरतमजोगाऽवकरिसओ सुभया। तस्सेव खए मोक्खो, अपत्थभत्तोवमाणाओ॥७०॥
	आ गाथानो भावार्थ कहवायेल छे. अहिं समाधान–अत्यंत अल्प पाप होवाथी सुखनो प्रकर्ष एम तमे जे कह्युं ते अयुक्त
***	ंछे, कारण के आ सुखना प्रकर्षनो अनुभव ते स्वानुकूल कर्मना प्रकर्षनो अनुभव होवाथी दुःखना  प्रकर्षना अनुभवनी  माफैक
×.	उत्पन्न थाय छे. जेम दुःखना प्रकूर्षनो अनुभव पोताना अनुरूप पापकर्मना प्रकर्षथी उप्तन थयेल छे एम तमारावडे स्वीकार
×.	करायेल छे, तेम आ सुखना प्रकर्षनो अनुभव पण प्रकर्ष अनुभूति होवाथी पोताने अनुरूप पुण्यकर्मना प्रकर्षथी उत्पन्न थशे
Š.	एवी रीते प्रमाणनुं फल छे. (सू०११) पुण्यनो प्रतिपक्षभूत पाप छे माटे हवे तेनुं स्वरूप कहेँ छेः-'एगे पावे' पादायति-
	आत्माने बांधे छे, विकलता करे छे, आत्माने पाडे छे, आत्माना आनंदरसने शोषे छे अने क्षीण करे छे ते पाप छे. ते ज्ञाना
****	aरणादि ब्याशी भेदरूप छे. ते कहे छे:
	नाणंतरायदसगं, दंसण णव मोहणीयछव्वीसं । अस्सायं निरयाऊ, नीयागोएण अडयाला ॥७१॥
×	निरयदुगं तिरियदुगं, जाइचउकं च पंच संघयणा।संठाणाविय पंच उ,वन्नाइ चउकमपसत्थं॥७२॥

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ३० ॥ *** *** *** ***	उवघाय कुविहयगई, थावरदसगेण होंति चोत्तीसं। सठवाओ मिळिआओ, बासीती पावपगईओ ॥७३॥ १-५ पांच ज्ञानावरणीय, ५-१० पांच अंतराय, ११-१९ नव दर्शनावरणीय, २०-४५' छ्वीस मोहनीय, ४६ असातावेदनीय, ४७ नरकायु, ४८ नीचगोत्र, हवे ४९ थी ८२ सुधीनी नामकर्मनी चोत्रीस प्रकृतिओ कहे छे. ४९-५० नरकगति अने नरकानुपूर्वी, ५१-५२ तिर्यंचगति अने तिर्यंचानुपूर्वी, ५३-५६ एकेंद्रियादि चार जाति, ५७-६१ पहेला सिवायना पांच संघयण, ६२-६९ पहेला सिवायना पांच संठाण, ६७-७० अशुभवर्णादि चार, ७१ उपघात, ७२ अशुभविहायोगति, ७३-८२ स्थावरदशक-ए सर्व मळीने ब्यासी पापप्रकृतिओ छे. (७१-७३) ते पाप ब्यासी मेदे छे तो पण पुण्यानुबंधी अने पापानुबंधी मेदथी बे प्रकारनुं पण छे, अथवा अनंत जीवोने आश्रित होवाथी अनंत प्रकारनुं पण छे, तथापि अशुभनुं समानपणुं होवाथी पाप एक छे. दांका-कर्म छते पण एक पुण्य ज छे, तेनो प्रतिपक्षभूत पापकर्म नथी. शुभ अने अशुभ फलोनी सिद्धि पुण्यशी ज थाय छे. ते आ प्रमाणेः-परम उत्कृष्ट जे आ शुभ फळ, ते	** * १ स्थाना- ** * * * * * * * * * * * * * * * * *
(*************************************	अनादि मिथ्यात्वीने उरयमां पण ते वे नथी. समकित पाम्या बाद मिथ्यात्वमोहनीय जत्रण भागे वहेंचाय छे अर्थात त्रण पुंज कराय छे. ३. नील ने रुष्णवर्ण, दुगभि गंध, तिक्त, कटुरस, गुरु, कर्केश, शीत अने रुक्ष ए चार स्पर्श ए नव मेद अशुभ छे. ४ पोताना अंगो-	× * * * * * * * * * * * * * * * * * * *

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	पुण्यना उत्कर्षनुं कार्य छे. पुनः पुण्यना उत्कर्षथी जे अल्प, अल्पतर अने अल्पतम फळ, ते तरतमयोगवडे अपकर्षना भेदविशिष्ट पुण्यनुं ज फल छे. तरतमयोगवडे अपकर्षना भेदनी छेत्रट परम प्रकर्षनी हानि पर्यंत, तथा पग्मप्रकर्षवडे हीन पुण्यनुं ओछामां ओछुं शुभ फळ-कंइक जे शुभ मात्रा ते ज अत्यंत दुःख. आ तात्पर्य छे. ते ज ओछामां ओछुं पुण्यविशिष्ट दुःख प्रकर्षनो सर्वथा नाश थये छते पुण्यात्मक बंधना अभावथी मोक्ष छे. जेम अत्यंत पथ्य आहारना सेवनधी पुरुषने परम आरोग्यनुं सुख थाय छे ते ज पुरुषने कंइक कंडक पथ्य आहारना त्यागथी अने अपथ्य आहारना द्वद्विथी आरोग्य सुखनी हानि थाय छे तेमज सर्वथा आहारना त्यागथी प्राणनो नाश थाय छे. अहिं पथ्य आहार उपमा छे अने पुण्य उपमेय छे, अर्थात् पुण्य पथ्य आहार समान छे. आईं समाधान करे छे-जे आ दुःखप्रकर्षनी अनुभूति ते सुखना प्रकर्षनी अनुभूति( अनुभत्र)नी माफक प्रकर्पनुं उत्पन्न थाय छे एम तमारावडे स्वीकारायेल छे, तेम आ पण दुःखना प्रकर्षनी अनुभूति( ( प्रकर्षनी अनुभूति होवाथी ) स्वयोग्य पायकर्मना प्रकर्षथी उत्पत्ति थशे. ए प्रमाणनुं फल छे. कठी भाष्यकर्पनी अनुभूतिर्ता ( प्रकर्षनी अनुभूति होवाथी ) स्वयोग्य पायकर्मना प्रकर्षथी उत्पत्ति थशे. ए प्रमाणनुं फल छे. कठी भाष्यकार कहे छे केः कम्माप्यगरिसजणियं, तैद्वस्तं पगरिसाणुभूइओ।सोक्यलपगरिसाभूई, जह पुण्णप्पगरिसप्पभत्ना॥७४॥ आ गाधानो भावार्थ कहेवायेल छे. ( १२ )	***********************
****	<b>१.</b> आगाधामां तद् झब्दथी ' दुःख ' लेवुं. ६	****

श्रीम्था- नाङ्गम्रत्र तानुवाद ॥ ३१ ॥ *********	हवे हमणा ज कहेल पुण्य अने पापकर्मना बंधना कारणतुं निरूपण करवा माटे कहे छे-' एगे आसवे ' आश्रयति- जेनावडे आत्माने विषे कमों प्रवेश केरे छे ते आश्रव, कर्मबंधनो हेतु छे एम समजवुं. ते आश्रव इंद्रिय, कषाय, अव्रत, किया अने योगरूप छे. क्रमधी ते पांच, चार, पांच, पचीश अने त्रण भेदवाळो छे. कर्ष्यु छेः इांद्रिय ' कसाय 8 अठवय ' किरिया २' पणचउरपंचपणुवीसा । जोगा ३ तिन्नेव भवे, आसवभेया उ बायाला ॥ ७४ ॥ आ गाधानो अर्थ स्पष्ट छे. आश्रव बेंतालीश प्रकारे छे अथवा ट्रव्य ने भावना भेदथी बे प्रकारे छे. तेमां जलमां रहेल नाव वगेरेमां तथाविध परिणामवडे छिट्रोढारा जे जलनो प्रवेश ते ट्रव्याश्रव, अने जे जीवरूप नावमां इंद्रिय वगेरे छिट्रथी कर्मरूप जलनो संचय ने भावाश्रव जाणवो; परन्तु आश्रवत्तुं समानपणुं होवाथी एक ज छे. ( सू० १३ ) हवे आश्रवना प्रति- पक्षरूप संवरनुं स्वरूप कहे छे-' एगे संवरे ' संव्रियते-जे परिणामवडे कर्मना कारणभूत प्राणातिपात वगेरे अटकावाय ते संवर-आश्रवनो निरोध ए तात्पर्य छे. ते संवर समिति, गुप्ति, यतिधर्म, भावना, परीषहजय अने चारित्ररूप छे. ते क्रमशः पांच, त्रण, दश, बार, बावीश अने पांच मेदवाळो छे. ते वधा मेळववाथी सत्तावन्नं भेया, प्रणतिगभेयाइं संवरणे ॥७६ आ गाथानो अर्थ कहेवायेल छे. अथवा आ संवर ट्रव्य अने मावभेदथी वे प्रकारे छे. तेमां जलमां रहेल वहाण वगेरेना समिई ' गुत्ती ३ धम्म्मो १०, अणुपेह १२ परीसहा २२ चरित्तं च ।सत्तावन्नं भेया, पणतिगभेयाइं संवरणे ॥७६ आ गाथानो अर्थ कहेवायेल छे. अथवा आ संवर ट्रव्य अने भावभेदथी वे प्रकारे छे. तेमां जलमां रहेल वहाण वगेरेना	* स्वरू * * स्वरू * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	<b>भन</b> अव- वर- ऽप <b>म्</b>
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	आ गाथाना अथ कहवायल छ. अथवा आ सवर द्रव्य अन मावमद्या व प्रकार छ. तमा जलमा रहल वहाण पगरगा	× ** Ⅱ ₹ ** **	ζ II

	छिद्रोमां हमेशां जे जल प्रवेश करे छे तेने तथाप्रकारना ट्रव्यवडे बंध करवुं ते ट्रव्यसंवर छे, तथा जीवरूप जहाजमां इंद्रियादि छिद्रोद्वारा कर्मरूप जल दाखल थाय छे तेने। समिति वगेरेथी निरोध करवे। ते भावसंवर छे. ते संवर वे प्रकारनो छे, तो पण संवरचुं समानपणुं होवाथी एक संवर छे. (स० १४) केवल संवर छते अयोगि गुणस्थाननी अवस्थामां कर्मोां वेदन ज थाय छे परंतु कर्मनो बंध थतो नथी, माटे हवे वेदनाचुं स्वरूप कहे छे-' एगा वेयणा ' वेदनं-वेदना. कर्मना स्वाभाविक उंदयवडे अथवा उदीरेणा करवावडे उदयावलिकामां प्रवेश पामेल कर्मनो अनुभव करवो-भोगवटो करवो. ते वेदना ज्ञानावरणीयादि कर्मनी अपेक्षाए आठ प्रकारे पण छे तेमज विपाकीदय अने प्रदेशेदियनी अपेक्षाए वे प्रकारे पण छे. शिरः- छंचन ( लोच ) वगेरे आभ्युपगमिकी-स्वयं स्वीकारेली अने औपक्रमिकी रोगादिथी थयेली एम वे प्रकारे पण छे. शिरः- छंचन ( लोच ) वगेरे आभ्युपगमिकी-स्वयं स्वीकारेली अने औपक्रमिकी रोगादिथी थयेली एम वे प्रकारने पण वेदना छे; तथापि वेदनाचुं समानपणुं होवाथी एक ज वेदना छे. (स० १५) भोगवायेल रसविशिष्ट कर्म ते आत्मप्रदेशोथी खरी जाय छे, नाश पामे छे ए हेतुथी वेदना पछी कर्मना खरवारूप निर्क्तराचुं निरूपण करतां कहे छे-' एगा निज्ञरा' / निर्ज्वरणं-निर्जरा- विशेष नाश पामेचुं, सर्वथा सडी ( खरी ) जचुं ते निर्जरा आठ प्रकारना कर्मनी अपेक्षाए आठ प्रकारे पण छे, वार प्रकारना तपवडे उत्पन्न थवाथी बार प्रकारनी पण निर्जरा छे. वगर इच्छाए क्षुधा, तृपा, शीत, आतप, दंश (डांस), मशक (मच्छर), १. अवाधा काल पूर्ण थये कर्मनो उदय छे ते स्वाभाविक उदय. २. जीवना वीर्यवच्छी कर्मने उदयावलिमां खेंची लावचुं ते उदीरणा. ३ के इपण प्रहति, पोतानो उनुसव स्वतंत्रपणे आपे ते विपाकोदय. ४. एक प्रछत्ति बीजी प्रछत्तिमां मलीने जे फल, प्रदेशो- थी मोगवाय ते प्रदेशोदय.	*****
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	थी भगिवाय ते प्रदेशोद्य.	× * * *

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३२ ॥	****************	मेलनुं सहन करवुं अने त्रह्मचर्यनुं पालन वगेरे अनेकविध कारणवडे उत्पन्न थवाथी निर्जरा अनेक प्रकारे पण छे. अथवा द्रव्यथी वस्त्रादिनुं नाश थवुं अने भावथी कमीनुं खरवुं, एम वे प्रकारे पण छे. तथापि निर्जरानुं समानपणुं होवाथी एक ज निर्जरा छे. द्यांका-निर्जरा अने मोक्षमां शे। भेद छे? समाधान-देशथी कर्मनो क्षय ते निर्जरा अने सर्वथा कर्मनो क्षय ते मोक्ष. (स्र० १६) अहिं जीव विशिष्ट निर्जरानुं पात्र प्रत्येक शरीरनी स्थितिमां ज थाय छे. साधारण शरीरनी अवस्थामां विशेष निर्जरा थती नथी, अतः प्रत्येक शरीरमां रहेल जीवनुं स्वरूप निरूपण करवा माटे कहे छे 'ए गे जीवे' इत्यादि अथवा सामान्य- थी प्रस्तुत शास्त्रवडे वर्णवायेल जीवादि नव पदार्थी कह्या. हवे विशेषरूपे जीवपदार्थनुं स्वरूप कहे छेः-	*** १. स्थाना- घ्ययने जीवपदार्थ- विशेषाः ॥ ३२॥	
	* * *	एगे जीवे पाडिकएणं सरीरएणं । सू० १७, एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा। सू० १८,		
	*****	एगे मणे। सू० १९, एगा वई।सू०२०,एगे कायवायामे।सू० २१, एगा उप्पा।सू० २२, एगा वियती।		
	***	सू० २३,एगा वियचा।सू०२४,एगा गती।सू०२५,एगा आगती।सू०२६, एगे चयणे।सू०२७,एगे		
	× × ×	उववाए। सू० २८, एगा तक्का। सू० २९, एगा सन्ना। सू० ३०, एगा मन्ना। सू०३१, एगा विन्नू। सू०३२,		
	*	एगा वेयणा।सू० ३३, एगा छेयणा।सू०३४,एगा भेयणा।सू०३४, एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं		
	**	सू० ३६, एगे संसुध्धे अहाभूए पत्ते। सू०३७, एगटुक्खे जीवाणं एगभूए। सू०३८, एगा अहम्मपडिमा	🌋 ॥ ३२ ॥	
	* *			
ĺ			×	

NUNCCESSION AND AND AND AND AND AND AND AND AND AN	जं से आया परिकिलेसति। सू०३९, एगा धम्मपडिमा जंसे आया पजजवहजाए । सू० ४०, एगे मणे
Ì	
	देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयांसि। सू० ४१, एगे [अएगा वई देवा० एगे कायवायामे देवा०]
	उट्ठाणकम्मवलवीरियपुरिसकारपरक्रमे देवासुरमणुयाणं तंसि २ समयांसि । सू० ४२, एगे नाणे एगे
31	दंसणे एगे चरित्ते। सू० ४३
	मूलार्थः-प्रत्येक प्रत्येक इारीरमां रहेले। जीव एक छे. बहारना पुद्गले। लीघा विना जीवेने विक्रुर्वणा एक छे. मने!-
	योग एक छे. वचनयोग एक छे. बरीरना व्यापाररूप काययोग एक छे. उत्पाद-उत्पत्ति एक छे. विगति-विनाश एक छे.
	विगताची-मरेला जीवनुं शरीर एक छे. गति एक छे. आगति एक छे. च्यवन-वैमानिक अने ज्योतिष्कोनुं मरण एक छे.
	उपपात-देव अने नारकोनो जन्म एक छे. तर्क एक छे. संज्ञा एक छे. मति एक छे. बिज्ञता-विद्वत्ता एक छे. पीडा एक छे.
	छेदन एक छे. भेदन एक छे. चरमशरीरी जीवोत्तुं मरण एक छे. निर्मेल चारित्रवान यथाभूत अने पात्रनी माफक पात्र
	(स्नातक) एक छे. एकावतारी जीगोने एक भवप्रहणयी थनारुं एकभूत (समान) दुःख एक छे. अधर्म प्रतिज्ञा एक छे,
	* काटखुणा को समां छखेठ पाठ बाबूबाळो प्रतिमां छे अने आगमो य सभितिवाळो प्रतिमां नया तथापि टीकाकार व्याख्या
	करतां कहे छे के 'एगे मगे इत्यादि सूत्रत्रयं ? आ उपरथी एम सननाय छे के सूत्र त्र गे जाई ए एटडा माटे अमोए वचनयोग अने
	कायव्यापारना बन्ने सूत्र रूखेरु छे. त्यां देवा०ए पाठयो मनोयोगना पाठतमाण संपूर्ण वांचवुं.

www.kobatirth.org

त्रीस्था- नाङ्गखत्र सानुवाद ॥ ३३ ॥	र्ते पाठनी व्याख्या करी नथी. अहिं वाचनाओनुं चोकसपणुं न होवाथी बधी वाचनाओनी व्याख्या करवाने अझक्य होवाथी अमे कोईक ज वाचनानुं व्याख्यान करशुं. बंध, मोक्ष वगेरे आत्माना धर्मो हमणां ज पूर्वे कहेला छे. ते अधिकारथी	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
	होवाथी अमे कोईक ज वाचनानुं व्याख्यान करशुं. बंध, मोक्ष बगेरे आत्माना धर्मा हमणां ज पूर्व कहेला छ. ते अधिकारथी ज आथी आगळ आत्माना धर्मोंने एगा जीवाणं (सू० १८) इत्यादि सूत्रवडे एगे चरित्ते (सू०४३) आ अंत्य सूत्रवडे कहे छे:- ' एगा जीवाणं '-आ सुगम छे. ' अपरियाइतात्ते ' जीवोने विकुर्वणा एक छे. ते विकुर्वणा वैक्रिय समुद्धातवडे क्यांयथी पण बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या विना भवधारणीय वैक्रिय शरीरनी रचनालक्षणवाळी स्व स्व उत्पत्तिस्थानमां जीवोवडे जे *	

वि	वेकुर्वणा कराय छे ते दरेकने भवधारणीय विकुर्वणा एक होवाथी एक ज छे. अथवा सर्व वैक्रिय झरीरनी अपेक्षाए
¥	भवधारणीय(विकुर्वणा)चुं कथंचित एक रुक्षण होवाथी पण एक छे. वर्री जे विकुर्वणा, बहारना पुद्गरोने ग्रहण करवापूर्वक कराय
हे	छ ते उत्तरवैक्रियनी रचनास्वरूप छे. ते उत्तर विकुर्वणा विचित्र अभिप्रायवाळी होवाथी वैक्रियलब्धिवळाने तथाप्रकारनी
হ	रक्ति होवाथी एक जीवने अनेक पण विकुर्वणा थाय छे तेनो अहिं निपेध करेल छे. दांका−वहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्ये छते
3	न उत्तरवैकिय थाय छे ते शाथी निश्चय कराय छे १ जेने लड्ने आ सत्रमां 'अपरियाइत्तां' आं शब्दवडे उत्तरवैक्रिय
रि	विकुर्वणा छोडी देवा( निषेध करवा )मां आवे छे. जो एम कहेता हो। तो भगवती खत्रना वचनथी उत्तर आपीए छीए ते
3	आ प्रमाणेः-"देवे णं भंते ! महिड्डिए जाव महाणुभागे वाहिरए पोग्गलए अपरियाइत्ता पभू एगवझं एगरूवं
f	विउव्वित्तए ? गोयमा ! नो इणहे समुहे, देवे णं भंते ! बाहिरए पोग्गले परियारत्ता पभू ?, हता पभू"ति
हे	हे भदंत-पूज्य ! महर्द्विक यावत् महानुभाग् देव, बहारना पुद्गलोने ग्रहण न करीने एक वर्णवाळा एक रूपनी विकुर्वणी करवा
म	नाटे समर्थ छे १ हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! देव बहारना पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वणा माटे समर्थ छे ?
ह	हा, समर्थ छे. अहिं चोकस उत्तरवैक्रिय बहारना पुद्गलो ग्रहण करवाथी थाय छे ए विवक्षित छे. (स० १८) ' एगे मणे'त्ति'
Ŧ	ननन मनः-मनन करवुं ते मन. औदारिकादि शरीरनी प्रवृत्तिवडे प्रहण करेल मनोद्रव्यना सम्रुदायना सहायथी जीवनो जे
0	व्यापार ते मनोयोग. अथवा ' मन्यते अननेति मनः ' जेनावडे मनन कराय छे ते मन, मनोद्रव्य मात्र ज छे. ते मन,
	<b>१.</b> भावरूप व्युत्पत्त्यर्थने लइने भावमननुं कथन कहेल छे.

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद ।। ३४ ।।

ARARA A ARARARARARARARARARARARARARARARA	*****	१ स्थाना- ध्ययने एकयोगता ॥ ३४ ॥
8		

www.kobatirth.org

•

· •

ते सामान्यथी एक छे. (सू०२४) 'जइ' त्ति-मरण पछी मनुष्यत्वादिमांथी नारकत्वादिने विषे जीवनुं जवुं ते गति. ते एक जीवने एक वखत एक ज होथ छे. ऋजुगति के वक्रगति एक होय, अथवा नरकगति वगेरेमांथी एक गति होय. अथवा पुद्गलनी (गति) एक छे, अथवा स्थितिना मात्र वैरुक्षण्यपणाथी एटले गमनंश्वरूपवडे सर्व जीव अने पुद्रगलोनी गति एक छे. (सू०२५) 'आगइ' त्ति आगमनमागति:-आवचुं ते आगति. नरकत्वादिमांथी पाछुं आवचुं, तेनुं एकपणुं गतिनी माफक जाणवुं. (सू०२६) 'चयए'त्ति च्यवनं-च्यवन-वैमानिक अने ज्योतिष्कोनुं मरण, ते एक जीवनी अपेक्षाए एक छे. नाना जीवोनी अपेक्षाए पूर्वनी माफक जाणवुं. (सू०२७) 'उववाए'त्ति उपपतनमुपपात:-उत्पन्न थवुं ते उपपात, ते देव अने नारकोनुं जन्म, ते च्यवननी माफक एक छे (सू०२८) 'तक्क'त्ति तर्क:-विमर्श (विशेषविचार), अवाय (निश्चय)थी पहेला अने इहा(विचारणा)थी पछी. प्राय: माथुं खंजवाळवुं (चेष्टाविशेष) वगेरे पुरुषना धमों अहिं घटमानं थाय छे, एवी रीते संप्रत्ययरूप-ज्ञान थवुं. अहिं एकपणुं पूर्वनी माफक छे. (सू०२९) 'मन्न'त्ति संज्ञानं-संज्ञा. संज्ञा अर्थात् व्यंजनावग्रहना उत्तर- कालमां धनार मतिविशेष छे. अथवा आहार, भय इत्यादि उपाधिवाळी चेतना ते संज्ञा, अथवा नाम ते संज्ञा. (सू०२०)	**************************************
१. बाबूवाळी प्रतिमा '' चैकतयैकस्वरूपा '' पाठ छे ज्यारे आगमोदय समितिवाळो प्रतमां '' बैकरूपा '' एवो पाठ टोकामां छे. २. 'अयं स्थाणुर्वा पुरुषो वा' आ ठुंठो छे के पुरुष छे ? आ इहा कहेवाय छे, त्यारबाद हस्तादिना चलनथी आ म्थाणु नथो ए विमर्श. २ संज्ञा, मतिज्ञाननो पर्यायवाचक छे.	**************************************

भीस्था- नाङ्गसत सानुवाद ।) ३५ ।) ******	'मन्न 'त्ति प्राक्ठतरैलीथी मननं मति:-मनन करवुं ते मति-कंईक अर्थनुं ज्ञान थये छते पण सक्ष्म धर्म(वस्तुस्वभाव)नी आलोचनारूप बुद्धि छे. केटलाएक मतिनो अर्थ आलोचन कहे छे. अथवा माननार, मानवा योग्य-स्वीकार आ अर्थ जाणवो. बन्ने सत्रमां पण सामान्यथी एकपणुं छे. (स्०३१) 'एगा विन्नू 'त्रि-विद्वान अथवा विज्ञ-विशेष जाणनार. समान बोधपणुं होवाथी एक छे. ' उत्पाद ' शब्दनी उपा शब्दनी माफक ' विन्नू ' शब्द प्राक्रतपणाथी स्तीलिंगे छे. अथवा भाव प्रत्ययनो लोप थवाथी विद्वत्ता-विज्ञता एक छे. (सू०३२) 'चेयण ' त्ति पहेला वेदना, सामान्य कर्मना अनुभवस्वरूप कहेली छे. अहिं तो पीडा स्वरूप ज जाणवी. ते सामान्यथी एक ज छे. (सू०३३) आ पीडाना ज कारण विशेषना निरूपण मारे कहे ले-' छेराणे ' त्ति छेदनं-शरीरनं अथवा बीजानं ( काणदिनं ) खडग, कडाडा, वगेनेशी लेदन, करवं (म०३२)	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
( <b>X</b> ********************	माटे कहे छे-'छेयणे' त्ति छेदनं-शरीरनुं अथवा बीजानुं (काष्ठादिनुं) खड्ग, कुहाडा वगेरेथी छेदन करवुं (सू०३४) 'भेयणे ' त्ति भेदनं-भाला, बरछी वगेरेथी भेदन करवुं (भोंकनुं) अथवा छेदवुं ते कर्मना स्थितिघात अने भेदन तो कर्मना रसनो घात करे ते. एकपणुं तो विशेष स्वरूपनी विवक्षा न करवाथी छे. (सू०३५) वेदनाथी मरण थाय छे आ कारणथी ते मरण विशेष कहे छे-'एगे मरणं' इत्यादि मृतिः मरण, अन्ते भवमान्तिमम्-छेल्लुं एवुं शरीर ते अंतिम शरीर, तेमां थनारी-छेल्ला शरीरमां थनारी (वेदना). अहिं उत्तरपदमां वृद्धि थयेल छे. अथवा छेल्लुं शरीर छे जेओने ते अंतिम शरीर, तेमां थनारी-छेल्ला शरीरमां थनारी (वेदना). अहिं उत्तरपदमां वृद्धि थयेल छे. अथवा छेल्लुं शरीर छे जेओने ते अंतिमशारीरिका अहि दीर्घपणुं प्राकृत शैलीथी थयेल छे. अंतिम शरीरमां थनारी वेदनावाळा अथवा छेल्ला शरीरवाळा १ 'अंतिमशारोरिकी ' ए शब्दमां शारीरिकी उतरपद छे तेमां 'श'नो 'शा' वृद्धि घयेल छे. २ अंतिमशारीरिका अहि 'क' नो 'का' प्राठ्त शैलीथी दीर्घ थयेल छे.	*** *** *** *** *** *** ***

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	जीवोने एक मरण छे, कारण के सिद्धपणामां पुनर्मरणनो अभाव छे (स॰३६) चरमशरीरवाळा जीव स्नातक (निप्रंथ) थइने मरण करे छे, अतः स्नातकनुं म्वरूप कहे छेः-'एगे संद्युद्धे' इत्यादि एक संशुद्ध-कषाय रहित होवाथी निर्मळ चारित्रवाळो. यथाभूत-तात्त्विक (केवळी), पात्रनी जेम अतिशयवाळा ज्ञानादि गुणरत्नोनुं पात्र, अथवा ज्ञानादि उत्कुष्ट गुणने प्राप्त ययेल ते एक छे. (स॰३७) 'एगे दुक्त्वे '-छेल्ला भवग्रहणमां थनारुं एक दुःख छे जेने ते एक दुःख छे. 'एगहक्त्वे'त्ति ए पाठांतरमां तो एक प्रकारे ज आख्या-संशुद्ध वगेरे कथन छे जेने परंतु असंशुद्ध अने संशुद्धासंशुद्ध इत्यादि नथी असंशुद्धादिना निमित्तरूप कषायादिनो अभाव होवाथी ते (संशुद्ध) एक प्रकारे नामवाळो थाय छे. अथवा एक प्रकारे छे जीव जेने ते एकघाक्ष, प्राणीओने एकभूत-आत्मा समान जाणे छे, कारण के केवळ- हितव्वत्तिपणुं छे. घणा जीवो छतां पण तेओनुं समस्वभावत्व होवाथी जीवनुं एकपणुं छे. अथवा 'एगे संसुद्ध **
****	अहाभूए पत्ते ' आ सत्रमां आवेल पत्ते शब्द, बीजा सत्र साथे संबंध धरावे छे, माटे पूर्वे कहेल अर्थवाळा संशुद्ध शब्दथी पत्ते शब्द अन्य अर्थना स्वरूपने कहेनार छे, तेमां प्राकृतपणाथी पत्ते शब्दनो अर्थ प्रत्येक छे. जीवोने पोताना करेल कर्मना भोक्तापणाथी दरेकने दुःख एक छे. ते दुःख केवुं छे ? ते कहे छे-प्राणीओमां एकभूत- अनन्यपणे (अभेदपणे) रहेलुं छे, परंतु सांख्योनी माफक बाह्य नथी अर्थात प्रतिबिंबस्वरूप नथी. (स०३८) वळी अधर्मना अभि निवेश( कदाग्रह )थी दुःख थाय छे. आ हेतुथी अधर्मनुं स्वरूप कहे छे:-'एगा अहम्मे' इत्यादि, दुर्गतिमां पडता जीवोने धारण करे छे अथवा जीवोने सुगतिमां स्थापे छे तेथी धर्म, कह्युं छे के-''दुर्गतिमां जनारा जंतुओने जेथी धारण

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ३६ ।।	कराय छे अने शुभ स्थानमां ए जीवोने स्थिर करे छे तथी धर्म कहेवाय छे. '' ते धर्म, अत अने चारित्रस्वरूप छे. तेनां प्रतिषक्ष ते अधर्म छे. अधर्म विषयप्रतिज्ञा, अथवा अधर्ममां मुख्य जे शरीर ते अधर्मप्रतिज्ञा, ते एक छे, कारण के वधी प्रतिज्ञा अत्यंत दुःखना कारणवडे एकरूप छे. आ कारणथी ज कहे छे:-जं से इत्यादि जे कारणथी ते प्रतिज्ञानो स्वामी जीव, अथवा अधर्म प्रतिज्ञावाळो आत्मा रागादिवडे वाधा पामे छे, मंक्वेश पामे छे. अथवा ' जं सि ' ति आ पाठांतर छे, तेथी प्राकृतवडे लिंग( जाति )ना विपर्यांसथी जे अधर्म प्रतिज्ञा छते आत्या क्वेश्व पामे छे ते एक ज छे. (स०३९) एनाथी विपरीत कहे छे-' एगे धरम्मे ' इत्यादि पूर्ववत् एटले धर्म शब्दनो व्युत्पत्त्यर्थ वगेरे जे कहेल छे तेनी माफक जाणवुं. नवरं-विशेष कहे छे-' एगे धरम्मे ' इत्यादि पूर्ववत् एटले धर्म शब्दनो व्युत्पत्त्यर्थ वगेरे जे कहेल छे तेनी माफक जाणवुं. नवरं-विशेष कहे छे-पर्यवो-ज्ञानादि विशेषो उत्पन्न थयेल छे जेने ते पर्यवजात थाय छे-विशुद्ध थाय छे. आहिताग्नि आदि गणथी ' जात ' शब्दने उत्तरपदेपणुं छे. अथवा पर्यवोने अथवा पर्यवोने विवे जे प्राप्त थयेल छे ते पर्यवयात, अगर तो विशिष्ट रक्षा वा बिशिष्ट ज्ञान, तेने अथवा तेमां प्राप्त थयेल. (स०४०) धर्म अने अधर्मप्रतिज्ञा त्रण योगथी थाय छे ते कारणथी योगतुं स्वरूप	** ** ध्ययन ध्ययन एकयोगता ** ** **
	कहे छे:-'एगे मणे' इत्यादि त्रण सत्र. तेमां मन इति मनायाग-जे ज समयमां विचाराय छ ते ते समयमां काल- विशेष मनयोग एक ज छे. वीप्साना निर्देशवडे कोइ पण समयमां वे विगेरे संख्या तेनी संभवती। नथी. आ हेतुथी कहे छे- जीवोनुं एक उपयोगपणुं होवाथी मननुं एकपणुं छे. र्शका-( एक समयमां ) एक ज उपयोगवाळो जीव नहिं थाय ? कारण ? एक समये तथाविध जुदा जुदा विषयना उपयोगवाला वे पुरुषनी माफक श्रीत अने उष्ण स्पर्श विषयना अनुभव बन्ने १. ' निष्ठा सूत्रथो ' जातपर्यव ' प्रयोग उचित छे, पण तेनो बाध करीने आहित:गि आदि गणधी ' पर्यवज्ञात' थयेल छे.	X X X X X X X X X X X X X X X X X X X

www.kobatirth.org

. .

• •

***	देखाय छे अर्थात् वे उपयोग थाय. अहिं समाधान करे छे−जो के आ शीत अने उष्णना वे उपयोग पोताना स्वरूपवडे
*********************	देखाय छे अर्थात् बे उपयोग थाय. अहिं समाधान करे छे–जो के आ शीत अने उष्णना बे उपयोग पोताना स्वरूपवडे भिन्न कालमां होवा छतां पण समय अने मननी अति सक्ष्मतावडे एक समयनी जेम प्रतीत थाय छे, परन्तु ते एक समयमां ज शीत अने उष्ण बंनेनी साथे प्रतीति थती नथी. भाष्यकार कहे छे—
****	भिन्न कालमां होवा छतां पण समय अने मननी अति सक्ष्मतावडे एक समयनी जेम प्रतीत थाय छे, परन्तु ते एक समयमां ज श्रीत अने उष्ण बंनेनी साथे प्रतीति थती नथी. भाष्यकार कहे छे— समयातिसुद्रुमयाओ, मझसि जुगवं च भिन्नकाल्ठंपि । उप्पलटद्लस्यवेहं, व जह व तमलायचक्कंति॥७९॥ समयतुं अति सक्ष्मपणुं होवाथी भिन्न भिन्न काल छतां पण एक समयमां तुं सेंकडो कमलपत्रना वेधनी माफक अथवा अलांतचक्रनी जेम ( श्रीत अने उष्ण स्पर्श्वनी अनुभव ) बन्ने माने छे. वळी एक विषयमां जोडायेलुं मन जो बीजा विषयनो पण अनुभव करे तो बीजा विषयमां गयेल चित्तवाळो पुरुष आगळ रहेल हाथीने पण केम जाणी शकतो नथी ? भाष्यकार कहे छे केः— अन्नविणिउत्तमन्नं, विणिओगं लहइ जइ मणो तेणं । हर्दियपि ठियं पुरओ, किमन्नचित्तो न लक्स्वेइ ? ७८ आ गाथाने। भावार्थ उपर कहेल छे. अहिं घणुं कहेवानुं छे पण ते स्थानांतरथी जाणवुं. अथवा सत्य, असत्य, सत्यासत्य (मिश्र), असत्याम्ट्रपा(ब्यवहार)रूप चार मनोयोगमां कोइ पण एक ज मनोयोग एक वखते होय छे. अन्योन्य विरोध होवाथी १. अलातचक्र एटले उंवाडोयुं-बळवुं लाकडुं. ते भिन्न भिन्न काळे वेध थाय छे. अणातो नथो तेमन सेंकडो कमल्यत्रना वेधमां पण भिन्न भिन्न काळे वेध थाय छे.
****	अलांतचक्रनी जेम ( शीत अने उष्ण स्पर्शनो अनुभव ) बन्ने माने छे. वळी एक विषयमां जोडायेऌं मन जो बीजा विषयनो पण अनुभव करे तो बीजा विषयमां गयेल चित्तवाळो पुरुष आगळ रहेल हाथीने पण केम जाणी शकतो नथी ? भाष्यकार
××××	कहे छे केः— अन्नविणिउत्तमन्नं, विणिओगं लहइ जइ मणो तेणं। हर्स्थिपि ठियं पुरओ, किमन्नचित्तो न लक्खेइ ? ७८
× * * *	आ गाथाने। भावार्थ उपर कहेल छे. अहिं घणुं कहेवानुं छे पण ते स्थानांतरथी जाणचुं. अथवा सत्य, असत्य, सत्यासत्य (मिश्र), असत्यामृपा(व्यवहार)रूप चार मनोयोगमां कोइ पण एक ज मनोयोग एक वखते होय छे. अन्योन्य विरोध होवाथी
(××××××	१. अलातचक्र एटले उंवाडोयुं–बळतुं लाकडुं, ते भिन्न भिन्न समये जुदी जुदा दिशाओमां फरे छे तथापि समय अने दिशानो भेद जणातो नथो तेमन सेंकडो कमलपत्रना वेधमां पण भिन्न भिन्न काळे वेघ थाय छे.
X	

त्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३७ ॥ *******	बे वगेरे मनोयोगोनो असंभव छे. हवे मनोयोगना स्वामी कहे छेः-' देवासुरमणुयाणं ' त्ति तेमां कांतिवाळा क्रीडा कर- नारा ते देवो-वैमानिक अने ज्योतिष्को, सुर नहि ते असुरो-भवनपति अने व्यंतरो, मनुथी उत्पन्न थयेल मनुजो-मनुष्यो. ते देव, असुर अने मनुष्योने मन एक समयमां एक छे; तथा वचनयोग पण देवादिकोने एक समयमां एक ज छे. तथाविध मनोयोगपूर्वक तथाविध वचनयोग होवाथी अथवा सत्यादि चार वचनयोगमां कोइ पण एक वचनयोग एक समये होवाथी एक छे. ते संबंधमां सत्रकार स्वयं आगळ कहेशे ''छहिं ठाणेहिं णत्थि यावत् दो भासाओ भासित्तए '' तथा कायव्यायाम- काययोग देवादिने एक समये एक ज छे. सात काययोगमां कोइ पण एक काययोग एक समये होय छे. ठांका-ज्यारे आहारक ( शरीर )नो प्रयोग करे छे त्यारे औदारिक शरीर त्यां ज रहेछं होय छे एम संभळातुं होवाथी एक समये बन्ने काययोग केम होय ? समाधान-विद्यमान छतां औदारिक शरीरतो व्यापार न होवाथी तेमज आहारक शरीरनो ज त्यां व्यापार होवाथी तेम थई शके छे. औदारिक शरीर पण त्यारे-आहारक प्रयोगसमये व्यापार ( प्रवृत्ति ) करे तो केवलिसमुद्धातमां सातमा, छट्ठा अने बीजा ए त्रण समयमां औदारिक मिश्रयोगनी माफक मिश्रयोगपणुं थशे. तेमज आहारकप्रयोगकाल्यमां जो औदारिकनो		१. स्थाना- घ्ययने एकयोगता ४१ सूत्रम्
	१. टीकाकारे आपेल छट्ठा ठाणानो पाठ ते अहि संक्षेपथी लखेल छे. ए पाठनो प्रस्तुत विषयमां एटलो ज उपयोग छे के एक समयमां बे भाषा बोलवानी जीवोनी झक्ति नथी. २. आ त्रण समयमां कार्मण शरीर साथे औदारिकनो मिश्र थाय छे.	*****	॥ ३७ ॥

ा ज रहेशे. वळी काययोगने पण औदारिकपणाए अने वैक्रियपणाए क्रमवडे माफक बन्नेनी एकी साथे भ्रांति थाय तो शो दोप ? एवी रीते काययोगनुं नोद्रव्य अने वाग्द्रव्यनी सहायतावडे थयेल जविना व्यापाररूपपणाथी, बडे पण पूर्वे कहेलुं एकत्व जाणवुं. अथवा एने (वचनने) आज्ञाग्राह्य कहेयव्वो। दिट्वंता दिट्वंतिअ, कहणविहिविराहणा इयरा॥७९॥
साथे मिश्र होय छे परंतु प्रश्न आदि काल्रमां केवल आहारक शरीरनो व्यापार होय स० वाळी प्रतिमां आणागेज्झो० ए गाथाना चोथा चरणमां इह पाठ छे परंतु
हस्तलिखित प्रतिमां पण इयरा पाठ छे. इह पाठघी छंदोमंग अने 'इतरथा ' छे. कदाच मुद्रणदोष घवा संभव छे.
<b>R</b>

र्पारंगा रपना होते छते देन तमपना जनापानाएँ शरारना नामक जनकपुर्य थेश, जो नान्यतातु खडन करवा नाट छे; परंतु तिर्यंच अने नारकोने। निषेध करवा माटे नथी. दांका–तिर्यंच अने नारको पण वैक्रियलब्धिवाळा छे, तेओने पण विक्रु विणामां शरीरना अनेकपणाथी मन वगेरेनी अनेकपणानी मान्यता संभवे छे, माटे तिर्यंच अने नारकतुं ग्रहण करवुं पण योग्य हे छे–न्याय्य छे. समाधान–तमारुं कथन योग्य छे, परंतु देवादिकतुं जे ग्रहण करेल छे ते अति विशिष्ट लब्धि( शक्ति )वाळा		स्थाना- ध्ययने कयोगता १ स्रत्रम्
होवाथी शरीरोनी अत्यंत अनेकता छे. आ कारणथी तेओनुं ग्रहण करेल छे. वळी प्रधान( मुख्य )नो स्वीकार करवाथी इतर-सामान्यनुं ग्रहण स्वतः थाय छे, ए न्यायथी दोप नथी. नारकादिकोथी देवादिकोनुं प्रधानपणुं प्रसिद्ध ज छे. आ मन वगेरेनो क्रम, यथायोग प्रधानपणाथी करेल छे. प्रधानपणुं ते बहु, अंल्प अने अल्पतर कर्मना क्षयोपशमथी उत्पन्न थयेल लाभवडे १. घणा कर्मोना क्षयापरामथी मनोयोगना, तेषी अल्पकर्मना क्षयोपशमधी वचनयोगनी अने तेषी अल्पतर ( अति ओछो ) कर्मना क्षयोपशमधी काययोगनी प्राप्ति थाय छे.	XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	३८ ॥

For Private and Personal Use Only

.

**************************************	
×	करेछं-थयेछं छे. (सू० ४१) हवे कायव्यायामना ज भेदोनी एकता कहे छे-'एगे उट्टाणे' इत्यादि उत्थान-चेष्टा-विशेष, कम्म-फरचुं वगेरे किया, वल-शरीरनुं सामर्थ्य, वीर्य-जीवथी उत्पन्न थयेल शक्ति, पुरुषकार-अहंकार विशेष, पराक्रम-अभिमानमां
×	ज करायेल कार्य. आ सत्रमां द्वंद्व समास होवाथी प्रथमा विभक्तिनुं एकवचन छे. आ उत्थान वगेरे वीर्यातरायकर्मना [ क्षय ]
***	क्षयोपशमथी थयेल जीवना परिणाम विशेषो छे. ए उत्थानादि शब्दोमां प्रत्येकने ' एक ' शब्द जोडवो. वीर्यांतरायकर्मना [ क्षय ] क्षयोपशमना विचित्रपणाथी उत्थानादिमां प्रत्येकना जघन्यादि भेदोवडे अनेकपणुं होते छते पण एक समये एक
×: *:	जीवने उत्थानादि विशेष जघन्यादि एक छे, कारण के वीर्यांतरायकर्मना [ क्षय ] क्षयोपञ्चमनी मात्रानुं एकपणुं छे.
*   *   *	कारण १ कार्यनी मात्रा, कारणनी मात्राने आधीन होय छे. सत्रनो आ भावार्थ छे, विशेष पूर्ववत्. (सू० ४२ ) पराक्रम वगेरेथी ज्ञानादि—रूप मोक्षमार्ग प्राप्त कराय छे जेथी कहे छे केः—
	अब्भुट्ठाणे विणये, परकमे साहुसेवणाए य । सम्मद्दंसणलंभो, विरयाविरइए विरइए ॥८०॥
*	अभ्युत्थान-गुरु वगेरेना आगमनथी ऊभा थवामां, विनयमां अने साधु-सेवामां पराक्रम कर्ये छते, सम्यग्दर्शननो लाभ थाय छे. वळी देशविरति तथा सर्वविरतिनो लाभ थाय छे. आ कारणथी ज्ञानादिनुं निरूपण करवा माटे सूत्रकार कहे छे-
× ( × ) × )	लान यात्र छ. वळा दशावरात तया संवायरातना लान यात्र छ. जा कारणया ज्ञानादिन नरूपण करवा माट संत्रकार कह छ- ' एगे नाणे ' इत्यादि, अथवा पूर्वे कहेली धर्मप्रतिमा ते ज्ञानादिस्वरूप छे. आ हेतुथी ज्ञानादिनुं निरूपण करे छे
×   ×   ×	१. आगमोदय समितिवाली प्रतिमां क्षय शब्द काटखूणा कौंसमां छे अने बाबूवाळीमां सळग पाठरूपे छे.
X	

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ३९ ॥ <del>*</del> **	ज्ञायन्ते-जेनावडे, जेनाथी अने जेमां अर्थी जणाय छे, निर्णय थाय छे ते ज्ञान. ज्ञान-दर्शननो क्षय अथवा क्षयोपशम अथवा जे जाणवुं ते ज्ञान, ज्ञानावरण अने दर्शनावरणना क्षयादिथी प्रगट थयेल आत्मानो पर्याय विशेष, सामान्य विशेषात्मक वस्तुमां विशेषांश ग्रहण करवामां चतुर अने सामान्य अंशनो ग्राहक, पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चार दर्शनरूप ते अनेक छे तो पण बोधना समानपणाथी अथवा उपयोगनी अपेक्षाए एक छे. ते आ प्रमाणे-लब्धिथी घणा बोधविशेषोनो एक समये संभव छते पण उपयोगथी एक ज संभवे छे, कारण के जीवोनुं उपयोगपणुं एक छे. रांका-दर्शननुं ज्ञानमां कथनपणुं अयुक्त	** ** ** ध्ययने ** ज्ञानादि- ** निरूपण। ** 83 स्रत्रम
**************************************	छे, कारण के (बन्नेनो ) विषयभेद छे. कह्युं छे के-"जं सामन्नग्गहणं, दंसणमेयं विसेसियं नाणं " ति,-जे हो, कारण के (बन्नेनो ) विषयभेद छे. कह्युं छे के-"जं सामन्नग्गहणं, दंसणमेयं विसेसियं नाणं " ति,-जे सामान्य स्वरूपनुं प्रहण ते दर्शन, अने तेना त्रिश स्वरूपनुं प्रहण ते ज्ञान छे. समाधान-सामान्य ग्राहक होवाथी इहा अने अवग्रहरूप ज दर्शन छे. अने त्रिशेष ग्राहकपणाथी अपाय तथा धारणारूप ज्ञान छे. अथवा आगममां दर्शन अने ज्ञान बन्ने पण ज्ञानना स्वीकारवडे ग्रहण करेल छे. 'आभिनिबोहियनाणे, अद्घावीसं हवंति पयडीउ ' वचनथी आभिनिवोधिक ( मति )ज्ञानमां अठावीस प्रकृतिओ ( मतिज्ञानना भेदो) होय छे, माटे सामान्यथी दर्शन पण ज्ञानरूप कहेवामां त्रिशेष नथी. इांका-आ पछीना सत्रमां दर्शन जुदुं ज कहेछं छे, तो अहीं ज्ञान शब्दवडे दर्शन पण केम कथन कर्युं ? समाधान-ते उत्तरसूत्रमां दर्शन-श्रद्धाना अर्थमां त्रिवक्षित छे. ज्ञानादि त्रणने सम्यक् शब्दवडे युक्त कर्ये छते, मोक्षमार्ग पण विवक्षित होवाथी श्रद्धानरूप पर्यायवडे ज दर्शननी साथे आ त्रण ( ज्ञानादि ) मोक्षना मार्गभूत छे. ' एगे दंसणे ' त्ति इद्यन्ते-जेनावडे, जेनाथी अथवा जेनामां पदार्थी श्रदारूप थाय छे. दर्शन दर्शनमोहनीय कर्मनो क्षय, क्षयोपशम अथवा	X ४२ स्रत्रम् X X X X X X X X X X X X X X X X X X X

(उ. हे. हे. जि. मार्हा हो अ 	पशम)रूप दर्शन छे. अथवा दृष्टि दर्शन ते दर्शनमोहनीय कर्मना क्षयादिवडे प्रगट थयेल तत्त्वना श्रद्धानरूप आत्मानो परिणाम . ते उपाधि भेदथी अनेक प्रकारे छे तो पण श्रद्धानना समानपणाधी एक छे. अथवा एक जीवने एक समये एकनो ज व होय छे. दांका-अववोधनुं समानपणुं होवाधी ज्ञान अने सम्यक्त्वमां शुं विशेष छे? समाधान-सम्यक्त्व ते रुचि अने चेनुं कारण तो ज्ञान छे. [ अर्थात् कारणकार्यक्रुत भेद छे. ] कहेलुं छे केः-
છે.	. ते उपाधि भेदथी अनेक प्रकारे छे तो पण श्रद्धानना समानपणाथी एक छे. अथवा एक जीवने एक समये एकनो ज
भा	व होय छे. <mark>रांका</mark> –अवबेाधर्तुं समानपणुं होवाथी ज्ञान अने सम्यक्त्वमां शुं विशेष छे? समाधान–सम्यक्त्व ते रुचि अने चेनुं कारण तो ज्ञान छे. [ अर्थात् कारणकार्यक्रत भेद छे. ] कहेलुं छे केः–
र र	पतु कार्य ता ज्ञान छ. [ जयात् कार्यकापछत्त नेव छ. ] कहुतु छ क ाणमवायधिईओ, दंसणामिट्टं जहोग्गहेहाओ । तह तत्तरुई सम्मं, रोइजड जेण तं नाणं ॥ ८१ ॥
	जेम अवाय अने धारणरूप ज्ञान, अवग्रह अने इहारूप दर्शन इच्छित छे, तेम तत्त्वरूचिरूप सम्यक्त्व छे, अने जेनावडे
র্চা	चि थाय छे ते ज्ञान कहेवाय छे (८०) 'चरित्ते' त्ति चर्यते-मोक्षामिलापी जीवोवडे विधिपूर्वक सेवाय छे ते चारित्र
अ	थवा चर्यते–जेनावडे निवृति(मोक्ष)मां जवाय छे, अथवा कर्मोना संचयने
ा च स	गरत्रमाहनाय कमना क्षयोविया त्रगट ययल आत्माना विरोधरूप पारणाम तं चारित्र, तं आगळ कहवामा आवनारा ।मायिकादि चारित्रना भेदोनुं विरतिरूप सामान्यमां अंतर्भाव थवाथी अथवा एक जीवने एक समये एक चारित्रनो ज सद्भाव
हो	वाथी चारित्र एक छे. आ ज्ञानादिने। आ प्रमाणे क्रम छे, कारण के कह्युं छे के-जे जाणेछं नथी ते श्रद्धानरूप थतुं नथी, जे
<u>श्र</u>	द्धानरूप थयुं नथी तेनुं सम्यगाचरण करातुं नथी. ( सृ०४३ ) ज्ञान वर्गेरे उत्पत्ति, नाश अने स्थितिवाळां छे अने स्थिति,
	१. ज्ञान कारण छे अने दर्शन ( समकित ) कार्य छे.

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ४० ॥	समयादिरूप छे. आ कारणथी सनयतुं तिरूपण करे छेः— एगे समए । सू० ४४, एग पएसे एगे परमाणू । सू० ४५, एगा सिद्धी, एगे सिद्धे, एगे परिनिठ्वाणे, एगे परिनिठ्वुए । सू० ४६ मूलार्थः—समय एक छे. प्रदेश एक छे. परमाणु एक छे. सिद्धशिला एक छे. सिद्ध एक छे. सकल कर्मना नाशथी स्वस्थरूप-परिनिर्वाण एक छे. प्रदेश एक छे. परमाणु एक छे. सिद्धशिला एक छे. सिद्ध एक छे. सकल कर्मना नाशथी स्वस्थरूप-परिनिर्वाण एक छे, सर्वथा शारीरिक अने मानसिक दुःख रहित परिनिष्टत एक छे. टीकार्थः—'एगे समप' समय-परम निक्रुष्ट काल-अत्यंत सक्ष्म-जेना वे विभाग न थाय ते, संकडो कमलपत्रना भेदनना इष्टांतथी अथवा जीरण वस्त्रनी साडीना फाडवाना दृष्टांतथी आगममां प्रसिद्ध होवाथी जाणवुं. ते वर्तमानस्वरूप समय भूत- कालनो नाश अने भविष्यकालनी उत्पत्तिनो अभाव होवाथी आगममां प्रसिद्ध होवाथी जाणवुं. ते वर्तमानस्वरूप समय भूत- कालनो नाश अने भविष्यकालनी उत्पत्तिनो अभाव होवाथी एक ज छे. अथवा स्वरूपवेड अंश रहित होवाथी समय एक छे. ( सू० ४४ ) अंश रहित वस्तुना अधिकारथी ज आ बक्ने सत्र कहे छेः- ' एगे पएसे एगे परमाणू ' झक्रुष्ट-अंश रहित, धर्म, अधर्म, आकाश अने जीवोना देश-अवयवरूप प्रदेश एक छे; कारण के स्वरूपयी वीजा त्रीजा प्रदेश वर्गरामां देशना कथन वड प्रदेशपणाना अभावनो प्रसंग थशे. 'परमाणु'ति परम-अत्यंत, अणु-सक्ष्म ते परमाणु, द्रवणुकादि स्कंशोना कारणभूत छे. कहेखे छे के-'' छेछामां छेल्छं कारण सक्ष्म अने नित्य परमाणु होय छे. एक वर्ण, एक रस, एक गंध अने (अविरोधी) वे स्पर्शवाळो छे तेमज कार्यथी जणाय छे ते परमाणु " ते स्वरूपथी एक ज छे एम जो न मानीए तो आ परमाणु एष्टु	** १. स्थानाः- ध्ययने सिद्धिलें- काग्रमिति- साधनं ४४-४६ स्वत्राणि
	For Private and Personal Use Only	

_	××××		XX XX
શ્રીસ્થા-	××	एक छे अने पूर्यायार्थपणाथी तो अनंत पर्याय छे. अथवा सिध्धोनुं अनंतपणुं छते पण सिध्धोनुं समानपणुं होवाथी एकपणुं छे.	💥 १ स्थाना-
नाङ्गस्रत्र	×	अथवा १ कर्म, २ शिल्प, ३ विद्या, ४ मंत्र, ५ योग, ६ आगम, ७ अर्थ, ८ यात्रा, ९ बुध्धि, १० तप अने ११ कर्मक्षय,	💥 ध्ययने
सानुवाद	×	आ भेदवडे सिद्धोनुं अनेकपणुं छते पण सिद्धोनुं, सिद्ध शब्दना उच्चारपणानुं साम्य होवाथी एकपणुं छे. कर्मक्षय सिद्धनो	्र अजीवधर्माः
11 88 11	×	परिनिर्वाणरूप स्वभाव होय छे तेथी हवे ते कहे छे. 'एगे परिनिव्वाणे' परि-सर्वथा, निर्वाणं, सकल कर्मकृत विकार रहित थवाथी	
	***	स्वस्थ थवं ते परिनिर्वाण, ते एक छे. तेने। एक वखत संभव छते फरीने ( परिनिर्वाणनो ) अभाव होवाशी परित्रिकीणरूप	
	**	धर्मना योगथी ते ज कर्मक्षयासिद्धि, परिनिर्वत कहेवाय छे. तथा ते देखाडवा माटे कहे छे-'एगे परिनिव्चुए' परिनिर्व्टनः-	×   ×   ×
	××	सर्व प्रकारे शारीरिक, मानसिक अस्वास्थ्य( दुःख )थी रहित ए तात्पर्य छे. तेनुं एकपणुं सिद्धनी माफक भावचुं.	
	××	( सू० ४६ ) अहिं सुधीना सूत्रोवडे प्राय जीवना धर्मों एकपणाए निरूपण कराया. हवे जीवने सहायक होवाथी	
	×	पुद्गलो अने तेना लक्षणरूप अजीवना धर्मों ' एगे सदे ' ए आदि सत्रथी यावत् 'एगे ऌक्खे' ए छेछा सत्र पर्यंत ग्रंथवडे	
		एकपणाए ज देखाडाय छे. केटलाएक पुद्गलादिनी तो सत्ता अनुमानथी जणाय छे, अने घटादि कार्यनो साक्षात्कार थवाथी	
		केटलाएक(पुद्गले)नी सत्ता व्यवहारिक(इंद्रियसंयोग)रूप प्रत्यक्षथी जणाय छे; माटे कहे छे के:	*
		एगे सैदे, एगे रूवे, एगे गंधे, एगे रैंसे, एगे फासे, एगे सुब्भिर्संदे, एगे दुब्भिंसदे,	**
	****	एगे सुरूवे, एगे दुरूवे, एगे 'दीहे, एगे हैंस्से, एगे 'बैंहे, एगे 'तैंसे, एगे चैंउरंसे, एगे पिहेंले,	
	~×~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	······································	₩ ₩ ₩ ₩ ₩    88       88
	×		
	{ <b>X</b> }		<b>念</b> }]
		For Private and Personal Use Only	

**** ***	
×	एगे परिमंर्डेंले, एगे किण्हे, एगे णीले', एगे लोहिएँ, एगे हैंलिद्दे, एगे सुक्रिल्ले, एगे सुन्भिंगंधे,
8	एगे दुौब्भगंधे, एगे कैंतत्ते, एगे कैंडुए, एगे कैंसाए, एगे अंबिले, एगे मैंहुरे, एगे कैंक्खडे
	जाव हुक्वे । सू॰ ४७
	मुलार्थः शब्द, रूपे, गंध, रॅस, स्पेश, शुर्भ शब्द, अशुभ शब्द, सारुं रूप, खराब रूप, दीर्घ संस्थान, लघू संस्थिन, वृत्त
	(वाटलों) सं०, त्रिकोणें सं०, चतुरसं (चोरस) सं०, विस्तीर्णें सं०, वर्ल्यं सं०, कृष्णवर्ण, नीर्ल्वर्ण, रक्तवेर्ण, योतवर्ण, खेतवर्ण, सुगंध, दुर्गंध, तीखो रस, कडवो रस, कषाय (तुरो) रस, खाटो रस, मधुर रस, कर्कश यावत र्वंखो ए शब्दादि दरेक एकेक छे.
	सुगय, दुगय, ताखा रस, कड्या रस, कथा (स, क्याय ( सुरा) रस, खाटा रस, मधुर रस, ककरा यावत् ख्ला ए राब्दााद दरक एकक छ टीकार्थः—आ सूत्रोमां शब्दादि सूत्रो सुगम छे, परंतु शब्दयते-जेनावडे जे कहेवाय छे ते शब्द-अवाज, ए श्रोत्रेंद्रियनो
8	विषय छे. रूप्यते-जे जोवाय छे ते रूप-आकार चक्षुइंद्रियनो विषय छे. घायते-जे सुंघाय छे ते-गंध, घाण(नाक)नो
~~~~	विषय छे. रस्यते-जे आस्वादन कराय छे ते रस, रसना इंद्रियने। विषय छे. स्पृइयते-जे स्पर्शाय छे-छबाय छे ते स्पर्श, स्पर्शन इंद्रियने। विषय छे. शब्दादिनुं एकपणुं सामान्यथी छे अथवा सजातीय अने विजातीयना भेदनी अपेक्षा सिवाय
	एकपणुं भाववुं.
€ 31 € 32	शब्द, एवी रीते बीजा पण शब्दो आ बे भेदमां अंतर्भुत थाय छे एम जाणवुं. एवी रीते रूपना व्याख्यानमां पण सुरूप वर्गेरे श्वेतरूप पर्यंत जे चौद भेद छे ते एकेक छे. तेमां मनने ामतुं रूप ते सुरूप छे अने तेथी विपरीत ते कुरूप छे. दीर्घ-अति
××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	श्वेतरूप पर्यंत जे चौद भेद छे ते एकेक छे. तेमां मनने गमतुं रूप ते सुरूप छे अने तेथी विपरीत ते कुरूप छे. दीघे-अति
55	

श्रीस्था-	* लांबुं, ह्रस्व–तेनाथी नानुं, वृत्तादिक पांच स्कंधना संस्थान(आकार)ना भेद छे. तेमां वृत्त संस्थान मोदक जेवुं छे, ते प्रतर * अने घन भेदथी बे प्रकारे छे. वळी ते प्रत्येक (प्रतर–घन)समविषम प्रदेशना अवगाढरूप भेदथी चार प्रकारे छे. बीजा	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
नाङ्गसूत्र	संस्थानों पण एवी रीते जाणवा. 'तंसे'ति त्रण छे कोटि (हांस) जेमां ते त्र्यंस (त्रिकोण) छे. चार छे हांसी जेने ते चतुरस-	* * अजीवधर्माः
साचुवाद		्र अजाववमा• ४४।
ા ૪૨ ા 🗄	💐 चोखुणो छे. तथा 'पिहुल'त्ति प्रथुल–विस्तीर्ण. वळी बीजे स्थले प्रथुलने ठेकाणे 'आयत ' कहेवाय छे ते आयतसंस्थान,	🛞 ४७ सूत्रम्
	🗱 अहिं दीर्घ, दूस्य अने पृथुल शब्दवडे विभाग करीने कहेलुं छे, कारण के दीर्घ वगेरे आयत धर्म विशिष्ट छे. ते आयत्,	
, i i i i i i i i i i i i i i i i i i i	🐒 प्रतर-धन-श्रेणि भेदथी त्रण प्रकारे छे. वळी ते प्रत्येक, सम-विषम प्रदेशरूपथी छ प्रकारना छे. जे आयतना बे भेद दीर्घ अने	
2 C	🎉 🛛 हस्व तेनुं कथन श्ररूआतमां कहेल छे ते वृत्त वगेरे संस्थानेामां आयतनी प्रायः वृत्ति देखाडवा माटे कहेल छे. ते आ प्रमाणेः–दीर्घायत	
	अत्य पाप, हूर्रप जन प्रयुक्त राज्यपथडा पमान करान करछ छे, कारण के दावा पगर आयता यनताताराष्ट्र छे. तो जापत, अत्य प्रतर-धन-श्रेणि भेदथी त्रण प्रकारे छे. वळी ते प्रत्येक, सम-विषम प्रदेशरूपथी छ प्रकारना छे. जे आयतना बे भेद दीर्घ अने इस्व तेनुं कथन शरूआतमां कहेल छे ते वृत्त वगेरे संस्थानोमां आयतनी प्रायः वृत्ति देखाडवा माटे कहेल छे. ते आ प्रमाणेः-दीर्घायत अत्य घणे। लांबो स्तंभ (थांभलो) गोळ त्रिकोण अने चतुष्कोण छे इत्यादि भावचुं. अथवा सत्रनी गति विचित्र होवाथी आवी रीते	X
C C C C C C C C C C C C C C C C C C C	* वर्ण, ते ऋष्ण वगेरे पांच प्रकारे स्पष्ट छे; परंतु हारिद्र-पीळो, कपीश-धूसर वगेरे वर्णना संसर्ग(एक बीजाना संबंध)थी थाय छे,	
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	माटे तेओनो उपन्यास करेल नथी. गंध सुराभ अने दुरभिगंध एम बे प्रकारे छे. जे सन्मुख करे ते सुगंध अने जे विमुख करे ते दुर्गंध.	X
	उपन्यास करेल छे. 'परिमंडले'त्ति परिमंडल संस्थान वलय(चूडी) आकारे, ते प्रतर-घनभेदथी वे प्रकारे छे. रूपनो भेद ते वर्ण, ते कृष्ण वगेरे पांच प्रकारे स्पष्ट छे; परंतु हारिद्र-पीळो, कपीश-धूसर वगेरे वर्णना संसर्ग(एक बीजाना संबंध)थी थाय छे, माटे तेओनो उपन्यास करेल नथी. गंध सुराभि अने दुरभिगंध एम वे प्रकारे छे. जे सन्मुख करे ते सुगंध अने जे विमुख करे ते दुर्गंध. साधारण परिणाम अस्पष्ट होवाथी दुर्गह-दुःखे ग्रहण करी शकाय तेवा संसर्गवडे थवाथी कहेल नथी. रस पांच प्रकारे छे. तेमां	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **
	🧩 सांभळवाथी मोढाने जे पीगळावनार ते खाटो रस, आनंद अने पुष्टिने जे करनार ते मधुर रस. संसर्गथी उत्पन्न थनार लवण रस	🌋 II 83 II
	* श्रिष्म-कफनो नाज्ञ करनार ते तीखो रस, वैशय-शरदीने जे दूर करनार ते कटुक रस, अन्ननी रुचिने जे वंध करनार ते कपाय रस, * सांभळवाथी मोढाने जे पीगळावनार ते खाटो रस, आनंद अने पुष्टिने जे करनार ते मधुर रस. संसर्गथी उत्पन्न थनार लवण रस * *	
1		1) 26.51

× ×	
×××	ते कहेल नथी. स्पर्श आठ प्रकारे छे. तेमां कर्कश-कठण (न वळी शके तेवो) यावत् शब्दथी मृदु वगेरे बीजा छ स्पर्श जाणवा. सुखपूर्वक-सहेलाइथी वळे ते मृदु, नीचे गमन करवामां जे हेतु ते गुरू, प्रायः तीच्छों अने ऊंचे गमन करवामां जे हेतु ते लघु, ठंडीथी करायेल स्तंभन स्वभाववाळो ते शीत, कोमळ पाकने करनार ते उष्ण, संयोग छते संयोगवाळी वस्तुओना बंधनो हेतु- पिंडरूप करनार ते स्निग्ध, बंध(पिंड)ने नहिं करनार रुक्ष. आ दरेक एकेक छे. ( सू० ४७ ) पुद्गलना धर्मोंचुं एकपणुं कहुं. हवे पुद्गलोथी जोडायेल जीवोना अप्रशस्त धर्मो-अठार पापस्थान संज्ञावाळानुं ' एगे पाणाइवाए ' आदि सूत्रना आरंभथी ' दंसणासछे ' सूत्रवडे एकपणुं कहे छे:-
XX	सुखपूर्वक–संहेलाइथी वळे ते मृदु, नीचे गमन करवामां जे हेतु ते गुरू, प्रायः तीच्छों अने ऊंचे गमन करवामां जे हेतु ते लघु, ठंडीथी करायेल स्तंभन स्वभाववाळो ते शीत, कोमळ पाकने करनार ते उष्ण, संयोग छते संयोगवाळी वस्तुओना बंधनो हेतु–
×××	पिंडरूप करनार ते स्निग्ध, बंध(पिंड)ने नहिं करनार रुक्ष. आ दरेक एकेक छे. ( सू० ४७ ) पुद्गलना धर्मानुं एकपणुं कह्युं.
****	हवे पुद्गलोथी जोडायेल जीवोना अप्रशस्त धर्मो–अठार पापस्थान संज्ञावाळानुं ' एगे पाणाइवाए ' आदि सूत्रना आरंभथी ' दंसणसछे ' सूत्रवडे एकपणुं कहे छेः–
××××	ં રેને માંગાફવાર ગાવ રેને મારેન્ગર 1 રેને જોઇ ગાવ છોઇ 1 હેને પેજી હેને ડ્રોસ જોવ હેને 🕅
××	परपारवाएँ । एगा अरइरइ । एग मायामास । एग मिच्छादसणसंछ । सू० ४८, एग पाणा-
	मूलार्थः-प्राणातिपात एक छे यावत् परिग्रह एक छे, कोध एक छे यावत् लेभ एक छे, राग एक छे, द्वेप एक छे
*****	
××	
	टीकार्थः-तत्र तेमां-पापस्थानमां प्राणाः-उच्छ्वास वंगेरे, तेओतुं अतिपातन-प्राणवाळा साथे वियोग करवो ते प्राणा- ८

तिपात हिंसा. क्रम्रुं छे के-'' पांच इांद्रिय, त्रण बल, उच्छ्वास-निच्छ्वास अने आयुष्य-आ दश प्राणो भगवंतोए कहेला छे. ते प्राणोनो वियोग करवो ते हिंसा छे. '' ते प्राणातिपात द्रव्य अने भावभेदथी वे प्रकारे छे. अथवा विनाश ( जीव रहित करवुं ते ), परिताप ( दुःख ) अने संक्वेश ( खेद )ना भेदथी त्रण प्रकारे छे. कह्युं छे केः तप्पज्जायविणासो, दुवखुप्पाओ य संकिलेसो य । एस वहो जिणभणिओ, वज्जेयव्वो पयत्तेणं ॥८२॥ जीवना पर्याय( तिर्यंचादि )नो विनाश, दुःख उत्पन्न करवुं अने खेद उपजाववो-आ त्रण प्रकारनो वध जिनेश्वरोए कहेल छे ते प्रयत्नवडे त्यागवा योग्य छे. ( ८२ ) अथवा मन, वचन अने कायावडे करवुं, कराववुं अने अनुमोदनना भेदथी नव प्रकारे छे. वळी ते कोधादि भेदथी छत्रीश प्रकारे पण छे. (१). तथा जुटुं वोलवुं ते स्टषाचाद, ते द्रव्य अने भावना भेदथी वे प्रकारे छे, अथवा ते अभूतोद्भावन वगेरे भेदवडे चार प्रकारे पण छे. ते आ प्रमाणे-'आत्मा सर्वगत-व्यापक छे' एम जे कहेवुं ते अभूतोद्भावन, 'आत्मा नथी' एम जे कहेवुं ते भूतनिह्वद, 'गौ-बळद छतां पण आ घोडो छे' एम कहेवुं तेवस्त्वंतर- न्यास, ' तुं कोढियो छो ' एम जे कहेवुं ते निंदा ( वचन ). (२). अदत्त-स्वामी ( मालीक ), जीव, तीर्थकर अने गुरुवडे आज्ञा न अपायेल सचित्त, अचित्त अने मिश्र भेदवाळी वस्तुनुं आदान-ग्रहण करवुं ते अदत्तादान-ज्यायपणुं. ते विविध उपा- धिना वराथी अनेक प्रकारे छे. (३). तथा मिश्रुनस्य-स्त्री अने पुरुषरूप जोडलानुं कार्य ते मेथुन-अव्रद्वचर्य. ते मन, वचन अने काया संवंधी करवुं, करावचुं अने अनुमोदवारूप नव भेदोथी औदारिक अने वैक्रिय शरीरना विषयोवडे अढार प्रकारे	<pre>%************************************</pre>
अने काया संबंधी करवुं, कराववुं अने अनुमोदवारूप नव भेदोथी औदारिक अने वैक्रिय शरीरना विषयोवडे अढार प्रकारे	X    83    X X X X X X X X X X
	प्राणोनो वियोग करवो ते हिंसा छे. " ते प्राणातिपात द्रच्य अने भावभेदथी वे प्रकारे छे. अथवा विनाश ( जीव रहित करवुं ते ), परिताप ( दुःख ) अने संक्वेग्न ( खेद )ना भेदथी त्रण प्रकारे छे. क्युं छे केः— तप्पज्जायविणासो, दुवरखुप्पाओ य संकिलेसो य । एस वहो जिणभणिओ, वज्जेयव्वो पयत्तेणं ॥८२॥ जीवना पर्याय( तिर्यंचादि )नो विनाश, दुःख उत्पन्न करवुं अने खेद उपजाववो–आ त्रण प्रकारनो वध जिनेश्वरोए कहेल छे ते प्रयत्नवडे त्यागवा योग्य छे. ( ८२ ) अथवा मन, बचन अने कायावडे करवुं, कराववुं अने अनुमोदनना भेदथी नव प्रकारे छे. वळी ते कोधादि भेदथी छत्रीश प्रकारे पण छे. (१). तथा जूटुं बोलवुं ते म्हषाचाद, ते द्रच्य अने भावना भेदथी वे प्रकारे छे, अथवा ते अभूतोद्भावन वगेरे भेदवडे चार प्रकारे पण छे. ते आ प्रमाणे–'आत्मा सर्वगत–व्यापक छे' एम जे कहेवुं ते अभूतोद्भावन, 'आत्मा नथी' एम जे कहेवुं ते भृतनिह्वव, 'गो–बळद छतां पण आ घोडो छे' एम कहेवुं ते वस्त्वंतर- न्यास, ' तुं कोढियो छो ' एम जे कहेवुं ते निंदा ( वचन ). (२). अदत्त–स्वामी ( मालीक ), जीव, तीर्थंकर अने गुरुवडे आज्ञा न अपायेल सचित्त, अचित्त अने मिश्र भेदवाळी वस्तुनुं आदान-ग्रहण करवुं ते अवत्तादान-चारपणुं. ते विविध उपा- ाधिना वराथी अनेक प्रकारे छे. (३). तथा मिथुनस्य-स्त्री अने पुरुषरूप जोडलानुं कार्य ते मैथुन-अन्नह्राचर्य. ते मन, वचन

`\* \*\*\*\*\* थाय छे. अथवा विविध उपाधिथी घणा प्रकारे छे. (४). तथा परिगृह्यते-जे स्वीकार कराय छे ते परिग्रह. ते बाह्य अने अभ्यंतर भेदथी बे प्रकारे छे. तेमां बाह्य-धर्मना साधनो सिवाय धन-धान्य वगेरे अनेक प्रकारे छे अने आभ्यंतर तो मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने प्रमाद वगेरे अनेक प्रकारे छे. अथवा परिग्रहणं-सर्वतः ग्रहण करवुं ते परिग्रह-मुच्छी. (५). तथा कोध, मान, माया अने लोभ, ते कषायमोहनीय कर्मरूप पुद्गलना उदयवडे प्राप्त थयेल जीवना परिणामो. वळी ए कषायो अनंतानंबंधी वगेरे भेदथी अथवा असंख्यात अध्यवसायस्थानोना भेदथी अनेक प्रकारे छे. (६-९). तथा 'पेज़ो'त्ति-प्रियनो जे भाव अथवा कार्य ते प्रेम, अप्रगट माया अने लोभलक्षण भेदस्वभावरूप ते राग मात्र छे. (१०). (<u>\*</u>\*\*\* तथा 'दोसे' त्ति-द्वेषभाव ते द्वेष अथवा दुषण ते दोष, ते अप्रगट क्रोध अने मानलक्षण भेदस्वभावरूप ते अप्रीति मात्र छे. (११). ' जाव'त्ति ' कलहे अव्भक्खाणे पेसुण्णे ' तेमां कलह-कजीओ (१२), अभ्याख्यान-प्रगट खोहं आळ आपवुं (१३), पैद्युन्य-गुप्त रीते छता-अछता दोषनुं प्रगट करवुं ते चुगल(चाडी)कर्म (१४), बीजाओनो जे अपवाद करवो \*\*\*\*\* (खराब बोलवुं) ते परपरिवाद (१५), अरतिमोहनीय कर्मना उदयथी थयेल चित्तना विकार-उद्देगरूप ते अरति, तथा-विध आनंदरूप ते रति. अरतिरति ते एक ज विवक्षित छे, जेथी कोईक विषयमां रति तेने ज विषयांतरनी अपेक्षाए \*\*\*\* अरति कहे छे. एवी रीते अरतिने ज रति कहेवाय छे. अरतिरतिने विषे एकपणुं औपचारिक छे. (१६) तथा ' मायामोसे 'त्ति माया-निकृति ( कपट ), मृषा-जूठुं बोलवुं, अथवा माया सहित असत्य बोलवुं ते मायामृषा, \*\*\*\* १. रतिमोहनीयकर्मना उदयथी रात थाय छे माटे अरति अने रतिनो वस्ततः भेद छे.

الاق	
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	
<u>ا</u> ا	
	प्राक्ठतपणुं होवाथी मायामोष कहेवाय छे. एमां वे दोषनो योग छे. वळी आ मानमृपादि, संयोगदोषना उपलक्षणरूप छे.
	कोइक एम कहे छे के वेषांतर. भिन्न भिन्न रूप करवावडे लोकोने ठगवुं ते मायाम्टषा. प्रेम वगेरे विषयना भेदवडे अथवा अध्य-
	वसायस्थानोना भेदथी पण अनेक प्रकारे छे. (१७). मिथ्यादर्झन–विपरीत दृष्टि, तेंज तोमँर वगेरेना शल्यनी जेम दुःखनो हेतु होवाथी
	<b>श</b> ल्य ते मिथ्यादर्शनदाल्य. मिथ्यादर्शन १. अभिग्रहिक, २. अनभिग्रहिक,३. अभिनिवेशिक,४. अनाभोगिक अने ५. सांशथिक
2	भेदथी पांच प्रकारे छे. अथवा उपाधिना भेद्थी अधिकतर भेद पण छे. (१८). आ प्राणातिपातादि अढार पापस्थानोत्तुं उक्त क्रमवडे
	अनेकपणुं छते पण वध वगेरेना साम्यथी एकपणुं जाणवुं. ( स० ४८ ) अढार पापस्थानको कह्यां. हवे 'एगे पाणाइवाय-
	वेरमणे' इत्यादि अढार सत्रोवडे तेना विपक्षोना एकपणोने कहे छे. आ सत्रो सुगम छे. विरमण ते विरति, तथा विवेक
	ते त्याग (सू०४९). हमणा पुद्गल सहित जीवद्रव्यना धर्मोना एकपणुं जे कह्युं ते कालना स्थितिरूपपणाए, कारण के काल
	तेनो धर्म छे. कालना विशेषणोने ' एगा आसप्पिणी ' आदि सत्रथी आरंभीने ' सुसमसुसमा ' छेछा सत्रवडे कालउं
	स्वरूप कहे छेः—
	एगा ओसप्पिणी, एगा सुसमसुसमा जाव एगा दुसमदुसमा । एगा
	उस्सपिष्णी एगा दुस्समदुस्समा जाव एगा सुसमसुसमा । सू० ५०
\$	१. मानमूषा, क्रोधमूषा वगेरे उपलक्षणधो मायामूषामां अंतभूत छे. २. मंथ-दंडाकार.
	(, માંગણવા, ઝાવણવા વગર ઉપલ્લગથા માંવાણવામાં બહેલૂલ છે. ર∍ મવ≃વુંડાયાર.
2	
5	

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

श्रीस्था-

नाङ्गस्त्रत्र

सानुवाद

11 88 11

१ स्थानाः-

ध्ययने अब-

सर्पिणाद्याः

काल-

स्वरूषम्

५० सत्रम्

11 88 11

dia www.kodulut.og	710
मूलार्थः-एक अवसर्षिणी, एक सुसमसुसमा यावत् एक दुसमदुसमा छे. एक उत्सर्षिणी, एक दुसम सुसमसुसमा एक छे. टीकार्थः-काल ए केम जणाय छे ? एम जो कहेद्यो तो कहीए छीए के वक्कल, चंपक अने अशोकादि दृक्षोमां प्र आववाना नियमवडे देखावाथी. तेने। नियामक कारण काल छे. तेमां 'ओस्मप्पिणी' ति घटता आरावडे जे घ आयुष्य अने शरीरादि भावोने घटाडे-ट्रंका करे छे ते अवसर्षिणी, दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाणरूप व सारामां सारुं अत्यंत सुखरूप ते सुपमसुपमा नामे अवसर्षिणीनो ज पहेलो आरो, अवसर्षिणीना हानिना स्वस् होवाथी एकपण्ठं छे, एम सर्वत्र जाणवुं. यावत् शब्द मर्यादा देखाडवा माटे छे, तेथी सुपमसुपमा इत्यादि स्वते प्रसिद्ध जे छे त्यांसुधी कहेवुं. यावत् ' दुसमदुस्ममे ' ति आ पद पर्यंत पाठनो संग्रह करवो. अहिं आ अंतिदेश, (संक्षेप) माटे छे. एवी रीते सर्व स्थले ' यावत्' शब्दनी व्याख्या करवा योग्य छे. अतिदेशवडे प्राप्त थलेला अन् वडे समीपमां आवेला पदो आ छे-'एगा सुस्मम, एगा सुसमदुसमा, एगा दुस्ममसुस्समा, एगा दुस्मे ओतुं स्वरूप शब्दना अनुसारथी जाणवुं. प्रथमना त्रण आराचुं कमशः चार, त्रण अने वे कोडाकोडी साग जाणवुं. चोथा आराचुं वेंतालीश हजा दर्भ न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण छे. छेल्ला वे आरामां प्रत इजार वर्ष प्रमाण छे. बळी आरानी अपेक्षाए जे दृश्चि पामे छे ते, अथवा आयुष्य वगेरे भावोनी जे दृश्चि करगे १. साक्षात् पाठ न होय छतां कहेदा योग्य पाठ लाववा ते अतिदेश.	
र्ट्स म्हलार्थः-एक अवसर्विणी, एक सुसमसुसमा यावत् एक दुसमदुसमा छे. एक उत्सर्विणी, एक दुसम् हे सुसमसुसमा एक छे.	ग्दुसमा यावत्
टीकार्थः-काल ए केम जणाय छे? एम जो कहेशो ते। कहीए छीए के वक्कल, चंपक अने अशोकादि इक्षोमां पु आववाना नियमवडे देखावाथी. तेने। नियामक कारण काल छे. तेमां 'ओस्सप्पिणी'ति घटता आरावडे जे घ	रुष्पोना प्रदान− 🏻
आववाना नियमवंड देखावाया. तना नियामक कारण काल छ. तमा आसाप्यणा ति चटता आरावड ज य आयुष्य अने शरीरादि भावाने घटाडे-टूंका करे छे ते अवसर्पिणी, दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाणरूप व	हालविशेष छे.
सारामां सारुं अत्यंत सुखरूप ते सुषमसुषमा नामे अवसपिंणीनो ज पहेलो आरो, अवसपिंणीना हानिना स्वर होवाथी एकपणुं छे, एम सर्वत्र जाणवुं. यावत् शब्द मर्यादा देखाडवा माटे छे, तेथी सुषमसुषमा इत्यादि सूत्रो	। स्थानांतरमां
प्रसिद्ध जे छे त्यांसुधी कहेवुं. यावत्' दुसमदुसमे ' ति आ पद पर्यंत पाठनो संग्रह करवो. अहिं आ अंतिदेश, (संक्षेप) माटे छे. एवी रीते सर्व स्थले ' यावत्' शब्दनी व्याख्या करवा योग्य छे. अतिदेशवडे प्राप्त थयेला अने	ने 'एक' शब्द- 👔
वडे समीपमां आवेला पदे। आ छे-'एगा सुसमा, एगा सुसमदुसमा, एगा दुसमसुसमा, एगा दुसमे ओतुं स्वरूप शब्दना अनुसारथी जाणवुं. प्रथमना त्रण आरानुं क्रमशः चार, त्रण अने वे कोडाकोडी साग	'ति आ आरा- ारोपम प्रमाण
जाणवुं. चोथा आरानुं वेंतालीज्ञ हजार वर्ष न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण छे. छेल्ला वे आरामां प्रत हजार वर्ष प्रमाण छे. बळी आरानी अपेक्षाए जे वृध्धि पामे छे ते, अथवा आयुष्य वगेरे भावोनी जे वृध्धि करा	येकनुं एकवीश
र साक्षात् पाठ न होय छतां कहेवा योग्य पाठ लाववाते अतिरेग.	
	व छत्त उत्स-

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद १। ४५ ॥ ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	पिंणी. ते कालमानथी अवसपिंणी प्रमाणे छे. अत्यंत दुःखरूप ते दुसमदुसमा नामे पहेलो आरो. 'यावत्' शब्दथी ' एगा दुसमा, एगा दुसमसुसमा, एगा सुसमदुसमा, एगा सुसमे'ति आ पाठ जाणवो. आ छ आरातुं कालमान पूर्वे जणावेल छे ते प्रमाणे छे परंतु ऊलटी रीते जाणवुं. (स० ५०) जीव, पुद्गल अने काल लक्षणरूप द्रव्यनी विविध धर्मविशेषोनी एकपणानी प्ररूपणा करी. हवे संसारी मुक्त जीव अने पुद्गलद्रव्य विशेषोना तथा नारक अने परमाणु आदिना समुदायलक्षणरूप धर्मनी ' एगा नेरइयाणं वग्गणा' आ प्रथम सत्रथी आरंभीने 'एगा अजहन्नु इस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्ग- णे' क्ति आ छेल्ला सत्र पर्यंत वर्गणाने कहे छेः— एगा नेरइयाणं वग्गणा, एगा असुरकुमाराणं वग्गणा, चउवीसदंखओ जाव वेमाणियाणं वग्गणा। एगा भवासिद्धीयाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धीयाणं वग्गणा, एगा भवासिद्धि[याणं] नेरइयाणं	****	१ स्थाना- ध्ययने वर्गणास्व- रूपम् ५१ स्रत्रम्
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	वग्गणा, एगा अभवासिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा, एवं जाव एगा भर्वासिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा । एगा सम्माद्दिट्टियाणं वग्गणा, एगा मिच्छद्दिट्टियाणं वग्गणा, एगा सम्मामिच्छद्दिट्टियाणं वग्गणा । एगा सम्माद्दिट्टियाणं नेरइयाणं वग्गणा, एगा मिच्छ- १. उत्सपिणीना प्रथम आरानो काल एकवीश हनार वर्षनो अने छेल्ला आरानो चार कोडाकोडी सागरोपमनो छे. २. बाब्र्वाळी प्रतिमां सिद्धियाणं पाठ छे अने आ॰ सा॰ वाळी प्रतिमां भवसिद्धि० पाठ छे.	****	॥ ४५ ॥

कुमा	याणं नेरइयाणं वग्गणा, एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा, एवं जाव थणिय- राणं वग्गणा । एगा मिच्छादिट्ठियाणं पुढविकाइयाणं वग्गणा, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ।
एगा	सम्मद्दियिाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एगा मिच्छद्दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एवं तेइंदियाणंपि
चउरि	रंदियाणवि। सेसा जहा नेरइया जाव एगा सम्ममिच्छद्दिट्टियाणं वेमाणियाणं वग्गणा॥ एगा
कण्ह	पक्खियाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा, एगा कण्हपक्खियाणं नेरइयाणं वग्गणा,
एगा	सुक्कपक्खियाणं नेरइयाणं वग्गणा,एवं चउवीसदंडओ भाणियव्वो।एगा कण्हलेसाणं वग्गणा,
एगा	नीललेसाणं वग्गणा, एवं जाव सुक्कलेसाणं वग्गणा, एगा कण्हलेसाणं नेरइयाणं वग्गणा
जाव	काउलेसाणं नेरइयाणं वग्गणा। एवं जस्स जइ लेसाओ, भवणवइवाणमंतरपुढविआउवणस्सइ-
काइ	गणं च चत्तारि लेसाओ तेउवाउवेइंदियतिइंदिअचउरिंदियाणं तिन्नि लेसाओ, पॅचिंदियतिरिक्ख-
जोपि	ायाणं मणुस्साणं छछेसाओ, जोइसियाणं एगा तेउलेसा, वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेसाओ ।
एगा	कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणा, एगा [कण्हलेसाणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा,] एवं छसुवि १. आ पाठ आगमोदय समितिवाळी प्रतिमां रही गयेल छे.

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद

॥ ४६ ॥

www.kobatirth.org

۰.

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	एगा अणंतगुणकालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा । एवं वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्या जाय एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा । एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एगा उक्कस्सपएसि- याणं खंधाणं वग्गणा एगा अजहन्तुक्रस्सपएसियाणं खंधाणं वग्गणा एवं जहन्नोगाहयाणं उक्कोसो- गाहणगाणं अजहन्तुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठितियाणं उक्कस्सठितियाणं अजहन्नुक्कोसठितियाणं जहन्नगुणकालगाणां उक्कस्सगुणकालगाणं अजहन्तुक्कस्सगुणकालगाणं, एवं वण्णगंधरसफासाणं वग्गणा भाणियव्या जाव एगा अजहन्तुक्कस्सगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा । स्० ५१ मुलार्थः-नैरथिकोनी वर्गणा एक छे, असुरकुमारोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते चोवीश दंडक पर्यंत यावत् वैमानिक देवोनी वर्गणा एक छे. भव्यसिद्विकोनी वर्गणा एक छे, अभव्यसिद्विकोनी वर्गणा एक छे, भव्यसिद्विक नैरयिकोनी वर्गणा एक छे, अभ्व्यसिद्विक नैरयिकोनी वर्गणा एक छे. एवी रीते यावत् भ्व्यसिद्विक वैमानिकोनी वर्गणा एक छे अने अभव्य- मिदिक वैमानिकोनी वर्गणा एक छे. समयादवि जीवोनी वर्गणा एक छे, मिश्रदृष्टि	*****
****************	े देवोनी वर्गणा एक छे. भव्यसिद्धिकोनी वर्गणा एक छे, अभव्यसिद्धिकोनी वर्गणा एक छे, भव्यसिद्धिक नैरयिकोनी वर्गणा	****

श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ।। ४७ ।।	ए पा छ ले क में के ते सि क हा ए	वत् वनस्पतिकायिकोनी वर्गणा एक छे, सम्यग्दष्टि बेइंद्रियोनी वर्गणा एक छे, मिथ्याद्दष्टि बेइंद्रियोनी वर्गणा एक छे, वी रीते तेइंद्रिय चौर्गिंद्रियोने पण एक वर्गणा जाणवी. शेष ( पंचेंद्रियना ) पांच दंडको नारकोनी माफक जाणवा. वित् मिश्रद्यि वैमानिकोनी एक वर्गणा छे. कृष्णपाक्षिक जीवोनी वर्गणा एक छे, ग्रुक्कपक्षिक जीवोनी वर्गणा एक छे, ष्णपाक्षिक नैरयिकोनी वर्गणा एक छे, ग्रुक्कपाक्षिक नैरयिकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते चोवीश दंडको कहेवा. कृष्ण- त्र्यानी वर्गणा एक छे, नीललेक्यावाळा नैरयिकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते चोवीश दंडको कहेवा. कृष्ण- त्र्यानी वर्गणा एक छे, नीललेक्यावाळा नैरयिकोनी वर्गणा एक छे. एवी रीते चोवीश दंडको कहेवा. कृष्ण- त्र्यानी वर्गणा एक छे, नीललेक्यावाळा नैरयिकोनी वर्गणा एक छे. एवी रीते चोवीश दंडको कहेवा. कृष्ण- त्र्यानी वर्गणा एक छे, नीललेक्यावाळा नैरयिकोनी वर्गणा एक छे. एवी रीते जेने जेटली लेक्याक्षे हे ते कहे छे:– वनपति, वाणव्यंतर, प्रथ्वीकायिक, अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकोने पहेली चार लेक्या छे. तेजस्कायिक, वायुकायिक, इंद्रिय, तेइंद्रिय, चतुरिंद्रियोने पहेली त्रण लेक्या छे, पंचेंद्रिय तिर्थचयोनिको अने मनुष्योने छ लेक्या छे, ज्योतिष्कोने एक जोलेक्या छे, वैमानिकोने उपरनी त्रण लेक्या छे. कृष्णलेक्यावाळा भव्यसिद्विकोनी वर्गणा एक छे, कृष्णलेक्यावाळा आत्य- रद्विकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते छ लेक्या छे. कृष्णलेक्यावाळा भव्यसिद्विकोनी वर्गणा एक छे, कृष्णलेक्यावाळा आत्य- रद्विकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते छ लेक्या विषे पण बे वे पदो कहेवा, कृष्णलेक्यावाळा भव्यसिद्विक नैरयिकोनी पत्र तेने तेटली लेक्याआ कहेवी. कृष्णलेक्यावाळा सम्यग्दष्टिकोनी वर्गणा एक छे, कृष्णलेक्यावाळा सिथ्यादष्टिकोनी वर्गणा क छे, कृष्णलेक्यावाळा मिश्रद्यिकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते छ लेक्याओत विर्य यावत् वैमानिक दंडक सुधी जेओने पत्र तेय तेय तेय के व्यवत्या विर्क वर्गणा एक छे, एवी रीते छ लेक्यावाळा मिथ्यादष्टिकोनी वर्गणा	xxxxxxxxxxxx xx	स्थाना- ध्ययने र्गणास्त्र- रूपम् २१ सत्रम्
	र् ******	क छे, कृष्णलेभ्यावाळा मिश्रदृष्टिकोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते छ लेभ्याओने विषे यावत् वैमानिक दंडक सुधी जेओने टली दृष्टिओ होय तेटली वर्गणा कहेवी. कृष्णलेभ्यावाळा कृष्णपाक्षिकोनी वर्गणा एक छे, कृष्णलेभ्यावाळा शुक्कपाक्षिकोनी	{ <b>₩</b> }	II 80 II

For Private and Personal Use Only

• ,

वर्गणा एक छे, एम यावत् वैमानिकोना दंडक सुधी जेने जेटली लेक्याओ छे तेटली पक्षविशिष्ट एकेकी वर्गणा कहेवी. ए आठ बोल ओघ वगेरे चोवीशे दंडकवडे जाणवा. तीर्थसिद्वोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते यावत् एक सिद्वोनी वर्गणा एक छे, अनेक सिद्धोनी वर्गणा एक छे, प्रथम समय सिद्धोनी वर्गणा एक छे, एम यावत् अनंत समय सिध्घोनी वर्गणा एक छे. परमाणु पुद्रालोनी वर्गणा एक छे एम यावत् अनंतप्रदेशिक स्कंघोनी वर्गणा एक छे, एक प्रदेशावगाढ ( एक प्रदेशने अवगाहीने रहेल ) पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एम यावत् असंख्यात प्रदेशोने अवगाही रहेल पुद्रालोनी वर्गणा एक छे. एक समयनी स्थितिवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एम यावत् असंख्यात प्रदेशोने अवगाही रहेल पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एक समयनी स्थितिवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एम यावत् असंख्यात प्रसंख्यात प्रदेशोने अवगाही रहेल पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एक समयनी स्थितिवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे. यावत् असंख्याता प्रसंख्याती समयनी स्थितिवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे, एकसुण काळा वर्णवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे. एवी रीते वर्णो, गंधो, रसो अने स्पर्शोनी वर्गणा कहेवी, ते यावत् अतंत- गुण काळा वर्णवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे. खवि रीते वर्णो, गंधो, रसो अने स्पर्शोनी वर्गणा कहेवी, ते यावत् अतंत- गुण रक्ष स्पर्शवाळा पुद्रालोनी वर्गणा एक छे. खवन्य प्रदेशिक स्कंघोनी वर्गणा एक छे, उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कंघोनी वर्गणा एक छे, अजघन्य-उत्कृष्ट ( मध्यम ) प्रदेशिक स्कंघोनी वर्गणा एक छे. जघन्य अवगाहनावाळा स्कंघोनी वर्गणा एक छे, जजघन्य-उत्कृष्ट ( मध्यम अवगाहनावाळा स्कंघोनी वर्गणा एकक छे. जघन्य स्थतिवाळा, उत्कृष्ट स्थितिवाळा अने मध्यम स्थितिवाळा स्कंघोनी वर्गणा एक छे, जघन्य गुण काळा वर्णवाळा, उत्कृष्टपुण काळा वर्णवाळा अने मध्यम- गुण काळा वर्णवाळा स्कंघोनी वर्गणा एक छे, एवी रीते यावत् वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शोनी वर्गणा एकेक कहेवी, यावत् मध्यमसुण ऌखा स्पर्शवाळा पुद्र लोनी वर्गणा एक छे. ( स्रू० ५१)
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ४८ ।। ***	टीकार्थः-प्रस्तुत विषयमां ' नेरइयाणं 'ति-आविद्यमानमय-नीकळी गयुं छे इन्छित फलरूप कर्म जेनाथी ते निरयो ( नरकावासो ), तेमां उत्पन्न थयेला नैरयिको-क्लेशविशिष्ट जीवो. ते जीवो भूमि, पाथडा, नरकावास, स्थिति अने भच्यत्वादि भेदथी अनेक प्रकारे छे. ते बधाओनी वर्गणा-वर्ग-सग्रुदायरूप छे. सर्वत्र नारकत्त्वादि पर्यायोवडे समानपणुं होवाथी वर्गणानुं एकपणुं छे. तथा असुराः-असुरो ते नवीन यौवनपणाए कुमारोनी माफक कुमारो होवाथी असुरकुमारो, तेओनी वर्गणा एक छे. 'चउवीसदंडउ'त्ति-चेवीश पदवडे बंधायेल जे दंडक एटले वाक्यनी रीति ते चोवीश दंडक. ते आहें कहेवा योग्य छे. ते आ- नेरइया १ असुरादी १०, पुढवाइ ४ बेइंदियादयो चेव ४। नर १ वंतर १ जोतिसिय १, वेमाणी १ दंडओ एवं ॥ ८३॥ सात नैरयिकोनो १ दंडक, असुरादिना १० दंडक, पृथ्वी आदिना ५ दंडक, बेइंद्रियादि तिर्यंचना ४ दंडक, मनुष्यने १ दंडक, व्यंतरनो १ दंडक, ज्योतिष्कनो १ दंडक अने वैमानिकने। १ दंडक. आ प्रमाणे चोवीश्च दंडक कहेला छे. भवनपतिओ दश्च प्रकारे छे:-	*********************	१ स्थाना- ध्य <b>पने</b> नारकदे <del>व-</del> सिद्धिः
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	असुरा नाग सुवण मा, विज्जू अग्गी य दीव उद्ही य । दिसि पवणथणियनामा, द्सहा एए भवणवासि॥८४ आ गाथाने। अर्थ स्पष्ट छे. आ गाथाना क्रमवडे आ खत्रो कहेवा. ' एगा वेमाणियाणं वग्गणा 'क्ति यावत् चोवीशमा वैमानिक दंडक पर्यंतनी वर्गणा एक छे. आ सामान्य(ओघ) दंडक छे. इांका-नारकोनी सत्ता ( अस्तित्व )	2 🐭 2 🗉	II 85 <b>II</b>

***		×: ×: ×:
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	ज दुःसाध्य छे तो तेना धर्मरूप वर्गणानुं एकपणुं वा अनेकपणुं दूर रहो ( अर्थात् ते क्यांथी होय ? ) कारण के–नारको नथी, तो पछी आकाद्यना फूलनी माफक नारकोना साधक प्रमाणनो अभाव छे. समाधान–' प्रमाणनो अभाव ' जे तमे	*****
××	कहेल ते हेतु असिद्ध छे, कारण के तेओना साधक अनुमान प्रमाणनो सद्भाव छे. ते आ प्रमाणेः–अत्यंत पापकर्मनुं फळ	×
××	विद्यमान भोगवनार विशिष्ट छे. कर्मनुं फळ होवाथी पुन्य कर्मना फळनी जेम. तिर्यंच अने मनुष्यो ज उत्कृष्ट पापफलना भोगवनारा नथी, कारण के औदारिक शरीरवाळावडे उत्कृष्ट पापफलनुं भोगववुं विशिष्ट देवना जन्मना कारणभूत प्रकृष्ट पुन्यना	×××
×××	फलनी जेम अशक्य छे. कह्युं छे के:	×
×××	पावफलस्स पगिष्टस्स, भोइणो कम्मओऽवसेसव्व। संतिधुवं तेऽभिमया, नेरइया अह मई होजा ॥८५॥	X
×××	अचत्थदुक्खिया जे, तिरियनरा नारगत्ति तेऽभिमया ।	XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
××*	तं न जओ सुरसोक्ख-प्पगारिससारिसं न तं दुक्खं ॥ ८६ ॥ युग्मम् जेम अवशेष-जघन्य मध्यम पापना फलने भोगवनारा तिर्यंच अने मनुष्यो छे ते प्रत्यक्ष जोवाय छे तेम उत्कृष्ट पापना	×
XX	जम अवर्शप–जघन्य मध्यम पापना फलने भौगवनारा तियेच अने मनुष्यों छे ते प्रत्यक्ष जोवाय छे तेम उत्कृष्ट पापना फलने भोगवनारा कोईक चोकस छे; माटे तेवा पापनुं फल भोगवनारा जे कोई छे ते नारको छे, एम स्वीकारवुं जोईए.	××
***	अहिं कदाच तमे एम कहेशो के (शका)-अत्यंत दुःखी जे तिर्यंच अने मनुष्यो छे. ते ज उत्कृष्ट पापना फलने भोगवनारा होवाथी	****
××	तेओने ज नारको कहेवा जोईए. अदृष्टनी कल्पना करवाथी हो। फायदोे ? समाधान-आ तमारी मान्यता अयोग्य छे, कारण के ९	*
i Ş		X

For Private and Personal Use Only

श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ ४९ ॥	<ul> <li>जे एवा उत्कृष्ट पापना फलने भोगवनारा होय ते सर्वथा प्रकारे दुःखी ज होवा जोईए. जेवुं दुःख नरकभूमिमां प्रसिद्ध छे तेवुं दुःख दिर्थच अने मनुष्योने होतुं नथी. देवना उत्कृष्ट सुखनी माफक तिर्यंच अने मनुष्योने जेम उत्कृष्ट सुख नथी तेम दुःख पण उत्कृष्ट नथी. ( ८५-८६ ) द्रांका-देवोनुं पण विवादास्पद होवाथी, अर्थात् देवो छे के नहिं ए संदेह होवाथी ' विग्निष्ट देवजन्मना कारणभूत प्रकृष्ट पुरुष पुरुष पुरुष पुरुष पुरुष्ट पुर्ण सुरुष्ट न पर्छ, ( ८५-८६ ) द्रांका-देवोनुं पण विवादास्पद होवाथी, अर्थात् देवो छे के नहिं ए संदेह होवाथी ' विग्निष्ट देवजन्मना कारणभूत प्रकृष्ट पुरुष पुरुष पुरुष पुरुष त्य करे वृत्र ' एम सिद्धान्तीए आपेछं जे दृष्टांत ते असिद्ध छे. समाधान-अर्थसहित ' देव ' पद ग्रुद्ध पैद होवाथी घट नामनी जेम व्युत्पत्तिवाछं छे. ते कारणथी देवो छे एम प्रतिति करवी जोईए. वळी पूर्वपक्षी रांका करे छे के-दिव्य गुणसंपन्न गणधरादि अने क्राद्धिसंपन्न चक्रवत्थीदि मनुष्यवहे व्युत्पत्त्त्यर्थवाछं देवपद सार्थक थरो, पण तमने जे देवनो अर्थ विवक्षित छे ते देवपदनी सिद्धि नहिं थाय. समाधान-जो के कोईक मनुष्य विशेषमां आ देवपछं कहेवाय छे ते पण औपचारिक छे जने सत्य अर्थनी सिद्धि छते उपचार थाय छे. जेम स्वाभाविक सिंहनो सद्भाव ( अस्तित्व ) छते ' माणवक'- ने विषे सिंहनो उपचार कराय छे तेम आई जाणचुं. भाष्यकार कहे छे:</li> <li>देवत्तिसत्थयमिदं, सुद्धत्तणओ घडाभिहाणं व । अह व मती मणुओ चिय, देवो गुणरिद्धिसंपन्नो ।८७। तं न जओ तचर्त्थ, सिद्धे उवयारओ मया सिद्धी । तच्चत्थसीह सिद्धे, माणव सीहोवयारोव्व।८८। युग्मम् आ बे गाथाने भार्या उपर आवी गयेल छे. वळी</li> </ul>	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
		** ** ** **

****	देवेसु न संदेहो, जुत्तो जं जोइसा सपच्चव्स्वं। दीसंति तकस्याविय, उवघायाणुग्रहा जगओ॥ ८९॥ आऌयमेत्तं च मई, पुरं च तव्वासिणो तहवि सिद्धा । जे ते देवत्ति मया, न य निऌया निच्चपडिसुण्णा॥९० को जाणइ व किमेयं-ति होज्ज णिस्तंसयं विमाणाइ । रयणमयनभोगमणा–दिह जह विज्जाहरादीणं॥९१ (त्रिभिर्विशेषकं) देवोने विपे संदेह करवो योग्य नथी कारण के चंद्रादि ज्योतिष्को प्रत्यक्ष (नजरे) जोवाय छे अर्थात् सर्वने ते प्रत्यक्ष छे. वळी जगतने उपघात (धनादिनो नाग्र) अने अनुप्रह (वैभवादिन्तुं आपवुं) तेनाथी करायेल छे. (माटे देवो छे ). (८९) दांका–जे चंद्रादि देवो तमे कहो छो ते तो आलय मात्र–विमानो छे पण देवो नथी, माटे ज्योतिष्क देवो प्रत्यक्ष छे एम केम कहेवाय १ जेम शूल्यनगराना घरो केवल स्थान मात्र छि, पण तेमां लोको नथी होता, तेम चंद्रादि विमानो पण स्थान मात्र छे पण तेमां वसनारा देवो नथी. समाधान–जेम नगरमां वसनारा देवदत्तादि प्रत्यक्ष जणाय छे तेम ते विमा- नमां रहेनारा देवो पण होवा जोइए, केमके जे निवासस्थान होय ते नित्यशून्य होतुं नथी. (९०) कोण जाणे के आ चंद्र स्वर्यादि शुं हशे १ एवी शंका थती होय तो तेनो पण आ उत्तर छे के ते चोकस विमानो छे. जेम विद्याधर वगेरेना विमानो रत्नमय होवा साथे आकाशगामी छे तेम अहिं पण जाणवुं. (९१) ते देवोना असुरादि भेद आतुमुह्यना वचनथी जाणवा. रांका–पृथिवी, अप, तेजम् (आग्रि), वायु अने वनस्पत्तिकायिक जे प्राणी छे ते जीवपणाए आहं केम मानी शकाय १ कारण के
****	प्रत्यक्ष छे एम केम कहेवाय ? जेम झून्यनगरना घरो केवल स्थान मात्र छे, पण तेमां लोको नथी होता, तेम चंद्रादि विमानो पण स्थान मात्र छे पण तेमां वसनारा देवो नथी. समाधान-जेम नगरमां वसनारा देवदत्तादि प्रत्यक्ष जणाय छे तेम ते विमा- नमां रहेनारा देवो पण होवा जोइए, केमके जे निवासस्थान होय ते नित्यशून्य होतुं नथी. ( ९० ) कोण जाणे के आ चंद्र सूर्यादि शुं हशे ? एवी शंका थती होय तो तेनो पण आ उत्तर छे के ते चोक्कस विमानो छे. जेम विद्याधर वगेरेना विमानो रत्नमय होवा साथे आकाशगामी छे तेम अहिं पण जाणवुं. ( ९१ ) ते देवोना असुरादि भेद आप्तपुरुषना वचनथी जाणवा. इांका-पृथिवी, अप, तेजस् (अग्नि), वायु अने वनस्पतिकायिक जे प्राणी छे ते जीवपणाए अहिं केम मानी शकाय ? कारण के

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ।। ५० ।। ****	प्रथ्वीकायिक वगेरेमां उच्छ्वासादि धर्मोनी प्रतीति थती नथी. समाधान-आप्तवचनथी अने अनुमानप्रमाणथी प्रतीति थाय छे. तेमां आ प्रस्तुतसत्र आप्तवचन छे. अनुमान तो आ प्रमाणे-वनस्पतिओ, परवाला, लवण अने पत्थर वगेरे पोतपोताना ( उत्पत्ति )स्थानमां वर्तता समानजातीयरूप अंकुरोनो सद्भाव होवाथी अर्थना विकाररूप अंकुरनी माफक जीव सहित छे. भाष्यकार कहे छे— मंस्तेंकुरोव्व सामा-णजाइरूवंकुरोवल्ठंमाओ । तरुगणविद्दुमलवणो-पलादयो सासयावत्था ॥ ९२ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर आवेल छे. आ प्रस्तुत प्रसंगमां ' समानजातीय ' शब्दतुं ग्रहण करेल छे ते गाय वगेरेना शींगडाना अंकुरनो निषेध करवा माटे, कारण के ते समानजातीय थतो नथी. तथा भूमि संबंधी जळ, प्रथ्वीने खोदते छते स्वाभाविक जळनो संभव होवाथी देडेकानी माफक जीव सहित छे. अथवा आकाश संबंधी पाणी, स्वभावथी आकाशमां थयेल( पाणी )ना पडवाथी मर्स्यनी माफक जीव सहित छे. वळी भाष्यकार कहे छे:—	** १ स्थाना- ध्ययने स्थावराणां जीवत्वं ** ५१ स्ट्रम्
****	र. जेम हरस अथवा मसाना मांस अंकुरने कापत्राधी पण फरीने वृद्धि पामे छे तेम परवाला वगेरेने छेदवाथो फरी उत्पन्न थाय छे जेथी ते जीव सहित छे. २. आ गाधाना भात्रार्धथी पृथ्वीकायिक जीवोनी सिद्धि करो छे. ३. भूमिमांथी नौकळेल देडको जेम सजीव छे तेम पाणी पण जीव सहित छे. आ पृथ्वी संबंधो पाणीमां जीवनी सिद्धि करवा माटे दृष्टांत आपेल छे. ४. माछलानुं दृष्टांत अंतरिक्षनुं पाणो जीव सहित छे तेनो सिद्धि माटे छे. हस्ता अने चित्रा नक्षत्रमां घणे स्थले माछला पडे छे ते प्रत्यक्ष देखाय छे.	ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж ж к к к к к к к к к к к к к к к к к к к к

**	
<u>秋</u> 茶	
**************************************	भूमिक्खयसाभाविय-संभवओ ददुरोव्व जलमुत्तं । अहवा मच्छोव सहा-ववोमसंभूयपायाओ॥९३॥
*	आ गाथानो भावार्थ उपर आवेल छे. तथा वायु, बीजानी प्रेरणा सिवाय तिर्यक् (आजुवाजु) अनियमित दिशामां गायनी
****	भूमिक्तवयसाभाविय-सभवओं दृदुरोव्व जल्मुत्तें । अहवा मच्छवि सहा-ववामसभूयपायाआं ॥९३॥ आ गाथानो भावार्थ उपर आवेल छे. तथा वायु, बीजानी प्रेरणा सिवाय तिर्यक् (आजुवाजु) अनियमित दिज्ञामां गायनी माफक गति करवाथी जीव सहित छे. हेतुवाक्यमां ' अपरप्रेरित ' बब्दना ग्रहण करवाथी माटीना ढेफा वगेरेनी साथे व्यभि- चाररूप हेत्वाभासदोपनो परिहार करेल छे. एवी ज रीते ' तिर्यक् ' बब्दना ग्रहणथी ऊंचे गति करवावाळा ध्रमाडा साथे अने
* *	चाररूप हेत्वाभासदोपनो परिहार करेल छे. एवी ज रीते ' तिर्यक् ' शब्दना ग्रहणथी ऊंचे गति करवावाळा धूमाडा साथे अने
* *	' अनियमित ' शब्दना ग्रहणथी नियमित गतिवाळा परमाणुनी साथे दोपने। परिहार करेल छे. तथा तेजः ( अग्नि ) आहार [
*	' अनियमित ' शब्दना ग्रहणथी नियमित गतिवाळा परमाणुनी साथे दोपने। परिहार करेल छे. तथा तेजः (अग्नि) आहार ( लाकडा वगेरे )ने ग्रहण करवाथी अग्निनी वृद्धिनो विशेष साक्षात्कार थवाथी अने तेना विकारनुं पुरुषनी माफक प्रत्यक्ष थवाथी
*	जीव सहित छे. भाष्यकार कहे छे
×	अपरप्पेरियतिरिया–ऽनियमियदिग्गमणओऽनिल्ठो गोव्व। अनले। आहाराओ, विद्धिविगारोवलंभाओ । ९४ 👔
*	अपरप्पेरियतिरिया-Sनियमियदिग्गमणओऽनिल्लो गोव्व। अनलो आहाराओ, विद्धिविगारोवलंभाओ । ९४ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे. अथवा पृथ्वी, पाणी, अग्नि अने वायु वादळा वगेरेना विकार रहित मूर्त्तजातिवाळा होवाथी गाय वगेरेना शरीरनी जेम जीवना शरीरो छे. वादळा वगेरेना विकारो मूर्त्तजातिवाळा होवा छतां पण ते जीवना शरीरो नथी ते माटे दोषना परिहार माटे हेतमां ( अभ्रादिविकारवर्जित ) विशेषण आपेल छे. (९४) फरी भाष्यकार कहे छे:-
×	होवाथी गाय वगेरेना शरीरनी जेम जीवना शरीरो छे. वादळा वगेरेना विकारो मूर्त्तजातिवाळा होवा छतां पण ते जीवना शरीरो
×××	
****	तणओऽणब्भाइविगा-रमुत्तजाइत्तओऽनिलंताइं । संत्थासत्थहयाओ, निजीवसजीवरूवाओ ॥ ९५ ॥ पृथ्वी आदि चार, स्व-परग्रस्तथी हणाया होय तो जीव रहित छे अने शस्त्रथी न हणायेल होय तो सजीव छे. आ
×	पृथ्वी आदि चार, स्व-परग्रस्त्रथी हणाया होय तो जीव रहित छे अने शस्त्रथी न हणायेल होय तो सजीव छे. आ

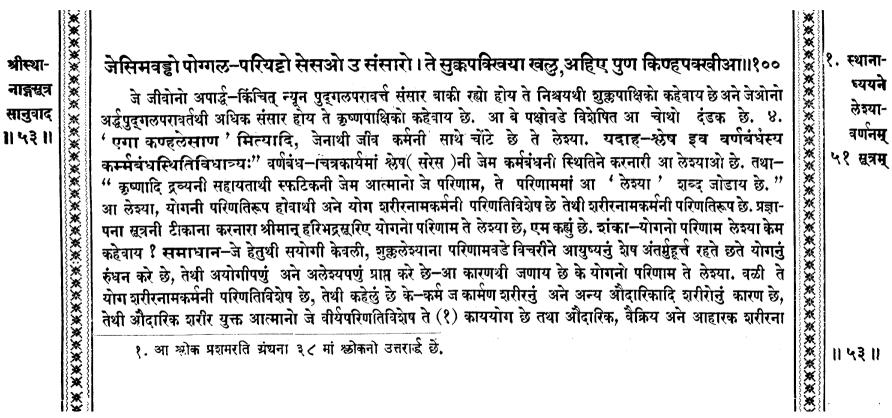
सानुवाद ॥ ५१ ॥	गाधाना पूर्वार्द्धनो भावार्थ उपर कहेल छे. (९५) हवे वनस्पतिओतुं विशेषताए सचेतनपणुं भाष्यनी गाथाओवडे कहे छे— जम्मजराजीवणमरण-रोहणाहारदोहलामयओ। रोगतिगिच्छाईहिय, णारिव्व सचेयणा तरवो ॥९६॥ छिक्रप्परोइआ छिकमित्त-संकोयओ कुलिंगिव्व। आसयसंचाराओ, विर्यत्त ! वछी वियाणाहि॥ ९७॥ सम्माद्यो व सावप्प-बोहसंकोयणादिओऽभिमया। बउलाद्यो य सदा-इविसयकालोवलंभाओ॥९८॥ जन्म, जरा, जीवन, मरण, क्षतसंरोहण ( घातुं रुझावुं ), आहार, दोहँद-दोहळो, रोग अने चिकित्सावडे स्त्रीनी माफक ष्ठक्षो चेतन सहित छे. (९६) स्प्रष्टप्रगेदिका-रीसामणी विगेरे वनस्पतिओ क्रीडा वगेरे जंतुओनी जेम स्पर्श मात्रथी संको- चने पामे छे. हे व्यक्त ! तुं जाण के वेलडी वगेरे स्वरक्षण माटे वाड, द्वस्त अने कोटडी वगेरे उपर आश्रय लेवाना हेतुथी चडे छे. ( ९७ ) शमी ( सीजडा ) वगेरे वृक्षो, मजुष्यनी माफक निद्रा, जागवुं अने संकोच वगेरेने पामे छे एम स्वीकारेल छे. बकुल, चंपक वगेरे वृक्षे। विपयोना-संगीत, मदिरानो गंडूप ( कोगळो ), सुंदर स्त्रीना चरणवडे ताडनादिनो, वसंतादि ऋतुमां उपभोगनो साक्षात्कार करावे छे, माटे वनस्पति सचेतन छे. ( ९८ ) 'एगा भवसिद्धिये'त्यादि भविष्टयतीति भवाः- मविष्यकाळमां थनारी सिद्धि-निर्श्वत्ति छे जेओने ते भवसिद्धिको-भव्यो, तेनाथी विपरीत ते अभवसिद्धिको-अच्यो जाणवा. १. वियत ! आ झब्द व्यक्त नामना गणघरने आमंत्रणार्थे प्रमुर कहेल् छे. २ कुष्मांडी-कोळु अने विजेहं वगेरे कळवाळी वनस्पतिने देहद थाय छे.	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
	र, तपर के राज्य के साथ रज्य के गावना सामन नाय ने पुर मेहल छ. र पुरमाडा—माळु जेव विनास में मळवाळा पमस्यातम दोहद थाय छे.	** ** ** ** **

www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassa
र्शका-जीवपणुं समान छते भव्य अने अभव्यमां विशेष भेद शो छे ? समाधान-स्वभावथी भेद करायेल छे. द्रव्यत्वनी अपेक्षाए जीव अने आकाशनी समानता छे तो पण स्वभावथी भेद छे. द्ववाइत्ते तुछे, जीवनभाणं सभावओ भेदो । जीवाऽजीवाइगओ, जह तह भव्वेयरविसेसो ॥९९॥ जीव अने आकाशतुं द्रव्यत्व, सत्त्व, प्रमेयत्वादिपणाए तुल्य रूप होवा छतां पण स्वभावथी भेद छे, एटले जेम आकाश अजीव छे अने चेतन सर्जीव छे तेम भव्य अने अभव्यनो पण भेद स्वभावथी जाणवो. भव्य अने अभव्यवडे विशेषित-भिन्न अन्य दंडक कक्षो. ' एगा समदिष्टियाण' मित्यादि सम्यग्-यधार्थ दृष्टि (दर्शन), तत्त्वो प्रत्ये रुचि छे जेओने ते सम्यग् दृष्टि जीवो, सिथ्यात्वमोहनीय कर्मना क्षय, अयोपशम अने उपशमयी थाय छे. तथा मिथ्या-विपर्यासवाळी, तीर्थकरोवडे कहेवायेल पदार्थसमूहनी श्रद्धा रहित दृष्टि-दर्शन (श्रद्धान) छे जेओने ते मिथ्यादृष्टि जीवो, मिथ्यात्वमोहनीय कर्मना उदयथी जिनवचननी अरुचिवाळा होय छे. कर्खु छे के:'' स्वतोक्त एक अक्षरने पण न रुचवाथी मनुष्य मिथ्यादृष्टि थाय छे. तीर्थक रोष कहेत्तुं सत्र तेओने तो चोकस अत्रमाण छे. '' तथा कंडक यथार्थ अने कंहक मिथ्या छे दृष्टि जेओनी ते सम्यग्मण् दृष्टि (मिश्रदृष्टि) जीवो, जिनोक्त भावो प्रत्ये उदासीन होय छे. आ गंभीर संसाररूप सम्रुदना मध्यमा वर्ततो जीव, अनाभोग ( स्वभावतः) थयेल पर्वत संबंधीना पत्थर घोलन समान यथाप्रश्चिकरणवडे प्राप्त थयेता जंतः कोडाकोडी साग- १. नदीना पाणीमां पत्थर आडोत्वळो भटकावाची घसाय छे ते नदीघोल्ल न्याय कहेवाय छे.	****

द्व्वाइत्ते तुस्हे, जीवनभाणं सभावओ भेदो । जीवाऽजीवाइगओ, जह तह भव्वेयरविसेसो ॥९९॥
जीव अने आकाशनुं द्रव्यत्व, सत्त्व, प्रमेयत्वादिपणाए तुल्य रूप होवा छतां पण स्वभावथी भेद छे, एटले जेम आकाश
अजीव छे अने चेतन सजीव छे तेम भव्य अने अभव्यनो पण भेद स्वभावथी जाणूत्रो. भव्य अने अभव्यवडे विशेषित-भिन्न
अन्य दंडक कह्यो. ' एगा समदिडियाण' मित्यादि सम्यग्-यथार्थ दृष्टि (दर्शन), तत्त्वो प्रत्ये रुचि छे जेओने ते सम्यग्-
दृष्टि जीवो, मिथ्यात्वमोहनीय कर्मना क्षय, क्षूयोपशभ अने उपशमर्थी थाय छे. तथा मिथ्या−विपूर्यासवाळी, तीर्थकरोवडे
कहेवायेल पदार्थसमूहनी अद्धा रहित दृष्टि-दर्शन (अद्धान) छे जेओने ते मिथ्यादृष्टि जीवो, मिथ्यात्वमोहनीय कर्मना उदयथी
जिनवचननी अरुचिवाळा होय छे. कह्युं छे केः-'' सत्रोक्त एक अक्षरने पण न रुचवाथी मनुष्य मिथ्यादृष्टि थाय छे. तीर्थक-
रोए कहेलुं सत्र तेओने तो चोकस अप्रमाण छे. " तथा कंइक यथार्थ अने कंइक मिथ्या छे दृष्टि जेओनी ते सम्यग्मिथ्या-
दृष्टि (मिश्रदृष्टि) जीवो, जिनोक्त भावो प्रत्ये उदासीन होय छे. आ गंभीर संसाररूप समुद्रना मध्यमां वर्ततो जीव,
अनाभोग ( स्वभावतः ) थयेल पर्वत संबंधीना पत्थर घोलनै समान यथाप्रद्वत्तिकरणवडे प्राप्त थयेला अंतः कोडाकोडी साग-
१. नदीना पाणीमां पत्थर आडोअवळो भटकावाथी घसाय छे ते नदीघोलन न्याय कहेवाय छे.

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ५२ ॥ ** *** *** *** ***	रोपमस्थितिविशिष्ट वेदवा योग्य मिथ्यात्वमोहनीय कर्मनी स्थितिमांथी, उदयकालना क्षणथी आरंभीने अंतर्म्रहूर्त्त सुधी ( भोगववा योग्य स्थितिने ) ओलंघीने अपूर्वकरण अने अनिद्यत्तिकरणनी संज्ञावाळा विशुद्ध विशेपोवडे अंतर्म्रहूर्त्त काळप्रमाण ' अंतरकरण ' करे छे, ने ते अंतरकरण कर्ये छते मिथ्यात्वमोहनीय कर्मनी वे स्थिति थाय छे. अंतरकरणनी नीचेनी अंतर्म्रहूर्त्त मात्र स्थिति ते प्रथम स्थिति अने ते अंतरकरणथी ज उपरली बांकीनी जे स्थिति ते बीजी स्थिति. त्यां प्रथम स्थितिमां मिथ्या त्वना दलिकोना वेदन-भोगववाथी आ जीव मिथ्याद्यष्टि होय छे. ते जीव अंतर्म्रहूर्त्तवडे तो ते प्रथम स्थितिनो नाद्य थये छते मिथ्यात्व दलिकोना वेदन-भोगववाथी आ जीव मिथ्याद्यष्टि होय छे. ते जीव अंतर्म्रहूर्त्तवडे तो ते प्रथम स्थितिनो नाद्य थये छते मिथ्यात्व दलिकोना वेदनननो अभाव होवाथी अंउरकरणना प्रथम समयमां ज औपद्यपिक सम्यक्त्वने पामे छे. जेम दावा- नळ, पूर्वे बाळेल लाकडावाळा स्थळने अथवा खारी जमीनने प्राप्त थइने ठरी जाय छे-अष्ट थाय छे तेम मिथ्यात्वमोहनीय कर्मना वेदनरूप अग्नि, अंतरकरणने प्राप्त थइने ठरी जाय छे. औपध विशेप समान ते औपद्यामिक सम्यक्त्वने प्राप्त करीने मदन- कोद्रव समान दर्शनमोहनीयरूप अद्युद्ध कर्म त्रण प्रकारे थाय छे-१ अग्रुद्ध अने ३ विद्युद्ध ते त्रण प्रं केरीने मदन- कोद्रव समान दर्शनमोहनीयरूप अद्युद्ध कर्म त्रण प्रकारे थाय छे-१ अग्रुद्ध अने ३ विद्युद्ध. ते त्रण प्रंजो- केट्रव समान दर्शनमोहनीयरूप अद्युद्ध कर्म त्रण प्रकारे थाय छे त्यारे तेना उदयवश्यी जीवने अर्थविशुद्ध जने ३ विद्युद्ध-जो- ( ढगला )ना मध्ये ज्यौरे अर्धविशुद्ध पुंज उदय थाय छे त्यारे तेना उदयवश्यथी जीवने अर्थविशुद्धरूप अरिहंतोए कहेछं-जो-		स्थाना- ध्ययने खरूपम् १ स्रत्रम्
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	• •	(XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	ષર ॥

	ायेल तत्त्वोनुं श्रद्धान थाय छे त्यारे मिश्रश्रद्धानवडे आ जीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि थाय छे. ते जीव अंतर्मुहूर्त्त पर्यंत मिश्रदृष्टिपणे
र	हे छे. त्यारबाद् अवश्य सम्यक्त्वपुंजने अथवा मिथ्यात्वपुंजने पामे छे. सम्यग्दष्टि, मिथ्याद्दष्टि अने मिश्रदृष्टिवडे विशेषित
3	भन्य दंडक कह्यो. दंडकमां नारक अने दश असुरादि ए इग्यारने पदोने विषे त्रण दृष्टि छे, आथी कह्युं छे के—' एवं जाव   
<sup>2</sup>	गणिये ' त्यादि. पृथ्वी आदि पांच दंडकमां एक मिथ्यात्वदृष्टि ज छे. ते कारणथी पृथ्वी आदिने मिथ्यात्ववडे ज जिन्हे रागेन के उन्ने के के अन्यत्वनको जिन्ही के स्वार्थ्य के स्वार्थ्य के स्वार्थ्य के स्वार्थ्य के स्वार्थ्य के
्व द	क्थन करायेल छे. कह्युं छे के—' चादसतससेसयामिच्छ 'त्ति चौदे गुणस्थानकवाळा त्रस जीवो छे, स्थावरो तो जेप्रायकीयान त्र के केंग्रेंच व्यक्ति वय कंतरानं नरियेने पिश्वामि व्यक्ति काल के कंति नरियेने त्र किश्वामिये प्र
	मेथ्यादृष्टिवाळा ज छे. बेइंद्रिय आदि त्रण दंडकनां जविोने मिश्रदृष्टि नथी, कारण के संज्ञि जीवोने ज मिश्रदृष्टिनो सद्भाव ४; तेथी तेओने विषे सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिपणाए ज व्यपदेश करेल छे. एवी रीते ' तेइंदियाणंपि चउरिंदियाणं-
8 4	95 तथा। तआने विषे सम्यग्दाष्ट अने मिय्यादाष्ट्रपणोए जे व्ययदेश करले छे. एवा रात तहादयाणाप चेडारादयाण- पे'त्ति द्वीन्द्रियनी माफक बे दृष्टिना कथनवडे वर्गणातुं एकपणुं कहेवुं. पंचेंद्रिय तिर्थंच आदि पांच दंडकोमां दर्शन ( दृष्टि )
	प कि ब्रान्द्रियना माफक व दाष्टना कयनवड वगणानु एकपणु कहुनु, पंचाद्रय तियंच आदि पाच दुडकामा दुशन ( दाष्ट ) हर्ण पण छे, तेथी त्रण प्रकारे पण तेनुं कथन छे. आ कारणथी ज कह्युं छे−'सेसा जहा नेरइय'त्ति अर्थात् जेवी रीते नारकना
	रण पण छ, तया त्रण त्रकार पण तनु कयन छ. आकारणया ज केखु छ− संसा जहा नरइय ात्त अयात् जया रात नारकना इंडकमां वर्गणा कहेली छे तेम कहेवी. वळी दंडक पर्यंत आ सूत्र–'एगा सम्मदिद्वियाणं चेमाणियाणं वग्गणा, एवं मिच्छ-
ļ	रेडकना पर्गणा कहला छत्तम कहता. वळा देडक पयत आ सूत्र- उना सम्मादाद्वयाण वमाणियाण वर्णणा, उव ामच्छ- देडियाणं, एवं सम्मामिच्छदिडियाणं' अहिं सुधी कहे छे' जाव एगा सम्मामिच्छे ' त्यादि ३। 'एगा कण्ह-
י ד	दाडयाण, उप सम्मामण्डादाडयाण आह सुया कहे छः ज्याप उपा सम्मामण्ड त्याप र र उपा पण्ट ाक्खियाणं ' इत्यादि कृष्णपाक्षिक अने शुक्कपाक्षिकनां रुक्षण कहे छेः—
	र संज्ञि पंचेंद्रिय जीवने त्रण दृष्टि होय छे अने अंतंज्ञिने मिश्रदृष्टि न होवाधो टीकामां ' अपि ' शब्द ग्रहण करेल छे.



व्यापारवर्डे ग्रहण करेल भाषावर्गणाना द्रव्यना सम्हनी सहायताथी जे जीवनो व्यापार ते (२) वचनयोग तथा औदारिकादि ग्ररीरना व्यापारवर्डे प्रहण करेल मनोवर्गणाना द्रव्यना समूहनी सहायताथी जे जीवनो व्यापार ते (२) मनोयोग. तेथी जेवी रीते कायादिकरणयुक्त आत्मानी जे वीर्यपरिणति ते योग कहेवाय छे तेवी रीते ज लेक्या पण आत्मानी वीर्यपरिणतिरूप छे. अन्य आचायों तो स्पष्ट कहे छे:-कर्मनो जे निस्पंद ( रस अथवा झरणुं ) ते लेक्या. लेक्या द्रव्य अने भावभेदथी वे प्रकारे छे. तेमां कृष्णादि द्रव्यो ज द्रव्य लेक्या छे, भावलेक्या तो कृष्णादि द्रव्योधी उत्पन्न थयेल जीवनो जे परिणाम ते भावलेक्या छे. आ लेक्या छ प्रकारे छे. तेनु स्वरूप आगमप्रसिद्ध जांवूना फळने खानार छ पुरुषना दष्टांतथी अथवा गामना घातक-मारनार छ पुरुषना दष्टांतथी समजवुं. लेक्याना सत्रो सुगम छे. विशेष कहे छे:-कृष्ण-काळा वर्णवाळा द्रव्यनी सहायताथी उत्पन्न थयेला अद्युग्त परिणामरूप लेक्या छे जेओने ते कृष्णलेक्यावाळा छे. एवी ज रीते घेप पदो पण जाणवा. हवे विशेष कहे छे:- नील लेक्या कंदक सुंदर रूपवाळी छे, एवी रीते आ ज कमवडे यावत् शब्दथी ज ' एगा कावोपलेस्साण'मित्यादि त्रण स्त्र जाणवा, तेमां पश्चि विशेष कपोत( पारेवा ) ना वर्णवडे समान जे धूसत्वर्ण द्रव्यो, तेनी सहायताथी उत्पन्न थयेली ते कापोतलेक्या, कंदक विशेष बुभे फळ लेक्या छे जेओने ते कपोतलेक्यावाळा जाणवा. तेज:-आप्रति जिता चाळाना वर्ण जेवा जे रक्त द्रव्यो, तेनी सहायताथी उत्पन्त थयेली ते तेजोलेक्या छा. प्रभाववाळी छे. पश्वकमलना गर्भ ( अंदरनो भाग )ना जेवा वर्णवाळा पीळा द्रव्यो, तेनी सहायताथी जे उत्पन्न थयेली ते पक्षलेक्या शुभतर छे-विशेष सारी छे. शुक्क वर्णवाळा द्रव्या भाग )ना जेवा वर्णवाळा पीळा द्रव्यो, तेनी सहायताथी जे उत्पन्न थयेली ते पक्षलेक्या शुभतर स्वरूप उत्तराघ्ययनना चोत्रीश्रमा लाया द्रव्या आ क उत्पन्न थयेली ते शुक्कलेक्या जीत्तराय शुभ छे. आ लेक्याआडोत्त स्वरूप उत्तराघ्ययनना चोत्रीश्रमा लेक्या अध्ययनथी
--

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ५४ ॥ *** *** *** *** *** *** *** *** *** *	जाणवुं. ' एवं जस्स जति ' ति नारकोनी माफक ज जे असुरादिकनी जे जेटली लेक्याओ छे, तेना कथनवडे तेनी वर्गणानुं एकपणुं कहेवुं. ' भवणे 'त्यादिना सूत्रवडे तेओनी लेक्याओनो परिणाम कहेता अहिं संग्रहणीनी गाथा जणावे छे. काऊ नीला किण्हा, लेसाओ तिन्नि होंति नरएसुं। तइयाए काउनीला, नीला किण्हा य रिट्ठाए ॥१०१॥ नरकोने विषे कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेक्या [ सामान्यतः ] छे. त्रीजी नरकमां कापोत अने नीललेक्या छे अने पांचमी रिष्ठा नरकमां नील अने कृष्णलेक्यां छे. ( १०१ ) किण्हा नीला काऊ, तेऊलेसा य भवणवंतरिया । जोइससोहंमीसाण, तेउलेसा मुणेयव्वा ॥ १०२ ॥ कप्पे सणंकुमारे, माहिंदे चेव बंभलोए य । एएसु पम्हलेसा, तेण परं सुक्कलेसा उ ॥ १०३ ॥ भवनपति अने व्यंतरने कृष्ण, नील, कापोत अने तेजोलेक्या होय छे, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान देवलोकमां एक तेजोलेक्या जाणवी, सनत्कुमार, माहेंद्र अने ब्रह्मलेक कल्पमां पह्नलेक्या छे, तेनाथी उपरं एक शुक्कलेक्या छे. (१०२-१०३)	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	
*: ***********************	पणिलस्य जागपा, सगरजुमार, माहद्र जम प्रवलाक कर्ल्समा प्रवलस्या छ, स्पापा उपर एक गुरुलस्या छ. (९०९ ९०२) पुढवी आउ वणस्सइ, बायर पत्तेय लेस चत्तारि । गब्भयतिरियनरेसुं, छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥१०४॥ बादर पृथ्वी, पाणी अने प्रत्येक वनस्पतिमां कृष्णादि चार लेक्या छे, गर्भज तिर्थंच अने मनुष्यमां छ लेक्या छे. रेष- १ पहेली-बीजी नरकमां कापोतलेक्ष्या, चोथी नरकमां नीललेक्ष्या अने छट्ठो तथा सातमोमां छल्णलेक्ष्या छे. २ छठ्ठा देवलोकथी यावत् सर्वार्थसिद्धि वैमान पर्यंत.	**************************************	

``````````````````````````````````````	तेजो, वायु अने त्रण विकलेन्द्रियमां त्रण लेक्या छे. (१०४) आ सामान्य लेक्यादंडक कश्चो ५. ए ज लेक्यादंडक, भच्य अने अभव्यना विशेषणथी अन्य दंडक छे. 'एगा कण्हलेसाणं भवसिद्धियाणं वग्गणे 'त्यादि-एवी रीते जेम कृष्ण- लेक्यामां तेम ' छसुवि 'सि कृष्णलेक्या सहित छ लेक्याओमां जो कृष्णलेक्यानुं ग्रहण नहिं करीए तो पांच ज अतिदेक्य- कथन करवा योग्य थशे. भव्य अने अभव्य लक्षणवाळा वन्ने पद दरेक लेक्या प्रत्ये कहेवा. जेम के 'एगा नीललेसाणं भव- सिद्धियाणं वग्गणे' त्यादि ६. लेक्यादंडकमां ज त्रण दर्शन (दृष्टि) विडे विशेष अन्यदंडक छे. 'एगा काण्हलेसाणं स्व- सिद्धियाणमि ' त्यादि ६. लेक्यादंडकमां ज त्रण दर्शन (दृष्टि) विडे विशेष अन्यदंडक छे. 'एगा कण्हलेसाणं स- ममदिट्टियाणमि ' त्यादि. 'जेसिं जइ दिट्टीओ'सि-जे नारकी वगेरेने सम्यक्तादि जेटली दृष्टिओ होय तेओने तेटली दृष्टिओ कहेवी. तेमां एकेंद्रियोने मिथ्यात्व ज छे, त्रण विकलेंद्रियोने सम्यक्ता अने मिथ्यात्व छे अने घेष सोल्ट दंडकमां त्रणे दृष्टिओ होय छे ७. लेक्यादंडक ज कृष्ण अने शुक्कपक्षविशिष्ट अन्य दंडक छे. 'एगा कण्हलेसाणं कण्हपविस्व- याणमि ' त्यादि ८. आ आठ पदवडे चोवीश दंडकमां अकेक वर्गणा कहेवी. ते आठ पद आ प्रमाणेः— ओहो १ भठवाईहिं, विसेसिओ २ दंसणेहिं ३ पक्खोहिं ४ । लेसाहिं ५ भठव ६ दंसण ७ पक्खोहिं ८ विसिट्ट लेसाहिं ॥ १०५॥	*****
****	ओहो १ भव्वाईहिं, विसेसिओ २ दंसणेहिं ३ पक्खेहिं ४ ।	
****	छताहि उ मध्य ५ ५तन ७ पर्याह ७ गिराहि एरताहि । ९० ९ ग १. ओघ-सामान्य दंडक वर्गणा, २. भव्यादिथी विशिष्ट पदवाळी वर्गणा, ३. दर्शन-दर्धि सम्यक्त्वादि विशिष्ट पदवाळी, ४. कृष्णादि पक्षविशिष्ट पदवाळी, ५. कृष्णादि लेक्याविशिष्ट पदवाळी, ६. भव्यविशिष्ट लेक्यापदवाळी, ७. दर्शनविशिष्ट	****
	<b>1</b> 0	***

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद श ५९ ॥	$(\cdot)$ Signing Higging (m) (Signing ()) Nighering () Nigh	१ स्थाना- ध्ययने सिद्धभेदाः १५ ५१ स्रत्रम्
	जं णाणदंसणचरित्तमावओ तव्विववखमावाओ । भवमावओ य तारेइ, तेण तं मावओ तित्थं ॥१०६॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेवायेल छे. अथवा त्रिषु-क्रोधरूप अग्निदाहनो उपशम, लोभरूप तृष्णानो निरास अने कर्ममलने दूर करवारूप आ त्रण लक्षणमां अथवा ज्ञानादिलक्षणरूप त्रण अर्थमां जे रहे छे ते 'त्रिस्थ ' प्राकृतशैलीथी 'तित्थ' कहेवाय छे. भाष्यकार कहे छेः- दाहोवसमादिसु वा,जं तिसु थियमहव दंसणाईसुं। तो तित्थं सङ्घो चिय,उभयं च विसोसणाविसेसं॥१०७ तीर्थ ते संघ अथवा संघ ते तीर्थ. अहिं संघ विशेष्य अने तीर्थ विशेषण अथवा र्तार्थ विशेष्य अने संघ विशेषण छे, अर्थात् बन्ने विशेषण अने विशेष्यभाववाळा छे. पूर्वार्क्ष भाग उक्तार्थ छे. क्रोधरूप अग्निदाहनो उपशम आदि त्रण अर्थो-	II ५५ II

	छे जेने ते ' ज्यर्थ ' छे. प्राकृत भाषाथी 'तित्थ' शब्द छे. भाष्यकार कहे छे—
	र्गिगदाहसमणा–दओ व ते चेव तिन्नि जस्सऽत्था । होइ तियत्थं तित्थं,तमत्थसद्दो फलत्थोऽयं ॥१०८॥
	गाथानो भावार्थ उपर्युक्त छे. अहिं अर्थ झब्द फलवाचक छे, अथवा ज्ञानादि त्रण अर्थो–वस्तुओ छे जेने ते त्र्यर्थ.
	भाष्यकार कहे छेः
अह	वा सम्मद्दंसण-नाणचरित्ताइं तिन्नि जस्सऽत्था। तं तित्थं पुठ्वोदिय-मिहमत्थो वत्थुपजाओ ॥१०९॥
	अहिं अर्थ शब्द वस्तुनो पर्यायवाचक छे. शेषपदो उक्त भावार्थ छे. तेमां तीर्थ छते जे सिद्धो-निर्वत्त थया ते ऋषभसेन
गणध	वर वगेरेनी जेम तीर्थसिद्धो छे. तेओनी वर्गणा एक छे (१). अतीर्थ-तीर्थांतरमां साधुओना अभावकालमां जातिस्मरणादि-
वर्डे !	प्राप्त करेल छे मोक्ष जेओए ते मरुदेवीनी माफक अतीर्थसिद्धों छे. तेओनी वर्गणा एक छे (२). 'एवं ' शब्दथी ' एगा
	यगरसिद्धाणं वग्गणे 'त्यादि जाणवुं. उक्त लक्षणवाळा तीर्थने अनुकूलपणाए, हेतुपणाएं अथवा तेना स्वभावपणाए
	रे छे ते तीर्थंकर कहेवाय छे. भाष्यकार कहे छे
अ्	गुल्लामहेउतस्सी–लयाय जे भावतित्थमेयं तु। कुव्वंति पगासंति उ, ते तित्थगरा हियत्थकरा ॥११०॥
	१. अहि संघ, वस्तु अने ज्ञानादि, संघना पर्यायो छे, ते वस्तुथी अभिन्न छे. २. प्रवाहनी अपेक्षाए तीर्थ अनादि छे, तो पण
मन्त्री व	क तीर्धकरोनी अपेक्षाए तीर्घ उत्पन्न थाय छे ते कारणथी तीर्घातर कहेवाय छे.

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र साछनाद १। ५६ ॥ *********	आनुलोम्य, 'हेतु अने तत्स्वभावपणाए जे आ भावतीर्थने करे छे अने प्रकाशे छे ते हित करनारा तीर्थंकरो छे. तीर्थ- करो थया थका जे सिद्धो थाय छे ते ऋषभादिनी माफक तीर्थंकरसिद्धो कहेवाय छे. तेओनी वर्गणा एक छे (३). अतीर्थंकर- सिद्धो-सामान्य केवलीओ थया थका जे सिद्धो थाय छे ते गौतमादिनी जेम अतीर्थंकरसिद्ध छे. तेओनी वर्गणा एक छे (३). स्वयं-आत्मवडे ( पोतानी मेळे ) बुद्धो-तत्त्वना जाणनारा जे स्वयंबुद्धो थया थका सिद्ध थाय ते स्वयंबुद्धो. तेओनी वर्गणा एक छे (५). अनित्यतादि भावनाओनो निमित्तभूत कोई पण एक पदार्थने आश्रयीने-जोइने परमार्थ जाणनारा ते प्रत्येकबुद्धो थया थका सिद्धो थाय छे ते प्रत्येकबुद्ध छे. तेओनी वर्गणा एक छे (६). स्वयंबुद्ध अने प्रत्येकबुद्धोनों भेद वोधि, उपधि, श्रुत अने लिंगवडे करायेल छे. ते आ प्रमाणेः-स्वयंबुद्धोने बाह्य निमित्त विना ज बोधि प्राप्त थाय छे. प्रत्येकबुद्धोने बाह्य निमित्तनी अपेक्षाए करकंडु विगेरेनी जेम बोधि प्राप्त थाय छे. स्वयंबुद्धोने पात्रादि बार प्रकारे उपधि होय छे. ते आ प्रमाणे पत्तं १ पत्ताबंधो २, पायठवणं ३ च पायकेसरिया ४ । पडलाइ ५ रयत्ताणं ६ च, गोच्छओ ७ पायनिज्जोगो ॥ १९१ ॥	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
*:***	तिन्नेव य पच्छागा १०, रयहरणं ११ चेव होइ मुहपोत्ति १२ । १. बाल वगेरे अने स्थविरादिने अनुरूप जे देशना ते आनुलोम्य, तोर्थनो स्यापनामां स्वयं हेतुभूत छे तेथो हेतु अने तीर्थकरनाम- कर्मना उदयथी भावअनुकंपा ते तत्स्वभाव.	** ** ** ** ** ** **
I Č	For Private and Personal Use Only	1831

१ पात्र, २ पात्रांध ( झोली ), ३ पात्रस्थापन-जेमां पात्र स्थापन करवामां आवे छे ते कंवलने खंड, ४ पात्रकेसरिका- कोमळ वस्त्रनो खंड, ५ पडला-भिक्षाए जतां पात्रना उपर जे ढांकवामां आवे छे ते, ६ रजस्ताण-पात्रनी वच्चे जे वस्त सूकवामां आवे छे ते, ७ गोच्छक-र्कवलनो डुकडो जे पात्रना उपर बांधवामां छे ते ( ए सात प्रकारनो पात्र संवंधी उपधि छे ), ८-१० त्रण प्रच्छादको ( वस्तो )-वे स्तरनो अने एक ऊननो, ११ रजोहरण अने १२ ग्रुद्धपत्ति-आ बार उपधि होय छे. प्रत्येक- बुढोने त्रण वस्त्र सिवाय नव उपधि होय छे. स्वयंबुद्धोनो पूर्व(भव)मां भणेला श्रुत विषे नियम नथी, अर्थात पूर्वभेवनुं अध्ययन करेखुं श्रुत होय अथवा न पण होय. प्रत्येकबुद्धोने तो पूर्व जन्मनुं अध्ययन कहेछुं श्रुतं चोकस होय छे. स्वयंबुद्धोने लिंग- ( ग्रुनिवेष )नो स्वीकार आचार्योनी समीपमां पण होय छेड्यारे प्रत्येकबुद्धोने तो देव आपे छे. बुद्धदोधितो-आचार्यादिवेड प्रति- वोध पामेला छतां जे सिद्धो थाय ते बुद्धबोधितसिद्धो. तेत्रोनी वर्गणा एक छे (७). उपरना तेम ज स्त्रीलिंगसिद्धो (८), पुरुषलिंग- सिद्धो (९), नपुंसकलिंगसिद्धो (१०), रजोहरणादिनी अपेक्षाए स्वलिंगसिद्धो (११), परिवाजकादि लिंगमां सिद्ध थयेला ते अन्यलिंगसिद्धो (१२), मरूदेवी बगेरे ग्रहिलिंगसिद्धो (१३), एक समयमां अकेक सिद्ध थयेला ते एकसिद्धो (१४) अने एक समयमां बेथी एक सो आठ सुधी जे सिद्ध थयेला ते अनकिसिद्धो (१५). आ स्त्रीलिंगसिद्धो वगेरेनी एकेक वर्गणा छे. अनेक समय सिद्धोनी निरूपण करनारी गाथा नीचे प्रमाणे छे १. वर्तमान भवमां नवीन अव्ययन करेखु श्रुत होय न छे. २. जधन्वथी अग्वार अंग अने उच्छाटधी कंड्क न्यून दश पूर्व जेटछं श्रुत होय छे.	
	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

भीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद । ५७ ॥	वत्तीसा अडयाला, सट्टी बावत्तरी य बोद्धव्वा । चुलुसीई छन्नउई, दुराहिय अट्टोत्तर सयं च⊛॥१११२॥ उपरनी गाथानुं विवरण करतां जणावे छे के-ज्यारे एक समये एकथी मांडी उत्कृष्ट वत्रीस सुधी सिद्ध थाय त्यारे बीजे समये पण बत्रीस, एवी रीते सतत आठ समय सुधी बत्रीस सिद्ध थाय छे. ते पछी अवश्य अंतर पडे छे. वळी ज्यारे एक समयमां तेत्रीश्वथी आरंभीने अडतालीश पर्यंत सिद्ध थाय छे त्यारे निरंतर सात समय सुधी सिद्ध थाय छे. त्यारवाद चोकस अंतर पडे छे. एवी रीते ज्यारे ओगणपचासथी मांडीने यावत साठ सुधी एक समय सिद्ध थाय छे त्यारे उंतर रहितछ समय पर्यंत सिद्ध थाय छे. ते पछी समयादि अंतर थाय छे. एवी रीते अन्य समयोमां पण योजना करवी. यावत् एक सो ने आठ एक समय छे ते पछी समयादि अंतर थाय छे. एवी रीते अन्य समयोमां पण योजना करवी. यावत् एक सो ने आठ एक समय सुधी निरंतर सिद्ध थाय त्यारे अवश्य समयादि अंतर थाय छे. बीजा आचायों तो आ प्रमाणे व्याख्या करे छे–ज्यारे आठ समय सुधी निरंतर सिद्ध थाय त्यारे प्रथम समयमां जधन्यथी एक अने उत्कृष्टथी वत्रीश सिद्ध थाय छे. बीजा समयमां जधन्यथी एक अने उत्कृष्टरथी अडतालीश सिद्ध थाय छे. तेची रीते सर्वत्र एक समयमां जधन्यथी एक अने उत्कृष्टथी "वत्तीसे" त्यादि गाथाना भावार्थ प्रमाणे जाणचुं एटले के-एक समयमां उत्कृष्टथी वत्रीश, बीजामां अडतालीश, त्रीजा समयमां साठ, चोथामां बोतेर, पांचमामां चोर्यासी, छठामां छन्चु, सातमामां एक सो वे अने आठमा समयमां जश्तलीश, त्रीजा * एक समयमां उत्छष्टथी वत्रोश, बीजामां अडतालीश, त्रीजामां साठ, चोधामां बोतेर, पांचमानां चोराशी, <i>छठ्ठा</i> मां छन्चु, सातमा समयमां एक सो ने वे अने आठमामां एक सो आठ.		स्थाना- ध्यवने द्वभेदाः १५ १ स्वत्रम्
	र सातमा समयमा एक सा न व अन आठमामा एक सा आठ. * * * *	<pre>%    ' %  * * * * *</pre>	<b>९७   </b>

\*\*\*\*\*\*

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ।। ५८ ।।	रहेवानुं छे जेओने ते एकसमयस्थितिवाळा कहेवाय छे. तेओनी वर्गणा एक छे. प्रस्तुत प्रसंगमां पुद्गलोनो अनंत समयनी स्थितिनो अभाव होवाथी असंखेजजसमयहितीयाणमित्युक्तं अर्थात् असंख्यात समयनी स्थिति कही छे. हवे भावथी वर्णवे छे-' एगा एगगुणे'त्यादि—एकथी गणवुं (ताडन करवुं) छे जेओने ते एकगुण. एकगुण काला वर्ण छे जेओने ते एक- गुण काळा. जेओथी एकगुण आरंभीने तरतमताथी कृष्णतर, कृष्णतम वगेरे भावोनी पहेलां उत्कर्षनी (द्विगुणकालक वगेरेनी)	ر <del>ات</del> **************	स्थान⊦ ध्ययको दिभेदाः १५ १ <b>सत्रम्</b>
	प्रशति थाय छे. तेओनी वर्गणा एक छे. एवी रीते सर्वे भावसूत्रो बसो साठ प्रमाणवाला कहेवा. कृष्णवर्णादि वीश भावोने तेर वडे गुणवाथी ते थाय छे. हवे प्रकारांतरवडे जघन्यादि भेदथी भिन्न द्रच्यादि विशिष्ट स्कंधोनी वर्गणानुं एकपणुं कहे छेः— ' एगा जहन्नपएसियाणमि 'त्यादि—सर्वथी थोडा प्रदेशो—परमाणुओ छे जेओने ते जघन्य प्रदेशिको, डिप्रैंदेश वर्गेरे १. एक कर्ष वनन न होवा छतां पण एक कर्ष थाय छे. कर्ष ते हाल्रमां एक रुपियाभार-तोलो कहेवाय छे. २. एकथी मांडी दश संख्या पर्यंत दरा अने संख्यात, असंख्यात तथा अनंत एम १३ सूत्र जाणवा. ३. पोतपोतानी वर्गणामां जघन्य वर्गणाओनुं अनेकपणुं होवाथो दिअणुकादिको कहेल छे, परंतु त्रिप्रदेशिक मध्यम कहेवाय छे.	×××× ×××××××××××××××××××××××××××××××××	46

अने मध्यम पदवडे गणवाथो ६० भावसूत्र धाय छे. ३ चारना अक सुघी द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी वर्गणानुं स्वरूप कहेलुं ले.		अणुओना समुदायो ते स्कंधो, तेओनी उत्कृष्ट संख्यावाळा अनंत अणुओ छे जेओने ते उत्कृष्ट प्रदेशिको, तेओनी वर्गणा एक छे. जे जवन्य नहि अने उत्कृष्ट पण नहि ते अजधन्यउत्कृष्ट (मध्यम ) प्रदेशो छे जेओने ते अजधन्यउत्कृष्ट प्रदेशिको, तेओनी वर्गणा एक छे. मध्यमप्रदेशिक स्कंधोनी अनंत वर्गणा छते पण अजधन्यउत्कृष्ट शब्दना कथनथी वर्गणानुं एकपणुं छे. (१) ' जहन्नोगाहणगाण 'मित्यादि अवगाहंते-जेमां जे रहे छे ते अवगाहना. ते क्षेत्र(आकाश) प्रदेशरूप आ जधन्य अवगाहना छे जेओने ते, अहिं स्वार्थमा ' क ' प्रत्यय थवाधी जधन्यअवगाहनका-जधन्य अवगाहनावाळा, तेओनी ( एकप्रदेशावगाढोनी ) वर्गणा एक छे, उत्कृष्टअवगाहनकोनी-असंख्यातप्रदेशावगाढोनी वर्गणा एक छे. अजधन्यउत्कृष्ट अवगाहनकोनी-संख्यात-असंख्यातप्रदेशावगाढोनी वर्गणा एक छे. (२) समयनी अपेक्षाए जधन्य संख्यावाळी स्थिति छे जेओने ते जधन्यस्थितिको-एक समयनी स्थितिवाळा स्कंधो, तेओनी वर्गणा एक छे. समयनी अपेक्षाए उत्कृष्ट संख्यावाळी स्थिति छे जेओने तेओनी-असंख्यात समयनी स्थितिवाळाओनी वर्गणा एक छे. मध्यमस्थितिकोनुं खत्र सुगम छे (३). जधन्य संख्या विशेषरूप एकवडे गणचुं छे जेने ते एकगुण काळो, ते एकगुण काळो वर्ण छे जेओने ते जधन्यगुण काळा वर्णवाळा स्कं योनी वर्गणा एक छे. एवी रीते उत्कृष्टगुण काळा वर्णवाळा-अनंतगुण काळा स्कंधोनी वर्गणा एक छे. त्राच्य सुगम छे (३). जधन्य संख्या विशेषरूप एकवडे गणचुं छे जेने ते एकगुण काळा वर्णवाळा-अनंतगुण काळा स्कंधोनी वर्गणा एक छे. त्रीचे कायन्यगुण काळा वर्णवाळा स्कं योनी वर्गणा एक छे. एवी रीते उत्कृष्टगुण काळा वर्णवाळा-अनंतगुण काळा स्कंधोनी वर्गणा एक छे. त्रीचुं सत्र सुगम छे. (३). एवी रीते साठ मावस्वत्रो विचारवा (४). (स्र० ५१) सामान्यथी स्कंधोनी वर्गणाना एकपणाना अधिकारथी ज मध्यमप्रदेश- १. त्रिप्रदेशिक स्कंघश्यो मांडो यावत एकप्रदेशन्यून उत्छट्यदेशिक स्ध्या मध्यम जाणवा. २ वर्णादि २० ने ज्वन्य, उत्कृष्ट अने मध्यम पद्यडे गणवाथा ६० मावसूत्र वावत्य एकप्रदेशन्यून उत्छट्यदेशिक स्ध्या मध्यम जाणवा. २ वर्णादि २० ने ज्यन्य, उत्कृष्ट अने मध्यम पद्यडे गणवाथा ६० भावसूत्त चाय छे. ३ चारना अक सुघी द्रव्य, क्षेत्र, काल अने मावथी वर्गणानु स्वर्प कहेलु ले.
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

त्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ ५९ ॥ ******	विशिष्ट मध्यमप्रदेशावगाढवळा स्कंधविशेषतुं एकपणुं कहे छे.— एगे जंबृद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अछंगुल्णं च किंचिविसेसाहिए परिवखेवेणं। सू० ५२, एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। सू० ५३, अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढंउच्चत्तेणं पन्नत्ता। सू० ५४, अद्दाणवखत्ते एगतारे पन्नत्ते चित्ताणवखत्ते एगतारे पं० सातीणवखत्ते एगतारे पं०। सू० ५४, एगपएसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता, एवमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता, जाव एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पन्नत्ता। सू० ५६॥ एगट्टाणं समत्तं॥ मूलार्थः—सर्वद्वीप अने सम्रुद्रोना मध्यमां जंबुद्वीप नामनो द्वीप एक छे यावत त्रण लाख, सोल इजार, बसो ने सत्यावीश योजन, त्रण गाउ, बसो अठावीश धतुष्य अने साडातेर अंगुल कंइक अधिक परिधिवाळो छे. (स०५२) अमणभगवान् श्री महा- वीरस्वामी आ अवर्सांधणी कालमां, चोवीश तीर्थंकरमां छेछा तीर्थंकर एकला, सिद्ध, बुद्ध, म्रुक यावत् सर्व दुःखथी रहित थया (स० ५३). अनुत्तर विमानना देवोनी काया एक हाथनी ऊर्ध्वपणे ऊंची कहेली छे (स० ५४). आद्रा नक्षत्रनो तारो एक कहेल छे, चित्रा नक्षत्रनो तारो एक कहेल छे, स्वातिनक्षत्रनो तारो एक छे. (स० ५५) एक प्रदेशने अवगाही रहेला पुद्रगलो अनंत	*** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
		**************************************

यनी स्थितिवाळा अने एकगुण काळा वर्णवाळा पुद्गलो अनंत कहेल छे, यावत् एकगुण रुक्ष- हेल छे. (स्र० ५६) ापवडे ओळखातो जे द्वीप ते जंबूद्वीप नामनो द्वीप ए सामान्य नान छे. यावत् शब्दना ब्रहणथी . सर्वाभ्यंतर, सर्व द्वीपादिथी लघु, वृत्त (गोळ) तेलना पूडलाना आकारवाळो, एक लाख योजन ो परिधिवाळो, उक्त विशेषणवाळो जंबूद्वीप एक ज छे. पूर्वोक्त विशेषण रहित बीजा अनेक जंबूद्वीपो जे जंबूद्वीप कह्यो तेना ब्ररूपक भगवान महावीरनुं एकपणुं कहे छेः—' एगे समूणे' इत्यादि–
पवडे ओळखातो जे द्वीप ते जंबूद्वीप नामनो द्वीप ए सामान्य नान छे. यावत् शब्दना ब्रहणथी . सर्वाभ्यंतर, सर्व द्वीपादिथी लघु, वृत्त (गोळ) तेलना पूडलाना आकारवाळो, एक लाख योजन ो परिधिवाळो, उक्त विशेषणवाळो जंबूद्वीप एक ज छे. पूर्वोक्त विशेषण रहित बीजा अनेक जंबूद्वीपो जे जंबूद्वीप कह्यो तेना प्ररूपक भगवान् महावीरनुं एकपणुं कहे छेः—' एगे समणे' इत्यादि–
. सर्वाभ्यंतर, सर्व द्वीपादिथी लघु, वृत्त (गेळ) तेलना पूडलाना आकारवाळो, एक लाख योजन ो परिधिवाळो, उक्त विशेषणवाळो जंबूढीप एक ज छे. पूर्वोक्त विशेषण रहित बीजा अनेक जंबूद्वीपो जे जंबूद्वीप कद्यो तेना प्ररूपक भगवान महावीरनुं एकपणुं कहे छेः—' एगे समणे' इत्यादि–
ो परिधिवाळो, उक्त विशेषणवाळो जंबूढीप एक ज छे. पूर्वोक्त विशेषण रहित बीजा अनेक जंबूढीपो जे जंबूढीप कद्यो तेना प्ररूपक भगवान महावीरनुं एकपणुं कहे छेः—' एगे समणे ' इत्यादि–
ो परिधिवाळो, उक्त विशेषणवाळो जंबूढीप एक ज छे. पूर्वोक्त विशेषण रहित बीजा अनेक जंबूढीपो जे जंबूढीप कद्यो तेना प्ररूपक भगवान महावीरनुं एकपणुं कहे छेः—' एगे समणे ' इत्यादि–
सिद्ध बेगेरे शब्द साथे छे. आम्यति-जे तपश्चर्या करे छे ते अमण, भज्यत इति भगः-समग्र
ामग्र ऐश्वर्य, रूप, यञ्च, लक्ष्मी, धर्म अने प्रयत्न-आ छ अर्थमां ' भग ' ञब्द वपराय छे. आ
भगवान्. वळी इरयति-विशेषवडे मोक्ष प्राप्त करे छे अने प्राणीने प्राप्त करावे छे, अथवा प्राणी-
क्मोंने दूर करे छे अथवा वीरयति-रागादि शत्रुओने जीते अने बीजाओने जीतावे छे, अथवा
धुं छे के–'' जे कर्मने विदारे छे–नाश करे छे अने तपवडे शोभे छे, तप अने वीर्यवडे युक्त छे ते
थु छ भ <sup>=</sup> ज फोनग विदार छ <sup>=</sup> गारा फर छ जन तपड साम छ, तम जन नापमंड उता छ त ' अन्य वीरनी अपेक्षाए महान् एवा जे वीर ते महावीर. भाष्यमां कहेलुं छे के—
अन्य वारना अपक्षार महाने एवा ज वार त महावार. माण्यमा कहुछ छ क— , महाजसो नामओ महावीरो। विकंतो य कसाया-इसत्तुसेन्नप्पराजयओ ॥११३॥
, ,

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ६० ।। ****	ईरेइ विसेसेण व, खिवइ कम्माइॅ गमयइ सिवं वा । गच्छइ अ तेण वीरो, स महं वीरो महावीरो। ।१९४ त्रण ध्रवनमां यश प्रसिद्ध होवाथी महायशवाळा अथवा कषायादि वैरीना सैन्यना पराजयथी विक्रांत-पराक्रमवाळा ते वीर ( ११३ ) ११४ मी गाथानो भावार्थ कहेवायेले छे. आ अवसपिंणीमां चोवीश तीर्थकरोने विषे छेछा तीर्थंकर, सिद्ध-कृतार्थ थया, बुद्ध-केवलज्ञानवडे जाणवा योग्य( पदार्थ) ने जाणनार, ग्रुक्त-कर्मथी ग्रुकायेला, ' यावत् ' झब्दथी ' अंतकडे ' जेणे भवनो अंत कर्यो छे ते अंतकृत, 'परिनिव्चुडे' परिनिर्वत-कर्मकृत विकारना विरहथी शांत थयेला, श्रुं कहेलुं (प्राप्त) थाय छे ? ' सव्वदुक्खप्पद्दीणे '-शरीरादिना सर्वे दुःखो जेना नाश थया छे ते सर्वदुःखप्रक्षीण अथवा प्रहीण. सर्व ठेकाणे बहुव्रीही समासमां क्तांतनो जे परानिपात छे ते अहिताग्न्यादि गणथी थाय छे. अहिं तीर्थंकरोने विषे महावीरानुं ज मोक्षगमनमां एकपणुं छे पण ऋषभादि जिनोनुं एकपणुं नथी, कारण के दश हजार बगेरे ग्रुनिओना परिवारवडे तेओनुं सिद्धपणुं थयेलुं छे.कह्युं छे के- एगो भगवं वीरो, तेत्तीसाऍ सह निव्वुओ पासो । छत्तीसएहिं पंचहिं, सएहिं नेमी उ सिद्धि गओ ॥१९९५	*** १ स्थाना- ध्ययने ध्ययने स्कंधविश्चेक स्य एकत्वम् ५२-५६ स्त्राणि
××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	एकाकी भगवान महावीर. तेत्रीश मुनिओनी साथे पार्श्वनाथ सिद्ध थया अने पांचसो छत्रीस मुनिओनी साथे नेमीश्वर भगवान मोक्ष गया ( ११५ ) इत्याँदि ॥ ( सू० ५३ ) वीर एकाकी मोक्ष पाम्या ए कह्युं. सिद्धिक्षेत्रनी नजीकमां अनुत्तर १. टीकामां ' त्ति ' शब्द लेवाणी अहि माप्यमां आ प्रमाणे संबंध छे. २. बाकीना तीर्धकरोतुं वृत्तांत आवश्यकनिर्युक्ति वगेरे	(¥ * * * * * * * * * * * * *

(*************************************	विमानो छे माटे तेमां वसनारा देवोतुं मौन कहे छे:-' अनुत्तरे ' त्यादि, जेथी अन्य विमानो प्रधान न होवाथी अनुत्तर विजयादि विमानो, तेओने विषे जे उपपात-जन्म, ते छे विद्यमान जेओने ते अनुत्तरोपपातिक देवो. बे ' णंकार ' वाक्या- लंकारमां छे. देवो एक रत्नि-हाथ पर्यंतनी अवगाहनावाळा छे. कोद्यां कौटिल्येन नदीवत्. अहिं द्वितीया विभक्ति लेवी. ' उड्ढं उच्चत्तेणं 'ति वस्तुनुं अनेक प्रकारे उच्चपणुं छे. एक ऊभा रहेलनुं ऊंचपणुं, वीजुं तिर्यक्सिथत( स्रतेल वगेरे )नुं अने त्रीजुं गुणोवडे उच्चपणुं छे. त्रणमां बीजा अने त्रीजाने छोडीने ऊर्ध्वस्थित( ऊभा रहेला )नुं जे ऊंचपणुं ते ऊर्ध्व उच्चत्व आगममां रूढ थयेल छे. ते ऊर्ध्व उच्चत्ववडे सर्वज्ञोए प्ररूपणा करेल छे. अहीं मूलमां अनुस्वार छे ते प्राक्वत चैलेथी जाणवुं. अनुत्तरोपपातिक देवोनुं उर्ध्व ऊर्च प्रचप्र एक हाथनुं प्रमाण जाणवुं. ( स्र० ५४ ) देवना अधिकारथी नक्षत्र देवोतुं- 'अद्दानक्र्यत्ते' इत्यादि त्रण सुगम सत्रवडे तारानुं एकपणुं कह्युं. तारा ज्योतिष्कोना विमानरूप छे. कृतिकादि नक्षत्रोमां	<u>ĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸ</u> ĸĸĸĸ
**************************************	तारातुं प्रमाण नीचे प्रमाणे छे— छै ६ पंपेच ५ तिन्नि ै ३ एँगं १ चंउ ४ तिगा ३ रसँ ६ वेर्य ४ जुर्यंल २ ज़ैंयलं २ च । इंदिये ५ ऐंगं १ ऐंगं १, विसेंय ५ ग्गिं ३ समुद्द ४ बौरँसगं १२ ॥ ११६ ॥ १. देव-देहमानं प्रत्यंतरमां छे. भ	XXXXXXXXXXXXXX

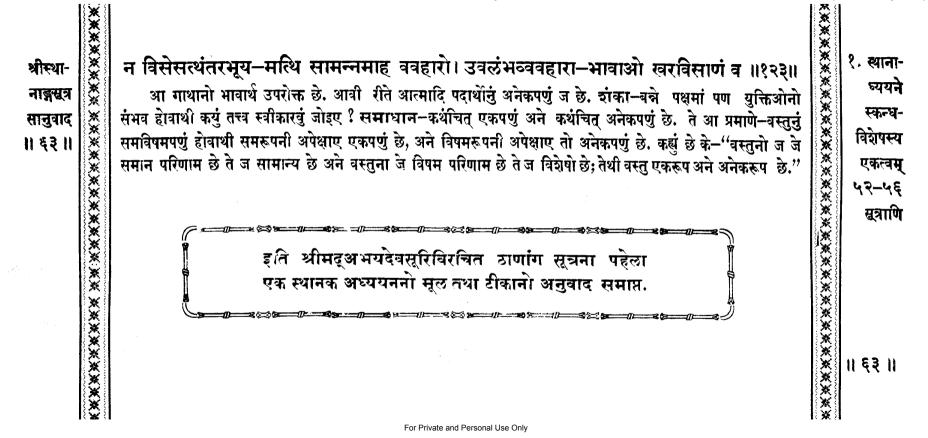
श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ११ ६१ ॥ ११ ६१ ॥	चर्उरी ४ तिथे ३ तिथे ३ तिये ३ पं <sup>डु3</sup> १ पं <sup>डु3</sup> ५ सेंत्त ७ बे <sup>२४</sup> २ बे <sup>२५</sup> २ भवे तिया तिन्नि <sup>३६ २० २८</sup> ३-३-३। रिक्खे तारपमाणं, जइ तिहितुछं हयं कज्जं ॥ ११७॥ उपरना अंक प्रमाणे क्रत्तिकाथी आरंभीने भरणी सुधी नक्षत्रो गणवा अने क्रतिकाना ६, रोहिणीना ५, मृगग्ररना ३ यावत् भरणी सुधीना नक्षत्रोना तारा स्रोकमां जणावेला बाजुना अंक प्रमाणे जाणवा. बीजी गाथानां उत्तराईमां तारात्तुं फळ कहे छे.ज्यारे जे नक्षत्रंमां तारानी संख्यातुं जे प्रमाण छे ते प्रमाणे ज तिथि होय त्यारे कार्यनी सिद्धि न थाय; जुकशानी थाय (११६–११७). प्रस्तुत खत्रमां एक स्थानकना अनुरोधथी त्रण नक्षत्रना तारातुं प्रमाण कह्युं. बाकीना नक्षत्रोत्तं तो जे तारातुं प्रमाण छे ते प्रायः आगळना अध्ययनोमां सूत्रकार स्वयं कहेश्रे. ताराना प्रमाणनो जे कोइ स्थळे विसंवाद-मतभेद छे ते तथाप्रकारना प्रयोजनोमां अम्रुक नक्षत्र सहित तिथिविशेषत्रुं अश्चभपणातुं सचन करवा मतांतरभूत होवाथी उक्त वे गाथाने बाधक नथी (सू०५५). तारा पुढ्गलरूप छे माटे पुढ्गलनुं स्वरूप कहे छे:-'एगप्पएसोगाढे' इत्यादि सुगम छे. विशेष हवे कहे छे-एकत्र प्रदेश क्षेत्रना अंशविशेषमां जे आश्रित थयेला ते एकप्रदेशावगाढो छे, ते परमाणुरूपे अने स्कंधरूपे छे. एवी रीते ५ वर्ण, २ गंघ, ५ रस अने ८ स्पर्शना भेदविशिष्ट पुद्गलो कहेवा. आधी ज कर्खु छे:-' जाव एगगगणत्रुक्से ' इत्यादि ( सू० ५६ ) आवी रीते अनुगम	<pre></pre>
****	र. दा. त. रुतिका नक्षत्रना छ तारा छे, माटे छठ तिथिमां रुत्तिका आवे तो कार्यसिद्धि न थाय. रोहिणीमां पांच तारा छे माटे पंचमी तिथिमां रोहिणी आवे तो कार्यसिद्धि न थाय एम २८ नक्षत्रोनुं फळ जाणवुं.	२ २ २ २ २ २ २ २

www.kobatirth.org

***	कहेवायो. हवे कइंक प्रत्यवस्थान( समाधान )ना प्रस्तावमां नयद्वार कहेलुं छे तो पण अनुयोगद्वारना क्रमवडे आवेलुं नयद्वार फरीथी विशेष स्वरूपे कहेवाय छे. तेमां नैगम वगेरे सात नयो छे अने ते ज्ञाननय अने क्रियानयमां अंतर्भाव थाय छे. ते ज्ञान अने क्रियानयथी आ अध्ययननो विचार कराय छे. तेमां ज्ञानकियात्मक आ अध्ययनमां, ज्ञाननय ज्ञानने ज मुख्य (श्रेष्ठ) इच्छे छे, कारण के समस्त पुरुषार्थनी सिद्धि ज्ञानना आर्धनिपणाथी थाय छे. कह्युं छे के- विज्ञप्ति-विशेष ज्ञान पुरुषोने फल देनार छे, पण किया फठनी देनारी इप्ट नथी, कारण के मिथ्याज्ञानथी प्रवृत्त थयेल पुरुषने फलनी प्राप्तिनो असंभव छे. आ कारणथी आ लोक अने परलोकना फठने इच्छनारे ज्ञानमां ज प्रयत्न करवो जोईए. क्रियानय तो क्रियाने ज इच्छे छे; कारण के पुरुषार्थनी सिद्धिमां क्रियानुं ज प्रयोजनपणुं छे. वळी कह्युं छे के- ' क्रियानय तो क्रियाने ज इच्छे छे; कारण के पुरुषार्थनी सिद्धिमां क्रियानुं ज प्रयोजनपणुं छे. वळी कह्युं छे के-' भिया ज पुरुषोने फल देनारी छे, पण ज्ञान फलने देनारुं इप्ट नथी, तेथी स्त्री अने मक्ष्यना भोगने जाणनार ज्ञानमात्रथी सुखी थतो नथी. '' आ कारणथी ऐहिक अने पारलौकिक फलना इच्छकोए किया ज करवा योग्य छे. जैनदर्शनमां तो ज्ञान
<b>***</b>	अते क्रिया बंने पैकी कोइ एकने पुरुषार्थनुं साधनपणुं कह्युं नथी. जेथी कह्युं छे केः— हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणओ किया। पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अंधओ ॥११८॥ क्रिया वगरनुं ज्ञान हणायेलुं (फल रहित) छे अने अज्ञानथी करायेली क्रिया निष्फल छे. देखतां थको पांगळो माणस अने दोडतो थको आंधळो माणस बन्ने बळी जाय छे, अर्थात् ज्ञान पांगळुं छे अने किया आंधळी छे. ज्ञान अने कियानो संयोग ज फलनो साधक छे. कह्युं छे के–

र्थास्था- नाङ्गसत्व सानुवाद ॥ ६२ ॥	*****	संजोगसिद्धीइ फलं वयंति, नहु एगचकेण रही पयाइ । अंधो य पंगू य वणे समिच्चा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ॥ ११९ ॥ तीर्थंकरो ज्ञान-कियाना संयोगनी सिढिथी फळ-मोक्षने कहे छे. जेम रथ एक पंडावडे चालतो नथी तेम मात्र ज्ञान के किमाथी मोक्ष प्राप्त थतुं नथी. आंधळो अने पांगळो बन्ने वनमां आवीने साथे जोडाया त्यारपछी ज नगरमां प्रवेक्या. ( ११९ ) वळी भाष्यकारे कहेलुं छे के- नाणाहीणं सब्वं, नाणणओ भणति किं च किरियाए ? । किरियाए करणनओ, तदुभयगाहो य सम्मत्तं ॥ १२० ॥ ज्ञाननय, सर्वं सुख ज्ञानने ज आधीन कहे छे, परंतु क्रियाबडे छुं ? अर्थात् कियाथी छुं थवानुं छे ? क्रियानय, कियाथी ज सुख कहे छे. ज्ञान अने किया ए वन्ने नय ग्रहण करनारने सम्यक्त्व छे-यथार्थपणुं छे. अथवा नैगमादि सात नयो पण सामान्यनयमां अने विश्वेषनयमां अंतर्भ्त थाय छे. तेमां सामान्यनय, प्रस्तुत अध्ययनमां कहेला आत्मादि पदार्थोचुं एक- पणुं ज माने छे, कारण के सामान्यनयनुं सामान्य दादी होवाथी विशेष नथी. आई जे सामान्य रहित छे ते वस्तु ज नथी, यब रहित, निष्क्रिय अने व्यापक-सर्वगत छे. सामान्य रहित होवाथी विशेष नथी. आई जे सामान्य रहित छे ते वस्तु ज नथी,	() () () () () () () () () () () () () (	स्थाना- घ्ययने हंधविशेष- रा एकन्म् र २-५६ स्रताणि
	***	ા પંચયત્વા તેવે તેવે તેવે પ્રત્ય છે. પંચયત્વે પશ્ચિત્ત વિશેષ પંચયત્વે તેવું પ્રત્યત્વે પશ્ચિત્ત પશ્ચાય્ત પશ્ય પશ્ચ પશ્ચાય્ત પશ્ચિત્ત પશ્ચાય્ત પશ્ચાયત્ત પશ્ચાય્ત પશ્ચાયત્ત પશ્ચ પશ્ચાયત્ત પશ્ચાયત્ત પશ્ચ	×      ***	1 47 IE

	www.kooduluhoig	/ (0)
1	दा. त. गथेडानुं शींगडुं. जे वस्तु छे ते सामान्य रहित नथी; जेमके घडो. वळी सामान्यवादी विशेषवादीने कहे छेके तमे विशेषो,	
	सामान्यथी अन्य-भिन्न स्वीकारो छो अथवा अनन्य-अभिन्न ? जो सामान्यथी विशेषो जुदा कहेशो तो ते असत्-अछता छे,	
	्कारण के सामान्य रहित होवाथी ते आकाञना फूलनी जेम असत् छे. जो विशेषो सामान्यथी जुदा नथी तो सामान्य मात्र ज	
	छे. अथवा सामान्यमां विशेषनो उपचार जेा होय तो उपचारवडे वस्तुना तत्त्वनुं चिंतन नहिं थाय. भाष्यकार कहे छेः-	
		B
	एकं निचं निरवय-वमकियं सव्वगंच सामन्नं। निस्सामन्नत्ताओ, नत्थि विसेसो खपुष्फं व ॥ १२१ ॥	
	<sup>तथा</sup> -सामन्नाओ विसेसो, अन्नोऽनन्नो व होज ? जइ अन्नो ।	
	सो नत्थि खपुप्फं, पिवऽणन्नो सामन्नमेव तयं ॥ १२२ ॥ ( युग्मम् )	
	आ बन्ने गाथानो भावार्थ उपर कहेवायेल छे. आत्मादि पदार्थोनुं एकपणुं सामान्यनयथी कहेलुं छे. विश्वेषनयना मतथी	
	तो आत्मादिनुं अनेकपणुं ज छे. विशेषवादी कहे छे-सामान्य, विशेषोथी भिन्न छे के अभिन्न ? भिन्न नथी, कारण के	
		B
	आकाशना फूलनी जेम तद्दन प्रत्यक्ष नथी. वळी विशेषेथी सामान्य भिन्न नथी, कारण के दाह, पाक, स्नान, पान,	
	अवगाह, वाह अने दाह आदि सामान्य शब्दवडे सर्व संच्यवहारनो गधेडाना शींगडानी जेम अभाव छे, तेथी कंई पण व्यय-	
	हार थई शकशे नहिं. जो सामान्य अभिन्न छे तो विशेष मात्र ज वस्तु छे, सामान्य नाम ज नथी. अथवा विशेषोमां सामान्य	
d,	રાત્યર રાખર માણ માં લામાપ્ય બામથા છેલા વિશેષ માત્ર બ પરંતુ છે, લામાખ્ય મામ બ મેવા. બચવા વિશેષામાં લામાપ્ય	
	मात्रनेा उपचार करेल छे, एम जो कहेशो तो उपचारवडे वस्तुतत्त्व नहि विचारी शकाय. भाष्यकार कहे छे–	
1		
	Experience and Bernard Use Only	



15	<b>R</b> .4
अथ द्वितीयं दिस्थानकाख्यमध्ययनम् ।	***
एक स्थानक नामवाछं प्रथम अध्ययननुं व्याख्यान कर्युं, हवे संख्याक्रमना संबंधवडे प्राप्त थयेल वे स्थानक नामवाछं बीजुं अध्ययन वर्णववामां आवे छे. आ बीजा अध्ययननो विशेष संबंध कहे छेः-अहिं जैनोने जैनदर्शननी सामान्य-विशेषात्मक वस्तु सम्मत छे. तेमां सामान्यने आश्रय करीने प्रथम अध्ययनमां आत्मादि पदार्थोनुं एकपणाए निरूपण कर्युं, हवे प्रस्तुत अध्ययनमां तो विशेषनो आश्रय करवाथी आत्मादि वस्तु द्विविधपणाए कहेवाय छे. आ संबंधवडे प्राप्त थयेल आ बीजा अध्ययनमां तो विशेषनो आश्रय करवाथी आत्मादि वस्तु द्विविधपणाए कहेवाय छे. आ संबंधवडे प्राप्त थयेल आ बीजा अध्यायना अनुयोगना उपक्रमादि चार द्वारो होय छे. ते चार द्वारो प्रथम अध्ययननी जेम जाणवा. जे कंइक विशेष होय ते स्वबुद्धिवडे जाणवा योग्य छे. केवल आ चार उद्देशकात्मक आ अध्ययनना सत्रानुगममां प्रथम उद्देशकनुं आ प्रथम सत्र उच्चारबुं. जद्स्थि णं लोगे तं सव्वं दुपओआरं, तंजहा-जीवचेव अजीवचेव । तसे चेव थावरे चेव १,	<u>****</u>
जदात्थ ण लाग त सब्ब दुपआआर, तजहा—जावचव अजावचवा तत पव पावर पव र, सजोणियच्चेव अजोणियच्चेव २, साउयच्चेव अणाउयच्चेव ३, सइंदियच्चेव अणिंदिए चेव ४, सवेयगा चेव अवेयगा चेव ४, सरूवि चेव अरूवि चेव ६, सपोग्गला चेव अपोग्गला चेव ७, संसारसमावन्नगा चेव असंसारसमावन्नगा चेव ८, सासया चेव असासया चेव ९। सू० ५७	****

	nara	www.kobdata.org	7 toniai ya	Chin Kallabbagarbarr
	***		(* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	<b>•</b>
श्रीस्था-	$\mathbf{x}$	मूलार्थे:-जे आ लोकने विषे जीवादि वस्तु छे ते सर्व बे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-जीव अने अजीव. जीवना बे		२ स्थानका-
नाङ्गसूत्र	×	प्रकार छे-१ त्रस अने थावर, २ सयोनिक-संसारी अने अयोनिक-सिद्ध, ३ आयुष्य सहित अने आयुष्य रहित, ४ इंद्रिय सहित		ध्ययने
सानुवाद	**	अने अनिंद्रिय (इंद्रिय रहित), ५ वेदस-वेद सहित अने वेद रहित, ६ रूपी-मूर्त्ते (आकार सहित) अने अरूपी-अमूर्त्त (आकार	*	जीवा <b>नां</b>
11 48 11	×: ×:	रहित), ७ पुद्गल सहित अने पुद्गल रहित, ८ संसारमां रहेला अने संसारमां नहिं रहेल, ९ शाश्वत अने अशाश्वत एम	****	द्वैविष्यं
	×	बब्बे प्रकारे जीवो छे. ( सू० ५७ )	X	५७ <b>स्<b>त्रम</b></b>
	8	टीकार्थः–आ सत्रनो पूर्व सत्रनी साथे आ प्रमाणे संबंध छे–पूर्वे कहेलुं छे के–एकगुण ऌखा पुर्गला अनंत छे, ते पुर्गलोमां	*	
	**	अनेकगुण ऌखा पुद्गलो पण होय छे, जेने लइने ते पुद्गलो एकगुण रुक्षपणाए विशेप कराय छे? हा, होय छे. जे माटे 'जदत्थी'	X	
Ì	* *	त्यादि. हवे परंपरस्त्रनो संबंध तो-' श्रुतं मयाऽऽयुष्मता भगवतैवमाख्यातमेक आत्मे'त्यादि-तेम आ बीजुं अध्ययन	×	
	*****	पण कह्युं छे. 'जदत्थी ' त्यादि संहितादिनी चर्चा पूर्वनी जेम जाणवी. जे जीवादि वस्तु विद्यमान छे. ' णं ' कार	X	
	$\otimes$	वाक्यना अलंकारमां छे. ' जदर्तिंथ चणं ' ति आवो पाठ पण क्यांक छे. ते सूत्रमां अनुस्वार आगमथी थयेल छे अने		
	×	चकार पुनः अर्थमां छे. आ जीवादि वस्तुनो आ प्रमाणे प्रयोग छे–आत्मादि वस्तु छे, प्रथमना अध्ययनवडे कहेवायेल होवाथी	X	
	× ×	पंचास्तिकायात्मक लोकमां, अथवा लोक्यते-[ केवळज्ञानवडे ] जे प्रमाण कराय-जणाय ते लोक, आ व्युत्पत्तिवडे लोक	× ×	
		अने अलोकरूपमां जे वस्तु छे ते सर्व वस्तु बे पद-स्थानमां तथा विवक्षित वस्तु अने तेथी विपरीत लक्षणरूप बे पक्षमां अवतार		
	8	(समावेश) थाय छे जेनो ते द्रिपदावतार छे. 'दुपडोयारं' ति आ पाठ क्यांक बोलाय छे त्यां वे पक्षमां प्रत्यवतार छे जेनो ते	×	11 88 11
	*		****	
			I Q I	
	8 I			

\* \*

देपत्यवतार छे, स्वरूपवान् अने प्रतिपक्षवान् इत्यर्थे ' तच्येथे ' ति-दृष्टांतना स्थापनमां ' तद्यथा ' झब्द् छे. ' जीवैचेव
जिविचेव ' त्ति-' जीवाश्चैवाजीवाश्चैव, ' प्राकृतशैलीथी संयुक्त परत्ववडे हुस्व थाय. वे चकार समुचय अर्थवाळा छे
ने ' एव ' कार चे।कस अर्थमां छे. ' एव ' नो चे।कस अर्थ करवावडे राझ्यंतर( त्रीजी राशि )नो निषेध कहेल छे.
जीव नामनी राशि जुदी राशि छे, एम जो कहेशो तो तेम नथी, कारण के 'नो' शब्दनो सर्व निषेधकपणामां स्वीकार करवाथी
नोजीव ' शब्दवडे अजीव ज चोकस थाय छे अने नो शब्दने देश निषेधक अर्थमां लेवाथी तो जीवनो देश ज चोकस थाय छे.
श ( अवयव ) अने देशी( अवयवी)ने। अत्यंत भेद नथी, माटे आ देश ते जीव ज छे. अथवा 'चेय'ति चय शब्द
वकारना अर्थवाळो छे. ' चिय चेय एवार्थ ' इति वचनात्. तथा जीवो ज विवक्षित वस्तु छे अने अजीवो ज प्रतिपक्ष
स्तु छे. एवी रीते सर्वत्र जाणवुं. अथवा ' यदस्ति ' सत्रूप जे वस्तु, जीव अने अजीवना भेदथी बे प्रकारे होय छे.
ाप तेमज जाणवुं. हवे त्रस इत्यादि नव सत्रना समूहवडे जीवतत्त्वना ज प्रतिपक्ष सहित भेदोने वतावे छेः-तसे चेचेत्यादि,
मां त्रसनामकर्मना उदयथी त्राम-उद्वेग पामे छे ते दींद्रिय वगेरे त्रसजीवो, अने स्थावरनामकर्मना उदयथी गति रहित-
स्थर स्वभाववाळा पृथिवीकायिक वगेरे स्थावर जीवो छे. (१). उत्पत्तिस्थान सहित ते सयोनिको-संसारी जीवो अने तेनाथी
वेपरीत अयोनिको-सिद्धो छे. (२). जे आयुष्य सहित वर्ते छे ते सायुष्क-आयुष्यवाळा संसारी जीवो अने तेनाथी अन्य-आयुष्य
१. वे चकारना संयोगथी प्राठतनियम प्रमाणे वकार हूस्व धयेल छे.

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद	रहित ते सिद्धो छे. (३). एवी सैते जे इंद्रिय सहित ते संसारी जीवो अने अनिंद्रियो-सिर्द्ध वगेरे जीवो छे. (४). सवेदको-स्त्रीवेद गेरोरेना उदयवाळा जीवो अने वेदना उदय रहित सिद्ध वंगेरे जीवो छे (५). मूर्च सहित वर्ते छे ते सरूपिणः-आ शब्द समासांत इन् प्रत्यय कीघे छते सिद्ध थाय छे. संस्थान (आकार) अने वर्णादिवाळा शरीर सहित जीवो अने जे रूपवाळा नथी ते अरूपी-मुक्त जीवो छे. (६). सपुद्गला-कर्म वगेरे पुद्गलवाळा जीवो अने अपुद्गला-सिद्धो छे. (७). संसारमां रहेला संसारी जीवो अने तेथी छुदा ते सिद्धना जीवो (८). जन्म अने मरण विगेरेथी रहित होवाथी शाश्वता-सिद्धना जीवो अने जन्ममरणादि युक्त होवाथी अश्वाश्वता-संसारी जीवो छे. (९). ( स्र० ५७) एम जीवतत्त्वना द्विपदावतारचुं निरूपण करीने अजीवतत्त्वना द्विपदावतारचुं निरूपण करे छे:- आँगासे चेव नोआगासे चेव। धम्मे चेव अधम्मे चेव। सू० ५८, बंधे चेव मोक्स्वे चेव १, पुन्ने चेव पावे चेव २, आसवे चेव संवरे चेव ३, वेयणा चेव निज्जरा चेव ४। सू० ५९, दो किरियाओ पन्नचाओ, तं जहा-जीवकिरिया चेव अजीधकिरिया चेव १, जीवकिरिया दुविहा पन्नचा, तंजहा- १. ' वगेरे ' शब्दशी भवस्य केवलिओ जाणवा, कारण के तेओने क्षायोपशमिकभावनो जभाव छे अने माव ईदियो क्ष्योपशम- माबे छे. २. तबमा गुणठाणानो अधुक भाग, संख्यातो गया पछी माववेदना उदयना अभावथी अवेदी होय छे. ३, 'आगासा चेव' जावो पाठ आगमोदय समितिवाळी प्रतिमा छे.	<ul> <li>***</li> /ul>
------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

č	सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव २, अर्जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता, तं०-इरियावहिया चेव
	संपराइगा चेव ३, दो किरियाओ पं० तं०-काइया चेव आहेगराणिया चेव ४, काइया किरिया द्विहा
	पन्नत्ता तं०-अणुवरयकायकिरिया चेव, दुप्पउत्तकायकिरिया चेव ५, आहेकरणिया किरिया दुविहा
	पंग्त०-संजोयणाधिकरणिया चेव णिव्वत्तणाधिकरणिया चेव ६, दो किरियाओ पं० तं०-पाउसिया
	चेव पारियावणिया चेव ७, पाउसिया किरिया दुविहा पं० तं-जीवपाउसिया चेव अजीवपाउसिया
	चेव ८, पारिचावणिया किरिया दुविहा पं० तं०-सहत्थपारियावणिया चेव परहत्थपारियावणिया
	चेव ९, दो किरियाओ पं० त०-पाणाइवायकिरिया चेव अपचक्खाणकिरिया चेव १०, पा-
	णाइवायकिरिया दुविहा पं० तं० सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव
	११, अपचक्लाणकिरिया दुविहा पं० तं०-जीवअपचक्लाणाकिरिया चेव अजीवअपचक्लाण-
	किरिया चेव १२, दो किरियाओं पं० तं०-आरंभिया चेव परिग्गहिया चेव १३, आरंभिया किरिया
	दुविहा पं० तं०-जीवआरंभिया चेव अजीवआरंभिया चेव १४, एवं परिग्गहियावि १५, दो किरि-

VII Jain Araunana Kenura	www.kobatiliti.org	Acharya Shin	Railassayarsuri
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ६६ ॥ ***	णाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव तच्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव १८, दो किरियाओ पं० तं०-	×××××××××××××××××××××××××××××××××××××	स्थानः- ध्ययने अजीन- वन्धादि- कियाणां विध्यम् स्त्राणि
**************************************	जगाउत्तजाइपजता चय अणाउत्तपमजागता चव ३९, अणवकखवात्तवा कारया दुविहा पण तण्	×	લ્લ્ ॥

NSL.	-
	$\sim$
	आयसरीरअणवकंखवत्तिया चेव परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव ३३, दो किरियाओ पं० तं०-
	पिज्जवात्तिया चेव दोसवत्तिया चेव ३४, पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पं० तं०मायावात्तिया चेव
	लोभवात्तिया चेव ३५, दोसवात्तिया किरिया दुविहा पं० तं०कोहे चेव माणे चेव ३६। सू० ६०
l	मूलार्थः—आकाश अने नोआकाश एटले धर्मास्तिकायादि पांच वे वस्तु छे, धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय वे वस्तु
	छे. (सू० ५८). बंध अने मोक्ष वे छे १, पुन्य अने पाप वे छे २, आश्रव अने संवर वे छे ३, वेदना ( पीडा ) अने
	निर्जरा वे छे ४. ( सू० ५९ ). वे किया कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जीव किया अने अजीव किया १, जीव किया वे प्रकारे-
ĺ	कहेली छे, ते आ प्रमाणे—सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यात्वक्रिया २, अजीवक्रिया वे प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे—
	इर्यापथिकी अने सांपरायिकी ३, बे किया कहेली छे, ते आ प्रमाणे-कायिकी अने अधिकरणकी ४, कायिकी किया
	वे प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-अनुपरत् (विराम नहि पामेल) कायाक्रीया अने दुष्प्रयुक्त(दुष्ट रीते प्रवर्त्तावेल) काय-
	किया ५, अधिकरणकी किया वे प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-संयोजनाधिकरणकी (क्षस्नादिनी योजना-तैयारी करवारूप) अने
	निर्वर्त्तनाधिकरणकी ( तैयार करी राखेल) ६, बे किया कहेली छे, ते आ प्रमाणे-प्राद्वेषिकी (विशेष द्वेषरूप) किया अने पारि-
	तापनिकी (संताप करवारूप) किया ७, प्रादेषिकी क्रिया वे प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जीवप्राद्देषिकी अने अजीवप्राद्देषिकी
ļ	८, पारितापनिकी किया वे प्रकार कहेली छे, ते आ प्रमाणे-स्वहस्तपारितापनिकी किया अने परहस्तपारितापनिकी किया ९,
Ľ	१२
ľ	

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ६७ ॥

	Achaiya	Shiri Kallassayars
छे, ते आ णे–जीव- जी किया बे आ–जीव- यिकी बे (प्रका बे (प्रणा की (घणा की २३, बे किया बहस्तिकी ( करवाथी	(XXXXXXXXXX	२ स्थानका घ्ययने कियाण द्वैविष्यम् ५८–६० स्रत्राणि

 ara	www.kobdurationg
*****	वे किया कहेली छे, ते आ प्रमाणे-प्राणतिपात किया अने अप्रत्याख्यान किया १०, प्राणतिपात किया वे प्रकारे कहेली छे, ते अ प्रमाणे-स्वहस्तपाणातिपात किया अने परहस्तप्राणातिपात किया ११, अप्रत्याख्यान किया वे प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जीत अप्रत्याख्यान किया अने अजीवप्रत्याख्यान किया १२, वे किया कहेली छे-आरंभिकी अने पारिग्रहिकी १३, आरंभिकी किया प्रकार कहेली छे, ते आ-जीवआरंभिकी अने अजीवआरंभिकी १४, एवी रीते पारिग्रहिकी किया पण वे प्रकारे छे, ते आ-जीत पारिग्रहिकी अने अजीवपारिग्रहिकी १५, वे किया कहेली छे, ते आ-मायाप्रत्ययिकी किया पण वे प्रकारे छे, ते आ-जीत पारिग्रहिकी अने अजीवपारिग्रहिकी १५, वे किया कहेली छे, ते आ-मायाप्रत्ययिकी अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी १६, माय प्रत्ययिकी वे प्रकारे छे, ते आ-जात्मभाववंकनता( ठगवारूप ) अने परभाववंकनता १७, मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी प्रकारे छे, ते आ-ज्जतिरिक्ति ( ओछुं अने अधिक कहेवारूप ) मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी अने तद्व्यतिरिक्त ( विपरीत-आत्म दि नथी एम कहेवारूप ) मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी १८, वे किया कहेली छे, ते आ-डिक्ती अने पुष्टिकी ९९, दृष्टिकी वे प्रक कहेली छे, ते आ-जीवद्दष्टिकी अने अजीवदर्षिकी २०, एवी रीते पुष्टिकी वे प्रकारे छे, ते आ-जीवप्रत्तिरिक्त ( विपरीत-आत्म दि नथी एम कहेवारूप ) मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी १८, वे किया कहेली छे, ते आ-डिप्रती अने पुष्टिकी (स्पर्श करवारूप) अ अर्जावप्रप्टिकी २१, वे किया कहेली छे, ते आ-प्रतितियिकी २०, एवी रीते पुष्टिकी वे प्रकारे छे, ते आ-जीवप्रटिक्ती (स्पर्श करवारूप) अ अर्जावप्रप्टिकी २१, बे किया कहेली छे, ते आ-प्रतितियिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-जीवप्रतीत्यिकी अने अजीवप्रतियिकी ( वा मनुष्योनी प्रग्नंसा वगेरेथी थयेली ) २२, प्रातीतियकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-जीवप्रतातित्पिकी अने अजीवप्रातित्यिकी २४, वे कि कहेली छे, ते आ-स्वहस्तिकी को ने मैयुष्टिकी ( फेंकवाथी थयेली) २५, स्वहस्तिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-जीवस्रतितियकी २४, वे कि कहेली छे, ते आ-स्वहस्तिकी अने नैसुष्टिकी एण वे प्रकारे छे २७, वे क्रिया कहेली छे, ते आ-आज्ञापनिकी (हुकम करवा अने अजीवस्वहस्तिकी २६, एवी रीते नैस्युष्टिकी पण वे प्रकारे छे २७, वे क्रिया कहेली छे, ते आ-आज्ञापनिकी (हुकम करवा
~××××	अने अजीवस्वहस्तिकी २६,एवी रीते नैसृष्टिकी पण वे प्रकारे छे २७, वे क्रिया कहेली छे, ते आ−आज्ञापनिकी(हुकम करवाध
11. arti - 1	

Venura	www.kobaurun.org	Acharya Shin r
************************	थयेली) अने वैदारिणी (चीरवाथी थयेली) किया २८, आ बन्ने कियाना बन्न्वे भेद नैसृष्टिकी कियानी माफक जाणवा २९-३०, बे किया कहेली छे, ते आ-अनाभोग प्रत्ययिकी (अनुप्रयोगथी थयेली) अने अनवकांक्षाप्रत्ययिकी (बेदरकारीथी थयेली) ३१, अनाभोगप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-अनुपयुक्त(थी) आदानता ( ग्रहण करवापणुं ) अने अनुपयुक्त(थी) प्रमार्जनता ३२, अनवकांक्षाप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-अनुपयुक्त(थी) आदानता ( ग्रहण करवापणुं ) अने अनुपयुक्त(थी) प्रमार्जनता ३२, अनवकांक्षाप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-अनुपयुक्त(थी) आदानता ( ग्रहण करवापणुं ) अने अनुपयुक्त(थी) प्रमार्जनता ३२, अनवकांक्षाप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-आनुपयुक्त(थी) आदानता ( ग्रहण करवापणुं ) अने अनुपयुक्त(थी) प्रमार्जनता ३२, अनवकांक्षाप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे छे, ते आ-आनुपयुक्त(थी) आदानता ( ग्रहण करवापणुं ) प्रत्ययिकी ३३, बे किया कहेली छे, ते आ-प्रेमप्रत्ययिकी अने द्वेपप्रत्ययिकी ३४, प्रेमप्रत्ययिकी किया वे प्रकारे कहेली छे, ते आ-मायाप्रत्ययिकी अने लोभप्रत्ययिकी ३५, द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया वे प्रकारे छे, ते आ-क्रोधप्रत्ययिकी अने मानप्रत्य- यिकी ३६. ( सू० ६० ). टीकार्थ:'आगासे'त्यादि-आकाश-व्योम अने नोआकाश ते आकाशथी अन्य धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्यो. धर्मा- स्तिकाय ते गतिमां मदद करवाना गुणवाळो अने तेथी जुदा अधर्मास्तिकाय ते स्थितिमां मदद करवाना गुणवाळो जाणवो. (म०४८) विपक्ष सनिव तंभादि तचना स्पर्य प्रको पर्य प्रकारे ने प्रकार ते प्रात्न का स्वर्य का काणवो जाणवो.	(*************************************

२स्थानका-

ध्ययने

कियाणां

**ट्वै**विर्घ्य

सूत्राणि

42-80

\*\*\*

\*\*\*\*\*\*

× ×

్

श्रीस्था-	स्मि सम्यक्तवते ज जीवना व्यापाररूप होवाथी जे किया ते सम्यक्तव किया, एम ज मिथ्यात्व किया पण जाणवी. वळी विशेष कहे छेः- सि मिथ्यात्व एटले तत्त्वनुं अश्रद्धान ते पण जीवनो व्यापार ज छे, अथवा सम्यग्दर्शन अने मिथ्यादर्शन छते जेवे किया थाय छे सि ते सम्यक्तव किया अने मिथ्यात्व किया कहेवाय छे. (२). 'अजीवकिरिये ' त्यादि-तेमां 'इरियावहिय' त्ति-ईरण-
सानुवाद    ६८	र्ति सम्यक्त्व किया अने मिथ्यात्व किया कहवाय छ. (२). अजावकिरिय त्यााद-तमा 'इरियावाहय' ति-इरण- मीर्या-गमन करवुं-ते गमनविशिष्ट मार्ग ते इर्यापथ, तेमां थयेली जे क्रिया ते ऐर्यापथिकी. आ व्युत्पत्ति मात्र अर्थ छे. प्रष्ट-
	मीयो-गमन करवुं-ते गमनविशिष्ट मार्ग ते इर्यापथ, तेमां थयेली जे क्रिया ते ऐर्यापथिकी. आ व्युत्पत्ति मात्र अर्थ छे. प्रष्ट- तिन्तुं निमित्त तो केवल योगप्रत्यय छे. ते उपशांतमोहादि त्रण गुणठाणावाळाने सातावेदनीय कर्मपणाए अजीवरूप पुद्गलराशिनुं जे थवुं ते ऐर्यापथिकी किया जाणवी. प्रस्तुत विषयमां जीवना व्यापारमां पण अजीवना मुख्यपणानी विवक्षावडे आ अजीव किया कहेली छे. अथवा कर्म विशेषरूप ऐर्यापथिकी क्रिया कहेवाय छे, जेथी कहेछं छे-''इरियावहिया किरिया दुविहा- बज्झमाणा बेइज्जमाणा य, जा[व] पढमसमये बद्धा बीयसमये वेइआ सा बद्धा पुट्टा वेइया णिज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं वावि भवती'ति-इर्यापथिकी क्रिया बे प्रकारे छे. बध्यमान (बंधाती) अने वेद्यमान (वेदाती). जे प्रथम समये बंधायेली अने बीजे समये वेदायेली, बंधायेली स्पृष्टा (क्रिया) भोगवायेली, निर्जरायेली (स्पर्शायेली उदयमां आवेली) ते भविष्यकालमां (चतुर्थादि समयमां) अर्फ्रम पण थाय छे. तथा संपरायाः-कपायोमां थयेली ते सांपरायिकी क्रिया. ते ज अ- जीवरूप पुद्रगलराशिनी कर्मपणाए परिणतिरूप जीवच्यापारनी विवक्षा न करवाथी अजीवक्रिया छे. ते पहेला गुनठणाणाथी यावत् सक्ष्मसंपराय गुणस्थानकवाळा जीवोने होय छे. (३). 'दो किरिये' त्यादि-वळी बीजी रीते वे क्रिया छे-'काइया चेव'त्ति- कायावडे थयेली ते कायिकी-कायानो व्यापार तथा ' अहिगरणिया चेव'त्ति -जेवडे आत्मा नरकादिने विपे अधिकारी
	हैं ] जे थवुं ते ऐर्यापथिकी किया जाणवी. प्रस्तुत विषयमां जीवना व्यापारमां पण अजीवना मुख्यपणानी विवक्षावडे आ अजीव
	किया कहेली छे. अथग कर्म विशेषरूप ऐर्यापथिकी किया कहेवाय छे, जेथी कहेछं छे-''इरियावहिया किरिया दुविहा-
	🕻 बज्झमाणा वेइज्जमाणा य, जा[व] पढमसमये बद्धा बीयसमये वेइआ सा बद्धा पुद्रा वेइया णिज्ञिण्णा सेयकाले
	अकम्मं वावि भवती'ति-इर्यापथिकी क्रिया बे प्रकारे छे. बध्यमान (बंधाती ) अने वेद्यमान (वेदाती ). जे प्रथम समये
	🖁 बंधायेली अने बीजे समूये वेदायेली, बंधायेली स्पृष्टा (किया) भागवायेली, निर्जुरायेली (स्पर्जीयेली उदयमां आवेली) ते
	👹 भविष्यकालमां ( चतुर्थादि समयमां) अर्क्षमे पण थाय छे. तथा संपरायाः-कषायोमां थयेली ते सांपरायिकी क्रिया. ते ज अ-
	💱 जीवरूप पुद्गलराशिनी कर्मपणाए परिणतिरूप जीवच्यापारनी विवक्षा न करवाथी अजीवक्रिया छे. ते पहेला गुणठाणाथी यावत्
	र सूक्ष्मसंपराय गुणस्थानकवाळा जीवोने होय छे. (३). 'दो किरिये' त्यादि-वळी बीजी रीते वे क्रिया छे-'काइया चेव'त्ति-
	🗧 कायावडे थयेली ते कायिकी-कायानो व्यापार तथा ' अहिगरणिया चेव'त्ति -जेवडे आत्मा नरकादिने विषे अधिकारी

श्रीस्था-

নাঙ্গন্বগ্ন

सानुवाद

11 89 11

२स्थानका-ध्ययने क्रियाणां ँद्वैविध्य**म्** 46-60 स्रत्राणि

11 89 11

iluia	www.kobalitihorg	Acharya
**************************************	चेव'त्ति-बीजाना हाथथी स्वदेह अने परदेहने परिताप करावता थकां जे थयेली क्रिया ते परहस्तपारितापनिकी. (९). वली वे क्रिया कहे छे-'पाणाइवायकिरिया चेव'त्ति-आनो अर्थ सुगम छे, तथा 'अपच्चक्रवाणकिरिया चेव'त्ति-अप्रत्याख्यान- अविरतिना निमित्तथी थयेल जे कर्मवंध ते अप्रत्याख्यान क्रिया, ते अविरतिओने होय छे. (१०). प्राणातिपात क्रिया वे प्रकारे-'सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव'त्ति-निर्वेद (कंटाठा) वगेरेथी पोताना प्राणोने पोताना हाथे अथवा क्रोधादिवडे पारकाना प्राणोने नाश करनारनी जे क्रिया ते स्वहस्तप्राणातिपात क्रिया, तथा 'परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव'त्त्त-बीजाना हाथे पोताना अथवा परना प्राणोने नाश करारानारनी जे किया ते परहस्तप्राणातिपात क्रिया. (११). बीजी अप्रत्याख्यान क्रिया पण वे प्रकारे छे-'जीवअपचक्त्रवाणकिरिया चेव'त्ति-जीवना विषयमां प्रत्याख्याननो अभाव(न करवा)वडे जे वंध वगेरेनी प्रवृत्ते तेजीवअप्रत्याख्यान क्रिया तेच'त्ति-जीवना विषयमां प्रत्याख्याननो अभाव(न करवा)वडे जे वंध वगेरेनी प्रवृत्ति तेजीवअप्रत्याख्या तथा 'अजीव अपच्चक्खाणकिरिया चेव'त्ति-आजीवो-मद्यादि विषे अर्थात् तेना पच्चखाण न करवाथी जे कर्मनो वंध ते अजीवअप्रत्याख्यान किया. (१२). वळी बीजी रीते वे क्रिया कहेली छे-'आरंभिया चेव'त्ति-आरंभवुं ते आरंभ, तेमां थयेली जे क्रिया ते आरंभिकी क्रिया, तथा 'परिग्गहिया चेव'त्ति-परिग्रहने विषे जे थयेली क्रिया ते पारिग्रहिकी. (१३). आरंभिक्री वे प्रकारे छे-'जीवआरंभिकी क्रिया, तथा 'परिग्गहिया चेव'त्ति-परिग्रहने विषे जे थयेली क्रिया ते पारिग्रहिकी. (१३). आरंभिक्री वे प्रकारे छे-'जीवआरंभिकी क्रिया, तथा 'परिग्गहिया चेव'त्त्ति-परिग्रहने विषे जे थयेली क्रिया ते पारिग्रहिकी. (१३). आरंभिक्री वे प्रकारे छे-'जीवआरंभिकी क्रिया, तथा 'परिग्गहिया चेव'त्त्ति-परिग्रहने विषे जे अवेली क्रिया ते पारिग्रहिकी.	<pre></pre>
× * * * *	आरंभ, तेमां थयेली जे किया ते आरंभिकी किया, तथा 'परिग्गहिया चेव'त्ति-परिग्रहने विषे जे थयेली क्रिया ते पारिग्रहिकी. (१३). आरंभिकी बे प्रकारे छे-'जीवआरंभिया चेव'त्ति-जीवोना उपमर्दन करनारने जे कर्मबंधन ते जीवआरंभिकी क्रिया, तथा	* * *
***	आरंभ करनारनी जे किया ते अजीवआरंभिकी. (१४). 'पारिग्गहिया चेव'त्ति-आ पारिग्रहिकी किया आरंभिकी क्रियानी जेम बे प्रकारे जाणवी, कारण के ते क्रिया जीवपरिग्रह अने अजीवपरिग्रहथी थाय छे. (१५). वळी बीजी रीते बे क्रिया 'मायावत्तिया	* * * * *
X		* *

\*\*\*\*\*

(\* \* \*\*\*\*

10.25	
<b>**</b> ********************	
- 1993	
_{{\$2}}	
- KQ (	
	चेव'त्ति-शठपणुं छे निमित्त जे कर्मबंध क्रियानुं अथवा जे व्यापारनुं ते मायाप्रत्यया, 'मिच्छादंसणवात्तिया चेव'त्ति-
- RQ (	
	मिथ्यात्व छे निमित्त जे (क्रियानुं) ते मिथ्यादर्शनप्रत्यया. (१६). मायाप्रत्यया बे प्रकारे-'आयभाववंकणया चेव'त्ति-
80	
12 <b>×</b>	अप्रज्ञस्त आत्मभावनुं जे वक्रीकरण–प्रशस्तपणानुं देखाडवुं ते आत्मभाववंकनता क्रिया, वंकन( वांकाइ )ना बहुपणानी विव-
- (X)	
	क्षामां (तऌरूप) भाव प्रत्यय विरुध्ध नथी. ते वंकनता, व्यापाररूप होवाथी क्रिया छे, तथा 'परभाववंकणया चेव'त्ति–जूठा
38	ठेख करवा वगेरेथी बीजाना अभिप्रायने ठगवा रूप किया ते परभाववंकनता, कारण के वृद्धव्याख्या आवी छे-"तं तं भावमायरेइ
	े लेख करवा वगरथा बाजाना आमंत्रायन ठगवा रूप किया ते परमाववकनता, कारण के युद्धव्याख्या जाया छे‴ ते ते मावमायरइ
_ KΩ}	जेण परो वंचिज्जइ कूडलेहकरणाईहिं'त्ति (१७). बीजी पण बे प्रकारे-'ऊर्णाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव'त्ति-
- IS 🖓 🗄	जण परा वाचज्जइ क्रुडलहकरणाइहि ति (१०), भाजा भेग भे प्रकार जणाहार ताम ज्यापराजमा तथा भव सि-
- RQ3	आत्मादि वस्तुना प्रमाणथी हीन अथवा अधिक कहेवारूप जे मिथ्यादर्शन, ते ज छे निमित्त जे क्रियानुं ते ऊनातिरिक्त-
- KQ	આભાલ વસ્તાના પ્રમાણથા હાન ગયના ગાયન મહનાલ્ય ગાય ગાયના પ્રાથ ગાય ગાય ગાયના છે. પંચાયતા પ્રાથમિક
	मिथ्यादर्शनप्रत्यया, ते आ प्रमाणे–शरीर व्यापक आत्मा छे, तो पण आत्माने कोईपण मिथ्याद्दष्टि, अंगुष्ठ पर्व मात्र
- B 📿 🗄	[ यवमात्र ] अथवा झ्यामाक नामा चोखामात्र एम हीनपणाए माने छे. वळी अन्य कोइक पांचर्शे धनुष्य प्रमाण अथवा
- B 📿 (	
- K 🔿 🗄	सर्वव्यापक छे एम अधिकपणाए स्वीकारे छे, तथा 'तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव'त्ति-ऊनातिरिक्तमिथ्यादर्श्वनथी
8	
1883	भिन्न जे मिथ्यादर्शन-आत्मा नथी इत्यादि मतरूप निमित्त छे जे क्रियानुं ते तद्व्यतिरिक्तमिथ्यादर्शनप्रत्यया. (१८). वळी
	बीजी रीते बे क्रिया छे-'दिहिया चेव'त्ति-दृष्टिथी थयेली ते दृष्टिजा अथवा दर्शन (जोवुं) अथवा वस्तु, निमित्तपणे
1881	ું લીંગી રાત ને ક્રિયા છે− વિદિયા અને 177-દાટયા ચયુરા તે દાટગા બેયવા વરાને (આવુ) બેયવા વરા, 1114 પ્રયો
188	छे जे कियामां ते दृष्टिका-जोवा माटे जे गतिकिया. अथवा जोवाथी जे कर्म उत्पन्न थाय छे ते दृष्टिजा अथवा दृष्टिका किया,
l 🕺	છે ગામગામાં લુદાદ્યમાં આવા માટે બે ગાલાંગવા અવવા આવાવા એ વેલ્લ ઉપયોગ વાવે છે લે અંદેઓ અવવા અવવા આવ્યા (ગુજાવું)
- 18 <b>X</b> (1	तथा 'पुहिया चेव'त्ति-पृष्टि-पूछवाथी थयेली ते पृष्टिजा-प्रश्नथी उत्पन्न थयेल व्यापार, अथवा पृष्ट-प्रश्न अथवा वस्तु ते छे
	WH BIOTI TTIM SIG AVIAN HAVE A SECOND AND ONLY THE SECOND AND NOT A SECOND AND A SE
******	
K 🛪 🖯	

ount / autonatia recitara	mm.kobdata.org	rionarya onin rianassagarsan
श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ७० ॥	कारणपणाए जे कियामां ते प्रष्टिका, अथवा स्प्रुष्टि-स्पर्श करवाथी जे थयेली किया ते स्प्रुष्टिजा तेवी ज रीते स्प्रुष्टिका पण जाणवी (१९). द्दष्टिका बे प्रकारे-'जीवदिट्टिया चेव'त्ति-अश्व वगरे जोवा माटे जनारनी जे किया ते जीवद्द्रिका, अथवा 'अजीवदिट्टिया चेव'त्ति-अजीव चित्रकर्म वगरेने जोवा माटे जनारनी जे किया ते अजीवद्द्रिका (२०). 'पुट्टिया चेव'त्ति- एवी रीते पृष्टिका जीव अने अजीवना भेदवडे बे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-जीवने अथवा अजीवने राग-द्वेषवडे पूछनारनी अथवा स्पर्श करनारनी जे क्रिया ते जीवप्र्य्टिका अथवा जीवस्प्रुष्टिका तथा अजीवप्रष्टिका अथवा अजीवने राग-द्वेषवडे पूछनारनी अथवा स्पर्श करनारनी जे क्रिया ते जीवप्र्य्टिका अथवा जीवस्प्रुष्टिका तथा अजीवप्रष्टिका अथवा अजीवने राग-द्वेषवडे पूछनारनी अथवा स्पर्श करनारनी जे क्रिया ते जीवप्र्य्टिका अथवा जीवस्पुष्टिका तथा अजीवप्रष्टिका अथवा अजीवने राग-द्वेषवडे पूछनारनी अथवा स्पर्श करनारनी जे क्रिया ते जीवप्र्य्टिका अथवा जीवस्पुष्टिका तथा अजीवप्रष्टिका अथवा अजीवने राग-द्वेषवडे पूछनारनी जथवा स्पर्श करनारनी जे क्रिया ते जीवप्र्य्टिका अथवा जीवस्पुष्टिका तथा अजीवप्रष्टिका अथवा अजीवस्पुष्टिका. (२१).वळी वीजी रीते वे क्रिया छे- 'पाडुचिया चेव'त्ति-बाह्य वस्तु प्रत्ये प्रतीत करीने आश्रय करीने जे थयेली क्रिया ते प्रातीत्यिकी, तथा 'सामंतोचणिवाइया चेव'- त्ति-समंनात् (चोतरफथी) उपनिपात (मनुष्यनो सम्रुदाय) तेमां थयेली जे क्रिया ते सामंतोपनिपातिकी. (२२). प्रातीत्यिकी व प्रकारे 'जीवपाडुचिया चेव'त्ति-जीवने आश्रयीने जे कर्मचंध ते जीवपातित्यिकी, तथा'अजीवपाड्राचिया चेव'त्ति-अजीवने आश्रयीने	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
****	रागद्वेप उत्पन्न थयेल अने तेनाथी थयेल जे कर्मबंध ते अजीवप्रातित्यिकी क्रिया. (२३). अतिदेर्ज्ञथी बीजी पण वे प्रकारे देखाडता थकां कहे छे-'एवं सामंतोवणिवाइयावि'त्ति-कोई पण मनुष्यनो बळद रूपाळो छे, तेने मनुष्य जेम जेम विशेष जुवे छे अने प्रशंसा करे छे तेम तेम तेनो मालीक आनंद पामे छे, ते(राग)थी थयेली क्रिया ते जीवसामंतोपनिपातिकी, तथा रथ वगेरेने विषे (रथादिने जोनार प्रशंसे तेथी) हर्ष थवाथी थयेली जे क्रिया ते अजीवसामंतोपनिपातिकी क्रिया. (२४). वळी बीजी रीते वे क्रिया कहे छे-'साह त्थिया चेव'त्ति,-पोताना हाथवडे थयेली जे क्रिया ते स्वहस्तिकी, तथा 'नेसत्थिया चेव'त्ति-फेंकवुं, तेमां थयेली जे किया ते अथवा फेंकवुं ज ते नैस्ट्राप्टिकी अर्थात् फेंकनारनो जे कर्मबंध अथवा स्वभाव ज क्रिया. (२५). तेमां पहेली वे प्रकारे-	

Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
***********************************	'जीवसाहत्थिया चेव'स्नि-पोताना हाथमां ग्रहण करेल जीववडे जीवने जे मारे छे ते जीवस्वाहस्तिकी, तथा 'अजीवसा- हात्थिया चेव'स्ति-पोताना हाथमां ग्रहण करेल खड्गादि अजीववडे जे जीवने मारे छे ते जीवस्वाहस्तिकी किया, अथवा पोताना हाथवडे जीवने ताडन करनारनी जे किया ते जीवस्वाहस्तिकी अने पोताना हाथवडे अजीवने ताडन करनारनी जे किया ते अजीवस्वाहस्तिकी किया. (२६). नैस्ट्राण्टिकी पण जीवाजीव भेदवडे अतिदेश करतां थका कहे छे-' एवं नसत्थिया चेव'स्नि- ते आ प्रमाणे-राजा बगेरेना हुकमथी पाणीनुं यंत्रादिवडे जे काढवुं ते जीवनैस्ट्राप्टिकी, अने तीर वगेरेनुं धनुष्यादिथी जे छोडचुं ते अजीवनैस्ट्राप्टकी किया, अथवा गुरुआदिकने जीव-शिष्य अथवा पुत्र देनारनी जे किया ते जीवनैम्प्र्यिकी किया, अथवा पात्रीन्तुं यंत्रादिबडे जे काढवुं ते जीवनैस्ट्रप्टिकी, अने तीर वगेरेनुं धनुष्यादिथी जे छोडचुं ते अजीवनैस्ट्रप्टिकी किया, अथवा गुरुआदिकने जीव-शिष्य अथवा पुत्र देनारनी जे किया ते जीवनैम्प्र्यिकी, अने एपणीय ( शुद्ध ) भक्तपानादि अजीव पदार्थने देनारनी जे किया ते अजीवनैस्ट्रप्टिकी. (२७). वळी वीजी शेते वे किया- 'आणवणिया चेव'स्ति-आझापन-आदेश करनारनी जे किया ते अजीवनैस्ट्रप्टिकी. (२७). वळी वीजी शेते वे किया- 'आणवणिया चेव'स्ति-आझापन-आदेश करनारनी जे किया ते अजीवनेस्ट्रप्टिकी. (२७). वळी वीजी शेते वे किया- 'आणवणिया चेव'स्ति-जाइपर-आइं ते, स्वार्थिक (स्वार्थवाळा) प्रत्ययना ग्रहणथी वैदारिणी विगेरे कहेत्रुं. (२८). आ वे पण वे प्रकारे-जीव, अजीवना भेदयी छे, ते आ प्रमाणे-जीवने हुकम करनारनी अथवा बीजा पासेथी मंगावनारनी जे किया ते जीवआझापनी अथवा जीवआनायनी, एवी रीते अजीव संबंधी पण अजीवआझापनी अथवा अजीवआनायनी <u>किया. (२९) तथा 'वेयारणिय'</u> स्ति-जीव अथवाआजीवने फाडे छे, अथवा असमानं जुदी छुदी अनेक वातो बोलनाराओमां र. प्रत्यतरमां ' असमानगागपुया विक्रीणति हेनापिको वि॰', अथवा 'असमानभावेषु ' पाठ छे.	*****
	For Private and Personal Use Only	

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद

11 98 11

Nen	ula	www.kobalitit.org	Acharya	Shiri Kaliassayarsun
	*****	जीव के अजीव वस्तुने बहेंचतो छतो द्वैभाषिक जे विचार करे छे ते विचारणी. 'परियच्छावेइत्ति भणितं होति ' अथवा जीव(पुरुष)ने ठमे छे एम कहेवुं ते जीववैतारणी, गुण न होवा छतां असत् गुणोवडे तुं आना जेवो गुणवान छो अथवा तेना जेवो गुणवान छो एवी रीते पुरुषादिकने ठमवानी वुद्धिवेडे अथवा अजीव वस्तु, ते अन्य वस्तु समान न होवा छतां तेना जेवी कहे ते अजीववैतारणी. आ बधुं आतदेशवडे कहे छेः-'जहेव नेस्तत्थिय'त्ति-जेम नैसृष्टिकी कही छे तेम जाणवी. (३०). बीजी रीते वे कहे छेः-' अणाभोगवत्तिया चेव'त्ति-अनाभोग (अज्ञान) छे निमित्त जे कैयाना ते अनाभोगप्रत्यया तथा ' अणवकंखवत्तिया चेव'त्ति-अनवकांक्षा-पोताना शरीरादिनी अपेक्षा नहिं करवापणुं ते छे निमित्त जे कियानुं ते अनव- कांक्षाप्रत्यया. (३१). पेली वे प्रकारे छे-' अणाउत्ताआइयणप्या चेव'त्ति-अनायुक्त-उपयोग रहित जीवनुं ते अनव- कांक्षाप्रत्यया. (३१). पेली वे प्रकारे छे-' अणाउत्ताआइयणप्या चेव'त्ति-अनायुक्त-उपयेगग रहित जीवनुं ते अनव- कांक्षाप्रत्यया. (३१). पेली वे प्रकारे छे-' अणाउत्ताआइयणप्या चेव'त्ति-अनायुक्त-उपयेगग रहित जीवनुं ते अनव- कांक्षाप्रत्यया. (३१). पेली वे प्रकारे छे-' आणाउत्ताभाइयणप्या चेव'त्ति अर्यया प्रहित जीवनुं ते अनव- कांक्षाप्रत्यया. (३१). पेली वे प्रकारे छे-' आणाउत्तापमज्जणया चेव'त्ति उपयोग रहित जीवनुं जे वस्तादि विषयवाळी प्रमार्जनता ते अनायुक्तप्रमार्जनता. अहिं आदान वगेरे शब्दोमां 'ता' स्वार्थिक प्रत्यय प्राकृतरीलीथी अथवा मावनी विवश्चावडे करेल छे. (३२). बीजी पण वे श्रकारे-'आयसरीरे' त्यादि-तेमां पोताना शरीरने नाशकारक कार्योने करनारनी चे आत्मग्नरीरनी अपेक्षारहित छे निमित्त जे कियानुं ते आत्मशरीरानवकांक्षाप्रत्यया, तेम बीजाना शरीरने नाशकारक कार्योने करनारनी जे किया ते परारीरानवकांक्षाप्रत्यया. (३३). 'दो किरिये ' त्यादिन्तण ख्रो सुगम छे. विशेप कहे छे-प्रेम (राग) ते माया अने लोभस्वरूप अने देय जे क्रोध अते मानस्वरूप. जे प्रेम निमित्तवाळी ते श्रेमप्रत्या अने चे देप निमित्तवाळी ते द्वेषप्रत्यया क्रिया जाणवी. (३४ थी ३६). आहि सुगम होवाथी केटलीक व्याख्या करवामां नथी आजी.	***	२ स्थानका- ध्ययने कियाणां द्वैविध्यम् ५८–६० स्रत्राणि
	/			

R

(	स्र् ६० ). आ क्रियाओ प्रायः गईणा करवा योग्य छे, माटे हवे गईा कहे छेः−
	दुविहा गरिहा पं० तं०-मणसा वेगे गरहति । वयसा वेगे गरहति । अहवा गरहा
	दुविहा पं० तं०-दीहं वेगे अद्धं गरहति, रहस्सं वेगे अद्धं गरहति । सू० ६१
	म्तूलार्थः-बे प्रकारे गहीं कहेली छे, ते आ प्रमाणे-केटलाएक मनवडे ज गहीं करे छे अने केटलाएक वचनवडे गहीं
	रे छे. अथवा गही बे प्रकारे कहेली छे-केटलाएक लांबा काळ सुधी गही करे छे अने केटलाएक अल्प काल पर्यंत
ग्	र्हा करे छे. ( सू० ६१ )
	टीकार्थः–' दुविहा गरहे ' त्यादि, विधान करवुं ते विधा–बे प्रकार छे जेणीना ते द्विविधा. गर्हवुं ते  गर्हा–खराब
अ	ाचरणनी निंदा, ते स्व-परना विषयवडे बे प्रकारे छे, ते पण मिथ्यादष्टि जीवने अने उपयोग रहित सम्य ग्र्दष्टि जीवने द्रव्य
η	र्हा होय छे. अर्थात् ते अप्रधानगर्हा छे कारण के द्रव्य शब्दनो अर्थ अप्रधान छे. कह्युं छे−
	अप्पाहन्नेऽवि इहं, कत्थइ दिट्ठो हु दव्वसदोत्ति । अंगारमद्दओं जह, दव्वायरिओ सयाऽभव्वो॥१
	अप्रधानपणाना अर्थमां पण द्रव्यक्वेब्द कोईक स्थले देखाय छे, कारण के द्रव्य क्वब्द अनेक अर्थवाळो छे. जेम अंगारमर्दक
न्	ामना आचार्य सदा अभव्य छे तो पण अप्रधानपणाथी द्रव्याचार्य कहेवाय छे. उपयोगयुक्त सम्यग्दष्टि जीवने भावगहां छे.
Ð	गर प्रकारनी गही छे, अथवा गर्हणीय भेदथी अनेक प्रकारे छे. ते गहीं अहिं करणनी अपेक्षाए वे प्रकारे कहेली छे, ते कहे

			-	
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ७२ ॥ ***	छे-'मणम्ता बेगे गरहई' त्ति-चित्तवडे, अहिं 'वा' शब्द विकल्पार्थ अथवा अवधारणार्थ(निथयार्थ)मां छे तेथी मनवडे ज गही करे छे पण वाणीवडे नॉहं. कायोत्सर्गमां रहेल, दुर्म्रुख अने सुमुख नामवाळा वे वे माणसवडे निंदायेल अने न्तुति करायेल, तेओता वचनोथी जणायेल छे सामंतोवडे पराभव पामेल पोताना पुत्र अने राज्यनी हकीकत जेणे ते, मनवडे आरंभेल छे पुत्रना पराभवने करनारा सामंतो साथे संग्राम जेणे ते, मनथी कल्पेल शस्त्रोनो क्षय थये छते पोताना माथानो टोप लेवा माटे ऊंचे करायेल हाथथी स्पर्शेल छे लोच करायेल मस्तक जेणे ते, मस्तकनो स्पर्श करवाथी उत्पन्न थयेल पश्चात्तापरूप अग्रिनी ज्वाळाना समूहवडे अत्यंत वाळेल छे सर्व कर्मरूप इंधन जेणे एवा राजपिं प्रसन्नचंद्रनी जेम कोई पण एक साधु निंदित कार्यनी निंदा करे छे तेम वचनथी पण अथवा वाणीवडे ज, परंतु मनथी नहि. मनुष्योत्तुं मनरंजन करवा माटे दुष्ट आच- रण वगेरेना कहेवाथी गर्हामां प्रवर्तेल अंगारमर्दक वगेरे साधुनी जेम प्रायः कोई अन्य गर्हा करे छे, पण भावधी मनवडे गर्हा न करे. अथवा 'मणस्ता वेगे'त्ति-आहिं 'अपि' शब्द ते संभावनाना अर्थमां छे, ते(अपि शब्द) वडे नीचे प्रमाणे अर्थ संमवे छे. एक व्यक्ति मनवडे पण गर्हा करे छे अने वीजो वाणीथी गर्हा करे छे, अथवा एक मात्र वाणीवडे नहि परन्तु मनवडे पण गर्हा करे छे, तेम केवल मनवडे नहि, वचनवडे पण गर्हा करे छे, ते ज व्यक्ति गर्हा करे छे अर्थात् वचे प्रकारे पण एक ज व्यक्ति गर्हा करे छे, ए तात्पर्य छे. बीजी रीते गर्हाचुं द्विपणुं कहे छेते ज व्यक्ति गर्हा करे छे अर्थात् वचे प्रकारे पण एक ज व्यक्ति गर्हा करे छे, ए तात्पर्य छे. बीजी रीते गर्हाचुं द्विपणुं कहे छे:—' आइवे'त्यादि-पूर्वोक्त व प्रकारनी अपेक्षावडे पूर्वनी माफक बीजी वे प्रकारे गर्हा कहेली छे. आपि शब्द संभावना अर्थमां छे तेथी लांवा काल सुधी पण कोई व्यक्ति जले जीवत्त नी जीवपर्यंत गर्हा करवा योग्प (पाप्.)नी गर्हा ( निंदा ) करे छे. अथवा दीर्घ अने हस्वचुं आपेक्षिकपणुं होवाथी बीजी रीते	{*************************************	२ स्थानका- घ्ययने उद्देशः १ गर्हा- द्वैविष्य <b>म्</b> ६१ <b>सत्रम्</b> ॥ ७२ ॥	
		∣⊧⊋{		

विवक्षावडे दीर्घपणुं भाववा योग्य छे. एवी रीते अल्प काल पर्यंत पण कोईएक व्यक्ति गर्दा करे छे, अथवा यावत् दीर्थ काल सुधी ज, तथा हस्व (अल्प) काल पर्यंत ज यावत् (एक व्यक्ति गर्दा करे छे) कारण के अपि शब्द निश्वय अर्थमां छे. अथवा एक ज व्यक्ति वे प्रकारे कालभेदवडे भावभेदथी गर्दा करे छे अथवा घणा के थोडा काल पर्यंत ज गर्दा करे छे. (स्व०६१). निंदा करवा योग्य भूतकाल संबंधी कर्मोने विपे गर्दा थाय छे अने भविष्यकालमां तो प्रत्याख्यान थाय छे. कर्यु छे के-'अईंगं निंदामि पट्टुप्पन्नं संबरेमि अणागयं पच्चकखामी'ति-अतीतकाल संवंधी पापने हुं निंदुं छुं, वर्तमानकालीन पापने संवरुं छुं (अटकावुं छुं) अने अनागतकालीन पापना पचक्खाण करुं छुं. आ कारणथी हवे प्रत्याख्यान कहे छे— दुविहे पच्चक्खाणे पं० तं०-मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति, अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पं० तं०-दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाति रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति । सू० ६२, दोर्हि ठाणेहिं अणगारे संपन्ने अणादीयं अणवयग्गं दीहमछं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवत्तेजा, तंजहा-विजाए चेव चरणेण चेव । सू० ६३ मूलार्थः-वे प्रकारे पचक्खाण कहेल छे, ते आ प्रमाणे-एक मनवडे पण पचक्खाण करे छे, एक वचनवडे पण पचक्खाण करे छे. अथवा पचक्खाण वे प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-एक दीर्घ (लांचा) काल पर्यंत पण पचक्खाण करे छे, एक अल्प रव	Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailas
	*****	काल सुधी ज, तथा हूस्व (अल्प) काल पर्यंत ज यावत् (एक व्यक्ति गर्हा करे छे) कारण के अपि श्रब्द निश्चय अर्थमां छे. अथवा एक ज व्यक्ति वे प्रकारे कालभेदवडे भावभेदथी गर्हा करे छे अथवा घणा के थोडा काल पर्यंत ज गर्हा करे छे. (सू०६१). तिंदा करवा योग्य भूतकाल संबंधी कर्मोंने विपे गर्हा थाय छे अने भविष्यकालमां तो प्रत्याख्यान थाय छे. कह्युं छे के-'अई्यं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चकखामी'ति-अतीतकाल संबंधी पापने हुं निंदुं छुं, वर्तमानकालीन पापने संवरुं छुं ( अटकावुं छुं ) अने अनागतकालीन पापना पच्चकखाण करुं छुं. आ कारणथी हवे प्रत्याख्यान कहे छे- दुविहे पच्चक्खाणे पं० तं०-मणसा वेगे पच्चक्खाति वयसा वेगे पच्चक्खाति, अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पं० तं०-मणसा वेगे पच्चक्खाति रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाति । सू० ६२, दोहिं ठाणेहिं अणगारे संपन्ने अणादीयं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वीतिवतेजा, तंजहा-विजाए चेव चरणेण चेव । सू० ६३ मूलार्थ:-वे प्रकारे पचक्खाण कहेल छे, ते आ प्रमाणे-एक मनवडे पण पचक्खाण करे छे, एक वचनवडे पण पचक्खाण करे छे. अथवा पचक्खाण वे प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-एक दीर्घ (लांचा) काल पर्यंत पण पचक्खाण करे छे, एक अल्प	********************************

Jain Araunana Kenura	www.kobatiliti.org	Acharya Shiri Kaliassay	jaisuirv
भीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद १ ७३ ॥	काल पर्यंत पण पचक्साण करे छे (स० ६२). वे स्थानक( गुण )वडे युक्त अनगार अनादिकालाविशिष्ट, अंत रहित दीर्घकाल नरकादि चार गतिरूप संसार अरण्य(जंगल)ने उद्धंघन करे ते आ प्रमाणे-विद्या( ज्ञान )वडे अने चारित्रवडे ज. (स० ६३). टीकार्थः' दुचिहे पच्चक्स्वाणे ' त्यादि, प्रमादना प्रतिकूलपणाए ( प्रमाद छोडोंने ) मर्यादावडे ख्यान-कथन करखुं ते प्रत्याख्यान, विधि अने निषेधस्वरूप प्रतिज्ञा इत्यर्थ. द्रव्यथी प्रत्याख्यान मिथ्यादृष्टिने अने करेल छे चातुर्मासमां मांसतुं पचखाण जेणीए तेवी अने निषेधस्वरूप प्रतिज्ञा इत्यर्थ. द्रव्यथी प्रत्याख्यान मिथ्यादृष्टिने अने करेल छे चातुर्मासमां मांसतुं पचखाण जेणीए तेवी अने पारणाने दिवसे मांसना दानमां प्रवर्तेली राजपुत्रीनी जेम उपयोग रहित सम्यग्दृष्टि जीवने होय छे, भावप्रत्याख्यान उपयोग सहित सम्यगृदृष्टि जीवने होय छे. ते प्रत्याख्यान देशथी अने सर्वथी तथा मूलगुण अने उत्तरगुणना भेदथी अनेक प्रकारे छे, तो पण करण भेदथी वे प्रकारे कहे छे-मनवडे पण एक (व्यक्ति) प्रत्याख्यान करे छे अर्थात् वध वगेरेनो निद्यत्तिविषय (त्याग) करे छे. शेष-बाकी पूर्वनी जेम जाणवुं. प्रकारांतरवडे पण प्रत्याख्यान कहे छे-'अहवे' त्यादि सुंगम छे. (स० ६२) झानपूर्वक प्रत्याख्यान वगेरे मोक्षजुं फल (आपनार) छे आ कारणथी कहे छेः-'दोहिं ठाणेहिं' इत्यादि-चे स्थान (गुण)- युक्त अनगार( जेने घर नथी ते ) साधु, जेनी आदि नथी ते अनादि, अनवदग्र-सामान्य जीवनी अपेक्षाए जेनो अंत नथी ते, लांबो छे काल जेनो ते दीर्घाद्व, दीर्घ शब्दमां मकार आगामिक छे, अथवा दीर्घ छे मार्ग जेने विपे ते दीर्घाध्य, वहुरंत-नरकादि गातिना विभागवडे चार भागरस्प (आई चाउरंत शब्दमां दर्धिपणुं प्रकटादिग्णना नियमथी छे) एवा भवारण्यने उछंये. ते आ प्रमाणे छे-विद्या(ज्ञान) वचे ज्ञ अने चारित्रवडे ज आहि संसाररूप कांतारनो पार पामवामां ज्ञान अने चारित्रतु १. दार्वकाळ अने अल्यकाल्या पचक्त्रखाण्तु स्वरूप गर्हानो जेम जाणवुं, २. प्रकटादिम्यः दीर्थलमिति पाणिनि: ।	<pre>** ध्यय ** उद्देशः ' ** प्रत्याख्या ** स्य मोध ** देतोश्व ** देतिध्य ** देविध्य ** द्रिविध्य ** द्र ** द्र ** द्र ** देविध्य ** द्र ** देविध्य ** द्र ** देविध्य ** ** **</pre>	ग्ने १ न- क्ष- स्रे स्रे
. • >	. 1	8 N 4890 / 11	

3778

	एकी साथे ज-युगपत्वडे कारणपणुं जाणवुं; कारण के ज्ञान अने चारित्रमां एकेकथी (मात्र ज्ञान के मात्र क्रियाथी) आ लोक
22	संबंधी कार्योमां पण अकारणपणुं छे. दांका-ज्ञान अने चरणमां कारणपणाए सामान्य कथन कीधे छते पण ज्ञान ज प्रधान
	छे, किया नहिं: अथवा ज्ञान ज एक कारण छे, क्रिया कारण नथी. जे कारणथी ज्ञाननुं फळ ज क्रिया छे. वळी वादी फरी कहे
	छे-जेम ज्ञाननुं फळ किया तेम बीजुं पण किया पछी प्राप्त थाय छे. वोध कालमां पण जे ज्ञेयूनुं निर्णयात्मक अने रा-
	गादिनां विजयरूप आ सर्वनुं सामान्यपणे ज्ञान कारण छे. जेम माटी घडानुं कारण थती छती घट कार्यना वचमां थनारा पिंड-
	शिवक-स्थास-कोश अने कुशूल वगेरे पर्यायोना पण कारणपणाने पामे छे, तेम अहिं ज्ञान, संसारना अभाव( मोक्ष )नुं अने
	मोक्ष थवा पहेलां तत्त्वनुं ज्ञान अने योग, समाधि विगेरेनुं पण कारण थाय छे. वळी स्मरण मात्रथी पवित्र थयेल विषनुं मक्षण,
	आकाशगमन वगेरे जे अनेकविध फळ साक्षात् प्राप्त थाय छे ते पण क्रियाश्चन्य ( रहित ) ज्ञाननुं फळ छे. जेम आ प्रत्यक्ष
	फळ देखाय छे तेम अदृष्ट–परोक्ष फळ पण अनुमान कराय छे. भाष्यकारे कह्युं छे––
	आह पहाणं नाणं, न चरित्तं नाणमेव वा सुद्धं। कारणमिह न उ किरिया, साऽवि हु नाणत्फलं जम्हा ॥२॥
	जह सा नाणस्स फलं, तह सेसंपि तह बोहकालेवि । नेयपरिच्छेयमयं, रागादिविणिग्गहो जो य ॥३॥
	जं च मणोचिंतियमंतपूयविसभवखणादि बहुभेयं। फलमिहतं पच्चक्खं, किरियारहियस्स नाणस्सा।४॥
	आ त्रण गाथानो भावार्थ उपर आवी गयेल छे. समाधान-जे पहेलां तमे कह्युं के ''ज्ञान ज प्रधान कारण छे, अथवा

	www.kobulitiong	/ tornar y	a onn nanaooagaroan
श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ७४ ॥ ********	ज्ञान ज एक कारण छे; किया कारण नथी, जेथी ज्ञाननुं फळ ज किया छे" तेम कहेवुं अयुक्त छे; कारण के जे ज्ञानथी ज किया थाय छे ते कियाथी इष्ट फळनी प्राप्ति थाय छे, आ कारणथी ज बच्चे (ज्ञान-किया) पण अमे इच्छीए छीए. जो एम नहि मानो तो ज्ञाननुं फळ किया ( जे तमे कहेल ) छे ते कियानी कल्पना निष्फळ थशे. अने किया रहित ज्ञान ज कार्यने सिद्ध करे, परंतु फक्त ज्ञान कार्यनुं साधक थतुं नथी, कारण के तमोए कियानो स्वीकार करेल छे. ज्ञान अने कियाना स्वीकारमां ज्ञान परंपराए उपकार करे छे अने किया अनंतर उपकार करे छे. किया अनंतर उपकार करे छे तेथी किया प्रधानतर कारण योग्य छे, पण अप्रधान अने अकारण नथी, अने वन्ने एकी साथे उपकार करे छे तेथी बन्ने प्रधान कारण कहेवा योग्य छे. तथा कियानुं अप्रधानपणुं अने अकारण नथी, अने वन्ने एकी साथे उपकार करे छे तेथी बन्ने प्रधान कारण कहेवा योग्य छे. तथा कियानुं अप्रधानपणुं अने अकारणपणुं कहेवुं योग्य नथी. वळी जे वादी कियानुं अकारणपणुं स्वीकारे छे ते वादी प्रत्ये आ विशेषपणे कहेवाय छे-किया ज साक्षात् कार्यनी करनारी होवाथी अंत्य कारण छे, ज्ञान तो परंपराए उपकारी होवाथी अनंत्य कारण छे. आथी आहिं कयो हेतु छे जे अंत्य कारणा छोडीने तमे अनंत्य कारण छे, ज्ञान तो परंपराए उपकारी होवाथी अनंत्य कारण छे. आथी आहिं कयो हेतु छे जे अंत्य कारण छोडीने तमे अनंत्य कारणने इच्छो छो ? वळी जो ज्ञान-कियानुं सह- चारीपणुं अंगीकार करो छो तो आ कारणथी पण ज्ञान ज कारण छे, किया नथी आ( कथन )मां हेतु नथी. वळी जे तमे कर्ख के-चोधकालेऽपीत्यादि–तेमां ज्ञेयनुं जाणवुं ते ज्ञान ज, अने जे रागादिनो उपराग ते संयम किया ज छे, अन ते ज्ञानरूप कारणथी थाय एम अमो पण स्वीकारीए छीए, परंतु सउना वियोगना कथनरूप ज्ञान-कियाना फळमां आ नीचनो विचार (विवाद) प्राप्त थाय छे के भत्रवियोगरूप फल ते द्यं ज्ञानतुं ? किया वन्नेतु छे? तमां ज्ञान ज्ञ नथी, कारण के ज्ञानतुं फल किया छे. वळी केवल कियानुं पण फळ नथी; कारण के गांडानी किया माफक ते किया मात्र छे. आ कारणथी छेवटना	$(\bigstar \times	२स्थानका- ध्ययने उद्देशः १ ज्ञानक्रिया- साध्यो मोक्षः ६२-६३ स्रुत्रे ॥ ७४ ॥

परिणामथी (त्रीजा पक्षथी) ज्ञान साहित कियानुं ज मोक्षकल छे एम कहेवुं योग्य छे. जे तमोए कहेलुं के-मंत्रादिना स्मरणा- त्मक ज्ञानमात्रथी साक्षात फल मले छे ते विषयमां अमे कहीए छीए-मंत्रोने विषे पण विशेष जाप वगेरे कियानो साधन- भाव छे अर्थात् मंत्रनी साधना करवी ते किया ज छे, पण मंत्रना ज्ञाननो साधनभाव नथी. अहिं कोइ एम कहे के-आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध छे कारण के कोइक स्थले मंत्रना चिंतनमात्रना ज्ञानथी इष्ट फल जोवाय छे एम जो तमे कहो, तो अहिं अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेलुं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपणुं छे. आहें जे ( बस्तु ) किया रहित होय ते आकाश्वपुष्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते खंगारनी जेम अकिय होय नहि ( किया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलले नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी दांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानबडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रतुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानबडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रतुं फल थाय चे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानबडे ते साध्य नथी. ( भाष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो मावार्थ उपर कहेल छे.	<b>.</b>	•
परिणामथी (त्रीजा पक्षथी) ज्ञान साहित कियानुं ज मोक्षफल छे एम कहेवुं योग्य छे. जे तमोए कहेछुं के-मंत्रादिना स्मरणा- त्मक ज्ञानमात्रथी साधात फल मले छे ते विपयमां अमे कहीए छीए-मंत्रोने विषे पण विशेष जाप बगेरे कियानो साधन- भाव छे अर्थात् मंत्रनी साधना करवी ते किया ज छे, पण मंत्रना ज्ञाननो साधनभाव नथी. आहें कोइ एम कहे के-आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध छे कारण के कोइक स्थले मंत्रना चिंतनमात्रना ज्ञानथी इष्ट फल जोवाय छे एम जो तमे कहो, तो आहें अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेछं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपगुं छे. आहं जे ( बस्तु ) किया रहित होय ते आकाशयुप्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते ( बस्तु ) किया रहित होय ते आकाशयुप्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते ज्ञंभारनी जेम अकिय होय नहि ( किया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलने नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी दांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवेड थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रतुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्रार्थान देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां सकियपणुं होवाथी क्रियाचडे थयेछं इष्टफल छे, परंतु केवल मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( माष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफल्ठं चिय जओ, न मंत्रणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.	× × ×	
त्मक ज्ञानमात्रथी साक्षात् फल मले छे ते विषयमां अमे कहीए छीए-मंत्रोने विषे पण विशेष जाप वगेरे कियानो साधन- भाव छे अर्थात् मंत्रनी साधना करवी ते किया ज छे, पण मंत्रना ज्ञानने। साधनभाव नथी. अहिं कोइ एम कहे के-आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध छे कारण के कोइक स्थले मंत्रना चिंतनमात्रना ज्ञानथी इष्ट फल जोवाय छे एम जो तमे कहो, तो अहिं अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेलुं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपणुं छे. आहिं जे ( वस्तु ) किया रहित होय ते आकाश्रपुष्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते ( वस्तु ) किया रहित होय ते आकाश्रपुष्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते खंभारनी जेम अक्रिय होय नहि ( किया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलने नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी द्रांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफल नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफल नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( माष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंत्रणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.	× ×	परिणामथी ( त्रीजा पक्षथी ) ज्ञान साहित क्रियानुं ज मोक्षफल छे एम कहेत्रुं योग्य छे. जे तमोए कहेलुं के∽मंत्रादिना स्मरणा-
माव छ अथात मंत्रना साधना करवा त किया ज छ, पण मंत्रना ज्ञानना साधनभाव नथा. आह काइ एम कह क-आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध छे कारण के कोइक स्थले मंत्रना चिंतनमात्रना ज्ञानथी इष्ट फल जोवाय छे एम जो तमे कहो, तो आहिं अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेछं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपणुं छे. आहें जे ( वस्तु ) किया रहित होय ते आकाशगुष्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते इंभारनी जेम अकिय होय नहि ( किया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलने नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी रांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रचुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रचुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रचुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( भाष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंत्रणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		त्मक ज्ञानमात्रथी साक्षात फल मले छे ते विषयमां अमे कहीए छीए-मंत्रोने विषे पण विशेष जाप वगेरे क्रियाना साधन-
अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेलुं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपणुं छे. आहें जे ( वस्तु ) किया रहित होय ते आकाशगुष्पनी जेम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते इंभारनी जेम अक्रिय होय नहि ( किया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलने नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी दांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्राधीन देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां सक्रियपणुं होवाथी क्रियावडे थयेलुं इष्टफल छे, परंतु केवल मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( भाष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलुं चिय जओ, न मंत्रणाणोवओगस्स ॥ ५॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		माव छ अर्थात् मंत्रना संथिनां करवा ते किया ज छ, पण मंत्रना ज्ञानना साधनभाव नथा. आह काइ एम कह क-आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध छे कारण के कोइक स्थले मंत्रना चिंतनमात्रना ज्ञानथी इष्ट फल जोवाय छे एम जो तमे कहो. तो अहिं
( वस्तु ) ।क्रया राहत हाय ते आकाशपुष्पनी जम कायने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते इंभारनी जेम अक्रिय होय नहि ( क्रिया सहित होय छे ), आ कथन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी, केमके ज्ञान साक्षात्फलने नजीक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी द्रांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्राधीन देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां सक्रियपणुं होवाथी क्रियावडे थयेलुं इष्टफल छे, परंतु केवल मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( भाष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्य: ] भण्णति, तस्लमयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		अमे कहीए छीए ते इष्टफल मंत्रना ज्ञानमात्रथी थयेलुं नथी, कारण के ते चिंतनमात्र ज्ञानने किया रहितपणुं छे. आहिं जे
ड सरस पर पास ए हान नाइ (नागन ताइस हान छ), जा पायन प्रखद्ध निरुद्ध गया, प्रमुप्त झान तादात्तरुम नजाक लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी द्रांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्राधीन देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां संक्रियपणुं होवाथी क्रियावडे थयेलुं इष्टफल छे, परंतु केवल मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( माष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्यः ] भण्णति, तस्लमयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलुं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५ ॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		( वस्तु ) किया रहित होय ते आकाशपुष्पनी जम कार्यने उत्पन्न करनार जोवाती नथी. जे कार्यने उत्पन्न करनार छे ते कंभारनी जेम अकिय होय नहि ( किया महित होय के ) आ कशन प्रत्यक्ष विरुद्ध नथी केमके तान माथानफनने नजीक
छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्राधीन देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां सक्रियपणुं होवाथी क्रियावडे थयेखुं इष्टफल छे, परंतु केवल मंत्रना ज्ञानवडे ते साध्य नथी. ( भाष्यकार ) कहे छे के- तो तं कत्तो ? [ आचार्यः ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		लावनारुं देखातुं नथी. फरी वादी दांका करे छे के-जो मंत्रना ज्ञानवडे थयेल इष्टफळ नथी तो कोनाथी मंत्रनुं फल थाय
सामयपणु हावाया कियावड ययछ इष्टकल छ, परंतु कवल मत्रना ज्ञानवड त साध्य नथा. (भाष्यकार) कह छ क— तो तं कत्तो ? [ आचार्यः ] भण्णति, तस्समयनिबद्धदेवओवहियं । किरियाफलं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		छे? आ संबंधमां अमे कहीए छीए-मंत्रजापना समयमां मंत्रना संकेत प्रमाणे मंत्राधीन देवोथी इष्ट फलनी प्राप्ति थाय छे. देवोमां
किरियाफलं चिय जओ, न मंतणाणोवओगस्स ॥ ५॥ आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.		सामयपण हावाया कियावड ययछ इष्टफल छ, परंतु कवल मंत्रना ज्ञानवड त साध्य नथा. (भाष्यकार) कह छ क
आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.	5	किरियाफलं चिय जओ. न मंतणाणोवओगस्त ॥ ५ ॥
	~~~~~~	आ गाथानो भावार्थ उपर कहेल छे.
	~~~~~	

वीस्था-

नाङ्गस्त्र

सानुवाद

11 64 11

ж

\*\*\*\*

रांका—सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र ए रत्नत्रय मोक्षनो मार्ग छे, एम ( शास्त्रमां ) संभळाय छे. अहिं तो ज्ञान ने क्रियावडे मोक्षमार्ग कस्रो छे तो विरोध केम न थाय ? वे स्थानकना अनुरोधथी आवी रीते कथन कयें छते पण विरोध नथी एम कहेवुं पण योग्य नथी; कारण के 'विज्जाए चेव चरणेण चेव ' आ निर्देश( कथन ) निश्चयगार्भत छे. समाधान-विद्या-ज्ञानना ग्रहणवडे दर्शन-सम्यक्त्व पण अविरुद्ध जाणवुं, कारण के ज्ञाननो भेद होवाथी सम्यग् दर्शनतुं पण ग्रहण समजवुं. जेवी रीते अववोधात्मक ज्ञान छते मतिने आकाररहितपणुं होवाथी अवग्रह अने इहा ए बन्ने दर्शन छे, तथा मतिने साकारपणुं होवाथी अपाय अने धारणा ए बन्नेने ज्ञान कहेल छे. एवी रीते व्यापारवाळं ज्ञान छते जे अपायनो र्श्तच्र पंच ग्रहण समजवुं. जेवी रीते अववोधात्मक ज्ञान छते मतिने आकाररहितपणुं होवाथी अवग्रह अने इहा ए बन्ने दर्शन छे, तथा मतिने साकारपणुं होवाथी अपाय अने धारणा ए बन्नेने ज्ञान कहेल छे. एवी रीते व्यापारवाळं ज्ञान छते जे अपायनो र्श्तच्र्रप अंश सम्यग्दर्शन छे ते अवगम-ज्ञाननो बोधरूप अंश ते अवाय ज छे माटे विरोध नथी. स्वत्रमां अवधारणात्मक (एव शब्द ) तो ज्ञानदर्शनचारित्र सिवाय भवना व्यवच्छेद( नाश) नो अन्य कोइ उपाय नथी एम बताववा माटे छे. (सू० ६३) ज्ञान अने चारित्रने आत्मा केम प्राप्त नथी करतो, आ हेतुथी ' दो ठाणाइ ' मित्यादि अगियार सत्रो कहे छेः— दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव १, दो ठाणाइं अपरियादित्ता आया णो केवल्ठं बोर्धि बुज्झेजा तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव २, दो ठाणाइं अपरियाद्त्ता आया नो केवल्ठं बोर्धि बुज्झेजा तं०-आरंभे चेव	** २ स्थानका- घ्ययने उदेशः १ अरंभपरि- ग्रहात्यागे ** प्राहात्यागे ** पादि- ज्ञानान्तं ६४ स्रत्रम् *** ***

*****	केवलेणं संजमेणं संजमेजा ५, नो केवलेणं संवरेणं संवरेजा ६, नो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेजा ७, एवं सुयनाणं ८, ओहिनाणं ९, मणपज्जवनाणं १०, केवलनाणं ११। सू० ६४ म्लार्थः-बे स्थानने इपरिज्ञाए जाण्या सिवाय अने प्रत्याख्यान परिज्ञाए छोड्या सिवाय आत्मा, केवलीए प्ररूपेल धर्मने श्रवणपणाए (सांभलवावडे) पामे नहिं ते आ प्रमाणे-आरंभ अने परिग्रह छोड्या सिवाय १, वे स्थानने जाण्या सिवाय अने छोड्या सिवाय आत्मा, युद्ध बोधि( सम्यक्त्व )ने अनुभवे नहिं ( पामे नहि ), ते आ-आरंभ ने अने परिग्रहने छोड्या सिवाय २, वे स्थानने जाण्या सिवाय अने छोड्या सिवाय आत्मा, द्रव्यभावथी ग्रुंड थइने गृहथी नीकळीने विशुद्ध प्रत्रज्या[दीक्षा]ने पामे नहिं ते आ-आरंभने अने परिग्रहने ३, एवी रीते आरंभ अने परिग्रहने जाण्या सिवाय अने छोड्या सिवाय शुद्ध ब्रह्मन्या[दीक्षा]ने पामे नहिं ते आ-आरंभने अने परिग्रहने ३, एवी रीते आरंभ अने परिग्रहने जाण्या सिवाय अने छोड्या सिवाय शुद्ध ब्रह्मचर्यवासमा वसे नहिं ४, ते शुद्ध संयमवडे आत्मानो संयम करे नहिं ( आत्माने कावूमां राखे नहिं ) ५, शुद्ध संवरवडे आश्रव डारोने संवरे नहिं ६, परिपूर्ण आभिनिबोधिक ( मति )ज्ञानने उत्पन्न करे नहिं ७, एम श्रुतज्ञानने उत्पन्न करे नहिं ८, एम अवि- धिज्ञानने ९, एम मनःपर्यवज्ञानने १० अने केवलज्ञानने उत्पन्न करे नहिं ११ ( स० ६४ ) टीकार्थः-बे स्थान-वे वसत्तुने झपरिज्ञावडे जाण्या सिवाय-जो आ बे आरंभ अने परिग्रह अनर्थने माटे छे तो मने आ आरंभ अने परिग्रहव्धे विरक्त न थयो. ' अपरियाइत्तात्ते प्रत्याख्यानपरिज्ञावडे पचन्रवाण न करीने ब्रह्यत्त चक्रीनी जेम, आरंभ अने परिग्रहथी विरक्त न थयो. 'अपरियाइत्तात्ते प्राने पाठ क्यांक छे त्यां स्वरूपथी ते वेने ग्रहण न	******
****	जेम, आरंभ अने परिग्रहथी विरक्त न थयो. ' अपरियाइत्तात्ति ' एवो पाठ क्यांक छे त्यां स्वरूपथी ते बेने ग्रहण न	****

श्रीस्था-	💥 * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
नाङ्गस्त्र	💥 नहिं, ते आ प्रमाण–आरंभाः–खेती वगेरेद्वारा पृथ्वी वगेरेना जीवोना उपमईनरूप आरंभोने अने 'परिग्रहाः '–धर्मना	* काध्ययने
सानुवाद	💥 साधन सिवाय धन,धान्य वगेरे परिग्रहोने, अहिं एकवचन प्रकम ( नियम ) छते पण व्यक्तिनी अपेक्षाए बहुवचन करेल छे.	😪 उद्देशः १
॥ ७६ ॥	सत्रमां ' चेव ' शब्द निश्वयात्मक अने समुचयार्थमां पोतानी बुद्धिवडे जाणवा ( १ ), केवलां-शुद्ध सम्यक्त्वने अनुभवे,	🌋 आरंभपरि-
	🌋 अथवा विभक्तिन। परिणामथी शुद्ध बोधिवडे बोध्य–जाणवा योग्य जीवादि वस्तु प्रत्ये श्रद्धा करे ( २ ), द्रव्यथी मस्तकना	× × ग्रहात्यागे
	🌋 लोचवडे अने भावथी कषायादिने दूर करवावडे मुंड थईने गृहथी नीकळीने ' केवलां ' ए शब्दनो अहिं संबंध होवाथी	× × न धर्मश्रव-
	🕉 केवल परिपूर्ण अथवा निर्मल प्रव्रज्याने पामे (३), एवी रीते पूर्वे जेम जोडेल छे तेम पछीना वाक्यमां ' दो ठाणाइ '	× • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
	इत्यादि वाक्य कहेवुं. ब्रह्मचर्येण-अब्रह्मना विरामवडे वास-रात्रिमां स्रवुं, अथवा ब्रह्मचर्यमां वास-वसवुं ते ब्रह्मचर्यवास,	🛞 णादि-
	र रेगार गार गरह, जल प्यण-जनलगा गराग्यड पात-सानगा छुरु, जयना जलप्रमा पात-पत्र रा जलप्रमास	🛞 ज्ञानान्तं
	र्दे तेने करे-सेवे (४), संयमेन-पृथिवीकायिक वगेरेनी रक्षारूप लक्षणवडे आत्मा प्रत्ये संयम करे (५), संवरेण-आश्रवना	🔆 ६४ सत्रम्
	🌋 निरोधरूप लक्षणवडे आश्रवना द्वारोने बंध करे (६), केवलं-परिपूर्ण-पोताना सर्व विषयोने ग्रहण करनार-'आभिणिबोहि-	
	🛞 नाणं ' त्ति अर्थने सन्मुख, अविपर्यय होवाथी नियत, अशंसय होवाथी बोध-स्वभावरूप जाणवुं ते अभिनिबोध, ते ज आभि-	X
	<ul> <li>लोचबडे अने भावथी कषायादिने दूर करवावडे मुंड थईने गृहथी नीकळीने 'केवलां' ए शब्दनो अहिं संबंध होवाथी केवल परिपूर्ण अथवा निर्मल प्रवज्याने पामे (३), एवी रीते पूर्वे जेम जोडेल छे तेम पछीना वाक्यमां 'दो ठाणाइ ' इत्यादि वाक्य कहेवुं. ब्रह्मचर्येण-अब्रह्मना विरामवडे वास-रात्रिमां स्रवुं, अथवा ब्रह्मचर्यमां वास-वसवुं ते ब्रह्मचर्यवास, तेने करे-सेवे (8), संयमेन-पृथिवीकाायिक वंगेरेनी रक्षारूप लक्षणवडे आत्रमा प्रत्ये संयम करे (५), संवरेण-आश्रवना निरोधरूप लक्षणवडे आत्रमा प्रत्ये संयम करे (५), संवरेण-आश्रवना निरोधरूप लक्षणवडे आश्रवना द्वारोने बंध करे (६), केवलं-परिपूर्ण-पोताना सर्व विषयोने ग्रहण करनार-'आर्भिणिचोहि- नाणं ' त्ति अर्थने सन्मुख, अविपर्यय होवाथी नियत, अश्वंसय होवाथी बोध-स्वभावरूप जाणवुं ते अभिनिवोध, ते ज आभि- १. अभि=अर्धने सन्मुख, ति=नियत अने बोध=संशय रहित, एने स्वार्धमां इक प्रत्यय लागवाथी आभिनिवोधिक शब्द थाय छे.</li> <li>अहिं प्रत्येक शब्दनो अर्थ करवायो विपर्यय, अनध्यवसाय (अनिश्चित अने संशय ) दोपनुं निवारण करेल छे.</li> </ul>	** न धर्मश्रव- णादि- ज्ञानान्तं ** ६४ सत्रम् ** ** ** ** **
	अहिं प्रत्येक शब्दनों अर्थ करवाधो विपर्यय, अनध्यवसाय (अनिश्चित अने संशय ) दोषनुं निवारण करेल छे.	🔮 ॥ ७६ ॥
		-

निवोधिक. जे आभिनिवोधिकमय ज्ञान, ते इंद्रिय अने अनिंद्रिय (मन) निमित्तवाछं छे, अने ओघ-सामान्यथी बधा ट्रच्य अने असर्वपर्याय (पर्यायोना अनंतमा भागना) विषयवाछं मतिज्ञान उत्पन्न करे, तथा 'एवं ' इत्यादि शब्दवर्ड उत्तर पदोमां 'नो केवलं उपाडेज्ञ ' त्ति जाणवुं (७), ' सूर्यनाणं ' त्ति जे संमळाय छे ते श्रुत-शब्दज छे, ते भावश्रुततुं कारण होवाधी ज्ञान ते श्रुतज्ञान, ते श्रुत ग्रंथने अनुसरनारुं छे. ओघ-सामान्यथी सर्व ट्रच्य अने असर्वपर्यायने विषय करनारुं अक्षर- श्रुत वगेरे चौद भेदवाछं श्रुतज्ञान छे (८), तथा 'ओहिनाणं ' त्ति जेनावडे, जेथी अने जेने विपे मर्यादा कराय छे ते अवधि अथवा अच्धीयतेन-नीचे नीचे विस्तारतुं अने मर्यादावडे जे जणाय छे ते अवधि, ते अवधिज्ञानारण कर्मना क्षयो- पश्तमरूप ज छे; कारण के अवधिज्ञानना उपयोगनो हेतु छे. अथवा अवधान-विषयत्तुं जाणवुं ते अवधि, अत्रधि एवुं ज्ञान ते अवधिष्ठान, ते इंट्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माधी रूपी ट्रव्यनुं साक्षात् करवुं (९), तथा 'मणपज्जवनाणं ' त्ति मनमां अथवा मनतुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अवधि, अवधि एवुं ज्ञान ते अवधिज्ञान, ते इंट्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माधी रूपी ट्रव्यनुं साक्षात् करवुं (९), तथा 'मणपज्जवनाणं ' त्ति मनसं अथवा मनतुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान ताणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अवचा पर्यायो-अवस्थाविशेपो, ते मनःपर्यव वगेरे, तेओतुं अथवा तेओने विपे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणवुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचट्रियोवडे चिंतन कराता मनोट्रच्यने प्रत्यक्ष करनारु छे (१०), 'केवल्ठनाणं' त्ति केवल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होताथी एकछं, अथवा आवरणरूप मलना अभावर्थी कर्लक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावर्थी प्रधमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा ते ते ने जाणे.		
अने असर्वपर्याय ( पर्यायोना अनंतमा भागना ) विषयवाळुं मतिज्ञान उत्पन्न करे, तथा ' एवं ' इत्यादि शब्दवडे उत्तर पदोमां ' नो केवलं उपाडेज़ ' त्ति जाणवुं (७), ' सूचनाणं ' त्ति जे संभळाय छे ते श्रुत-शब्द ज छे, ते भावश्रुतवुं कारण होवाथी ज्ञान ते श्रुतज्ञान, ते श्रुत ग्रंथने अनुसरनारुं छे. ओध-सामान्यथी सर्व द्रव्य अने असर्वपर्यायने विषय करनारुं अक्षर- श्रुत वगेरे चौद भेदवाळुं श्रुतज्ञान छे (८), तथा ' ओहिनाणं ' त्ति जेनावडे, जेथी अने जेने विषे मर्यादा कराय छे ते अवधि अथवा अवधीयते-नीचे नीचे विस्तारतुं अने मर्यादावडे जे जणाय छे ते अवधि, ते अवधिज्ञानावरण कर्मना क्षयो- पशमरूप ज छे; कारण के अवधिज्ञानना उपयोगनो हेतु छे. अथवा अवधान-विषयतुं जाणवुं ते अवधि, अवधि, अवधि एवुं ज्ञान ते अवधिज्ञान, ते इंद्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माथी रूपी द्रव्यतुं साक्षात् करवुं (९), तथा ' मणपज्जवनाणं ' त्ति मनमां अथवा मनतुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अववा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मनमां अथवा मनतुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अववा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मन्यर्थव वगेरे, तेओतुं अथवा तेओने विषे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणवुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल सांझि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रव्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवलुनाणां' त्ति केवल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होवाथी एकछुं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी करुंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी आसाधारण छे		निवोधिक. जे आभिनिवोधिकमय ज्ञान, ते इंद्रिय अने अनिंद्रिय ( मन ) निमित्तवाऌं छे, अने ओघ-सामान्यथी बधा द्रव्य
होवाथी ज्ञान ते श्रुतज्ञान, ते श्रुत ग्रंथने अनुसरनारुं छे. ओघ-सामान्यथी सर्व द्रच्य अने असर्वपर्यायने विषय करनारुं अक्षर- श्रुत वगेरे चौद भेदवाळुं श्रुतज्ञान छे (८), तथा 'ओहिनाणं ' क्ति जेनावडे, जेथी अने जेने विषे मर्यादा कराय छे ते अवधि अथवा अवधीयते-नीचे नीचे विस्तारतुं अने मर्यादावडे जे जणाय छे ते अवधि, ते अवधिज्ञानावरण कर्मना क्षयो- पग्नमरूप ज छे; कारण के अवधिज्ञानना उपयोगनो हेतु छे. अथवा अवधान-विषयनुं जाणनुं ते अवधि ज्ञावधि, अवधि एनुं ज्ञान ते अवधिज्ञान, ते इंद्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माथी रूपी द्रव्यनुं साक्षात करनुं (९), तथा ' मणपज्जवनाणं ' क्ति मनमां अथवा मननुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणनुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अथवा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मनःपर्यव वगेरे, तेओनुं अथवा तेओने विषे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणनुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रव्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवलुनाणं' क्ति केनल्ल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होत्रार्थी एकलुं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी कलंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेनुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		अने असर्वपर्याय ( पर्यायोना अनंतमा भागना ) विषयवाळुं मतिज्ञान उत्पन्न करे, तथा ' एवं ' इत्यादि शब्दवडे उत्तर
अवधि अथवा अचधीयते-नीचे नीचे विस्तारतुं अने मर्यादावडे जे जणाय छे ते अवधि, ते अवधिज्ञानावरण कर्मना क्षयो- पग्नमरूप ज छे; कारण के अवधिज्ञानना उपयोगनो हेतु छे. अथवा अवधान-विषयनुं जाणवुं ते अवधि, अवधि एवुं ज्ञान ते अवधिज्ञान, ते इंद्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माथी रूपी द्रव्यनुं साक्षात् करवुं (९), तथा 'मणपज्जवनाणं ' ति मनमां अथवा मननुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अथवा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मनःपर्यव वगरे, तेओनुं अथवा तेओने विषे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणवुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रव्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवल्ठनाणं' त्ति केवल-असहाय, मति वगरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होवाथी एकछं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी कलंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		होवाथी ज्ञान ते श्रुतज्ञान, ते श्रुत ग्रंथने अनुसरनारुं छे. ओघ-सामान्यथी सर्व द्रव्य अने असर्वपर्यायने विषय करनारुं अक्षर-
ते अवधिज्ञान, ते इंद्रिय अने मननी अपेक्षा रहित आत्माथी रूपी द्रव्यनुं साक्षात करवुं (९), तथा 'मणपज्जवनाणं ' त्ति मनमां अथवा मननुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अथवा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मनःपर्यव वगेरे, तेओनुं अथवा तेओने विषे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणवुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रव्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवल्ठनाणं' त्ति केवल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होवाथी एकछं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी कलंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		
मनमां अथवा मननुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मनना पर्यवो-पर्यायो-अथवा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते मनःपर्यव वगेरे, तेओनुं अथवा तेओने विषे जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. एवी रीते बीजा विषयमां पण जाणवुं. अढीद्वीपरूप समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रव्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवल्ठनाणं' क्ति केवल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होवाथी एकछं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी कलंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		पश्रमरूप ज छे; कारण के अवधिज्ञानना उपयोगनो हेतु छे. अथवा अवधान-विषयनुं जाणवुं ते अवधि, अवधि एवुं ज्ञान
समयक्षेत्रमां रहेल संज्ञि पंचेंद्रियोवडे चिंतन कराता मनोद्रच्यने प्रत्यक्ष करनारुं छे (१०), 'केवलनाणं' त्ति केवल-असहाय, मति वगेरे ज्ञाननी अपेक्षा रहित होवाथी एकछं, अथवा आवरणरूप मलना अभावथी कलंक रहित, अथवा समग्र ज्ञानावरणा- दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		मनमां अथवा मननुं पर्यव-परिच्छेद ते ज ज्ञान जाणवुं अथवा मननां पर्यवो-पर्यायो-अथवा पर्यायो-अवस्थाविशेषो, ते
दिना अभावथी प्रथमपणाए संपूर्ण उत्पत्ति होवाथी सकल-संपूर्ण छे, अथवा तेना जेवुं बीजुं कोई न होवाथी असाधारण छे		
र्यता परायत राष्ट्र राष्ट्र एराप लागाया समछ सर्व छ, जयना सना जन्न जन्न सर्व होनाया जसाया प्रसारण छ १. मनोवर्गणाने सर्वथा प्रकारे जाणे अने मनमां जे चिंतन करे तेने जाणे.		
	ŀ	र. मनोवर्गणाने सर्वथा प्रकारे जाणे अने मनमां जे चिंतन करे तेने जाणे.

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ७७ ॥

	$\begin{array}{l} \begin{array}{l} &                                   $	अथवा ब्लेयचुं अनंतपणुं होवाथी अनंत छे एवुं जे ज्ञान ते केवरुज्ञान छे. ( बोधिखत्रथी केवळज्ञानना खत्र पर्यंत दग्न खत्रमां आरंभ अने परिग्रहने जाण्या सिवाय अने छोड्या सिवाय बोधि बगेरे पामे नहिं ) (११). ( स॰ ६४ ) जीव, ज्ञानक्रियारूप धर्म बगेरेने केम प्राप्त करे ते कहे छेः— दो ठाणाइं परियादित्ता आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं०-आरंभे चेव परिग्गहे चेव, एवं जाव केवलनाणमुप्पाडेज्जा । सू० ६५, दोहिं ठाणोहिं आया केवलिपन्नतं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं०-सोच चेव अभिसमेच चेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा । सू० ६६ मूलार्थ:-बे स्थानना स्वरूपने सारी रीते समजीने ( उपलक्षणथी छोडीने ) आत्मा केवलिपन्नतं धर्म्म लभेज्ज सत्र करे, ते आ प्रमाणे-आरंभने अने परिग्रहने. एवी रीते यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे. ( स॰ ६५ ) वे स्थाने आत्मा, केवलीप्रज्ञप्त धर्मने अवणभाववडे पामे ते आ प्रमाणेः-सांभठीने अने जाणीने. एवी रीते यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे (स॰६६) टीकार्थः-दो ठाणाइं इत्यादि अग्यार खत्रो सुगम छे (स॰ ६५). वळी धर्मादिना लाभमां बीजा वे कारणोने कहे छे- दोहिमित्यादि-सुगम छे. फक्त श्रवणभाववडे-'सोच चेव'क्ति-प्राक्ठतपणाथी ज द्रस्वत्यादि थयेल छे, सांभठीने धर्मादिइं ज स्वीकारवुं थाय छे. 'अभिससमेच'क्ति सारी रीते जाणीने धर्मना उपादेयपणावे जाणे. कर्खु छे के-''मनुष्य सद्वर्मना श्रवणथी ज पाप रहित, तच्वज्ञ, महासच्च अने उत्क्रुष्ट वैराग्यने प्राप्त थ्रा थ्राय छे (१) ते मनुष्य धर्मनी उपादेयताने जाणीने एमां	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **	
	* * * *		×	
-		-		

	5
<b>汝!米米米米米米 米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米米</b> 米米米	
1222	
	भावथी इच्छावालो थयो थको पोतानी इक्तिने विचारीने ग्रहण करवामां दढताथी प्रवर्त्ते छे" (२) 'एवं बोहिं बुज्झेज़ेत्यादि,
	यावत् केवलनाणं उप्पाडेज़' त्ति−एवी रीते बोधिने पामे इत्यादि सत्रथी यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे त्यां सुधी जाणी
	लेवुं. (सू०६६) केवलज्ञान कालविशेषमां थाय छे माटे हवे कालविशेषने कहे छे
	दो समाओ पन्नत्ताओ, तं०-ओसप्पिणी समा चेव उसप्पिणी समा चेव । सू०६७, दुविहे
	उम्माए पं० तं०-जवखावेसे चेव मोहणिजस्स चेव कम्मस्स उद्एणं, तत्थ णं जे से जक्खावेसे से णं
	सुहवेयतराए चेव सुहविमोयतराए चेव, तत्थ णं जे से मोहणिजस्स कम्मस्स उदएणं से णं
	दुहवेयतराए चेव दुहविमोययराए चेव । सू० ६८, दो दंडा पं० तं०–अट्ठादंडे चेव अणट्ठादंडे चेव,
	नेरइयाणं दो दंडा पं० तं०-अट्टादंडे य अणट्टादंडे य, एवं चउवीसा दंडओ जाव वेमाणियाणं। सू० ६९
	मूलार्थः-बे समा-कालविशेष कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अवसर्पिणी-उतरतो काल अने उत्सर्पिणी-चढतो काल (स्०६७).
	बे प्रकारे उन्माद ( घेलछा ) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-यक्षावेश ( देवना) आवेशरूप ) अने मोहनीय कर्मना) उदयुवडे) थयेल
	उन्माद, तेमां जे यक्षावेश छे ते सुखवडे भोगवी शकाय अने सुखवडे तजी शकाय, अने जे उन्माद मोहनीय कर्मना उदय-
	वडे छे ते दुःखे भोगवी क्षकाय अने दुःखे दूर करी शकाय. (स०६८) बे दंड–प्राणातिपातादि कहेल छे, ते आ प्रमाणे–अर्थ-
2222	
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>	

www.kobatirth.org

Jain Aradnana Kendi	a www.kobatirth.org	Acharya Shri Kallass	agarsuri Gyanma
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ।। ७८ ।।	दंड अने अनर्थदंड. नैरायकोने वे दंड कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अर्थदंड अने अनर्थदंड. एवी रीते चोवीश दंडकमां यावत वैमानिकोने वे दंड कहेल छे. ( सु० ६९ ) टीकार्धः-समा-कालविशेष. वाकीनुं सुगम छे (सु० ६७). केवळज्ञान, मोहनीयकर्मथी उत्पन्न थयेल उन्मादना क्षयथी थाय छे. आ कारणथी सामान्यपणे उन्मादनुं स्वरूप कहे छे-' दुविहे उम्माणे ' इत्यादि, उन्माद-ग्रह ( प्रहायेल ) अर्थात् वुद्धिन्तुं विपरीतपणुं. यक्षावेशः-श्वरीरमां देवनुं प्रवेशपणुं, तेथी थयेल उन्माद ते यक्षावेश एक छे अने दर्शनमोह- नीय वगेरे कर्मना उदयथी जे थयेल ते बीजो उन्माद. ते बेमां जे यक्षावेशवडे थाय छे ते बहु सुखपूर्वक वेदी शकाय छे, अर्थात् मोहवडे उत्पन्न थयेल उन्मादनी अपेक्षाए घणो ज ओछो अनुभवी शकाय छे, कारण के यक्षावेशने अनैकांतिक अंन अर्थात् मोहवडे उत्पन्न थयेल उन्मादनी अपेक्षाए घणो ज ओछो अनुभवी शकाय छे, कारण के यक्षावेशने अनैकांतिक अंन अर्थात् मोहवडे उत्पन्न थयेल उन्मादनी अपेक्षाए घणो ज ओछो अनुभवी शकाय छे, कारण के यक्षावेशने अनैकांतिक अंन अर्थात् मोहवडे उत्पन्न थयेल उन्मादनी अपेक्षाए घणो ज ओछो अनुभवी शकाय छे, कारण के यक्षावेशने अनैकांतिक अंन अर्थात् मोहवडे त्राय छे. वळी के बहु सुखे दूर करी शकाय छे ते ज सुखविमोच्यतरक छे, कारण के यक्षावेश मंत्र । औषधि अने यंत्रादिवडे साध्य छे. अथवा अत्यंत सुखबडे दूर करवा योग्य, तथा जे यक्षावेश प्राणीने अत्यंत सुखवडे ज छोडे छे ते सुखविमोचतरक. वीजो मोहथी थयेल उन्माद तो यक्षावेश्वथी विपरीत छे, कारण के एकांतिक अने आत्यंतिक अम स्वभावपणाए अत्यंत अयोग्य प्रवृत्तिना हेतुपणाए अनंतभवनुं कारण छे. वळी बीजा अंतर-पेटा कारणना उत्पन्न थवाने लीघे मंत्रादिवडे आसाध्य छे, पण कर्मना क्षयेषशमादिवडे ज साध्यपणुं छे. आ कारणथी ज कहेलुं छेः-' दुहचेय-	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** * * * *	का- यन : १ ाउ- डाः ६९ गणि
	१. यक्षावेश धयेल व्यक्ति कोड् वखने शुद्धिमां पण हेाय छे तेथी डाढ्या माणन प्रमाणे प्रवृत्ति करे छे. * *	X⊗    9८ XX XX XX	It
13	教育	15 🗮 (1	

तराए चेव दुहविमोयतराए चेव 'त्ति-आ मेहावेश अतिशय दुःखपूर्वक वेदवा योग्य अने दुःखपूर्वक मूकवा योग्य छे. ( स० ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवेतें छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आ कारणथी दंडनुं निरूपण करे छेः-' दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' ऐगरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी ठेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदंड अने विशेष द्वेप मात्रथी हणवारूप अनर्थदंड होय, पृथिवीकायिक वगेरेने तो अनामोग-मान वगर पण आहारना ब्रहण करवामां जीववधना सद्भावथी अर्थदंड अने बीजी रीते ( आहार ब्रहण सिवाय ) अनर्थदंड होय अथवा वंने दंड पण भवांतरमां अर्थदंडादीनी परिणति( पीरे णाम)थी होय छे; ( स० ६९ ) पण सम्यग्दर्शनादि रत्नवयीथी विशिष्ट जीवोने ज दंड नथी. आ कारणथी रत्नवयने निरूपण करवा इच्छता सत्रकार सामान्यपणे प्रथम दर्शनचुं निरूपण करे छे दुविहे दंसणे पन्नत्ते तं०-त्सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव १, सम्मद्दंसणे दुविहे पं० तं०-णिसग्यासम्मदंसणे चेव आभिगमसम्मद्दंसणे चेव २, णिसग्यासम्मद्दंसणे दुविहे पं० तं०-पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ३, आभिगमससम्मदंसणे दुविहे पं० तं०-पडिवाई रंग
तराए चेव दुह्विमोयतराए चेव 'त्ति-आ मोहावेश अतिशय दुःखर्प्वक वेदवा योग्य अने दुःखपूर्वक मूकवा योग्य छे. ( सू० ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवेते छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आ कारणथी दंडनुं निरूपण करे छे:-'दो दंडे ' इत्यादि, दंड:-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छे:-' णरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी रेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष देव देष मात्रथी हणवारूप
तराए चेव दुहविमोयतराए चेव 'त्ति-आ मेहावेश अतिशय दुःखपूर्वक वेदवा योग्य अने दुःखपूर्वक मुकवा योग्य छे. ( स॰ ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवेते छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आ कारणथी दंडनु निरूपण करे छेः-'दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी रे लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
तराए चेव दुहविमोयतराए चेव 'त्ति-आ मेहावेश अतिशय दुःखपूर्वक वेदवा योग्य अने दुःखपूर्वक मूकवा योग्य छे. ( स॰ ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवर्ते छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आ कारणथी दंडनु निरूपण करे छेः-'दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी रेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष देष मात्रथी हणवारूप
तराएं चव दुहावमायतराएं चव (त्त-आ महावश अतिशय दुःखपूर्वक वेदवा याग्य अन दुःखपूर्वक मूकवा योग्य छे. ( स॰ ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवेते छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आ कारणथी दंडनु निरूपण करे छेः-'दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी हे लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
रे योग्य छे. ( स॰ ६८ ) उन्मादथी प्राणी प्राणातिपातादिरूप दंडमां प्रवर्ते छे अथवा दंडनुं पात्र बने छे. आं कारणथी दंडनुं निरूपण करे छेः-'दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
निरूपण करे छेः-'दो दंडे ' इत्यादि, दंडः-प्राणातिपात वगेरे, ते अर्थ माटे-इंद्रियादिना प्रयोजन माटे जे कराय छे ते अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः-' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदर्ड अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
नरूपण कर छः—'दा दडं ' इत्यादि, दडः—प्राणातिपति वगर, ते अर्थ माट–इांद्रयादिना प्रयाजन माट ज कराय छ त अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः–' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति–नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी लेवा. विशेष कहे छे–नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदंडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
अर्थदंड, प्रयोजन विना जे हिंसादि कराय ते अनर्थदंड. उपरोक्त दंड सर्व जीवोने विषे चोवीश दंडकवडे निरूपण करे छेः–' णेरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति–नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी लेवा. विशेष कहे छे–नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
छेः-' णरयाणमि ' त्यादि, ' एवमि 'ति-नारकनी माफक अर्थदंड अने अनर्थदंडना कथनवडे चोवीश दंडक जाणी लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थदडं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
ि छन्- जरयाणाम त्यााप, उवाम ति—नारकने माफक अयद्ध अन अनयद्धना कयनवड चावाश द्धक जाणा ि लेवा. विशेष कहे छे−नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अर्थद्दं अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
] लेवा. विशेष कहे छे-नारकने पोताना शरीरनी रक्षा माटे बीजाने मारवारूप अथेदर्ड अने विशेष द्वेष मात्रथी हणवारूप
🛛 अनर्थदंड होय, प्रथिवीकायिक वगेरेने तो अनामोग–भान वगर पण आहारना ग्रहण करवामां जीववधना सद्भावथी अर्थदंड
ા ગામવું શામાં દામમાં મુખ્યત્વે પા ગામાં મુખ્યત્વે માથે મુખ્યત્વે આ આવ્યું છે. આ આ ગામ મુખ્યત્વે આ ગામવા આવેલું
अने बीजी रीते ( आहार ग्रहण सिवाय ) अनर्थदंड होय अथवा बंने दंड पण भवांतरमां अर्थदंडादिनी परिणति( परि-
🛿 णाम )थी होय छे; ( सू० ६९ ) पण सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रयीथी विशिष्ट जीवोने ज दंड नथी. आ कारणथी रत्नत्रयने
िनिरूपण करवा इच्छता सत्रकार सामान्यपणे प्रथम दर्शनचुं निरूपण करे छे—
हा गरूपण करना इच्छता खत्रकार तानान्यपण त्रयम दरानगु गरूपण कर छ-
ु दुविहे दंसणे पन्नत्ते तं०-सम्मद्दंसणे चेव मिच्छादंसणे चेव १, सम्मद्दंसणे दुविहे
पं० तं०-णिसग्गसम्मदंसणे चेव आभिगमसम्मद्दंसणे चेव २, णिसग्गसम्मदंसणे दुविहे
in in the second and the second and a second and in the second second and it is a second second and the second sec
पं० तं०-पडिवाई चेव अपडिवाई चेव ३, अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पं० तं०-पडिवाई
{ <b>१</b> ¥

श्रीस्था-नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ७९ ॥

(****	चेव अपडिवाई चेव ४, मिच्छादंसणे दुविहे पं० तं०-आभिग्गहियामिच्छादंसणे चेव अणाभिगहियमिच्छादंसणे चेव ५, आभिग्गहियमिच्छादंसणे दुविहे पं० तं०- सपज्जवसिते चेव अपज्जवासिते चेव ६, एवमणाभिगहियमिच्छादंसणेऽवि ७। सू० ७० मूलार्थःवे प्रकारनुं दर्शन कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-सम्यग्दर्शन अने मिथ्यादर्शन (१), सम्यग्दर्शन वे प्रकारनुं कहेलुं छे, ते आ प्रमाणेनिसर्ग (सहज) सम्यग्दर्शन अने अभिगम (उपदेशथी थयेल) सम्यग्दर्शन वे प्रकारनुं कहेलुं छे, ते आ प्रमाणेनिसर्ग (सहज) सम्यग्दर्शन अने अभिगम (उपदेशथी थयेल) सम्यग्दर्शन वे प्रकारनुं कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे	(*************************************	२ स्थानका- ष्ययने उद्देशः १ सम्याग्मि- थ्यादर्शनं ७० स्वत्रम्
*****	धीकार्थः-'दुविहे दंसणे'इत्यादि सात सत्रो सुगम छे. विशेष ए के-दर्शन एटले तत्त्वोने विषे रुचि. सम्यग्-अविपरीत ( जिनदर्शनने अनुसरनारुं ) ते सम्यग्दर्शन तथा मिथ्या-विपरीत दर्शन ते मिथ्यादर्शन (१). ' सम्मदंसणे'इत्यादि- निसर्ग-स्वभाव अने अनुपदेश ए शब्दो एक अर्थवाळा छे. ( गुरुना उपदेश सिवाय ते निसर्ग). अभिगम-अधिगम	*****	ા હલ્ ા

^	www.kobdata.og	/ 10/10/1
<b>ĸ</b> ××××××××××××××××××××××××××××××××××××		×   ×
21		×
<u>*</u>		****
51		8
53		13 ×
	( गुरुना उपदेशादिरूप ). जे निसर्गथी थयेछं ते निसर्गसम्यग्दर्शन अने अधिगमथी थयेछं ते अधिगमसम्यग्दर्शन.	<b>X</b>
51		87
1	मरुदेवा माताने निसर्गसम्यग्दर्शन अने भरत महाराजाने अभिगमसम्यग्दर्शन जाणवुं (२). 'निसरगे'त्यादि-	1 ×
	पडवाना स्वभाववालुं ते प्रतिपातीसम्यग्दर्शन, ते औपशमिक अने क्षायोपशमिक तेमज अप्रतिपाति ते क्षायिक सम्यक्त्व	1
: {		1
2	जाणवुं. तेमां औपश्रमिकादि त्रणना ऋमवडे लक्षण कहे छे−अहिं उपश्रमश्रेणिमां प्रवेश करेलाने अनंतानुबंधी चतुष्कनो	
		12
22	अने त्रण दर्शनमोहनीयने। उपशम थवाथी औपशमिक सम्यक्त्व होय छे, अथवा जे अनादि मिथ्यादृष्टि, नथी करेल	12
Ś	ાં ગયે રસ્તારિયાન્સ આસ્ત મેનેને આસ્તિમ હોય છે. ગમને બે ગયાવે વિધાર, તેવા ધાર	12
	सम्यक्त्व, मिथ्यात्व अने मिश्रनामवाला शुद्ध, अशुद्ध अने अर्द्धविशुद्धरूप मिथ्यात्वपुद्गलना त्रण पुंज जेणे, वळी नथी	
		12
Ž	खपांवेल मिथ्यादर्शन जेणे एवो जे जीव, सम्यक्त्वने प्राप्त करे छे तेने औपरामिक सम्यक्त्व होय छे. ते केवी रीते ? अहिं	
Ś	आ जीवने जे मिथ्यादर्शन मोहनीय कर्म उदयमां आवेछं ते अनुभववडे ज नाग पाम्युं, अन्य मिथ्यात्व मोहनीय कर्म मंद्	
Ż	ेजी जापमें जे मिल्यादरामें माहमाप पंग उद्यमा जानेष्ठ हो जेउन्हेने जे गांस पाण्ड, जन्म भिल्याल महिनाय केमें मेद	
ġ	परिणामपणाए उदयमां नहिं आवेलुं, आ कारणथी अंतर्म्रहूर्त्त कालमात्र उपशांत रहे छे. विष्कंभितोदय ( उदयनो अटकाव )	
Į		
ŝ	तेटला काल सुधी जीवने औपशमिक सम्यक्त्वनो लाभ होय छे. भाष्यकारे कईं छे के—	
Ş		
Ş	उवसामगसेढिगयस्स, होइ उवसामिअं तु सम्मत्तं। जो वा अकयतिपुंजो, अखवियमिच्छो ऌहइ सम्मं॥	
Ş		
Ş	खीणाम्मि उदिन्नम्मी, अणुदिजंते य सेसमिच्छत्ते। अंतोमुहुत्तकालं, उवसमसम्मं लहइ जीवो ॥ ७॥	
Ş		
Ş	आ वे गाथानो भावार्थ कहेल छे. अंतर्मुहूर्त्त मात्र काल होवाथी ज उपग्रम समकितनुं प्रतिपातीपणुं छे. अनंतानुवंधी	
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	રા કે ગામાંગા પાતામ મહેલ એ સંસદ્ધ પાત મહેલ શામાંગા બે ઉપરાંગ લેવામહોડ ત્રાલયોલોય છે. બેમલોનુંધવા	É
Ş		~~~~~~
3		B
3		3

श्रीस्था-

नाङ्गस्त्रत्र

सानुत्राद्

11 60 11

enura	www.kobalitit.org	Achai ya Si	In Naliassayarsun v
*****	कपायनो उदय थये छेत उपशम सम्पक्त्वथी पडता जीवने जे सास्वादन सम्यक्त्व कहेवाय छे ते औपशामिक ज छे. ते सास्वादन पण प्रतिपाती ज छे, कारण के सास्वादनतुं जघन्यथी समय मात्र अने उत्कुष्टथी तो छ आवलिका प्रमाण छे. तथा अहिं जे मिथ्यादर्श्वनना जे दलिक उदयमां आवेल ते क्षय पामेल अने जे उदयमां न आवेल ते उपशांत थयेल. उपशांत- स्तंभीभूतै उदयविशिष्ट अने मिथ्या स्वभाव दूर कैरेखुं होय ते अहिं अनुभवमां आवेल एवा क्षयोपश्रम स्वभावने क्षायोप- र्शामक सम्यक्त्व कहेवाय छे. रांका-उपश्रम समकितमां पण क्षय अने उपश्रम बन्ने स्वभाव होय छे तेवी ज रीते क्षायोपश्च मिकमां पण बन्ने छे, तो आ वे समकितमां भेद शे ? समाधान-आ ज विशेष छे. अहिं क्षायोपश्रमिकमां जे दलिक ( शुद्धपुंजरूप ) वेदाय छे ते दलिक औपश्रमिकमां वेदाता नथी. वळी अहिं क्षायोपशमिकमां पूर्व जे दलिक उपशांत करेल छे ते समय समय प्रत्ये उदयमां आवे छे, वेदाय छे अने क्षय थाय छे. औपशमिकमां तो उदयनो अटकाव मात्र छे. भाष्य- कार कहे छे:- मिच्छतं जमुइन्नं, तं खीणं अणुइयं च उवसंतं । मीसीभावपरिणयं, वेइज्जंतं खओवसमं ॥ ८ ॥	(XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	२ स्थान- काध्ययने उद्देशः १ सम्यग्मि- थ्यादर्शनं ७० स्रन्नम्
* * ** ****	१. उपशमसमांकतथो पडता जोवने जे सम्यक्त्त्वनो आस्वाद होय छे ते उपशमना ज वमन सददश होवाथो उपशमनो ज भेद छे. २. मिथ्यात्व अने मिश्रपुंजनी अपेक्षाए उदयनो अटकाव. ३. सम्यक्त्वपुंजनो अपेक्षाए मिथ्यास्वभाव दूर कराय छे. ४. क्षायोपगमिकमां सम्य- क्त्त्वपुंजना दल्तिक, विपाकोदयथी अने मिथ्यात्वदलिक प्रदेशोदयथी वेदाय छे. औपशमिकमां कर्झु वेदन थतुं नथी.	- 12 <b></b>	८०

	आ गाथानो भावार्थ कडेल छे. क्षायोपदामिक सम्यक्त्व पण जघन्यथी अंतर्ग्वहूर्त्त स्थितिवाळं होवाथी अने उत्क्रप्टथा
ন্তায	ठ सागरोपमधी कंईक अधिक स्थितिवाळं होवाथी प्रतिपाती छे. जो के क्षपक( क्षायिक सम्यक्त्वना प्रारंभक )ने सम्य-
ग्दर्श	नना दलिक छेछा पुद्गलना अनुभवरूप ( एक समयनी स्थितिवाळं ) वेदक कहेवाय छे, ते ( वेदक ) पण क्षायोपश-
मिक	नो भेद होवाथी प्रतिपाती ज छे. तथा मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व अने सम्यक्त्वमोहनीयना क्षयथी क्षायिक सम्यक्त्व
<b>क</b> हेव	ाय छे. भाष्यकार कहे छेः-
रु	त्रीणे दंसणमोहे, तिविहंमिवि भवनियाणभूयंभि । निप्पच्चवायमउलं, सम्मत्तं खाइयं होइ ॥९॥
	अनंतानुबंधी चतुष्कना क्षय कर्भी बाद संसारना मूल कारणभूत त्रण प्रकारे पण दर्शनमोह क्षय थये छते अत्यंत
বিয়	द्ध, अतुल्य, क्षायिक सम्यक्तःव होय छे. क्षायिक सम्यक्त्व क्षायिक भावरूप होवाथी अप्रतिपाती ज छे. आ कारणथी
ज सि	सेद्रपणामां पण साथे प्रवर्ते छे. ( ३'−४). 'मिच्छादंसणे' इत्यादि-अभिग्रह कुमतनो स्वीकार छे जेमां ते अभि-
<b>ग्रहि</b> ब	क मिथ्यादर्शन जाणवुं. (५). 'आभिग्गहिये' त्यादि-अभिग्रहिक ुमिथ्यादर्शन, सम्यक्त्वनी प्राप्ति थये छते जेनो
अंत	थाय छे ते सपर्यवसित, अभव्यने सम्यक्त्वनी प्राप्ति न होवाथी अपर्यवसित-अंतरहित छे. ते मिथ्यात्व मात्र पण अतीत-
	१. अनंतानुवंधो चतुष्क, मिथ्यात्व अने मिश्रमोहनीयनो क्षय करी, छेल्ले सम्यक्त्वमोहनीयने खपावता एक समय स्थितिक
चरम	पुद्गलना वेदनरूप अंश ते ज वेदकसम्यक्त्व कहेवाय छे. २. अधिगम सम्यक्त्वना पण प्रतिपाती आदि वे भेद जाणवा.

	1 ( 206 5 1	8928
श्रीस्था-	🛞 ( भूत )कालीन नयनी अनुवृत्तिवडे अभिग्रहिक एवे। व्यपदेर्शं कराय छे. (६). अनभिग्रहिक मिथ्यादर्शन, भव्य जीवने	🍣 २ स्थानका-
	💥 सपर्यवासित अने अभव्यने अपर्यवसित होय छे. आ कारणथी ज कहे छेः-' एवं अणभी'त्यादि (७), दर्शननुं स्वरूप	🗴 ध्ययने
नाङ्गसूत्र		
सानुवाद	× कुछ, हव ज्ञाननु स्वरूप कह छ− तत्र दुावह नाण ए आदि क्षत्रया आरमान आवस्सयवातारत्त दुावह' इत्यादि * निन्त नग गर्भव २३ गया करे ते—	र उद्दराः र
11 83 11	💥 છે છે સત્ર પયત ૧૧ સત્રા મેર છે	💥 प्रत्यक्ष-
• • •	💥 ुविह नाण पण तण्म्यसमय पत्र परानस्य पत्र, पंसनस्य नाण दुविह पण तण्मकवलः	🛞 परोक्षज्ञानम्
	* नाणे चेव णोकेवलनाणे चेव (२), केवलणाणे दुविहे पं० तं०-भवत्थकेवलनाणे चेव सिद्धकेवल-	🌋 ७१ सत्रम्
	🕺 णाणे चेव (३), भवत्थकेवलनाणे दुविहे पं० तं०-सजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव, अजोगिभवत्थ-	No. Contraction
	ु णाण चव (३), मवत्यकवलनाण दुावह ५० त०न्तजाागमवत्यकवलणाण चव, अजाागमवत्य-	$\mathbf{x}$
	🛞 केवलणाणे चेव (४), सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पं॰ तं०-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे	×
	णाणे चव (३), भवत्थकवलनाण दुविह प० त०-सजागिभवत्थकवलणाण चव, अजागिभवत्थ- केवलणाणे चेव (४), सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पं० तं०-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणे चेव (५), अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवल-	
		* *
	🕺 णाणे चेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणे चेव (६), एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेऽवि	*
	× . अभिग्रहिक मिथ्यात्व, संज्ञी जीवोने ज होय छे, ते कारणथो अभिग्रहिक मिथ्यात्व अपर्यवसित-अंतरहित संभवी शके नहि माटे	** २ स्थानका- ध्ययन उद्देशः १ प्रत्यक्ष- परोक्षज्ञानम् ७१ सत्रम्
	भूतकालमां थयेल अभिग्रहिक मिथ्यात्वनी प्र3त्तिनी अनुष्टतिधी अपर्यवसित कहेल छे, अर्थात् अतीत कालनो वर्तमानकालमां उप वार करायेल छे.	
	अत्र प्रतकालमां थयेल अभिग्रहिक मिथ्यात्वनी प्रृतिनी अनुवृत्तिधी अपर्यवसित कहेल छे, अर्धात् अतोत कालनो वर्तमानकालमां उप वार करायेल छे. अत्र अत्र अपने करायेल करायेल करायेल छे. अत्र अत्र करायेल करायेल करायेल करायेल करायेल करायेल करेल के अर्धात् अतोत कालनो वर्तमानकालमां उप वार करायेल छे.	<b>♀</b>      ८१
		X
	IS we St. End Personal Use Only	

Jain Alaunana Reno	dia www.kobaditit.org	Acharya Shiri Kallassayarsun Gy
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद	चेव (२२), आवस्स्यवतिरित्ते दुविहे पं० तं०-कालिए चेव उकालिए चेव २३ । सू० ७१ मुल्लार्थः-चे प्रकारे ज्ञान कक्षुं छे, ते आ प्रमाणे-प्रत्यक्ष ज्ञान अने परोक्ष ज्ञान (१), प्रत्यक्ष ज्ञान वे प्रकारे कर्षुं छे, ते आ प्रमाणे-केवल्ज्ञान अने नोकेवल्ज्ञान (२), केवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्षुं छे, ते आ प्रमाणे भवस्थकेवल्ज्ञान अने सिद्धकेवल्ज्ञान (३), भवस्थकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्षुं छे, ते आ प्रमाणे-सयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान अने अयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान (४), सयोगि- भवस्थकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्षुं छे, ते आ-प्रथमसमयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान अने अप्रथमसमयसयोगीभवस्थकेवल्ज्ञान (४), सयोगि- भवस्थकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्षुं छे, ते आ-प्रथमसमयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान अने अप्रथमसमयसयोगीभवस्थकेवल्ज्ञान (५), अथवा चरमसमयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान अने अचरमसमयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान (६), एवी रीते अयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान (५), अथवा चरमसमयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान अने अचरमससयसयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान (६), एवी रीते अयोगिभवस्थकेवल्ज्ञान न पर्ण वे भेदो जाणवा (७-८), सिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्खुं छे, ते आ प्रमाणे-अनंतर (आंतरा रहित) सिद्धकेवल्ज्ञान अने परंपरसिद्धकेवल्ज्ञान (९), अनंतरसिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्खुं छे, ते आ-एकप्रंपरसिद्धकेवल्ज्ञान अने अनेकअनंतरसिद्ध- केवल्ज्ञान (१०), परंपरसिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्खुं छे, ते आएकप्रवंतरसिद्धकेवल्ज्ञान अने अनेकअनंतरसिद्ध- केवल्ज्ञान (१०), परंपरसिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे छे, ते आ-एकपरंपरसिद्धकेवल्ज्ञान अने अनेकरारंपरसिद्धकेवल्ज्ञान (११), नोकेवल्ज्ञान (१०), परंपरसिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे छे, ते आ-प्रकपरंपरसिद्धकेवल्ज्ञान वे प्रकारे कर्खुं छे, ते आ भवप्रत्यिक अने क्षायोपदामिक (१३), भवप्रत्ययिकअत्रचिज्ञाचिज्ञान वेने होय छे, ते आ प्रमाणे-देवोने अने नैरियकोने (१४), क्षायोपप्रसिक अवधिज्ञान बेने होय छे, ते आ-मुक्योदि्य तिर्थच योतिकोने (१५), मनःपर्यवज्ञान वे प्रकारे कर्छुं छे, ते आ-कज्ज्ज्यत्ति अंच वियुल्पति (१६), परोक्ष ज्ञान वे प्रकारे कर्खु छे, ते आ प्रमाणे-आभिनियोधिक (मिति)ज्ञान केन भ्रत्तज्ञा (१७), आभिनियोधिक ज्ञान वे प्रकारे कर्खुं छे, ते आ-अुतनिश्रित अने अश्रुतनिश्रित (१८), श्रुतनिश्रितमतिज्ञान वे प्रकारे	ж उद्शः १ ≫ प्रत्यक्ष- ≫ परोक्षज्ञानम्
	अने पण वे भेदो जाणवा (७८), सिद्धकेवलज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे-अनंतर (आंतरा रहित) सिद्धकेवलज्ञान अने	२०१ सूत्रम् ४४ ४४
	अत्य परंपरसिद्धकेवलज्ञान (९), अनंतरसिद्धकेवलज्ञान व प्रकारे कह्युं छे, ते आ-एकअनंतरसिद्धकेवलज्ञान अने अनेकअनंतरसिद्ध-	X
	😤 केवलज्ञान (१०), परंपरसिद्धकेवलज्ञान वे प्रकारे छे, ते आ–एकपरंपरसिद्धकेवलज्ञान अने अनेकपरंपरसिद्धकेवलज्ञान (११),	
	🌋 नोकेवलज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे-अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान (१२), अवधिज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे, ते आ-	
	💥 भवप्रत्ययिक अने क्षायोपशमिक (१३), भवप्रत्ययिकअवधिज्ञान बेने होय छे, ते आ प्रमाण-देवोने अने नैरयिकोने (१४),	
	अायोपश्रमिक अवधिज्ञान बेने होय छे, ते आ-मनुष्योने अने पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिकोने (१५), मनःपर्यवज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे,	
	रे ते आ-ऋजुमति अने विपुलमति (१६), परोक्ष ज्ञान वे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे-आभिनिवोधिक (मति)ज्ञान अने श्रुतज्ञान (१७) आभिनिवोधिक नान के प्रदर्भ तर्ज के के प्रात्मिक को जानकी कार्य करें के साम के जानकी कार्य के जानके जानके जान	
	(१७), आभिनिबोधिक ज्ञान बे प्रकारे कहुं छे, ते आ-अतनिश्चित अने अश्चतनिश्चित (१८), श्चतनिश्चितमतिज्ञान बे प्रकारे	
		**************************************
1		∎> <b>262</b> ( ]

ē	कह्युं छे, ते आ-अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रह (१९), अश्रुतनिश्रितमतिज्ञानना पण एवी रीते बे भेद जाणवा (२०), श्रुतज्ञान
	में प्रकारे कहुं छे, ते आ-अंगप्रविष्ट अने अंगवाह्य (२१), अंगवाह्यश्रुत वे प्रकारे कहुं छे, ते आ-आवश्यक अने आवश्यक-
ę	व्यतिरिक्त (२२), आवश्यकव्यतिरिक्त श्रुत वे प्रकारे कह्युं छे, ते आ–कालिक अने उत्कालिक श्रुत छे (२३) (स॰ ७१)
	टीकार्थः-'दो नाणे' इत्यादि-सत्रो सुगम छे. विशेष बोध ते ज्ञान. अश्वाति (त्रिभ्रुवननी ऋदि प्रत्ये) भोगवे छे
	अथवा ज्ञानवडे पदार्थो प्रत्ये व्याप्ति करे छे, ते कारणथी अक्ष-आत्मा, ते प्रत्ये जे इंद्रिय अने मननी अपेक्षा विना वर्ते छे
	ते प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात् अंतर ( व्यवधान ) रहितपणाए पदार्थने साक्षात् करवामां चतुर छे. भाष्यकार कहे छेः-
	अक्खो जीवो अत्थ-च्वावणभायणगुणणिणओ जेण। तं पइ वद्यइ) नाणं, जं पच्चक्खं तामिह तिविहं ॥१०॥
	• •
	प्रत्यक्षज्ञान अवधि वगेरे त्रण प्रकारे छे, शेष उपरोक्त छे. परेभ्यः-बीजाथी जीवनी अपेक्षाए पुद्गलमय होवाथी द्रव्ये-
i	द्रिय अने अक्षस्य जीवने जे ज्ञान थाय ते द्वाराए निरुक्तिवग्नथी परोक्षज्ञान. भाष्यकार कहे छेः−
	अक्खरस पोग्गलकया, जं द्विंवदियमणा परा तेण । तेहिंतो जं नाणं, परोक्खामेह तमणुमाणं व ॥११॥
	દ્ર <b>વ્યેંદ્રિય अને મન પુ</b> द्गलमय છે તેથી તે આત્માથી મિન્ન છે, મોટે इंદ્રિયો अને મનથી થતું <b>ઝે મતિ अને</b> ઝુત
_	
5	ज्ञान ते अहिं अनुमान प्रमाणनी माफक परोक्ष ज्ञान कहेछं छे. अथवा परैः-इंद्रियो अने मननी साथे उक्षा-जून्यजनक-
	भावरूप छे माटे परोक्ष संबंध छे. अर्थात् जीवने परोक्ष ज्ञान, इंद्रियो अने मनना व्यवधान(अंतर)वडे पदार्थने जणा-
	with a manual with a start with the box a start start with a start and

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद

11 63 11

भनारुं छे, परंतु साक्षात्कार करावनार नथी (१), 'पच्चक्खे' त्यादि, केवलं-एक ज्ञान ते केवलज्ञान, तेथी जुदुं ते नोकेवलज्ञान ते अवधि, मनःपर्यायरूप (२), 'केवले ' त्यादि ' भवत्यके॰ चेव 'ति संसारमां रहेल केवं- लीतुं जे ज्ञान ते भवस्थकेवलज्ञान. एवी रीते सिंद्धनुं जे केवलज्ञान ते सिद्धकेवल्ज्ञान (३), 'भवत्थे ' त्यादि, जे कायव्यापारादि योगे सहित छेते सयोगी. अहिं समासांत प्रकरणथी इन प्रत्यय थयेल हे. सयोगीरूप भवस्थतुं जे केवलज्ञान ते सयोगीभवस्थकेवलज्ञान. नथी योगो जेने ते अयोगी अथवा न योगीति आयोगी-योगवाळो नहि ते अयोगी. ग्रैलेशी- करणमां रहेल, वाकी तेवी ज रीते छे. (४), 'सयोगी त्यादि-सयोगीपणामां प्रथम समय छे जेने ते प्रथमसमयसयोगी, एवी ज रीते अप्रथम-चीजा बेगेर समय छे जेने ते अप्रथमसमयसयोगी, शेष पूरीनी माफक जाणवुं (५), 'अहवे'त्यादि- सयोगी अवस्थानो छेह्ये समय छे जेने ते अप्रथमसमयसयोगी, शेष पूरीनी नाफक जाणवुं (५), 'अहवे'त्यादि- सयोगी अवस्थानो छेह्ये समय छे जेने ते अप्रथमसमयसयोगी, शेष पूरीनी नाफक जाणवुं (५), 'अहवे'त्यादि- सयोगी अवस्थानो छह्ये समय छे जेने ते चरमसमयसयोगी, शेष पूर्वनी जेम जाणवुं (६), 'एव' भिति सयोगी छत्रनो जम प्रथम, अप्रथम, चरम अने अचरम विशेषण सहित सयोगी खत्र पण कहेत्रं (७-८), 'सिद्धे'त्यादि-वर्तमान समयमां ज अंतर रहित थयेल सिद्ध, ते एक अथवा अनेक होय छे तथा परंपरसिद्ध-वे वगेरे समयो जे सिद्धने थया छे ते परंपरसिद्ध, ते एक अयवा अनेक होय छे. तेओतुं जे केवलज्ञान, ते ते प्रमाणे व्यपरेश कराय छे (९), (१०-२१-१२) अं ओहिनाणे' र. केवल्जानमां वास्तविक भेद नथी परंतु स्वामानी अपक्षाए भेद छे जेम पाणीमां मेद नथो तथापि पात्र भेदे पाणीनो उत्वार छाय छ. * अर्णतरसिद्धकेवल्नाणेत्यादि १०, ११ अने १२मा सूत्रनो व्याख्या करेल नथी, परंतु मूलसूत्रना अनुवादमां तेनो अर्थ ल्येल छे. * अर्णतरसिद्धकेवल्नाणेत्यारि १०, ११ अने १२मा सूत्रनो व्याख्या करेल नथी, परंतु मूलसूत्रना अनुवादमां तेनो अर्थ ल्येल छ.	narya Shiri Kaliassayarsu
	** काध्ययने ** उद्देशः १ ** प्रत्यक्षपरो- ** क्षज्ञानम् ** ७१ सूत्रम् ** **
	₩    <₹    ₩ ₩ ₩

6 - J	······································
	प्रधानपणाने रुईने, भव ए ज छे निमित्त जेने तेने भवप्रत्यय एवो व्यपदेश कराय छे. ए ज कथननो भाष्यकारे आश्चेप[ दोष]-
	पूर्वक परिहार (निराकरण) करेल छे
	ओही खओवसमिए, भावे भणितो भवो तहोदइए। तो किह भवपच्चइओ, वोत्तुं जुत्तोऽवही दोण्हं ? ॥१२॥
	अवधिज्ञान, क्षयोपर्श्नमभावमां कहेल छे अने भव, उदयिक भावमां कहेल छे, तो देव अने नारक ए बन्नेचुं अवधिज्ञान,
	भवप्रत्ययिक कहेवुं कई रीते योग्य कहेवाय ? आ आक्षेप(दोष)नो अहिं परिहार करे छे
	सोऽवि हु खओवसमिओ, किन्तु स एव उ खओवसमलाभो ।
	तंमि सइ होइऽवस्सं, भण्णइ भवपच्चओ तो सो ॥ १३ ॥
	ते [ देव-नारकनुं ] अवाधिज्ञान पण क्षयोपरामधी ज थाय छे, परंतु तेवा क्षयोपरामनो लाभ, ते देव-नारकनो भव
	होते छते अवश्य ज थाय छे ते कारणथी ते अवधि भवप्रत्ययिक कहेवाय छे. यतः-कर्मना क्षयोपश्चम वगेरे शुं भवादि-
	निमित्तवाळा छे १ ए प्रश्ननो उत्तर कहे छे—
2222	उदयक्खयखओवसमो~वसमावि अ जं कम्मुणो भणिया।द्व्वं खेत्तं कालं, भवं च भावं च संपप्प॥१४॥
5	कर्मनो जे उदय, क्षय, क्षयोपश्चम अने उपशम कहेलो छे ते द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव अने भाव ए पांचने प्राप्त करीने
5	थाय छे. वळी अवधिज्ञानावरणनो क्षयोपशम थये छते जे थयेछं ते क्षयोपशमिक अवधिज्ञान छे ( १३-१४-१५ ), 'मण-
1222	
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	

/ii Jaili Alaulialia Keliula	www.kobalini.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun G
र्श्वास्था- नाज्ञस्वत्र सानुगद ॥ ८४ ॥	है निबंधन-कारण अर्थात् मनोद्रव्यनुं ज्ञान, तथा विपुला-विशेषने ग्रहण करनारी जे मति ते विपुलमति-'' आनावडे जे	* ध्ययन * उद्देशः १ * प्रत्यक्षपरो- * क्षज्ञानम्
15 22	For Private and Personal Use Only	13.44.11

	××
पुव्वं सुयपारिकाम्मियमतिस्स जं संपयं सुयाईयं ।	1 X
[तं] सुयनिस्सियमियरं, पुण अणिस्सियं मइचउक्कं( तं ) ॥ १७ ॥	××
आ गाथानो भावार्थ कहेलो छे. ' सुए ' त्यादि, ' अत्थोग्गहे ' त्ति-अर्घते-जे जणाय अथवा अर्थ्यते-अन्वेषण	×××
कराय ते अर्थ. ते सामान्यरूप, सर्व विशेषोनी अपेक्षा विना कथन करवा योग्य रूपादि पदार्थनुं अवग्रहण-प्रथम ज्ञान ते अर्था-	×
वग्रह. जे विकल्प रहित ज्ञान छे ते दर्शन कहेवाय छे. जे एक समयवाळे। अर्थावग्रह छे ते नैश्वयिक छे अने व्यवहारी अर्था	X
वग्रह 'आ शब्द छे' इत्यादि कथन करनार छे ते अंतर्म्रहूर्त्त कालप्रमाणवाळो छे. आ अर्थावग्रह, इंद्रियो अने मन संबंधथी छ प्रकारे	X
छे. दीवावडे घडानी जेम जेवडे पदार्थ जणाय छे ते व्यंजन, उपकरणेंद्रिय अथवा शब्दादिपणाए परिणत भाषावर्गणादि	X
द्रव्यनां समूहरूप छे तेथी व्यंजन-उपकरण इंद्रियवडे शब्दादिपणाए परिणतं द्रव्यरूप जे व्यंजनोनो अवग्रह ते व्यंजनावग्रह.	X
अथवा व्यंजन एटले (श्रोत्रादि) इंद्रिय अने श्रब्दादि द्रव्यनो संबंध. भाष्यकार कहे छे-	X
वंजिजज्ञ जेणऽत्थो, घडोव्व दीवेण वंजणं तो तं। उवगरणिंदियसद्दा-दिपरिणयद्दव्वसंबंधो ॥ १८॥	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
आ गाथानो भावार्थ कहेलो छे. आ व्यंजनावग्रह, मन अने चक्षुवर्जित इंद्रियोनो चार प्रकारे थाय छे, कारण के मन अने	×××
नयनने अप्राप्त ( संबंध विना ) अर्थनुं जाणवापणुं छे अर्थात् मन अने नयन अप्राप्यकारी छे. श्रोत्र, घाण, रसना अने स्पर्श-	X
રષ	X

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ८५ ॥	नेंद्रियो प्राप्त थयेल अर्थने जाणे छे अर्थात श्रोत्रादि ए चारे इंद्रियो प्राप्यकारी छे. र्र्याका-व्यंजनावग्रह, ज्ञान न कहेवाय; कारण के श्रोत्रादि इंद्रिय अने शव्दादि द्रव्यनो संबंधकाळ होवा छतां पण बहेरानी जेम व्यंजनावग्रहना अनुभवनो अभाव छे. समा- धान-तमे कहो छो एम नथी. व्यंजनावग्रहने अंते ते वस्तुना ग्रहणथी ज (ज्ञानात्मक अर्थावग्रहना) साक्षात्कारना सद्भावथी अहिं जे ज्ञेय वस्तुना ग्रहणना अंतमां, तेथी ज ज्ञेय वस्तुना उपादान-ग्रहणथी साक्षात्कार थाय छे ते ज्ञान छे. जेम अर्थावग्रह पछी अर्थावग्रहबडे ग्रहण करवा योग्य (ज्ञेय) वस्तुना ग्रहणथी इहा थाय छे तेथी ते अर्थावग्रहज्ञान छे. तेवी ज रीते व्यंजनावग्रह पछी तद्व्रेय वस्तुना उपादानथी अर्थावग्रह ज्ञान थाय छे, माटे व्यंजनावग्रह ज्ञान छे पण अज्ञान नथी. भाष्यकार कहे छे— अन्नाणं सो बहिराइणं व, तक्काल्टमणुवलंभाओ । [आचार्य:]न तदन्ते तत्तोच्चिय, उवलंभाओ तयं नाणं ॥ १९ ॥ आ गाथानो भावार्थ कहेले छे. वळी व्यंजनावग्रह कालमां पण ज्ञान छे ज, परंतु सक्ष्म होइने अव्यक्त होवाथी स्रतेला माणसना अस्पष्ट ज्ञाननी माफक साक्षात् जणातुं नथी. इहा वगेरे पण श्रुतनिश्रित ज छे छतां ते कहेल नथी, कारण के दिस्थानक- बे स्थानकनो अनुरोध छे. (१९), 'अस्सुयनिस्तिएऽवि एमेच ' त्ति अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रह अध्वतनिश्रित छे तेमां अर्थावग्रह संभवे छे. भाष्यकार कहे छे:—	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **
	💥 पछी तद्ज्ञेय वस्तुना उपादानथी अर्थावग्रह ज्ञान थाय छे, माटे व्यंजनावग्रह ज्ञान छे पण अज्ञान नथी. भाष्यकार कहे छे—	७१ सत्रम्
	💥 अन्नाणं सो बहिराइणं व, तकालमणुवलंभाओ ।	
	अा गाथानो भावार्थ कहेलो छे. वळी व्यंजनावग्रह कालमां पण ज्ञान छे ज, परंतु सूक्ष्म होइने अव्यक्त होवाथी स्रतेला	
	🌋   माणसना अस्पष्ट ज्ञाननी माफक साक्षात् जणातुं नथी. इहा वगेरे पण श्रुतनिश्रित ज छे छतां ते कहेल नथी, कारण के द्विस्थानक-	
	🗱 बे स्थानकनो अनुरोध छे. (१९), ' अस्सुयनिस्सिएऽवि एमेव ' त्ति अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रहना भेदवडे अश्रुतनि-	
	🗱 श्रित पण वे प्रकारे छे. आ श्रोत्रेंद्रिय वगेरेथी थयेलुं जाणवुं. जे औत्पत्तिकी आदि बुद्धि अश्रुतनिश्रित छे तेमां अर्थावग्रह	
	💥 संभवे छे. भाष्यकार कहे छेः—	<u>З</u> II сч II
		¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥

İ	
	किंह पडिकुक्कुडहीणो, जुज्झे विंवेण उग्गहो ईहा। किं सुसिलिट्टमवाओ, द्प्पणसंकंत बिंबंति ॥ २० ॥
	कोई राजाए नटपुत्र भरतनी वुद्धिनी परीक्षा करवा माटे कह्युं के आ मारा कुकडाने बीजा कुकडा सिवाय तुं युद्ध कराव.
	आ उपरथी नटपुत्रे मनमां विचार्युं के बीजा कुकडा सिवाय एकलो कुकडो केवी रीते युद्ध करशे ? एम विचार करतां मनमां
	एकदम स्फुरी आव्युं के-पोतानुं प्रतिविंब आगळ जोवाथी अभिमानवडे आ कुकडो युद्ध करशे. आ प्रमाणे सामान्यथी जाण्युं
	ते अर्थावग्रह नामनो मतिनो पहेलो भेद थयो. ते पछी एवो विचार करे छे के तलावना पाणीमां पडेलुं प्रतिबिंब युद्ध कराववा माटे
	ठीक पडशे के दर्पणमां पडेलुं प्रतिबिंब ठीक पडशे ? इत्यादि प्रतिबिंब संबंभी विचारणा ते इहा. एवी इहा थया बाद एवो निश्चय
	करे छे के पाणी वगेरेमां पडेलुं प्रतिविंच तो क्षणे क्षणे दूर थाय अने अस्पष्ट होय तेथी युद्ध कराववामां तेवुं प्रतिविंव ठीक नहिं पडे,
	पण आरीसामां पडेछं प्रतिबिंब स्थिर अने स्पष्ट होवाथी चरणाघात करवामां ठीक पडरों माटे ते ज ( दर्पण ज ) योग्य थशे. ए
	प्रमाणे बिंबविशेषनों जे निश्चय ते अपाय. आ रीते बुद्धिना बीजा उपायोमं पण अर्थावग्रहादि विचारी लेवा. परंतु व्यंज-
	नाग्रह थतो नथी, कारण के व्यंजनावग्रहने इन्द्रियाश्रितपणुं छे. बुद्धिओ( औत्पत्तिकी ब्गेरे )ने तो मननो संबंध होवाथी
	बुद्धिओधी भिन्नमां-श्रोत्रादिथी थयेलमां व्यंजनावग्रह मानवा योग्य छे (२०), 'सुयनाणे ' इत्यादि० प्रवचनरूप पुरुषना
ľ	१ आ हकीकत भाष्यनो गाया ३०० मां कहेली छे. शिष्ये शंका करेल छे कै–औत्पत्तिकी वगेरे बुद्धिचतुष्क्रमां अवग्रहादि
	केवी रीते संभवे ? ए संबंधमां नटपुत्र भरतनुं दृष्टांत आपवामां आवेलुं छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra	www.kobatirth.org
**************************************	
%્રીસ્थા- │	अंगोनी जेम अंगो, तेओमां प्रविष्टं-तेना मध्यमां रहेछंते अंगप्रविष्ट, अने ते गणधरमहाराजावडे करायेछं 'उप्पन्नेइ वे' त्यादि
त्रास्यः- नाङ्गसूत्र ** सानुवाद **	त्रण मातृकापदथी थयेछं, अथवा आचारादि धुवश्रुत जाणचुं. वळी जे स्थविरकृत अथवा मातृकापद त्रणथी भिन्न व्याकरण-
सानुवाद 👹	(प्रश्न)थी रचेल ते अध्रुवश्रुत, उत्तराध्ययन वगेरे अंगबाह्य जाणवुं. भाष्यकार कहे छेः—-
॥ ८६ ॥ 💥	गणहर १ थेराइकतं २, आएसा १ मुक्कवागरणओ वा २। धुव १ चलविसेसणाओ २, अंगाणंगेसु नाणत्तं ॥२१

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* आएसा १ मुक्कवागरणओ वा २। धुव १ चलविसेसणाओ २, अंगाणंगेस़ नाणत्तं ॥२१ श्री गौतमादि गुणधरकृत द्वादश्नांगीरूप श्रुत ते अंगप्रविष्ट कहेवाय छे अने स्थविरो वगेरेथी रचायेछं (भद्रवाहुस्वामी वगेरेथी करायेल आवश्यकनिर्धुक्त्यादि) ते अंगबाह्य कहेवाय छे. वळी गणधरने तीर्थंकर संबंधी जे आदेश-डत्तर, उत्पाद, व्यय अने श्रीव्वा-त्मक पद त्रणथी उत्पन्न थयेछं ते अंगप्रविष्ट अने प्रश्नपूर्वक-व्याकरण-उत्तर ते मुक्तव्याकरण, तेथी उत्पन्न थयेछं आवश्यकादि श्रुत अंगबाह्य कहेवाय छे. वळी सर्व तीर्थंकरोना तीर्थमां नियत-निश्चयमावि जे श्रुत ते अंगप्रविष्ट कहेवाय छे अने अनियत-अनिश्चयभावि तंदुलवैयालिक प्रकीर्णकादि जे श्रुत ते अंगवाह्य कहेवाय छे. (२१), ' अंगवाही ' त्यादि, अवस्य करवा योग्य ते आवश्यक, ते आवश्यक सामायिकादि छ प्रकारे कह्युं छे-समणेण सावएण य, अवस्स कायव्वयं हवइ जम्हा। अंतो अहो णिसस्स य, तम्हा आवस्सयं नामं ॥२२ साधु अने श्रावकवडे दिवस अने रात्रिने अंते जे कारणथी अवश्य करवा योग्य छे तेथी आवश्यक कहेवाय छे. आवश्यकथी जे भिन्न ते आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुत छे. (२२), ' आवस्सगवतिरित्ते ' इत्यादि० अहिं जे दिवस अने

२ स्थान-

काध्ययने उद्देशः १

प्रत्यक्षपरे(-

७१ सत्रम्

11 68 11

क्षज्ञानम्

	<u></u>
रात्रिना पहेला अने छेल्ला बे प्रहरमां ज भणाय छे ते (प्रथम अने छेल्ली पौरुषी) कालवडे थयेल ते (उत्तराध्ययनादि) व	हालक-
श्रुत छे. वळी जे काळवेळा ( मध्याह्वचतुष्क ) वर्जीने भणाय छे ते अने कालिकश्रुतथी उपरना ( बाकीना ) जे द्शवै	कान्द्रिक
ઝુત છે. પેજી જ જાજપજી ( મેપ્યાહ્ય લુપ્ત ) પંજાન મળાય છે તે બન જાાજે જીતવા ઉપરના ( પાજાના ) જ હરાય	ગમાજગ
वगेरे श्रुत छे ते उत्कालिकश्रुत कहेवाय छे. (२३) ( स० ७१ ) आवी रीते ज्ञान कह्या पछी हवे चारित्रनुं वर्णन करे ह	छ:—
दुविहे धम्मे पं० तं०-सुयधम्मे चेव चरित्तधम्मे चेव (१), सुयधम्मे दुविहे पं० तं०-सुत्तसुय	धम्मे
चेव अत्थसुयधम्मे चेव (२), चरित्तधम्मे दुविहे पं० तं०-अगारचरित्तधम्मे चेव अणगारचरित्त	धम्मे
चेव (३), दुंविहे संजमे पं० तं०-सरागसंजमे चेव वीतरागसंजमे चेव (४), सरागसंजमे दुवि	हे पं०
तं०-सुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव बादरसंपरायसरागसंजमे चेव (५), सुहुमसंपरायसरागर	तंजमे
	-
ुर्दुंविहे पं० तं०-पढमसमयसुहुमसंपरायसरागसंजमे चेव अपढमसमयसु० चेव, अहवा च	इरिस-
समयसुहुमसं० चेव अचारिमसमयसु० चेव, अहवा सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं०	तं०-
संकिलेसमाणए चेव विसुज्झमाणए चेव (६), बादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं० तं०⊸	पत्नम-
maximity in a second and by advantation and find to a	
A mani symmetric for the time of	
१. बाबुवाळी पतमां अणगारचरित्तधम्मे दुविहे पं० तं० एवो पाठ छे.	

	a www.kobatiiti.org	Actial ya Shiri Kaliassayai suli (
भीस्था- नाङ्गम्रत्र सानुवाद	<ul> <li>समयवादरसं० चेव अपढमसमयवादरसं० चेव, अहवा चरिमसमय० चेव अचरिमसमय० चेव (७), अहवा बायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे पं० तं-पडिवाति चेव अपडिवाति चेव, वीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०उवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव खीणकसायवीयरागसंजमे चेव (८), उवसंतक- सायवीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-पढमसमयउवसंतकसायवीयरागसंजमे चेव अपढमसमयउव० चेव, अहवा चरिमसमय० चेव अचरिमसमय० चेव (९), खीणकसायवीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-छउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव केवलिखीणकसायवीयरागसंजमे चेव (१०), छउमत्थखी- णकसायवीयरागसंजमे दुविहे पं० तं०-सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागसंजमे चेव ९०, छउमत्थखी० चेव (११), सयंबुद्धछउमत्थ० दुविहे पं० तं०-स्यंबुद्धछउमत्थर्खाणकसाय० चेव बुद्धबोहियछउमत्थर्खी० चेव (११), सयंबुद्धछउमत्थ० दुविहे पं० तं०-पढमसमय० चेव अपढमसमय० चेव अहवा चरिम- समय० चेव अचारिमसमय० चेव (१२), बुद्धबोहियछउमत्थर्खीण० दुविहे पं० तं०-पढमसमय० चेव अपढमसमय० चेव, अहवा चरिमसमय० चेव अचरिमसमय० चेव अचरिम, समय० चेव अहवा चरिम- समय० चेव अचारिमसमय० चेव (१२), बुद्धबोहियछउमत्थर्खीण० दुविहे पं० तं०-पढमसमय० चेव</li> </ul>	अत्र उद्दशः १ अर्मसंयमौ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
	* रागसंजमे दुविहे पं० तं०-सजोगिकेवलिखीणकसाय० चेव अजोगिकेवलिखीणकसायवीयराग०चेव **	₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩
IS	For Private and Personal Use Only	1: 英注

(25	3), सजोगिकेवलिखीणकसायसंजमे दुविहे पं० तं०–पढमसमय० चेव अपढमसमय० चेव, अहवा
	•
	रेमसमय० चेव अचरिमसमय० चेव (१५), अजोगिकेवालिखीणकसायसंजमे दुविहे पं० तं०-पढम-
सम	तय० चेव अपढमसमय० चेव, अहवा चरिमसमय० चेव अचरिमसमय० चेव (१६) । सू० ७२
	मूलार्थः बे प्रकारे धर्म कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म (१), श्रुतधर्म वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-जेमां
नामः	धरे अर्थ गुंधेल छे ते सूत्रश्रुतधर्म अने तीर्थकरे जे प्ररूपेल ते अर्थश्रुतधर्म (२), चारित्रधर्म वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-
राहर	स्थनो चारित्रधर्म अने अनगार( साधु )नो चारित्रधर्म (३), वे प्रकारे संयम कह्यो छे, ते आ-राग सहित जे संयम ते
20,	गसंयम अने राग रहित जे संयम ते वीतरागसंयम ( ४), सरागसंयम बे प्रकारे कह्या छे, ते आ-सूक्ष्मसंपरायसरागसंयम
	बादरसंपरायसरागसंयम ( ५ ), सूक्ष्मसंपरायसरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-प्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागसंयम
-	आदरतपरापतरागतवम् ( ५ ), द्रद्भतपरायतरागतवम् अत्रकारं कथाः छ, त आन्त्रवमतमयद्रद्भमसंपरायतरागतवम् अप्रथमसमयद्वद्भमसंपरायसरागसंयम्, अथवा चरमसमयद्वद्भनसंपरायसरागसंयम् अने अचरमसमयद्वद्भमसंपरायसरागसंयम्,
	वा सूक्ष्मसंपरायसरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ संक्लेशपरिणामवाळो सूक्ष्मसंपरायसरागसंयम अने विशुद्धपरिणामवाळो
	नसंपरायसरागसंयम ( ६ ), बादरसंपरायसरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-प्रथमसमयबादरसंपरायसरागसंयम अने
	थमसमयबादरसंपरायसरागसंयम, अथवा चरमसमयबादरसंपरायसरागसेयम अने अचरमसमयबाद्रसंपरायसरागसंयम् अथवा
बाद्	रसंपरायसरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-प्रतिपाति अने प्रतिपाती ( ७), वीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ।। ८८ ।।	उपशांतकरायवीतरागसंयम अने श्रीणकषायवीतरागसंयम (८), उपशांतकषायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ- प्रथमसमयउपशांतकषायवीतरागरंग्रंयम अने अप्रथमसमयउपशांतकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयउपशांतकषायवीतराग- संयम अने अचरमसमयउपशांतकषायवीतरागसंयम (९), श्रीणकषायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ- कषायवीतरागसंयम अने केवळीक्षीणकषायवीतरागसंयम (१०), छग्रस्थक्षीणकपायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ- स्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अने बुद्धवोधितछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ- स्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अने बुद्धवोधितछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ- स्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अने बुद्धवोधितछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम (११), स्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवी- तरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-प्रथमसमयस्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमयस्वयंबुद्धछग्रस्थक्षी- णकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयस्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अचरमसमयस्वयंबुद्धछग्रस्थक्षीणकषाय- वीतरागसंयम (१२), बुंद्रबोधितछग्रस्थक्षीणकपायवीतरागसंयम वे प्रकारे कह्यो छे, ते आ-प्रथमसमयस्वर्यक्रि	** का ** उदे ** धर्म	स्थान- ाध्ययने इाः १ सिंयमौ १ सत्रम्	
	णकपायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमयबुद्धवोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अथवा चरमसम4बुद्धवोधितछद्मस्थक्षी- णकपायवीतरागसंयम अने अचरमसमयबुद्धवोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम अथवा चरमसम4बुद्धवोधितछद्मस्थक्षी- णकपायवीतरागसंयम अने अचरमसमयबुद्धवोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम (१३), केवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम बे प्रकारे कद्यो छे, ते आ-सयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम (१४), सयोगी- केवलीक्षीणकपायवीतरागसंयम, वे प्रकारे कद्यो छे, ते आ-प्रथमसमयसयोगीकेवलीक्षीणकपायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमय- सयोगीकेवळीक्षीणकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयसयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमय- सयोगीकेवळीक्षीणकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयसयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमय- केवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयसयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम केवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयसयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम अने आवरमसमयसयोगी-	××××××××	cc 11	

E I	www.coatinitiong	م ز
		٤
3		Ś
		3
		3
	केवळीक्षीणकषायवीतरागसंयम अने अप्रथमसमयअयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम, अथवा चरमसमयअयोगीकेवलीक्षी-	
		ŝ
91	णकषायवीतरागसंयम अने अचरमसमयअयोगीकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम ( १६ ). ( सू० ७२ )	
		3
	ूटीकार्थः-दुर्गतिमां पडता जीवोने अटकावे अने सद्गतिमां जीवोने जे धारण करे ते धर्म. अत-द्वाद्शांगी ते ज	ŝ
	the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the s	5
	धर्म, ते श्रुतधर्म. चर्यते-मूर्यादापूर्वक जे सेवाय छे ते चारित्र अथवा जे चारित्रवडे मोक्ष प्रत्ये जवाय ते चारित्र-मूल अने	***
	उत्तरगुणना समुदायरूप धर्म ते चारित्रधर्म (१), ' सुयधम्मे ' इत्यादि० जे वडे अर्थो गुंथाय छे अथवा सूचवाये छे ते	3
	ર પેલુ મેળે પ્રાપ્ય માહ્યમાં (1/) સુમયમ્પ રહ્યા રેળે પુરાય છે પ્રયા સુમાન છે પ્ર	و
	सत्र, अथवा सम्यग् रीते स्थितपणाए अने व्यापकपणाए सारी रीते कहेवापणुं होवाथी सक्त, अथवा व्याख्यान करवावडे सुप्त	
21		્રે
	अवस्था( अजागृतपणुं ) होवाथी स्रतेलानी माफक सुप्त पण कहीए. भाष्यकारनुं कथन तो आ प्रमाणे छेः—–	$\geq$
8		3
8	सिञ्चति खरइ जमत्थं, तम्हा सुत्तं निरुत्तविहिणा वा। सूएइ सवति सुव्वइ, सिव्वइ सरए व जेणऽत्थं॥२३	
6		3
	अविवरियं सुत्तंपि व, सुट्टियवावित्तओ सुवुत्तं ।	ίŠ
<u>S</u>		3
51	जेमांथी अर्थ खरे छे अर्थात् अर्थनी प्राप्ति थाय छे ते सत्र कहेवाय छे. अथवा निरुक्तविधिए जेनावडे अर्थ	55
3	सचवाय छे, झरे छे, संभळाय छे, विशिष्ट घटनाने पमाडे छे, स्मरण कराय छे ते सत्र. जेनुं विवरण नहि करायेछुं ते	
ξ.	ે ગુરાજ છે છે. ગુરાજ છે ગુરાજ છે ગુરાજ ગુરાજ છે સ્વરંગ મહાત્ર છે હા હ્યુન, બંધુ વિવર્ણ વાદ વરાવલું ત	2
8	स्रतेलानी माफक सुप्त कहेवाय छे अने सारी रीते स्थित (प्रमाणथी अबाधित) अने व्याप्त होवाथी सक्त कहेवाय छे. अर्यते-	5
3-		5
3	१. आ २४ मी गाथानो पूर्वार्ड अविवरियमित्यादि, २३ मी गाथा साथे संबंध घरावतो होवाथी साथे लखेल छे.	ŷ
8		ý
2		X
3		3
	••	-

जिज्ञासुओवडे जे जणाय छे अथवा याचना कराय छे ते अर्थ-व्याख्यान. वळी भाष्यकार कहे छे- जो सुत्ताभिष्पाओ, सो अत्थो अज्जए य जम्हात्ति ॥ २४ ॥ सूत्रनो अभिप्राय जेनाथी जणाय छे ते अर्थ. 'चरित्ते' त्यादि० अगार-गृह, तेना योगथी अगारो-गृहस्थो, तेओनो ज सम्यक्त्वमूल अणुव्रत वगेरेना पालनरूप चारित्रधर्म ते अगारचारित्रधर्म, एवी रीते बीजो पण जाणवो. हवे विशेप कहे छे-जेओने घर नथी ते अनगारो-साधुओ, तेओनो जे धर्म ते अनगारचारित्रधर्म (३), जे चारित्रधर्म ते संयम, आ हेतुथी संयम कहे छे:-' दुविहे' त्यादि जे मायादिरूप स्तेह सहित ते सराग, राग सहित एवो जे संयम अथवा राग सहितनो ज संयम ते सरागसंयम. बीत-गयो छे राग जेमांथी ते बीतराग, बीतराग एवो जे संयम अथवा बीतरागनो जे संयम ते बीतराग- संयम ते सरागसंयम. बीत-गयो छे राग जेमांथी ते बीतराग, बीतराग एवो जे संयम अथवा बीतरागनो जे संयम ते बीतराग- संयम हे सारमों श्रमण करे ते संपरायकपाय, आ व्युत्पत्त्यर्थ छे. भाष्यकार कहे छे-कोहाइ संपराओ, तेण जुओ संपरीति संसारं । क्रोधादि ते संपराय, तेनाथी युक्त जीव संसारमां अमण करे छे. उपश्रमश्रीणवाळानो अथवा क्षपक- श्रेणिवाळानो लोभकपायरूप सक्ष्मसंपराय जे हे छे एवो सक्ष्मसंपरायसाधु, तेनो सरागसंयम ते सरागर्यस्परायसरागसंयम,	क,दुः घ ७ अ	स्थान∙ ाध्ययने शः १ र्मसंयमौ १ स्त्रम्
अणिवाळानो लोभकषायरूप सक्ष्मसंपराय जेने छे एवो सक्ष्मसंपरायसाधु, तेनो सरागसंयम ते सक्ष्मसंपरायसरागसंयम, अथवा सक्ष्मसंपराय एवो साधु. आ कर्मधारय समास छे. बादर-स्थूल, संपराय-कषाय जे साधुने छे अथवा जे संयमने विषे बादरसंपराय छे ते बादरसंपराय, ते सक्ष्मसंपराय गुणठाणाथी पूर्वना-छटाथी नवमा गुणठाणा सुर्थीमां होय छे. बाकीनुं अर्थ	* * *	CS  }

ч	र्वनी माफक. (५), 'सुहुमे' त्यांदि-वे सत्रमां प्रथम अने अप्रथम समय वगेरेनो विभाग केवलज्ञाननी माफक जाणी लेवो.
4	अहचे' त्यादि० उपश्रमेत्रेणीथी पडनारनो जे संयम ते संक्लिश्यमान अने उपशमश्रेणी अथवा क्षपकश्रेणी प्रत्ये चडना-
	नो जे संयम ते विग्रुद्वचमान छे. (६), 'बादरे' त्यादि० वे सूत्र, बादरसंपरायसरागसंयमनुं संयमना प्राप्तिकालनी अपे-
	क्षाए प्रथमं-अप्रथमसमयपणुं छे. चर्म (छेल्ला) अने अचरम ( छेल्ला सिवायना बीजा ) समयपणुं तो जे पछी-एटले बादर-
	तंपरायसरागसंयम् पछी-सक्ष्मसंपरायंसरागसंयमने पामे अथवा असंयतपणाने पामे तेनी अपेक्षाए कहेवाय छे. 'अहवे'-
	न्यादि० उपञ्चमश्रेणीवाळानुं अगर बीजानुं (छट्टा वगेरे गुणठाणावाळानुं) प्रतिपाती, अने क्षपकश्रेणीवाळानुं अप्रतिपाती ( संयम ) होय छे (७), सरागसंयम कहेवायो हवे वीतरागसंयम कहे छे–' वीयरागे 'त्यादि० उपञांत–प्रदेञथी पण
	स्थम् ) हाय छ (9), सरागसयम् कहवाया हव वातरागसयम् कह् छम् वायराग त्याादण उपशातम्प्रदशया पण तथी वेदाता कषायो जेने अथवा जेने विषे ते उपशांतकषायवीतरागसाधु अथवा उपशांतकषायवीतरागसंयम्, ते आगेयारमा
	भया वदाती क्यांचा जम जयना जम त्यांचा ताव पार्वित के कुषायों जेना ते क्षीणकषायसाधु बारमा गुणस्थानमां वर्तनार होय छे
	(८), 'उवसंते'त्यादि० बे सत्र पूर्वनी माफक जाणवा (९), 'खीणे'त्यादि, आत्मना स्वरूपने जे आच्छादन करे ते छद्म-
15	ज्ञानावरणादिघातिकर्म, तेमां रहेनार ते छर्मस्थ-केवली नहि, बाकी पूर्वनी माफक जाणवुं. पूर्वोक्त स्वरूपविशिष्ट केवलज्ञान
	१ जे समयमां संयमनी प्राप्ति थाय ते प्रथमसमय अने बाकौना द्वितीय विगेरे समय ते अप्रधमसमय कहेवाय छे.
	२. कोई साधु नवमा गुणठाणाना छेळा समय पूछी दशमा गुणठाणे जाय ते चरमसमयसूक्ष्मसंपरायनी अपेक्षाए कहेवाय छे.
ं	अद्यवा काल करो देवलोकमां जाय के संयमथी अ्रष्ट थई असंयत थाय तेनी अपेक्षाए चरमसमयपणुं कहेवाय छे.

Jain Aradhana Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kallassagarsuri Gya
श्रीस्था- नाङ्गम्रत्न सानुवाद् ॥ ९०॥	अने केतलदर्शन छे जेने ते केक्ली (१०), 'छउमत्थे'त्यादि स्वयंबुद्ध वगेरेतुं स्वरूप पूर्वनी माफक जाणवुं (११), 'सयंबुद्धे' त्यादि नव सूत्रो गतार्थ छे एटले पूर्व कहेला अर्थवाळा छे. (१२ थी १६). (सू०७२) संयम कसो, ते जीव अजीवविषयवाळे। होवाथी पृथ्वी विगेरे जीवोना स्वरूपने 'दुविहा पुढवी'त्यादि अव्यावीश सत्रोवडे कहे छे— दुविहा पुढविकाइया पं० तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव (१), एवं जाव दुविहा वणस्सइका- इया पं० तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव (२-५), दुविहा पुढविकाइया पं० तं०-पजत्तगा चेव अपजत्तगा चेव (६), एवं जाव वणस्सइकाइया (७-१०), दुविहा पुढविकाइया पं० तं०-पजत्तगा चेव अपजत्तगा चेव (६), एवं जाव वणस्सइकाइया (७-१०), दुविहा पुढविकाइया पं० तं०- परिणया चेव अपरिणया चेव (११), एयं जाव वणस्सइकाइया (१२-१५), दुविहा दुव्वा पं० तं०-परिणता चेव अपरिणता चेव (१६), दुविहा पुढविकाइया पं० तं०-गतिसमावन्नगा चेत्र अगइसमावन्नगा चेव (१७), एवं जाव वणस्सइकाइया (१८-२१), दुविहा दुव्वा पं० तं०-गतिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव (२३), जाव द्व्वा० (२४-२८) । सू० ७३	* उद्दशः १ * पृथव्यादि- * नां परिणा- * मेतरौ * ७३ सत्रम् * *
\{ <b>\$</b>		I{ <b>X</b> }]

345 1	a construction of the second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second second se
$x \times x \times$	
8	
×	म्लार्थःपृथ्वींकायिक वे प्रकारे कह्या छे, ते आ प्रमाणेसक्ष्म अने बादर (१), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वन-
ж	
×	स्पतिकायिकना बब्बे भेद कह्या छे, ते आ-सूक्ष्म अने वादर ( २-५ ), वे प्रकारे पृथ्वीकायिक कह्या छे, ते आ-पर्याप्तक
×	अने अपर्याप्तक (६), एवी रीते अएकायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना बब्बे भेद जाणवा (७-१०), बे प्रकारे पृथ्वीकायिक
×	कह्या छे, ते आ-परिणत ( अचित्त ) अने अपरिणत ( सचित्त ) (११), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना 🌋
*	स्पतिकायिकना बब्बे भेद कह्या छे, ते आ-सूक्ष्म अने वादर ( २-५ ), बे प्रकारे पृथ्वीकायिक कह्या छे, ते आ-पर्याप्तक अने अपर्याप्तक (६), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना बब्बे भेद जाणवा (७-१०), बे प्रकारे पृथ्वीकायिक कह्या छे, ते आ-परिणत ( अचित्त ) अने अपरिणत ( सचित्त ) (११), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना बब्बे भेद जाणवा (१२-१५), बे प्रकारे द्रव्यो कह्या छे, ते आ-परिणत ( अपेक्षित अन्य परिणामने पामेला ) अने अपरिणत ( बीजा परिणामने नहि पामेला ) (१६), बे प्रकारे पृथ्वीकायिक कह्या छे, ते आ-परिणत ( अपेक्षित अन्य परिणामने अमे अगतिसमापन्नक
*** ***	
*	( बीजा परिणामने नहि पामेला ) (१६), वे प्रकारे पृथ्वीकायिक कह्या छे, ते आ-गतिसमापत्नक अने अगतिसमापत्नक
*	(१७), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना बब्बे भेद जाणवा (१८–२१), बे प्रकारे द्रव्यो कह्या छे, ते आ– 🏼
×	(१७), एवी रीते अप्कायिकथी यावत् वनस्पतिकायिकना बब्बे भेद जाणवा (१८-२१), वे प्रकारे द्रव्यो कह्या छे, ते आ- गतिसमापन्नक (विग्रहगतिने प्राप्त थयेला) अने अगतिसमापन्नक (पोताना स्थानमां रहेला) (२२), वे प्रकारे पृथ्वीकायिको कह्या
*	
*	प्रकार जाणवा. (२४–२८) ( सू० ७३ )
**	$x_{n}(x_{n})(x_{n}) = x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n}) + x_{n}(x_{n})$
*	छे, ते आ–अनंतरावगाढ अने परंपरावगाढ (२३), एवी रीते अप्कायिक, तेजोका० वायुका० वनस्पतिका० अने द्रव्यो बब्वे प्रकारे जाणवा. (२४–२८) ( सू० ७३ ) टीकार्थः-पृथ्वी ए ज काय छे जेओने ते ष्टथिवीकायिनः. अहिं समासांतविधिमां स्वार्थिक प्रत्यय होवाथी पृथवीका-
21	यिक, अथवा पृथ्वी ए ज इारीर छे जेओने ते पृथ्वीकायिक. ( अहिं तद्धित ठक् प्रत्ययनो इक थयेल छे ). जे सहमनाम-
*	साम प्रमाणी मध्य जीवो से हे महिलेलमां स्वायत के अने सरस्य करेता नजा है जीवने का प्रथि छ . जी इस्मान हि
×:	कर्मना उदयथी सक्ष्म जीवो छे ते सर्वलोकमां व्यापक छे अने बादरनामकर्मना उदयथी वर्तनार बादर जीवो, पृथ्वी अने पर्वत
×	कमेना उदयथी सक्ष्म जीवो छे ते सर्वेलोकमां व्यापक छे अने बादरनामकर्मना उदयथी वर्तनार बादर जीवो, पृथ्वी अने पर्वत १६ **
×	
3 <b>m</b> = 2 2	

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ ९१॥ ***************	वगेरेमां ज छे. पृथ्वीकायिकोचुं सक्ष्म अने बादरपणुं आंपेक्षिक नथी. (१), 'एव' मिति० एवी रीते पृथ्वीकायिकना सत्रनी माफक अप० तेज० वायु० अने वनस्पतिकायादिना सत्रो कहेवा. आ कारणथी कहे छे-'जावे '-त्यादि (२-५), 'तुविहे' त्यादि० पांच सत्रो-पर्याप्तनामकर्मना उदयमां वर्त्तनारा जीवो, जे चार पर्याप्तिने पूर्ण करे छे ते पर्याप्ता छे अने अपर्याप्त- नामकर्मना उदयथी जे पोतानी (चार) पर्याप्तिओने पूर्ण न करे ते अपर्याप्ता छे. अहिं पर्याप्ति एटले शक्ति-सामर्थ्यविशेष जाणतुं. ते शक्ति, पुद्गलद्रव्यना उपचयथी उत्पन्न थाय छे. पर्याप्ति छ प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे- आहारेस्ररीर्रि दिर्यपज्तत्ती-आणपाणॅभार्स्तर्मणे । चत्तारि पंच छोप्पिय, एगिंदियविगत्ठसन्नीणं ॥ २५॥ १ आहार, २ श्वरीर, ३ इंद्रिय, ४ आसोच्छ्वास, ५ भाषा अने ६ मन-ए छ पर्याप्ति छे. तेमां एकेंद्रियने चार, विक- लेंद्रिय अने असंज्ञी पंचेंद्रियने पांच अने संज्ञी पंचेंद्रियने छ पर्याप्ति होय छे. १ आहारपर्याप्ति नाम-खल (नकामो भाग) अने रसनी परिणमनशक्तरूप छे, २ शरीरपर्याप्ति-सात धातुपणे रसनी परिणमनशक्तरूप छे, ३ पांच इंद्रियोने योग्य पुद्रालोने प्रहण करीने अनाभोग(ईच्छा रहित)थी थयेल वीर्यवडे इंद्रियने तैयार करवानी शक्तरूप इंद्रिपर्याप्ति, ४ उच्छ्वास अने निःश्वासने योग्य पुद्गलोने ग्रहण करीने उच्छ्वास-निःश्वासरूपे परिणमावीने आन-प्राणपणे नीकळवा(मूकवा)नी १. जेम नाळीयेरनी अपेक्षाए नारंगी नानी छे, अने नारंगीनी अपेक्षाए चोक्त नाना छे, तेम पृथ्वीकायिक जोबोमां नघो परंतु सूक्ष्म-यादरपर्णु वास्तविक छे. २. आहि लब्ज्विपर्याप्तनी अपेक्षाए आ हक्तकत जणावेल छे.	***************************************	ध्ययने उद्देशः १ पृथच्यादी- नां परिणा- मेतरौ
		X	

 $\widehat{\mathbf{x}}$ 

X

<b>(XXX:XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX</b>	शक्तिरूप आनप्राणपर्याप्ति, ५ वचनने योग्य भाषावर्गणाना पुद्गलोने ग्रहण करीने, भाषापणे परिणमावीने वचनयोगपणे मूकवानी शक्तिरूप भाषापर्याप्ति, ६ मनने योग्य मनोवर्गणाना पुद्गलोने लइने, मनपणे परिणमावीने मनयोगपणे मूकवानी शक्तिरूप मनपर्याप्ति. आ छ पर्याप्तिओ, पर्याप्तनामकर्मना उदयवडे पूर्ण कराय छे. जे जीवो ते पूर्ण करे छे ते जीवो पर्याप्तक अने अपर्याप्तनामकर्मना उदयवडे जे जीवो ते पूरी करता नथी ते अपर्याप्तक कहेवाय छे. आ छ पर्याप्तिओनो एकी साथे आरंभ कराय छे अने अंतर्म्रुहूत्तवडे पूर्ण थाय छे. तेमां आहारपर्याप्तिने पूर्ण करवानो काळ एक समय ज छे. ते केवी रीते थाय ? ते संबंधमां प्रज्ञापना सत्र नीचेनो पाठ जणावे छे:- 'आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तए णं भंते ! जीवे किं आहारए	***
*-***	अणाहारए ?, गोयमा ! नो आहारए अणाहारए'त्ति ' हे भगवन् ! आहारपर्याप्तिवडे अपर्याप्त जाव, शुं आहारक छे के अनाहारक छे ? उत्तर-हे गौतम ! आहारक नथी, अनाहारक छे.' ते आहारपर्याप्तिवडे अपर्याप्त विग्रहगतिमां मळे छे- होय छे. जो वळी उत्पत्तिना क्षेत्रमां प्राप्त थयेल पण आहारपर्याप्तिवडे अपर्याप्तक थाय तो आ प्रमाणे उत्तर होवो जोईए- ' गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए'त्ति-क्यारेक आहार होय अने क्यारेक अनाहारक होय. जेम शरीर वगेरे	****
.******	पर्याप्तिओना विषयमां कहेलुं छे के-' सिय आहारए सिय अणाहारए'त्ति. ( अर्थात् आहारपर्याप्तिना विषयमां ' सिय ' इब्द न होवाथी आहारपर्याप्तिने पूर्ण करवानी एक समयनी ज स्थिति होय छे. ) वळी आहारपर्याप्ति सिवाय पांच पर्याप्तिओ असंख्यात समयवाळी छे अने ते पांचे अंतर्ग्रहूर्त्तमां पूर्ण थाय छे. अपर्याप्तक तो उच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्त ज मृत्यु पामे छे, परंतु शरीर अने इंद्रियपर्याप्तिवडे अपर्याप्तां मरता नथी. जे कारणथी	<u>****</u> *******
****	ता उच्छ्वासपयाक्षिवे अपयाप्त ज मृत्यु पान छ, परंतु शरार अन इाद्रयपयाप्तिवेड अपयोप्ता मरता नथा. ज कारणथा	<b>※-米米</b> 米

	*
श्रीस्था-	**
नाङ्गस्त्र	× ×
सानुवाद	*
॥ ९२ ॥	×

Nen	uia	www.kobatiiti.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun C
	<b>***</b> *********************************		X
-	8	आगामी भवनुं आयुष्य बांधीने मरे छे. शरीर अने इंद्रियादि पर्याप्तिथी पर्याप्त जीवोवडे ज परभवायुष्य बंधाय छे. एवी रीते	🌋 २ स्थारका-
ſ	× ×	पूर्वनी माफक जाणचुं. (६-१०), 'दुविहा पुढवी 'त्यादि० छ सूत्रो, परिणताः-स्वकायसस्र ( पृथ्वीथी पृथ्वी हणाय )	💥 ध्ययने
	× ×	अने परकायशस्त ( पाणी वगेरेथी पृथ्वी वगेरे हणाय ) वगेरेथी भिन्न परिणामने प्राप्त थयेला अर्थात् अचित्त थयेला. पृथ्वी	🌋 उद्देशः १
1	×	वगेरेमां द्रव्यथी खातर वगेरेथी मिश्रित द्रव्यवडे, काळथी पोरसी वगेरे (मिश्रित) काळवडे, अने भावधी वर्ण, गंध, रस अने	🌋 प्रथव्यादी-
	*	स्पर्शो, वीजा परिणामपणाए परिणत थयेला ते अचित्त थाय छे. क्षेत्रथी तो	हैनां परिणा-
	×.	जोयणसयं तु गंता, अणहारेणं तु भंडसंकंती । वायागणिभूमेण य, विद्धत्थं होइ लोगाइ ॥ २६ ॥	🕈 मेतरौ
	*	हरियाल मणोसिल, पिप्पली य खज्जूर मुद्दिया अभया। आइ न्नमणाइन्ना, तेऽवि हु एमेव णायव्वा॥२७॥	1. 来 1
	*	आरुहणे ओरुहणे, णिसियण गोणाइणं च गाउम्हा। भूभाहारच्छेदे, उवक्रमेणेव परिणामा ॥ २८ ॥	* ७३ सूत्र * * * *
	×	पोताना स्थानथी लई जवाता लवणादि, प्रतिदिवस क्रमेकमे आगळ जतां नाश पामतां छतां छेवट एकसो योजनथी उपर	
	*	जतां सर्वथा अचित्त थाय छे. हवे शस्त्रपरिणत थया सिवाय पण अचित्त थराना कारणे कहे छे-१ पोताना उत्पत्तिक्षेत्रनो आहार न	X
	*	मळवाथी, २ एक भाजनमांथी वीजा भाजनमां नाखवाथी अथवा एक वखारमांथी बीजी वखारमां राखवाथी, ३ प्रचंड वायुथी,	
	× ×	४ अग्निना तापथी अने ५ रसोडाना धुंवाडा वगेरेथी लवणादि अचित्त थाय छे. हरताल, मणाज्ञिल, पीपर, खजुर, द्राक्ष	
	×	अने हरडे पण लवणनी जेम अचित्त थाय छे, पण साधुने आचीर्ण (लेवा योग्य) अने अनाचीर्णनो विधि जाणवा	₩ ₩    ९२    ₩ ₩
	X		×.

ia	www.kobaliti.org	Acharya
$(X \times X \times$	योग्य छे. पीपर अने हरडे आचीर्ण छे अने खजुर ने द्राक्ष वगेरे अनाचीर्ण छे. हरताल गंगेरे सर्व वस्तुओनां सामान्यपणे अचित्त थवानां कारणे। कहे छे-गाडा, पोठिया (वळद) वगेरे वाहने। उपर चडावतां अने उतारतां, लवणादिन। ढगल वगेरे उपर वेसवा वगेरेथी, बळदो वगेरेनी पीठ आदि श्वरीरनी। गरमांथी, उत्पत्तिक्षेत्रनी भूमिनो आहार न मळवाथी अने दास्तना उपक्रमथी अचित्त थाय छे. परिणामांतर प्राप्त थये छते पण पृथ्वीकायिको ज कहेवाय छे, ते मात्र अचेतन छे. एम जो नहि मानीर तो आ अचेतन पृथ्वीकाय पिंडना प्रयोजन( उपयोगिता )नुं कथन केम घटमान थाय ? जम-"घटटगडगल्ट- गलेवो एमाइ पयोयणं बहुहा।" घट्टक-पात्र वगेरेने घसवामां डगलक-इंट अने लेप वगेरे अचित्त प्रथ्वीने साधुओने बहुधा उपयोग करवो पडे छे. (११), ' एवमि'त्यादि पांच सूत्रो पूर्वनी माफक कहेवा (१२-१५), द्रवन्ति- विचित्र पर्यायो पामे ते द्रव्यो, जीव अने पुद्गलरूप ते द्रव्यो. विवक्षित परिणामाना त्यागवडे परिणामान्तरने प्राप्त थयेल ते परिणत द्रव्यो विक्षितपरिणामवाळा ज छे. जे परिणामांतरने नहि पामेला ते अपरिणत द्रव्यो. आ प्रमाणे छट्ठं द्रव्य सत्र जाणवुं (१६), 'दुविहे'त्यादि० छस्रत्रो, गमनपणाने पामेला-गातिवाळा ते गतिसमापन्ना. पृथ्वीकायिक वगेरेना आयुध्यन उदयथी जे पृथ्वीकाथिकादि व्यपदेशवाळा विग्रहगतिवडे उत्पत्तिक्षेत्रमां जाय छे ते गतिसमापन्न कहेवाय छे. अगतिसमापन्न जीवो तो स्थितिवाळा (जे गतिमां छेत्ते ज गतिमां रहेला) छे. (१७–२१), द्रव्यसूत्रमां गति-गमनमात्र ज जाणवुं, वाकीतुं पूर्वक छे. (२२), 'दुविहा पुढवी'त्यादि० छस्रत्रो, अनंतर-वर्तमान समयमां जकोइक आकाशदेग्रमां रहेला ते ज अनंतरावगाढको अन्	

Jain Alaunana Kenui	a www.kobalitit.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun Gya
त्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ ९३ ॥	दुविहे काले पं० तं०-ओसप्पिणीकाले चेव उस्सप्पिणीकाले चेव, टुविहे आगासे पं० तं०-लोगागासे चेव अलोगागासे चेव । सू० ७४	⊺
	मूलार्थः-बे प्रकारे काळ कह्यो छे-ते आ प्रमाणे-अवसार्पणी अने उत्सार्पणी काळ. आकाश वे प्रकारे कह्युं छे, ते अ प्रमाणे-लोकाकाश अने अलोकाकाश. टीकार्थः-करूयते-आ जणाय छे, अथवा जेनावँडे जणाय छे, अथवा जॉणवुं, अथदा कला (क्षण) वगेरेने समूह ते काळ, वर्त्तना एटले नवा पुराणादिरूपे निरंतर वर्त्तेवुं ते वर्त्तना. पर-देवदत्तथी यज्ञदत्त पहेलो जन्म्य १. करुणमित्यादि करुसत्वसंख्यानयोः करुनं काल इति भावे प्रत्ययो घञ् परिच्छेद इत्यर्धः, कल्यते वा परिच्छियते वा यतोऽनेन बस्तु, अवर्त्तरि च कारके संज्ञायां घञ्, करुयंति वा परिच्छेदयंति वा समयादिपर्यायास्तामिति कालः तस्मिन् वा स्थितान् कल्यंति समयादिकरानां वा समूहः कालः । २. कर्मणि प्रयोग छे माटे अहि कर्तानो अध्याहार छे. ३. आहें काळ करुणरूप छे माटे कर्त अने कर्मनो अध्याहार छे. ४. आ भाववाचक छे.	T XX , XX T XX X XX X XX X XX X XX X XX

XXXX

Ж

×

\*\*\*\*

ж

\*\*\*\*\*

Ж

×××

××× ××

XXXXXXX

\*\*\*\*

होवाथी पर कहेवाय, अने अपर-यज्ञदत्तथी देवदत्त पाछळ उत्पन्न थयेल होवाथी अपर कहेवाय, एवा लक्षणवाळो काळ अवस-र्षिणी अने उत्सर्षिणीरूपे वे प्रकारनो छे. वे स्थानना अनुरोधथी एम कहुं, नहिं तो अवस्थित लक्षणवाळो महाविदेह तथा भोगभूमि-युगलिक क्षेत्रमां संभवित त्रीजो भेद पण छे. 'आगासे'त्ति० सर्व द्रव्योना स्वभावोने आकादायति-मर्यादापूर्वक प्रकाशे, द्रव्यना स्वभावनां लाभमां अवस्थान( आधार)ने आपे ते आकाश. अहिं ' आङ् ' शब्द मर्यादा अने अभिविधिवाचक छे. तेमां मर्यादाना अर्थमां आकाशमां रहेता छतां पण भावो पोताना स्वरूपमां ज रहे छे, आकाशपणाने पामता नथी, एवी रीते ते भावोने पोताने आधीन न करवाथी आकाशस्वरूप थता नथी. अभिविधिना अर्थमां तो सर्व भावोमां व्यापक होवाथी आकाश छे. जे आकाशना देशमां धर्मास्तिकाय वगेरे द्रव्योनी वृत्ति-प्रवृत्ति छे ते ज आकाश लोकाकाश छे, तेथी विपरीत ( जेमां धर्मास्तिकाय वगेरेनी प्रवृत्ति नथी ) ते अलोकाकाश छे. (सू० ७४) हमणा ज लोक-अलोक भेदथी आकाश बे प्रकारे कहुं. वळी लोक, शरीरवाळा जीवे। अने शरीरोनो सर्वथा आश्रय-रूप होवाथी नारक वगेरे शरीरवाळा दंडकवडे शरीरनी प्ररूपणा करे छे-णेरइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरए कम्मए बाहिरए वेउविवए, एवं देवाणं भाणियव्वं, पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव. अब्भंतरगे कम्मए बाहिरगे ओरालियगे, जाव वणस्सइकाइयाणं (१), बेइंदियाणं दो सरीरा

I Jain Alaunana Kenula	www.kobalitii.org	Acharya Shin Kallassayarsun G
श्रीस्था- नाङ्गसत् सानुवाद सानुवाद स ९४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २	अव्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुछिराबद्धे वाहिरए ओरालिए, मणुस्साणवि एवं-चेव (२), विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पं० तं०-तेयए चेव कम्मए चेव, निरंतरं जाव वेमा- णियाणं, नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्तती सिया, तं०-रागेण चेव दोसेण चेव, जाव वेमाणियाणं नेरइयाणं टुट्ठाणनिव्वतिए सरीरगे पं० तं०-रागनिव्वत्तिए चेव, दोसनिव्वत्तिए चेव, जाव वेमा- णियाणं, दो काया पं० तं०-तसकाए चेव, थावरकाए चेव, तसकाए टुविहे पं० तं०-भवसिद्धिए चेव, अभवासिद्धिए चेव, एवं थावरकाएऽवि (३) । सू० ७५ म्रलार्थः-नैरयिकोने वे शरीर कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अभ्यंतर शरीर अने बाह्य शरीर. अभ्यतर ते कार्मण अने तैजस शरीर अने वाह्य ते वैक्रिय शरीर. एवी रीते देवोने पण वे शरीर जाणवा. पृथ्वीकायिकोने वे शरीर जहेल छे, ते आ-अभ्यंतर अने बाह्य. अभ्यंतर ते कार्मण शरीर अने बाह्य ने औदारिक शरीर, यावत् वनस्पत्किप्तिकोने वे शरीर जाणवा. (१), वेइंद्रियोने	* उद्देशः १ * ग्रिरिस्व- * रूपम् * ७५ स्वत्रम् * * * *
	For Private and Personal Use Only	

\*\*\*

××

\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

	ക്വ
	:⊋(I
	Q
ने मारित करेन के के पर अर्थना अर्थ नाम प्रायंग के नार्थन नरीय जाता के अर्थित (जातार) मांग अने कधिरतने	
वे शरीर कहेल छे, ते आ-अभ्यंतर अने बाह्य. अभ्यंतर ते कार्मण शरीर, बाह्य ते अस्थि (हाडका), मांस अने रुधिरवडे	88 J
जोडायेल औदारिक शरीर, एवी रीते यावत् चतुरिंद्रियोने वे शरीर जाणवा. पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिकोने वे शरीर कह्या छे, ते	3 ( C
जाडापल जादारिक शरार, एवं। रात पावत् पतुरारद्रियांने व शरार जाणवा. पंचाद्रय तिपंचयाानकाम न श्रेरार केला ठु ण	3
आ-अभ्यंतर अने वाह्य, अभ्यंतर ते कार्मण अने वाह्य ते अस्थि, मांस, शोणित, स्नायु( नाडी ), शिरा( नसो )थी जोडायेल	8 C
	23 I
औदारिक शरीर. मनुष्योने पण एवी रीते वे शरीरो जागवा (२), त्रिग्रह(वक्र)गतिने प्राप्त थयेला नैरयिकोने वे शरीर कह्या	881
	281
छे, ते आतैजस अने कार्मण. एवी रीते आंतरा रहित (सर्व दंडकमां) यावत् वैमानिकोने वे इारीर जाणवा. नैरयिको वे	8
ביווד היו היו היו היו אין היו היו אין אין אין אין אין אין אין אין אין אין	2
्स्थान( कारण )वडे शरीरनी उत्पत्तिनो प्रारंभ करे छे, ते आ-राग अने द्वेषथी, यावत् वैमानिकना दंडक पर्यंत एम ज जाणवुं.	81
ैनेरयिकोने बे स्थानवडे	:乙汁
	2 <b>8</b> 31
छे, यावत् वैमानिक दंडक पर्यंत एम ज जाणवुं. वे काय ( राशि ) कहेल छे, ते आत्रसकाय अने स्थावरकाय. त्रसकाय वे	15 C
	201
्रयकारे कहेल छे, ते आ−भवसिद्धिक अने अभवसिद्धिक. तेवी ज रीते स्थावरकायना पण भव्य अने अभव्य बे भेद	*****
जाणवा (३) ( सू० ७५ )	8 S I
टीकार्थः-'णेरइयाणमि'त्यादि प्रायः सुगम छे, विशेष कहे छे-इार्थिते-प्रत्येक क्षणे चय(द्वद्धि) अने अपचय(हानि)-	×
ાંગાવર ગરફવાગામ ત્યાપ પ્રાય જીગમ છે, વિશેષ થઈ છે રાવિત - પ્રાય હોય વય દાજી/ ગય ગય પ્રાહિત્ય	X
वडे नाश पामे छे ते शरीर, तेमज सडवा वगेरेना स्वभाववडे अनुकंपनपणुं होवाथी शरीर.जिनेश्वरोए ते शरीर बे प्रकारनां कहेल छे, ते	8×11
	× (
आ प्रमाणे-अभ्यंतर तथा बाह्य. अभ्यंतर-मध्यमां थयेछं ते अभ्यंतर. आ शरीरनुं अभ्यंतरपणुं जीवना प्रदेशो साथे क्षीरनीरना न्याय-	{ <b>≭</b> }
the many the first and the first interview in the second and the first interview for the second and	<u>*************************************</u>
वडे एकीभूत थवाथी अने भवांतरमां गये छते पण जीवनी साथे गतिमां तेनुं मुख्यपणुं होवाथी तेमज घर वगेरेनी अंदरमां रहेल	{ <b>Ç</b> }!
	} <b>₽</b> {
	∦ <b>⊋</b> }[
	₿₽₿
	0 <b>~</b> (1

श्वीस्था-

नाङ्गसत्र

· ·	
पुरुषनी जेम अनतिशय-ज्ञानवाळाने अप्रत्यक्षपण्ठं होवाथी आभ्यंतरपण्ठं छे. तथा बाहेरमां थयेछं ते बाछ. एनुं बाछपणुं तो जीवना प्रदेशोवडे कोईपण शरीरना केटलाएक अवयवोने विषे अव्याप्तपण्ठं होवाथी अने भवांतरमां साथे न जवाथी अतिशयज्ञान वगरना जीवोने पण प्राय प्रत्यक्ष होवाथी ते बाछ शरीर छे. 'कम्मए'त्ति०अभ्यंतर कार्मणशरीरनामकर्मना उदयथी थवा योग्य सघळा कर्मोनी उत्पन्न थवानी भूमि-आधाररूप छे. तथा संसारी जीवोने बीजी गतिने विषे जवामां अतिशय झान शरीर कार्मणवर्गणास्वरूप छे, कर्म ए ज कर्मक-कार्मण छे. कार्मण शब्ददुं प्रहण करवामां तैजसशरीर पण प्रहण करायेल छे एम समजी लेवुं, कारण के कार्मण अने तैजस एकना विना बीजुं होतुं नथी अर्थात् ते बन्ने सदा साथे रहे छे माटे एकपणानी विवक्षा करी छे. ' एवं देवाणं भाणियव्वं'त्ति०जेम नैरायिकोने बे शरीर कार्मण अने वैक्रिय कहेल छे तेम असुरकुमार देवोथी आरंभीने वैमानिक पर्यंत देवोने वे शैरीर होय छे. कार्मण अने वैक्रिय शरीरनो तेओने सद्भाव होय छे. अहाँ चोवीश दंडकोनी विवक्षा होवाथी शेष दंडको कहे छे. ' ष्टढवी ' त्यादि० पृथ्वी वगेरे पांच दंडकोमां तो बाखऔदारिकशरीरनाम- कर्मना उदयथी उदार पुद्रगलतेवडे थयेछं औदारिक शरीर छे. मात्र एकेन्द्रियोनुं शरीर हाडका वगेरेथी रहित होय छे. वायुकायिकोन्रं जे तैक्रियशरीर ते मायिक होवाथी आईं वैक्रियनी विवक्षा करी नथी. (१), ' बेइंदियाण'मित्यादि० हाडका, मांस अने रुधिरवडे बंधायेछं ने शरीर ते वाह्य शरीर छे. बेइंद्रियोना औदारिकपणामां पण शरीरना हाडका वगेरे र. एक नास्कनो दंडक अने देवोना १२ दंडकमा वे शरीर कार्मण अने बेंक्रिय होय छे. रोष पृथ्वी वगेरे १० दंडकमां कार्मण अने औदारिक शरीर होय छे.	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **

सानुवाद 119411

杰 ×××

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*\*\* एकेंद्रियनी अपेक्षाए ) विशेष छे. ' पंचेंदिए ' त्यादि० पंचेंद्रियातिर्यंच अने मनुष्योने वळी हाडकां, मांस. रुधिर. स्नाय अने शिरा विशेष छे. (२), बीजी रीते चोवीस दंडकवडे शरीरनी प्ररूपणा कहे छे:- 'विग्गहे' त्यादि० विग्रहगति-वक्रगति, ज्यारे विषमश्रेणीमां रहेल उत्पत्तिस्थान प्रत्ये जवानुं होय छे त्यारे जे वक्रगति थाय तेने प्राप्त थयेल ते विग्रहगतिसमापन्न जीवो कहेवाय छे. तेओने वे शरीर होय छे. अहीं तैजस अने कार्मणना भेदवडे विवक्षा छे. एवी रीते चोवीश दंडक जाणवा. शरीरना अधिकारथी शरीरनी उत्पत्तिने दंडकवडे निरूपण करता कहे छेः-' नेरइयाण'मित्यादि० स्पष्ट छे, परंतु राग-द्वेषथी उत्पन्न थयेल कर्मवडे जे शरीरनी उत्पात्ति तेनो रागद्वेषवडे ज व्यवहार कराय छे, कारण के कार्यमां कारणनो उपचार कराय छे. ' जाव वेमाणियाणं ' ति० एम यावत् वैमानिकदंडक पर्यंत जाणवुं. शरीरना अधिकारथी शरीरनुं \*\*\*\*\* निर्वर्त्तनसूत्र पण एवी रीते जाणवुं. विशेष ए छे के-उत्पत्ति ते शरूआत मात्र अने ।निर्वर्त्तना ते पूर्ण करवुं. शरीरना अधिकारथी शरीरवाळानी बे राशिवडे प्ररूपणा कहे छे-' दो काए ' त्यादि० त्रसनामकर्मना उदयथी त्रांस पामे छे ते त्रस, \*\*\*\* तेओनी काय-राशि ते त्रसकाय अने स्थावरनामकर्मना उदयथी स्थिर रहेवाना स्वभाववाळा ते स्थावरो, तेओनी राशि ते स्थावरकाय. त्रस अने स्थावरकायनी द्विपणानी प्ररूपणा माटे 'तसकाये' त्यादि० बे सत्र सुगम छे. (३) (सू० ७५) पूर्वना सत्रमां शरीरवाळा भव्य जीवो कह्या. आहेंथी भव्य विशेपोने जे जेम करवाने येाग्य छे ते तेम वे स्थानना संबंधवडे कहे छे-\* दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पठवावित्तए-पाईणं चेव उदीणं \*\*\*\*

श्रीस्था- ना <b>ङ्ग</b> स्रत्र सानुवाद ॥ ९६ ॥	**************************************	चेव, एवं मुंडावित्तए १, सिक्खावित्तए २, उवट्ठावित्तए ३, संभुंजित्तए ४, संवसित्तए ५, सज्झाय- मुद्दिसित्तए ६, सज्झायं समुद्दिसित्तए ७, सज्झायमणुजाणित्तए ८, आलोइत्तए ९, पडिक्रमित्तए १०, निंदित्तए ११, गरहित्तए १२, विउद्दित्तए १३, विसोहित्तए १४, अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए १५, आहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्तित्तए १६ (१), दो दिसातो अभिगिज्झ कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीणं वा अपच्छिममारणंतियसंलेहणाजूसणाजूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खित्ताणं पाओव- गताणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, तं जहा-पाईणं चेव उद्तीणं चेव (२)। सू॰ ७६॥ विट्ठाण- स्स पढमो उद्देसओ समत्तो ॥ २-१॥ म्लार्थः-चे दिशाओनी सन्युख रहीने, निप्रैथो अथवा निप्रैर्थाओने दीक्षा देवा माटे पूर्व दिशा अने उत्तर दिशा कल्पे छे. एवी रीते १ लोच करवा माटे, २ शिक्षा आपवा माटे-शीखववा माटे, ३ उपस्थापना (वडीदीक्षा) माटे, ४ साथे भोजन कराववा माटे, ५ संस्तारक मंडलीमां वेसाडवा माटे, ६ स्वाध्यायना उद्देशने माटे, ७ स्वाध्यायनी अन्ज्ञा माटे, ९ आलोचन करवा माटे, १० प्रतिक्रमण करवा माटे, ११ अतिचारनी निंदा करवा माटे, १२ गर्हा करवा माटे, १२ छेदवा माटे, १४ विद्युद्धि करवा माटे, १५ फरी न करवापणाए सन्युख जवा माटे, १६ यथायोग्य प्रायश्वित्त(तपकर्म)ने	****	२ स्तान- काध्ययने उद्देशः १ प्रत्रज्या- दिषु दिशे ७६ सन्नम् ॥ ९६ ॥	
	***		× × × × × × ×	11 27 16	

enu	endra www.kobalitin.org	Acharya Si
		× ×
	स्वीकारवा माटेनां कार्यो पूर्व अने उत्तर दिशा सन्म्रुख करवा. (१), वे दिशाओनी सन्म्रुख र अन्ति खनानी आराधना करनारा, भक्तपानना प्रत्याख्यान करनारा तथा पादपोपगत–झाडनी माफक	हान अपाथममारणातिकसल- 💥 रहेला तथा मरणनी आकांक्षा 🍼
	अ विभाग गांधनीय मुलाय प्रधानमा मुलाय मुलाय मुलाय मुलाय प्रधान मुलाय के जात करने के, (२),	
	टीकार्थः-'दो दिसाओ' इत्यादि० वे दिशाने अंगीकार करीने-सन्मुख थइने (क्रिया	करवी ) कल्पे छे. धन वगेरे 🌋
	प्रथा नोकळेला-छूटेला ते निग्रंथो—साधुओने अथवा साध्वीओने रजोहरण वगेरेना प्रदानद्वारा उत्तर दिशा अंगीकार करवी कल्पे छे. कह्युं छे के—	हीने अपश्चिममारणांतिकसंले- रहेला तथा मरणनी आकांक्षा करवी ) कल्पे छे. धन वगेरे दीक्षा आपवा माटे पूर्व अने जिणाचेइयाइं वा ॥२९॥
	्रि उत्तर दिशा अगाकार करवा कल्प छ. कधु छ क— 🦉 पुठवामुहो उ उत्तर-मुहो व देजाऽहवा पडिच्छेजा। जाए जिणादओ वा, हवेज	जिणचेइयाइं वा ॥२९॥
	पूर्व दिशा सन्मुख अथवा उत्तर दिशा सन्मुख (गुरुए) देवुं अथवा (शिष्योए) प्र	हण करवुं अथवा जे दिशामां 🌋
	🧏 जिन-केवलज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदप्र्वी, द्राप्र्वी तथा नवप्र्वीआं होय ते दिशामां	अथवा जे दिशामां जिनेश्वरना 🎇
	🔆 चैत्यो होय ते दिशानी सन्मुख रहीने दीक्षाप्रदानादि देवुं अने लेवुं. ' एव' मिति० जेम 炎 दिशाना कथनवडे कह्युं एवी रीते मुंडन वगेरे सोळ सत्रे। पण समजी लेवा. तेमां १ ग	प्रत्राजन (दीक्षा) सत्र ब 💥
	्रि विश्वानी कथनवड केंबु रंपी रोप छुड्न पंगर तोळ द्वत्री पण तमजा लगा. तमा रेप अने प्रहणशिक्षानी अपेक्षाए सूत्र तथा अर्थ ग्रहण करवा माटे अने आसेवनशिक्षानी अपेक्षाए	तो प्रत्यपेक्षण (पडिलेहण)
	💥 वगेरे शीखवा माटे, २ उत्थापना-महाव्रतोमां व्यवस्थापना करवा माटे, ४ भोजनमंडलीमां व	रसाडवा माटे, ५ संस्तारक- 🌋
	🧩 ( संथारो ) मंडलीमां बेसाडवा माटे, ६ सारी रीते मर्यादावडे जे भणाय ते स्वाध्याय-अंग वगेरे	सत्रो, ते सत्रोनः उद्देष्टुं-
	स्वीकारवा माटेनां कार्यो पूर्व अने उत्तर दिशा सन्मुख करवा. (१), वे दिशाओनी सन्मुख र खनानी आराधना करनारा, भक्तपानना प्रत्याख्यान करनारा तथा पादपोपगत-झाडनी माफक न करनारा साधु-साध्वीओने स्थिर रहेवा माटे पूर्व अने उत्तर दिशा कर्ल्प छे. (२). टीकार्थ:-'दो दिसाओ' इत्पादि० वे दिशाने अंगीकार करीने-सन्मुख थइने (क्रिया प्रंथर्थी नीकळेला-छूटेला ते निर्प्रथो-साधुओने अथवा साध्वीओने रजोहरण वगेरेना प्रदानद्वारा उत्तर दिशा अंगीकार करवी करेषे छे. कधुं छे के- पुठवामुद्दो उ उत्तर-मुद्दो व देजाऽहवा पडिच्छेजा। जाए जिणाद ओ वा, हवेजा पूर्व दिशा सन्मुख अथवा उत्तर दिशा सन्मुख (गुरुए) देवुं अथवा (शिष्योए) प्र जिन-केवलज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदपूर्वी, दशपूर्वी तथा नवपूर्वी शं होय ते दिशामां चैत्यो होय ते दिशानी सन्मुख रहीने दीक्षाप्रदानादि देवुं अने लेवु. ' एव' मिति० जेम दिशाना कथनवडे कर्खु एवी रीते मुंडन वगेरे सोळ सत्रो पण समजी लेवा. तेमां १ म २ प्रहणशिक्षानी अपेक्षाए सत्र तथा अर्थ प्रहण करवा माटे अने आसेवनशिक्षानी अपेक्षाए वगेरे शीखवा माटे, ३ उत्थापना-महाव्रतोमां व्यवस्थापना करवा माटे, ४ भोजनमंडलीमां दे (संथारो) मंडलीमां बेसाडवा माटे, ६ सारी रीते मर्यादावडे जे भणाय ते स्वाध्याय-अंग वगेरे १७	हण करवुं अथवा जे दिशामां अथवा जे दिशामां जिनेश्वरना प्रवाजन ( दीक्षा ) सत्र बे सत्तकनो लोच करवा माटे, तो प्रत्युपेक्षण (पडिलेहण) बसाडवा माटे, ५ संस्तारक- स्रत्रो, ते स्र्त्रोनः उद्देष्टुं-
		I) ₩ {I

શ્રીસ્થા-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद 119911

Chura	www.kobalititioig	Acharya Shiri Kaliassayarsun G
(*************************************	उद्देश माटे एटले के 'योगाविधिना क्रमवर्ड सम्यग् योगथी (तुं) आ भण' ए प्रमाणे उपदेश करवा माटे, ७ सम्मुद्देष्टुं-'योगनी समाचारीवर्ड ज आ सत्र स्थिरपणे परिचित कर' एम कहेवा माटे, ८ अनुज्ञातुं-'ते प्रमाणे तुं आ सत्रने धारण कर अने बीजाओने तुं जणाव-कहे' एम कहेवा माटे, ९ आलोचयितुं-गुरुनी पासे अपराधोने कहेवा माटे, १० प्रतिक्रमण करवा (पापथी पाछा हठवा) माटे, ११ निंदितुं-पोतानी समक्ष (स्वसाक्षीए) अतिचारोनी निंदा करवा माटे, ' सचरित्तपच्छ्यावो निंद'त्ति- पोताना वर्तननो पश्चात्ताप करवो ते निंदा, १२ गर्हिलुं-गुरुनी समक्ष अतिचारोनी गर्दा करवा माटे, ' सचरित्तपच्छ्यावो निंद'त्ति- पोताना वर्तननो पश्चात्ताप करवो ते निंदा, १२ गर्हिलुं-गुरुनी समक्ष अतिचारोनी गर्दा करवा माटे, ' गरहाऽवि तहा- जातीयमेव नवरं परप्पयासणए 'त्त-गर्दा पण निंदानो ज प्रकार छे, परंतु बीजानी आगळ प्रकाशित करवुं ते गर्दा, १३ 'विउद्दित्तए'त्ति-अलग करवा माटे, तोडवा माटे, विशेष क्रटवा माटे अर्थात् अतिचार संबंधी अनुवंध(पाप)दुं विच्छेदन करवा माटे, १४ विद्योधयितुं-जतिचाररूप कादवनी अपेक्षाए आत्माने निर्मळ करवा माटे, १५ अकरणतया- ' फरीथी नीई करुं ' एवो स्वीकार करवा माटे, १६ यधाईम्-अतिचार वगेरेनी अपेक्षाए यथोचित पापनो नाश करनार होवाथी अथवा प्रायः चिचतुं ग्रुढ करनार होवाथी प्रायश्चित्त कर्खु छे के पावं छिंदेइ जम्हा, पायचिछत्तं तु भन्नए तेण ।पाएण वात्नि चित्तं, विसोहए तेण पच्छित्तं ॥३०। जेथी पाप नाश पामे छे ते कारणथी पायच्छित् कहेवाय छे, अथवा प्रायः अपराधथी थयेल मलिन चित्त(जीवे)ने १. आह चित्त शब्दवडे चित्त अने चित्तवाळानो अमेद उपचार होवाथी जीव कहेवाय छे. चूर्णिकार पण तेम ज कहे छे- ' चित्त इति जीवस्य व्याख्या '.	**************************************

\*\*\*\*\*\*

शुद्ध करे छे तेथी प्रायश्वित्त. अहिं प्रायश्वित्त शब्दनी सिद्धि 'पृषोदरादि'थी सिद्ध थाय छे. तपकर्म-निर्विकृतिक-नीवी वगेरेने स्वीकारवा माटे सत्तरम्रं सत्र कहे छे-'दो दिसे'त्यादि० 'पश्चिम शब्द ज अमंगलरूप छे, तेथी तेनो परिहार करवा माटे अपश्चिम शब्द कहेल छे. मरणना अंतमां जे थनारी ते मारणांतिकी, अपश्चिम-छेछी ते अपश्चिममारणांतिकी. जेनाथी शरीर अने कषायादि क्षीण कराय छे ते संलेखना-तपाविशेष, ते अपश्चिममारणांतिकसंलेखनानी 'जूसण'त्ति-सेवा, सेवारूप धर्मवडे 'जूसियाणं'त्ति-तेमां जोडायेलाने अथवा संलेखनावडे झोषितानां-क्षीण शरीरवाळाओने, तथा जेओए भक्त ( अन्न ) अने पाणीनुं पच्चक्खाण करेल छे तेओने, द्वक्षनी माफक चेष्टा रहितपणे स्थिर थयेलाओने, अनशन विशेष स्वीकारनाराओने, मरणकालने नहिं इच्छनाराओने, विहर्जु-रहेवा माटे वे दिशा (पूर्व अने उत्तर) सन्मुख रहेवुं कल्पे. (२). एकंदर अढार दिशासत्रो छे तेमां जेनी व्याख्या करी नथी ते सुगम समजवा. ( स्व० ७६ )

॥ बीजा स्थानकना प्रथम उद्देशानी टीकानो अनुवाद समाप्त ॥



		• • • • • • • • • • • • • • • • • • •		i
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र	*****	अथ द्वितीयस्थानकाध्ययने हितीयः उद्देशः	**************************************	२ स्थानका- ध्ययने उद्देशः २
सानुवाद	*	अहिं प्रथम उद्देशकमां द्वित्वविशिष्ट जीव तथा अजीवना धर्मों कह्या. हवे बीजा उद्देशकमां तो द्वित्वविशिष्ट ज जीवना	×	
11 90 11	**	धमों कहेवाय छे. आ संबंधवडे प्राप्त थयेल आ उदेशकतुं प्रथम सत्र—	X	तत्रान्यत्र- कर्मवेद <b>न</b>
	*	जे देवा उड्ढोवैवन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारद्वितीया गतिरतिया	1 X	-
	×	गतिसमावन्नगा, तेसिणं देवाणं सता समितं जे पावे कम्मे कजाति तत्थगतावि एगातिया वेदणं	×.	৩৩ দ্বঙ্গমৃ
	<b>*</b> ***********************************	वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेअणं वेदेंति (१) णेरइयाणं सता समियं जे पावे कम्मे कज्जति	X	
	* *	तत्थगतावि एगतिया वेयणं वेदेंति अन्नत्थगतावि एगतिआ वेयणं वेदेंति, जाव पंचेंदिय-	×	
	**	तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं सता समितं जे पावे कम्मे कज्जति इहगतावि एगतिता वेयणं	×	
	×	वेयंति अन्नत्थगतावि एगतिया वेयणं वेयंति, मणुस्सवज्जा सेसा एकगमा (२) । सू० ७७	*	
	***	मुलार्थः-जे देवे ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे, ते वे प्रकारे छे-१ कल्पोपन्नक-सौधर्मादि देवलोकमां उत्पन्न थयेला	× ×	
	$\approx$	१. बाबूवाळो प्रतमां ते दुविहा पं० तं०-आवो पाठ छे, समितिनो प्रतमां नथी.	***	119611
	××		×	
			×	
	B 🕹 🛛		E X ≀	I

स्थितिक-स्थिर ज्योतिष्को, ते अढीद्वीपनी बहार छे, २ गतिरतिक-गतिसमापत्रको जे अढीद्वीपमां रहेला छे. ते देवोवडे निरंतर जे पापकर्म कराय छे-वंधाय छे ते पापना फलने देवभवमां रखा छतां ज केटलाएक देवो भोगवे छे, अने केटलाएक पापना फलने भवांतरमां वेदे छे. (१), नैरयिकोने सदा-निरंतर जे पापकर्म वंधाय छे ते त्यां रखा छतां पण केटलाएक नारको पापना फलने वेदे छे, अने केटलाएक भवांतरमां गया छतां पापना फलने वेदे छे. एवी रीते यावत पंचेंद्रियतिर्यंचो सुधी जाणवुं. मनुष्योने सदा-निरंतर जे पापकर्म वंधाय छे ते अहिं ज रखा छतां केटलाएक मनुष्यो पापना फलने भोगवे छे, अने केटलाएक भवांतरमां पण पापकर्मना फलने भोगवे छे. मनुष्यने छोडीने होष व्यंतर, ज्योतिष्क अने वेमानिको छे ते एक अभिलापवाळा छे- समान पाठवाळा छे (२). टीकार्थः- ' जे देवे ' त्यादि० आ खत्रनो पूर्वे कहेल खत्र साथे संबंध छे. प्रथम उदेशकना छेछा खत्रमां पादपापे- गमन अनशन कर्खु, तेनाथी केटलाएक जीवोने देवपणुं प्राप्त थाप्त छे, ते कारणथी देव विशेप कहेवावडे तेना कर्मवंधन अने वेदननुं प्रतिपादन करता थता कहो छे:- ' जे देवे 'त्त्यादि० जे सुरो-आगळ कहेवामां आवशे ते वैमानिक देवो, अनशन वोरेथी उत्पन्न थाय छे, ते केवा छे- ' उड्ढ ' त्ति ज्यादि० जे सुरो-आगळ कहेवामां उावशे ते वैमानिक देवो, अनशन यगोरेथी उत्पन्न थाय छे, ते केवा छे- ' उड्ढ ' त्ति कर्जलेकमां उत्पन्न थयेला ते जध्वोपेपन्नको वे प्रकारे छे- १ कल्पो- याकको-सौधर्मादि देवलोकमां उत्पन्न धयेला, तथा २ विमानोपपन्नको-येवेवक अने अन्तर विमानोमां उत्पन्न थयेला. विमानो-	uia	www.kobairin.org	Acriai
	<b>«※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※※</b>	स्थितिक-स्थिर ज्योतिष्को, ते अढोढीपनी बहार छे, २ गतिरतिक-गतिसमापन्नको जे अढीढीपमां रहेला छे. ते देवोवडे निरंतर ज पापकर्म कराय छे-बंधाय छे ते पापना फलने देवभवमां रह्या छतां ज केटलाएक देवो भोगवे छे, अने केटलाएक पापना फलने भवांतरमां वेदे छे. (१), नैरयिकोने सदा-निरंतर जे पापकर्म बंधाय छे ते त्यां रह्या छतां पण केटलाएक नारको पापना फळने वेदे छे, अने केटलाएक भवांतरमां गया छतां पापना फळने वेदे छे. एवी रीते यावत पंचेंद्रियतिर्यंचो सुधी जाणवुं. मजुष्योने सदा-निरंतर जे पापकर्म वंधाय छे ते अहिं ज रह्या छतां केटलाएक मजुष्यो पापना फळने भोगवे छे, अने केटलाएक भवांतरमां पण पापकर्मना फळने भोगवे छे. मजुष्यने छोडीने देवण्ड मजुष्यो पापना फळने भोगवे छे, अने केटलाएक भवांतरमां पण पापकर्मना फळने भोगवे छे. मजुष्यने छोडीने देवण्ड व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको छे ते एक अभिलापवाळा छे- समान पाठवाळा छे (२). टीकार्थ:- ' जे देवे ' त्यादि० आ खत्रनो पूर्वे कहेल खत्र साथे संबंध छे. प्रथम उद्देशकना छेछा खत्रमां पादपापे- गमन अनशन कर्द्य, तेनाथी केटलाएक जीवोने देवपणुं प्राप्त थाप्त छे, ते कारणथी देव विशेष कहेवावडे तेना कर्मवंधन अने वेदनचुं प्रतिपादन करता थका कहे छे:- ' जे देवे ' त्यादि० जे सुरो-आगळ कहेवामां आवशे ते वैमानिक देवो, अनशन वरेनचुं प्रतिपादन करता थका कहे छे:- ' जे देवे ' त्यादि० जे सुरो-आगळ कहेवामां आवशे ते वैमानिक देवो, अनशन वरेनचे उत्पन्न थाय छे, ते केवा छे- 'उड्ड ' त्ति० ऊर्ध्वलेकमां उत्पन्न थयेला ते ऊर्ध्वापेपन्नको वे प्रकारे छे- १ कल्पो- पपनको-सौधर्मादि देवलोकमां उत्पन्न थयेला, तथा २ विमानोपपन्नको-प्रैवेयक अने अनुत्तर विमानोमां उत्पन्न थयेला. विमानो-	
	×		×



11 99 11

Venura	www.kobauru.org	Acharya S	nn Kallassagarsun
		**********************	२ स्थान- काध्ययने उद्देशः २ तत्रान्यत्र- कर्मवेदनं ७७ स्रत्रम्

lura	www.kobalitil.org	Acharya
*** **		****
<b>*</b> **********	'नेरइयाण'मित्यादि० आ सत्र प्रायः सुगम छे. विशेष कहे छेः−'तत्थगयाचि अन्नत्थगयाचि' एवी रीते अभिलापवडे	×××××××
X	दंडक, यावत पंचोंद्रियातियँच सुधी जाणवो. आ कारणथी कहे छे-' जावे 'त्यादि० मनुष्योमां वळी अभिलाप विशेष जाणव	<del>ال</del> الا
×	योग्य छे, जेम ' इहंगताचि एगइया ' इति. सत्रकार-गणधरमहाराजा पण मनुष्य हता, आ कारणथी परोक्षरूप अनासक	- [ 💥
*** **	( दूर )ना कथनभूत ' तम्त्र ' शब्दने मूकीने मनुष्य–सत्रमां ' इह ' एवा शब्दनो  निर्देश कर्यो छे,  कारण के  मनुष्यभवन	
₹ <b>X</b> ₹	स्वीकारपणाए प्रत्यक्षासन्नवाचक इदम् शब्दनो विषय छे. एटला ज माटे कहे छे−'मणुस्सवज्जा सेसा एकगम' त्तिव	
× :	देवप एटले व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको सरखा अभिलापवाळा छे. द्रांका–पहेला खत्रमां ज ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोन	
X	विवक्षित अर्थ कहेल होवाथी अहिं फरीने ज्योतिष्कादि देवोनुं कथन करवावडे शो हेतु छे १ समाधान−प्रथम खत्रम	
	अनुष्ठान(अनञनादि क्रिया)ना फळने देखाडवाना प्रसंगवडे भेद(विशेष)थी कहेल छे. अहीं ते। दंडकना क्रमवडे सामान्यर्थ	计区
	जणावेल होवाथी दोष नथी. अहिं देखाय छे ते ते खत्रमां विशेषनुं कथन होवा छतां पण सामान्यनुं कथन छे, सामान्यन	
	कथनमां तो विशेषनुं कथन होय छे (२). त्यां रह्या थका वेदनाने अनुभवे छे एम कहेछं छे, आ कारणथी नारकादिन	
	गति अने आगतिनुं निरूपण करता थका कहे छे	× ×
×	नेरतिता दुगतिया दुयागतिया पं० तं०—नेरइण नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंते। वा पंचिं	
	दियतिरिक्खजोणिएहिंतों वा उववजेजा, से चेव णं से नेरइए णेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए	
****		× ** ***
X		

	indra www.kobautut.org	Acharya Shin Kallassayarsun G
	X X X X X X X X X X X X X X X X X X X	X
श्रीस्था-	💈 वा पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेजा, एवं असुरकुमारावि, णवरं, से चेव णं से असुरकुमारे	२ स्थानका-
नाङ्गसूत्र	💥 असरकुमारत्तं विष्पजहमाणे मणस्सत्ताए वा तिग्क्तिवजोणियत्ताएं वा गच्छिजा, एवं सदवदेवा (१),	× भ्ययने
सानुवाद्	דבואבודאו בעופתי בשותקים אלי הביקריים עייקריים הביריים איין איין איין איין איין איין איין א	🔶 उद्देशः २
11 800 11	्रु पुढविकाइया दुगतिया दुयागतिया पं० तं-पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइए-	📡 नारकाणां
•	🌋 ांहेता वा णोपुढांबेकाइएहिंतो वा उववज्जेजा, से चेवणं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे	** २ स्थानका- ** घ्ययने ** उद्देशः २ ** नारकाणां ** गत्यागती ** ७८ सत्रम् **
	🎽 पुढविकाइयत्ताँए वा णोपुढविकाइयत्ताए वा गच्छेजा, एवं जाव मणुस्सा (२) । सू० ७८	🔆 ७८ सत्रम्
	🌋 म्लार्थः—नैरयिको वे गतिमां जनारा अने वे गतिमांथी आवनारा कहेल छे, ते आ प्रमाणे–नैरंयिक ( नरकायुना	
	💥 उदयवाळो ), नैरयिकोने विषे उत्पन्न थयो. थको मनुष्योमांथी अथवा पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिकोसांथी उत्पन्न थाय तेथी नैरयिक,	
	🛞 । नरयिकपणाने छाडतों थको मनुष्यपणामां अथवा पंचद्रियतियेचयानिकमां जाय. एवी रीते असुरकुमारा पण जाणवा, विशेष कहं	
	🌋 छि-ते ज असुरकुमार, असुरकुमारपणाने छोडतो थको मनुष्यपणामां अथवा तिर्यंचयोनिकपणामां जाय. एवी रीते सर्व देवो जाणवा.	×
	📡   छ–ते ज असुरकुमार, असुरकुमारपणाने छोडतो थको मनुष्यपणामां अथवा तियंचयानिकपणामां जाय. एवँ१ रेति सर्व देवा जाणवा. 🌋   (१), पृथ्विकायिको बे गतिमां जनारा अने बे गतिमांथी आवनारा कहेल छे, ते आ प्रमाणे–पृथ्वीकायिक, पृथ्वीकायिकोने विषे	** ** **
	😴 🛛 उत्पन्न थयो थको पृथ्वीकायिकोमांथी अथवा नोपृथ्वीकायिक(पृथ्वीकायिक सिवायना)मांथी उत्पन्न थाय, ते ज पृथ्वीकायिक,	
	🙎 पथ्वीकायिकपणाने छोडतो थको प्रथ्वीकायिकपणामां अथवा नोप्रथ्वीकायिकपणामां जाय, एवी रीते यावत् मजुष्यो जाणवा. (२).	
	उत्पन्न थयो थको पृथ्वीकायिकोमांथी अथवा नोपृथ्वीकायिक(पृथ्वीकाथिक सिवायना)मांथी उत्पन्न थाय, ते ज पृथ्वीकायिक, पथ्वीकायिकपणाने छोडतो थको पृथ्वीकायिकपणामां अथवा नोपृथ्वीकायिकपणामां जाय, एवी रीते यावत् मनुष्यो जाणवा. (२). १ नरकायुना उदयवाळो ते नैरयिक कहेवाय. आ प्रमाणे ऋजुद्धत्रनयना अभिप्रायची दरेक दंडकमां समज्वुं. * *	** ** ** **

टीकार्थः—दंडक ( आ सूत्रपाठ ) सुगम छे, विशेष कहे छेः-नारको, आधारभूत मनुष्य अने तिर्यंचगतिस्वरूप वे गतिमां गमन छे जेओतुं ते ( नारको ) वे गतिवाळा छे. अवधि( सीमा )भूत मनुष्य अने तिर्यंचरूप वे गतिमांथी आवतुं छे जेओतुं ते वे आगतिवाळा छे. उदयमां आवेल छे नारकनुं आयुष्य जेने ते नारक कहेवाय छे. आ कारणथी कहे छे के- ' नेरहए णेरइएसु 'त्ति॰ नारकोमां आईं उदेशकमना विपर्यासथी प्रथम वाक्यवडे आगति कही, ' से चेव णं से 'त्ति॰ जे मनुष्यपणा बगेरेमांथी नरकमां गयेलो तेज आ नारक, अन्य नहिं. आ कथनवडे एकांत अनित्यपणानुं खंडन कर्धु. 'विप्प- जहमाणे 'ति॰ सर्वथा छोडतो थको, अहिं भूतकाळना भाववडे नारकनुं कथन छे. आ वाक्यवडे गति कही. तेजस्कायिको, तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए वे आगतिवाळा छे अने तिर्यंचनी अपेक्षाए एक गतिवाळा छे. आ वाक्यवडे ति कही. तेजस्कायिको, तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए वे आगतिवाळा छे अने तिर्यंचनी अपेक्षाए एक गतिवाळा छे. आ वाक्यनो स्वीकार करीने आ प्रकारे ( उत्क्रमथी ) व्याख्वानं कर्यु छे. ' एवं असुरकुमारावि 'त्ति॰ नारकनी माफक वक्तव्यता कहेवी. ' नवरं 'त्ति॰ आ विशेष छेः-केवल पंचेंद्रियतिर्यचोमां उत्पन्न थाय छे एम नहि, पण पृथ्वी, अप् अने वनस्पतिमां तेनी उत्पत्ति थाय छे. सामान्यथी कर्धु छेके- सं चेव णं से इत्यादि जाव तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्ज' त्ति॰ एवं सव्यवदेव' त्ति॰ असुरकुमारनी माफक देवपदवाळा बारे दंडक कहेवा. तेंजीनी एक्तेंद्रिय(पृथ्वी, अपू अने वनस्पति)मां पण उत्पत्ति थाय छे (१), 'णोपुटविनकाइएहिंते! ' त्ति॰ आ पृथ्वीकायिकना निषेधद्वारवडे अप्कायिक वगेरे सर्व ग्रहण करेल छे, कारण अहीं वे स्थान- १ आगतिनुं प्रथम व्याख्यान अने गतिनुं पछी व्याख्यान कर्युं छे. २ असुरकुमारथी याक्त् ईशान देवलोक पर्वत.	टीकार्थः—दंडक ( आ सत्रपाठ ) सुगम छे, विशेष कहे छेः—नारको, आधारभूत मनुष्य अने तियँचगतिस्वरूप वे गतिमां गमन छे जेशोनुं ते ( नारको ) वे गतिवाळा छे. अवधि( सीमा )भूत मनुष्य अने तियँचरूप वे गतिमांथी आवनुं छे तेओनुं ते वे आगतिवाळा छे. उदयमां आवेल छे नारकनुं आयुष्य जेने ते नारक कहेवाय छे. आ कारणथी कहे छे के— ' नेरइए ऐारइएसु 'त्ति॰ नारकोमां अहिं उदेशकमना विपर्यांसथी प्रथम वाक्यवडे आगति कही, ' से चेच णं से 'त्ति॰ जे मनुष्यपणा वगेरेमांथी नरकमां गयेलो तेज आ नारक, अन्य नहिं. आ कथनबडे एकांत अनित्यपणानुं खंडन कर्धुं. ' विष्प- जहमाणे 'त्ति॰ सर्वथा छोडतो थको, आहं भूतकाळना भाववडे नारकनुं कथन छे. आ वाक्यवडे गति कही. तेजस्कायिको, तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए वे आगतिवाळा छे अने तिर्यंचनी अपेक्षाए एक गतिवाळा छे. आ वाक्यवडे तोति कही. तेजस्कायिको, तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए वे आगतिवाळा छे अने तिर्यंचनी अपेक्षाए एक गतिवाळा छे. आ वाक्यवडे तोति कही. ' नचरं 'त्ति॰ आ विशेष छेः-केवल पंचेंद्रियतिर्यंचोमां उत्पन्न थाय छे एम नहि, पण पृथ्वी, अपू अने वनस्पतिमां तेनी उत्पत्ति थाय छे. सामान्यथी कह्युं छेके–'से चेच णं से इत्थादि जाच तिरिक्यज्ञोणियत्ताए वा गच्छेज्ज' त्ति॰ 'एवं सव्यदेव' ति॰ अमुरकुमारनी माफक देवपदवाळा बारे दंडक कहेवा. तेओनी एकेंद्रिय(पृथ्वी, अपू अने वनस्पति)मां पण उत्पत्ति थाय छे (१), 'णोपुडविकाइएएहिंतो ' ति॰ आ पृथ्वीकायिकना निषेधद्वारवडे अप्कायिक वगेरे सर्व प्रहण करेल छे, कारण अहीं वे स्थान- १ आगतिनुं प्रथम व्याख्यान अने गतिनुं पछी व्याख्यान कर्यु छे. २ असुरकुमारथी यावत्त ईशान देवलोक पर्वत.	^	www.hobditationg	toniaryc
१ आगतिनुं प्रथम व्याख्यान अने गतिनुं पछी व्याख्यान कयुं छे. २ असुरकुमारथी यावत् ईशान देवलोक पर्यंत.			गतिमां गमन छे जेओनुं ते ( नारको ) वे गतिवाळा छे. अवधि( सीमा )भूत मनुष्य अने तिर्यंचरूप वे गतिमांथी आवतुं छे जेओनुं ते वे आगतिवाळा छे. उदयमां आवेल छे नारकनुं आयुष्य जेने ते नारक कहेवाय छे. आ कारणथी कहे छे के- ' नेरइए णेरइएसु 'त्ति॰ नारकोमां आहिं उद्देशक्रमना विपर्यासथी प्रथम वाक्यवडे आगति कही, ' से चेव णं से 'त्ति॰ जे मनुष्यपणा वगेरेमांथी नरकमां गयेलो तेज आ नारक, अन्य नहिं. आ कथनवडे एकांत अनित्यपणानुं खंडन कर्युं. 'विष्प- जहमाणे 'त्ति॰ सर्वथा छोडतो थको, आहिं भूतकाळना भाववडे नारकनुं कथन छे. आ वाक्यवडे गति कही. तेजस्कायिको, तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए वे आगतिवाळा छे अने तिर्यंचनी अपेक्षाए एक गतिवाळा छे. आ वाक्यनो स्वीकार करीने आ प्रकारे ( उत्क्रमथी ) व्याख्यानं कर्युं छे. ' एवं असुरकुमारावि 'त्ति॰ नारकनी माफक वक्तव्यता कहेवी. ' नवरं 'त्ति॰ आ विशेष छे:-केवल पंचेंद्रियतिर्यंचोमां उत्पन्न थाय छे एम नहि, पण पृथ्वी, अप् अने वनस्पतिमां तेनी उत्पत्ति थाय छे. सामान्यथी कह्युं छेके-'से चेव णं से इत्यादि जाच तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्ज' त्ति॰ 'एवं सव्वदेव' त्ति॰ असुरकुमारनी माफक देवपदवाळा बारे दंडक कहेवा. तेंऔनी एकेंद्रिय(पृथ्वी, अपू अने वनस्पति)मां पण उत्पत्ति थाय छे (१), 'णोपुटविकाइएहिंतो ' त्ति॰ आ पृथ्वीकायिकना निषेधद्वारवडे अप्कायिक वगेरे सर्व ग्रहण करेल छे, कारण अहीं वे स्थान-	********************************

wir Jain Aradhana Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassagarsuri
श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ १०१॥ ***	कतुं वर्णर छे. नारक वर्जीने त्रेवीश दंडकमांथी पृथ्वीकायिकोमां उत्पन्न थाय छे. 'णोपुढवविकाइयत्ताए ' त्ति० देव अन नारकना (१४) दंडक छोडीने अपुकाय वगेरे (९) दंडेकमां जाय छे. 'एवं जाव मणुस्स ' त्ति० जेम प्रथ्वीकायिको, 'दुगतिया विगेरे अभिलापोबडे कहेला छे एवी रीते ए ज अभिलापोवडे अप्कायिक वगेरे मनुष्य पर्यंतना दंडको ' प्रध्विकायिक' राब्दन स्थानमां अप्कायिक वगेरेनो व्यपदेश ( कथन ) करनारा आ अभिलापोवडे कहेवा. व्यंतर वगेरे पूर्वे अतिदेश करायेल-कहेवाइ गयेला छे. (२). ( स० ७८ ) जीवना अधिकारथी भव्यादि विशेषणवडे सोठ खत्रपाठथी दंडकनी प्ररूपणा कहे छे:- दुविहा नेरइया पं० तं०-भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा गेरइया पं० तं०-आततसमावन्नगा चेव परंपरोववन्नगा चेव, जाव वेमाणिया २, दुविहा णेरइया पं० तं०-गातिसमावन्नगा चेव अगतिसमावन्नगा चेव, जाव वेमाणिया ३, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अपढमसमओववन्नगा चेव, जाव वेमाणिया १, दुविहा नेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अणाहारगा चेव, एवं जाव वेमाणिया ५, दुविहा गेरइया पं० तं०-आहारगा चेव अणाहारगा चेव, एवं जाव वेमाणिया ५, दुविहा गेरइया वं तंव, जाहारगा चेव अणाहारा हेव, एवं जाव वेमाणिया ५, दुविहा गेरइया वं अणिंदिया चेव, १. पुढवि शब्दणी एक पृथ्वीनो दंडक अने नोपुढवो शब्र्या नव दंडक कहेल छे.	, ** ध्ययने त ** उद्देशः २ तारकाणां भव्यत्वादि ** ७९ स्रत्रम् **

× ·	
जाव वेमाणिया ७, टुविहा नेरइया पं० तं०-पजत्तगा चेव अपजत्तगा चेव, जाव वेमाणिया ८, दुविहा नेरइया पं०तं०-सन्नि चेव असन्नि चेव, एवं पंचेंदिया सब्वे विगलिंदियवज्जा, जाव वाणमंतरा (वेमाणिया) ९, दुविहा नेरइया पं० तं०-भासगा चेव अभासगा चेव, एवमेगिंदियवज्जा सब्वे १०, दुविहा नेरइया पं० तं०-सम्मद्दिट्टीया चेव मिच्छाद्दिट्टिया चेव, एगिंदियवज्जा सब्वे ११, दुविहा नेरइया पं० तं०-परित्तसंसारिता चेव अणंतसंसारिया चेव, जाव वेमाणिया १२, दुविहा नेरइया पं० तं०- संखेजकालसमयट्टितीया चेव, असंखेजकालसमयट्टितीया चेव, एवं पंचेंदिया एगिंदियविगलें- दियवज्जा जाव वाणमंतरा १३, दुविहा नेरइया पं० तं०-सुलभवोधिया चेव टुलभबोधिया चेव, जाव वेमाणिया १४, दुविहा नेरइया पं० तं०-कण्हपविखया चेव, छाव देमाणिया चेव, जाव वेमाणिया १५, दुविहा नेरइया पं० तं०-चरिमा चेव अचरिमा चेव, जाव वेमाणिया १६। सू० ७९ मूलार्थ:बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ प्रमाणे-भवसिद्धिको अने अभवसिद्धिको, यावत् वैमानिक पर्यंत वब्व भेद जाणवा. (१), बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-अनंतरोपपन्नको अने परंपरोपपन्नको, यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत्	×××××××××××××××××××××××××××××××××××××
	** **

III Alaunana Ken	uia
	***
श्रीस्था-	*
नाङ्गसूत्र	*
सानुवाद	×

VII Jain Araunana Kenura	www.kobaurun.org	Acharya Shiri	Kallassagarsun G
श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ १०२ ॥ **********************************	(२), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आगतिसमापन्नको अने अगतिसमापन्नको, यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (३), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-प्रथमसमयोपपन्नको अने अप्रथमसमयोपपन्नको, यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (३), ( विग्रहगतिवाळा ) वे प्रकारे नैरयिको कह्या छे, ते आ-आहारको अने अनाहारको, एवी रीते यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (५), वे प्रकारे नैरयिको कह्या छे, ते आ-उच्छ्वासको अने नोउच्छ्वासको ( उच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता), यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (५), वे प्रकारे नैरयिको कह्या छे, ते आ-उच्छ्वासको अने नोउच्छ्वासको ( उच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता), यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (६), वे प्रकारे नैरयिको कह्या छे, ते आ-सेन्द्रियो ( इंद्रिय सहित ) अने अनिंद्रियो ( इंद्रिय रहित, इंद्रिय- पर्याप्तिवडे अपर्याप्तक. ) यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (७), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-पर्याप्तको अने अपर्याप्तको, यावत् वैमानिक पर्यंत पूर्ववत् (८), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-संज्ञी अने असंज्ञी, एवी रीते ( एकेंद्रिय अने विक- लेंद्रिय वर्जीने) सर्व पंचेंद्रिय यावत् व्यंतरं सुधी (वैमानिक सुधी) दंडकोमां बच्चे भेद जाणवा. (९), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-भाषको अने अभाषको, एवी रीते एकेंद्रिय वर्जीने वधा दंडकोमां बच्चे भेद जाणवा. (१०), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-सम्यग्दाष्टिको अने मिथ्यादाष्टिको, एवी रीते एकेंद्रिय वर्जीने वधा दंडकोमां बच्चे भेद जाणवा. (१०), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-सम्यग्दाष्टिको अने मिथ्यादाष्टिको, एवी रीते एकेंद्रिय वर्जीने सर्व दंडकोमां बच्चे भेद जाणवा. (११), बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-परित्तंसंसारिको अने अनंतसंसारिको, यावत् वैमानिक दंडक पर्यंत बच्चे भेद जाणवा. (११), बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-संख्याक काळसमयनी स्थितिवाळा अने असंख्यात काळसमयनी स्थितिवाळा, एवी रीते र व्यंतर पत्रेत दंडकमां संज्ञो अने आसंज्ञी बले जाय छे, तेनी अपक्षाए आंर्जाण्यां काळसण्यति होय छे त्यां सुधी असंज्ञो गणेल छे. संजीपणुं होतुं नधी. ( बेमाणिया ) पाठ जे मूल्मां लीधेल छे ते मनपर्याप्तिवडे ज्यां सुधी अपर्यात्त होय छे त्यां सुधी असंज्ञी गणेल छे.	××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	स्थानका- ध्ययने उद्देशः २ नारकार्णां क्यत्वादि ७९ स्ट्रम्
1:梁)	1	1 ( <b>**</b> 51	

एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय वर्जाने पंचेंद्रिय यावत् व्यंतर पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१३), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ- सुलभवोाधिको अने दुर्लभवोाधिको, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१४), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-ऋण्ण- पाक्षिको अने घुछ्णाक्षिको, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१४), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-ऋण्ण- पाक्षिको अने घुछ्णाक्षिको, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१५), वे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-चरम-छेछा (नरकना भवनी अपेक्षाए) भववाळा अने अचरम-जेओनो छेछो भव नथी ते, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्वे भेद जाणवा. (१६). टीकार्थ:	🧶 गतिसमापन्नको अने अगतिसमापन्नको जाणवा. (३), प्रथमसमयदंडकमां ' पढमे ' त्यादि० जेओने उत्पन्न थये प्रथम समय 🌋	inura	www.kobalilit.org	Acriarya
🗄 🖄 टेंटक्यों आहारको होगां होय के अनाहारको तो तिगरपतियां एक मयुर अशता वे मंघर मधी। होर के जे जुमुदा हीमां 🎊	💥 પ્લમના ગાણાતમાં હવેલા હાવ છે. ગાંગણાતમાં પા વિશ્વર્ણાપના લગા લાગવ બાવવા વ લાગવ છુવા હાવ છે. પ ગલવા હાવા 🢥 💥 १८ ४	* * *	सुलभबोधिको अने दुर्लभबोधिको, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१४), बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-कृष्ण पाक्षिको अने शुद्धपाक्षिको, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१५), बे प्रकारे नैरयिको कहेला छे, ते आ-चरम-छेछा (नरकना भवनी अपेक्षाए) भववाळा अने अचरम-जेओनो छेछो भव नथी ते, यावत् वैमानिक पर्यंत बब्बे भेद जाणवा. (१६). टीकार्थः	
🚱 दंडकमा आहारको हमेशा होय छे, अनाहारको तो विग्रहगतिमां एक समय अथवा बे संमय सुधी होय छे. जे त्रसना डीमां 🎑	₹ ₹	* *		-   X ;   X

avii Jaili Alaulialia Keliula	www.kobaliti.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun
श्रीस्था- नाङ्गम् त्र सानुवाद ॥ १०३ ॥ ******	मरण पामीने त्रसनार्डामां ज उत्पन्न थाय छे तेनी अपेक्षाए आ हकीकत जाणवी. अन्यथा-बीजी रीते त्रण संमय पर्यंत अनाहारक होय छे. (५), उच्छ्वासदंडकमां जे श्वासोच्छ्वास रु छे ते उच्छ्वासपर्याप्तिवडे पर्याप्तको अने तेथी भिन्न उच्छ्वासपर्याप्तिवडे अपर्याप्तको ते नोच्छ्वासको (६), इंद्रियदंडकमां इंद्रियपर्याप्तिवडे पर्याप्तको ते सेंद्रियो अने इंद्रियपर्याप्तिवडे अपर्याप्ता ते अनिंद्रियो (७), पर्याप्तदंडकमां पर्याप्तनामकर्मना उदयथी पर्याप्ता छे अने अपर्याप्तनामकर्मना उदयथी अपर्याप्ता छे. (८), संज्ञीदंडकमां मनपर्याप्तिवडे पर्याप्तको ते संज्ञी-संज्ञावाळा अने मनपर्याप्तिवडे अपर्याप्तनामकर्मना उदयथी अपर्याप्ता छे. (८), संज्ञीदंडकमां मनपर्याप्तिवडे पर्याप्तको ते संज्ञी-संज्ञावाळा अने मनपर्याप्तिवडे अपर्याप्तको ते असंज्ञी छे. 'एवं पंचिंदिए' त्यादि० एटले के जेम नारको संज्ञी अने असंज्ञीना भेदवडे कहेला छे तेम, 'एवं विगल्ठोंद्रीयवज्ज' त्ति० विकल-अपरिपूर्ण संख्याविग्रिष्ट इंद्रियो छे जेओने ते विकलोंद्रियोने (पृथ्वी वगेरे, द्रींद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुर्रार्द्रयो ) वर्जीने चोवीग्न दंडकमां जे बीजा पंचेंद्रियो असुर विगेरे होय छे ते सर्वने संज्ञी अने असंज्ञीपणाए कहेवा, अर्थात् छेल्खुं दंडक-' जाव वेमाणिय 'त्ति० यावत् वेमानिक दंडक पर्यंत पण एवी रीते ज कहेवा. कोई प्रतमां ' जाव वाणवंतरिय 'त्ति० १. सामान्य जीवनी अपेक्षाए आ क्ष्यन छे. २ आ व्याख्या सामान्य प्रकारे हे, कारण के अपर्याप्तनामर्कर्मना उदयबाळा ( लब्वि- ्राह्र कार्यक्र के त्त्र के क्रान्त उदयवाळा ( लब्वि-	<pre> (************************************</pre>
****	र. सामान्य आवना अपक्षाए आ कथन छ. र आ व्याख्या सामान्य प्रकार छ, कारण क अपयाप्तनामकमना उदयवाळा ( लाव्य- अपर्याप्तक ) नारक अने देवमां संभवे नहिं अने प्रस्तुत सूत्रमां ' जाव वेमाणिया ' कहेल छे, माटे अहि एम जणाय छे के जे जीवोए स्वयोग्य पर्याप्ति पूर्ण करेल नची एवा करणअपर्याप्त जीवोनी अपेक्षाए नारक अने देवो अपर्याप्त होय छे. अथवा करणअपर्याप्तिकालमां पण अपर्याप्तनामकर्मनो उदय होय एम संभवे छे.	1 7

dra	www.kobatirtn.org	Acnarya
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	एवो पाठ छे, त्यां आ प्रमाणे अर्थ समजवो-जे असंज्ञीओमांथी नारकादिपणाए उत्पन्न थाय छे ते असंज्ञीओ ज [ अपर्याप्त- अवस्थामां ] कहेवाय छे, अने असंज्ञीओ नारकादिथी आरंभीने यावत् व्यंतर सुधीमां उत्पन्न थाय छे परंतु ज्योतिष्क अने वैमानिकोने विपे उत्पन्न थता नथी. तेओने असंज्ञीपणानो अभाव होवाथी तेओनुं अहिं ग्रहण करेल नथी. (९), भाषादंडकमां-भाषापर्याप्तिना उदयमां भाषको छे अने भाषापर्याप्तिनी अपर्याप्तक अवस्थामां अभाषको छे. एकेंद्रियोने भाषापर्याप्ति नथी तेथी कहे छे-' एवमि 'त्यादि० (१०), सम्यग्टष्टिदंडकमां एकेंद्रियोने सम्यक्त्व नथी, हींद्रियो वगेरेने तो सास्वादन सम्यक्त्व होय, परन्तु एटला माटे कह्युं छे के-' एगिंदियवज्ञा सच्चे 'त्ति० (११), संसारदंडकमां संक्षिप्त-थोडा भववाळा ते परीत्तसंसारिको अने अनंतभववाळा ते अनंतसंसारिको (१२), स्थितिदंडकमां काळ शब्दनो अर्थ काळो वर्ण पण होय, समय शब्दनो अर्थ आचार पण थाय, परन्तु अहिं कालरूप समय ते काळसमय, वर्षना प्रमाणथी संख्या करवा योग्य छे. संख्यात काळसमयरूप स्थिति ( रहेवुं ) छे जेओनी ते संख्येयकाळसमयस्थितिको जाणवा. 'संखिज्ञ- कालटठिइय'त्ति० एवो पाठ पण कोई प्रतमां छे, पण ते सुगम छे. 'एवामि'ति० आ प्रमाणे नारकनी माफक वे प्रकारे स्थिति वाठा दंडको कद्या. शुं वधा य दंडको कद्या ? ए प्रश्नना जवाबमां कहे छे के-एम नहि, पण एकेंद्रिय अने विकलेंद्रियो ने वर्जीने असुर बगेरे पेचेंद्रियो कद्या, कारण के एकेंद्रियादिनी तो वावीश हजार वर्ष बगेरे संख्यातकाळनी स्थिति छे. पंचेंद्रियो पण शुं वधा य कद्या ? आ ग्रंकानो जवाब आपे छे के एम नहिं, फक्षत व्यंतर पर्यंत ( नारकथी व्यंतर सुधीना पंचेंद्रियो ), एओ ज	***************************************
	For Private and Personal Lise Only	₽¥

श्रीस्था- नाङ्गम्रत्र सानुवाद १। १०४॥ *****	उभय स्थितिवाळा ( संख्यात अने असंख्यातकाळनी स्थितिवाळा ) होय छे. ज्योतिष्क अने वैमानिको तो असंख्यातकाळनी स्थितिवाळा ज होय छे. (१३), बोधिदंडकमां बोधि-जैनधर्मनी प्राप्ति मुलभ छे जेओने ते मुलभवोधिको, अने जैनधर्मनी प्राप्ति दुर्लभ छे जेओने ते दुर्लभवोधिको. (१४), पाक्षिकदंडकमां ग्रुक्ल-विशुद्धपणाथी जे पक्ष-स्वीकार ते ग्रुक्लपक्ष, ते वडे जे विचरे छे ते शुक्लपाक्षिको. शुक्लपणुं तो क्रियावादीपणाए छे. कह्युं छे के-किरियावाई भव्वे णो अभव्वे सुक्कप- क्खिए णो किण्हपक्तिखए-कियावादी भव्य होय छे, पण अभव्य होता नथी, (तेम ) शुक्लपाक्षिक होय छे पण कृष्णपाक्षिक होतो नथी. अथवा शुक्लोनो-आस्तिकपणाए विशुद्धोनो, जे पक्ष-समूह ते शुक्लपक्ष, तेमां थयेला ते शुक्लपा क्षिको, अने तेनाधी विपरीत पक्षवाळा ते कृष्णपाक्षिको. (१५), चरमदंडकमां जेओने ते नारकादि छेल्लो भव होय अर्थात् फरीथी ते नारकादिमां उत्पन्न नर्हि थाय, कारण के मोक्षे जवाथी ते चरम कहेवाय छे अने वीजा एटले जेने फरीथी नारकादिमां उपजचुं छे ते अचरम कहेवाय छे. (१६). एवी रीते श्रस्आतथी अटार दंडको कहेवाया. (स० ७९) पूर्वना खत्रमां वैमानिको चरम अने अचरमपणाए कहेवाया, तेओ अवधिवडे अधोलोक वगरेने जाणे छे, तेथी तेना जाणवामां आवतां जीवना बे प्रकार वर्णवे छे— दोहिं टाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ तं०-समोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, आधोहि समोहतासमो-	र्भे संवेशसर्वतः संबद्धाः संदर्भसम्
(XXXXX)	जाणइ पासइ असमोहतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ, आधोहि समोहतासमो-	

*****************************	हतेणं चेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ १, एवं तिरियलोगं २, उड्रुलोगं ३, केवलकप्पं लोगं ४। दोहिं ठाणेहिं आया अधोलोगं जाणइ पासइ तं०-विउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ अविउव्वितेणं चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ आहोधि विउव्वियाविउव्वितेण चेव अप्पाणेणं आता अधोलोगं जाणइ पासइ १, एवं तिरियलोगं० ४।दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेइ, तं०-देसेणवि आया सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि आया सद्दाइं सुणेइ १, एवं रूवाइं पासइ २, गंधाइं अग्धाति ३, रसाइं आसादेति ४, फासाइं पडिसंवेदेति ५। दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ, तं०-देसेणवि आया ओभासइ सव्वेणवि आया ओभासति १, एवं पभासति २, विकुव्वति ३, परियारेति ४, भासं भासति ५, आहारेति ६, परिणामेति ७, वेदेति ८, निज्जरेति ९। दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ, तं०-देसेणवि देवे सद्दाइं सुणोति सव्वेणवि ३, एवं पभासति २, वकुव्वति ३, परियारेति ४, भासं भासति ५, आहारेति ६, परिणामेति ७, वेदेति ८, निज्जरेति ९। दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ, तं०-देसेणवि देवे सद्दाइं सुणोत्त सव्वेणवि ३वे सद्दाइं सुणेइ १, जाव निज्जरेति १४। मरुया देवा दुविहा पं० तं०-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव १, एवं किन्नरा २, किंपुरिसा ३, गंधव्वा ४, णागकुमारा ५, सुवन्नकुमारा ६, अग्गिकुमारा ७, वायुक्रमारा ८, देवा दुविहा	<b>«×××××××××××××××××××××××××××××××</b> ×××××××
× ×		* * *

www.kobatirth.org

	www.kobalinitoig	Acharya onin Railassagarsan c
भीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ।) १०५ ।। **********	पं० तं०-एगसरीरे चेव बिसरीरे चेव । सू० ८० । बिट्ठाणस्स बीओ उद्देसओ सम्मत्तो २-२ ॥ मृलार्थः	र उष्ट्रपार * वैक्रियेतर- * तोऽवधिः * देशसर्वतः * शब्दाद्याः * ८०स्रत्रम् * *

	www.kobdarthorg	7 10110
l		
	देशथी देव शब्दोने सांभळे छे अने सर्वथी देव शब्दोने सांभळे छे. (१) यावत् निर्जरे छे. (१४), मरुत् (लोकांतिक देव विशेष)	
	देवो बे प्रकारे कहेला छे, ते आ प्रमाणे-एक शरीरवाळा ( कार्मण शरीरवाळा ) अने वे शरीरवाळा ( कार्मण अने वैक्रिय	
	्यरीरवाळा ) (१), एवी रीते किन्नरेा (२), किंपुरुषो (३), गंघर्वो (४), नागकुमारो (५), सुपर्णकुमारो (६), अग्निकुमारो (७)	
	अने वायुकुमारो बब्बे प्रकारे छे. (८). देवो बे प्रकारे कहेला छे, ते आ प्रमाणे–एक शरीरवाळा अने बे शरीरवाळा. (सू० ८०)	
	टीकार्थः—' दोही 'त्यादि० चार सूत्रनी व्याख्या करतां कहे छे के-आत्मगत वे स्थान-प्रकारवडे जीव अधो-	~~~~
	लोकने अवधिज्ञानवडे जाणे छे अने अवधिदर्शनवडे देखे छे. 'समवहतेन ' वैक्रियसग्रद्घातगत स्वभाववडे	
	अथवा अन्य सम्रुद्घातगतस्वभाववडे, अने बीजी रीते सम्रुद्घात न करवारूप स्वभाववडे. ए ज व्याख्या करे छे–	
	' आहोही 'त्यादि० जे प्रकारे अवधि छे जेने ते यथावधि (प्राकृत शैलीथी आदिमां) दीर्घपणुं करेल छे) अथवा परमावधिथी	
	अधोवर्ती (न्यून) अवधि छे जेने ते अधोअवधि आत्मा-नियत क्षेत्र विषयवाळो अवधिज्ञानी क्यारेक समवहत अने क्यारेक	
	अयापता (पूर्ण) जनाप छ पण त जनापना जाता। जनत इस मिंगत के जनापता जनापता प्राता प्रमार तापहित जम मात्य जनापहित अने असमवहत एवी रीते बे स्वभाववडे जाणे-देखे छे. ' एवमि'त्यादि० ' एवमि 'ति० जेम अधोलोक समवहत अने	
	असमवहत बे प्रकारवडे अवधिज्ञानना विषयपणाए कहेल छे. एवी रीते तिर्यग्लोक वगेरे पण जाणवा. तिर्थग्लोक सत्र, ऊर्ध्व-	- B.
	लोक सूत्र अने केवलकल्प सत्र सुगम छे. विशेष कहे छे−केवल−परिपूर्णरूप पोताना कार्यना सामर्थ्यथी कल्प−केवलज्ञाननी	
	जेम अथवा परिपूर्णपणाए केवलज्ञान सदृश, अथवा केवलकल्प-सिद्धांतशैलीए परिपूर्ण लोक(चौद् राजलेकरूप)ने जाणे छे-	
	देखे छे ( २-४ ). वैक्रियसमुद्धात पछी वैक्रिय शरीर होय छे, आ हेतुथी वैक्रियशरीरनो आश्रय करीने अधोलोक	
2222	ુલ્લ છે ( ૨−૦ ), ગાળગલાશ્રષ્વાહ ગછા વાયલ શહાર હાવ છે, ગા હહુવા વાયલશાહળા બાજાવ વહાળ બવા©ાજ	
1222		1
ŝ		В

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १०६ ॥	अत्य उपयात ( इरकत ) ययाया दशया आस्वाद ( खाय ) छ एम जाणवु. (२-५). शब्दश्रवण वगर जावपारणामा कह्या, तना   जित्र प्रस्तावधी तेना परिणामांतरोने करे ले-'होन्हि'व्यपतिव प्रत प्रवो समय के विरोध प्र के-अवरुप्तपति जवर्ष भी	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
1		( SR (1

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

\*\*\*\*

\*\*\*\*\*

`\*\*\*\*

अने सर्वथी-संपूर्ण ग्ररीरनुं वैक्रिय करवावडे विकुर्वणा करे छे. (३), 'परियारेइ'ति० देग्नथी मनोयोग वगेरेमांथी कोइपण एक योगवडे अने सर्वथी त्रण योगवडे मैथुनने सेवे छे. (४), देशथी जीभना समभाग वगेरेथी अने सर्वथी समस्त ताछ वगेरे स्थानवडे भाषाने बोले छे. (५), देशथी मात्र मुखवडे अने सर्वथी ओज आहारनी अपेक्षाए ( सर्व आत्मप्रदेशवडे ) आहार करे छे. (६), आहारने ज परिणमावें छे. खल, रसना विभागवडे भक्ताञ्चय(होजरी)ना भागने बरोळ वगेरेवडे रुंधवाथी देशयी अने प्लीह वंगेरेथी रुंधेल न होवाथी सर्वथी. (७), देशथी हाथ वंगेरे अवयववडे अनुभवे छे अने सर्वथी अवयववडे आहार संबंधी परिणामने प्राप्त थयेल पुद्गलोने इष्ट अने अनिष्ट परिणामथी अनुभवे छे. (८), आहार करेला, परिणमेला अने अनुभवेला आहारना पुदुगलेनि देशथी अपान( गुदास्थान ) वगेरेथी अने सर्वथी संपूर्ण शरीरवडे प्रस्वेद्( परसेवा )नी जेम निर्जरे छे-त्याग करे छे. (९). आ चौद सूत्रो विवक्षित विषयवस्तुनी अपेक्षाए लेवा. तेमां देश अने सर्वनी योजना आ प्रमाणे समजवी. जेम देशथी पण विवक्षित शब्दोमांथी केटलाएक शब्दोने सांभळे छे अने सर्वथी समस्तपणे वधा शब्दोने सांभळे छे (१), एवी रीते रूप वगेरेने पण देशथी अने सर्वथी जाणी लेवुं (५), तथा (शब्दादि) विवक्षित वस्तुने देश अथवा सर्वथी प्रकाशे छे (६), विशेष प्रकाशे छे (७), एवी रीते विकुर्वणा संबंधी वस्तुने विकुर्वणा करे छे (८), परिचारणा योग्य स्तीशरी-रादि प्रत्ये परिचारणा सेवे छे (९), कहेवा योग्य शब्दनी अपेक्षाए देशथी भाषाने बोले छे (१०), सर्वथी भोजन योग्य वस्तुने खाय छे (११), आहरने परिणमावे छे (१२), वेदवायोग्य कर्मने अनुभवे छे (१३), देशथी अथवा सर्वथी एवी रीते निर्जरे पण छे. (१४), देश अने सर्ववडे सामान्यथी सांमळवुं वगेरे कहुं, विशेष विवक्षामां देशोतुं प्रधानपणुं होवाथी \*\*\*\*

धीस्था- नाज्ञसत् सानुवाद ॥ १०७॥ *******	तेओने आश्रयीने ते (शब्दादि) कहे छे:-' दोही' त्यादि० ए पण विवक्षित शब्दादि विषयनी अपेक्षाए चौद सत्र देशथी अथवा सर्वथी लेवा. आ हमणा ज कहेल भावो शरीर होय तो ज संभवे छे, आ कारणथी देवोनुं प्रधानपणुं होवाथी देवोना ज शरीरनुं निरूपण करवा माटे कहे छे-' मरुए ' त्यादि० आ आठ सत्र सुगम छे. विशेष कहे छे-मस्त्देवो लोकांतिक देव विशेष छे. कह्युं छे के-सारस्वता १ दिव्य २ वहून्य ३ रूण ४ गईनोय ५ तुषिता ६ व्याबाध ७ मस्तो ८ ऽरिष्ठा ९ श्रोति० (तत्त्वा० अ०४, सू० २६) ते देवो एक शरीवाळा होय छे, कारण के विग्रहगतिमां कार्मण श्ररीर छे, त्यार- पछी वैत्रियभावथी वे शरीरवाळा होय छे, बन्ने शरीरनो समाहार-एकत्रीभूत वे शरीर, ते छे जेओने ते वे शरीरवाळा, अथवा भवधारणीय ( मूळ ) ज शरीर ज्यारे होय त्यारे एक शरीर, ज्यारे उत्तरवीक्रेय करे त्यारे हो शरीर होय छे. किन्नर, किंपुरुष अने गंधर्व ए त्रण व्यंतरो छे अने नागहुमारादि चार भवनपतिओ छे. अग्रुक संख्यामां भेदत्तुं ग्रहण करेल छे ते बांजा भेदोने बंतांवनार छे, परंतु बीजानो निषेध करवा माटे नथी. सर्व जीवोने विग्रहगतिमां एक शरीरणानी अने विग्रहगति सिवायना समयमां वे शरीरपणानी प्राप्ति होवाथी सामान्यतः कहे छे-' देवा दुविहे 'त्यादि० सुगम छे ( सू० ८० ) ॥ बीजा स्थानना वीजा उद्देशानी टीकानो अनुवाद समाप्त ॥	<ul> <li>सम्रद्धात-</li> <li>वौकियेतर-</li> <li>वौकियेतर-</li> <li>तोऽवधिः</li> <li>देशसर्वतः</li> <li>शब्दाद्याः</li> </ul>

।a सक्राः	www.kobautr.org	Shary
~******		****
***	अथ द्वितीयस्थानकाध्ययने तृतीयः उद्देशः	××××
	बीजो उद्देशक कह्यो, हवे त्रीजानो आरंभ करे छे. त्रीजा उद्देशकनो बीजा उद्देशकनी साथे संबंध छे. अनंतर उद्देशकमां जीव–पदार्थ अनेक प्रकारे कह्यो, त्रीजा उद्देशकमां तो जीवने सहाय्य करनार पुद्गलधर्म, जीवधर्म, क्षेत्र अने द्रव्यरूप पदा-	****
×××	र्थनी प्ररूपणा कहेवाय छे. आ संबंधने दर्शावता आ उद्देशकना पहेला आठ सत्र नीचे प्रमाणे— दुविहे सद्दे पं० तं०–भासासदे चेव णोभासासदे चेव, १ भासासदे दुविहे पं० तं०–अवखरसंबद्धे	****
* * *	चेव णोअक्खरसंबद्धे चेव २, णोभासासद्दे दुविहे पं० तं०-आउजसद्दे चेव णोआउजसद्दे चेव ३, आउजसद्दे दुविहे पं० तं०-तते चेव वितते चेव ४, तते दुविहे पं० तं०-घणे चेव झुसिरे चेव ५,	****
×××	एवं विततेऽवि ६, णोआउजसदे दुविहे पं० तं०-भूसणसदे चेव नोभूसणसदे चेव ७, नोभूस-	****
××××	णसदे दुविहे पं० तं०-तालसदे चेव लत्तिआ सदे चेव ८, दोहिं ठाणेहिं सहुप्पाते सिया, तंजहा- साहन्नंताण चेव पुग्गलाणं सहुप्पाए सिया भिज्जंताण चेव पोग्गलाणं सद्रुप्पाए सिया । सू० ८१	*
***	मूलार्थःचे प्रकारे शब्द कहेल छे, ते आ-भाषाशब्दतालु अने जीभना संबंधथी बोलातो अने नोभाषाशब्द-भाषा	***
X		Į į

VII Jain Araunana Kenura	www.kobalitii.org	Acharya Shiri Kaliassayaisun G
श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १०८ ॥ *******	ग्रब्दना जेवो. (१), भाषाशब्द वे प्रकारे कहेल छे, ते आ-अक्षरना संबंधवाळो अने अक्षरना संबंध वगरनो (२), नोभाषाशब्द वे प्रकारे कहेल छे, ते आ-आतोद्य-ताडन करवाथी थयेल शब्द अने नोआतोद्य-ताडन वगर थयेल शब्द (३), आतोद्यशब्द वे प्रकारे कहेल छे, ते आ-तत (वीणा) वगेरेनो अने वितत-चामडाथी मढेल अने तंत्री रहितनो (४), तत पण वे प्रकारे कहेल छे, ते आ-धन अने सुपिर-पोछं (५), एम वितत पण वे प्रकारे छे (६), नोआतोद्य शब्द वे प्रकारे छे, ते आ-भूषणशब्द-झांझर वगेरे भूषणनो शब्द अने नोभूपणशब्द-भूषण सिवायनो (७), नोभूषणशब्द वे प्रकारे छे, ते आ-सुषणशब्द-झांझर वगेरे भूषणनो शब्द अने नोभूपणशब्द-भूषण सिवायनो (७), नोभूषणशब्द वे प्रकारे छे, ते आ-ललजन्य शब्द-हाथना तालथी थयेल ते तालशब्द अने लत्ति ( कांसीनो ) शब्द (८). वे स्थान( कारण )वडे शब्दोनी उत्पत्ति थाय, ते आ-एकत्रित थतां अयवा ताडना करातां पुद्रगलोधी शब्दोनी उत्पत्ति थाय, अने भेद थतां एटले चीरातां पुद्रगलोथी शब्दोनी उत्पत्ति थाय. (स॰ ८१) टीकार्थ:-आ खत्रनो पूर्व खत्रनी साथे नीचे प्रमाण संबंध छे-अहिं बीजा उद्देशकना अंत्य खत्रमां देवोना शरीरातुं निरूपण कर्यु पण ते शरीरवाळा तो शब्दादिना प्राहक होय छे, माटे अहिं प्रथम शब्दतुं निरूपण कराय छे. आ प्रमाणे संबंधनी व्याख्या सुगम छे, विशेष ए के भाषाशब्द-भाषापर्याप्तिनामकर्मना उदयथी प्राप्त थयेल जीवनो शब्द, अने बीजो नोभाषाशब्द (१), अक्षरसंबंध-अक्षरना उच्चारवाळो अने बीजो नोअक्षरसंबंध-अक्षरना उचार वगरनो (२), आतोद्य-ढोल वगोरेनो जे शब्द ते आतोद्य शब्द अने नोआतोद्य-वंश ( वांसडा ) वगेरेने फाडवाथी थयेल शब्द ते नोआतोद्य शब्द (३), तंत्री तेमज चम वगेरेथी वंधायेल जे आतोद्य ते ततशब्द (४) ते किंचित् धन (निविड ), जेम पिंजनिक ( पींजण ) वगेरे, अने कांइक शुपिर ( पोकल ), जम बीणा, पटह वगेरे, तेनाथी उत्पन्न थयेल जे शब्द ते चन अने शुपिर कहेवाय छे. (५), वितत-ततथी विलक्षण (भिन्न),	XX उद्देग्नः ३ XX भाषा- XX राब्दादि XX ८१ सत्रम् XX XX XX XX

तंत्री वगेरेथी रहित, ते वितत पण भाणक (थाळी) वगेरे वाजिंत्रनी जेम घन अने काईला वगेरे वाजिंत्रनी जेम शुपिर, तेनाथी उत्पन्न थयेल विततशब्द ते घन अने शुपिर कहेवाय छे. चोथा स्थानकमां पण फरीने ए ज कहेवामां आवशे. तत ते वीणादि उत्पन्न थयेल विततशब्द ते घन अने शुपिर कहेवाय छे. चोथा स्थानकमां पण फरीने ए ज कहेवामां आवशे. तत ते वीणादि वार्जित्र जाणवा अने वितत ते पटह (ढोल) वगेरे जाणवा. घन ते कांस्यताल वगेरे अने शूपिर ते वंश (वांसळी) वगेरे कहेल छे. ए प्रमाणे विवक्षाना प्रधानपणार्थी विरोध मानवो नहिं. (६), भूषण–चुपूर (झांझर) वगेरे अने नोभूषण–घरेणाथी जुदुं. (७), ताल–हस्तताल (हाथयी ताल आपवो ते) अने 'लत्तिय'त्ति॰ कंसिका–कांसीओ, ते आतोद्यपणाए आहं विवक्षित नथी. अथवा 'लत्तियासहे'त्ति॰ पाटु प्रहारथी थयेल झब्द. (८). शब्दना भेदो कह्या, हवे आहंथी शब्दना कारणचुं नर्श. अथवा 'लत्तियासहे'त्ति॰ पाटु प्रहारथी थयेल झब्द. (८). शब्दना भेदो कह्या, हवे आहंथी शब्दना कारणचुं तब्दनो उत्पाद थाय, अथवा सामसामे आघात पामवाथी शब्दनी उत्पत्ति थाय छे. साथे (भेळा) थयेला पुद्गलोनो–कायभूत शब्दनो उत्पाद थाय, अथवा सामसामे आघात पामवाथी शब्दनी उत्पत्ति थाय छे. (पंचमी विभक्तिना अर्थमां छठी छे.) जेम घंटा अने लाला(लोलक)नी जेम बादर परिणामने पामेल पुद्गलोनो संघानथी शब्द उत्पन्न थाय छे, एवी रीते वांसना विमागनी जेम भिद्यमान–फाडता–विभाग करता शब्दनी उत्पत्ति थाय छे. (स॰ ८१). हवे पुद्गलना संघात अने भेदना कारणचुं निरूपण करवा माटे कहे छे– दोहिं टाणोहिं पोग्गला साहण्णांति तं०–सइं वा पोग्गला साहन्नांति परेण वा पोग्गला साहन्नांति १. रार्शांगडुं, शरणाइ, भेरी वगेरे. १९
* कारणतुं निरूपण करवा माटे कहे छे- दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णांति तं०-सइं वा पोग्गला साहन्नांति परेण वा पोग्गला साहन्नांति * १. रणशींगडुं, शरणाइ, भेरी वगेरे. * १९

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुनाद ॥ १०९ ॥ ***	१, दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति तं०-सइं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति २, दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति, तं०-सइं वा पोग्गला परिसडंति परेण वा पोग्गला पैरिसाडंति ३, एवं परिवडंति ४, विद्धंसंति ५ । दुविहा पोग्गला पं० तं०-भिन्ना चेव अभिन्ना चेव १, दुविहा पोग्गला पं० तं०- भेउरधम्मा चेव नोभेउरधम्मा चेव २, दुविहा पोग्गला पं०तं०-परमाणुपोग्गला चेव नोपर- माणुपोग्गला चेव ३, दुविहा पोग्गला पं० तं०-सुहुमा चेव बायरा चेव ४, दुविहा पोग्गला पं० तं०- बद्धपासपुट्ठा चेव नोबद्धपासपुट्ठा चेव ५, दुविहा पोग्गला पं० तं०-परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव	<ul> <li>**</li> <li>* र स्थानका</li> <li>**</li> <li< th=""></li<></ul>
**************************************	६, दुविहा पोग्गला पं० तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव ७ दुविहा पोग्गला पं० तं०-इट्टा चेव अणिट्टा चेव ८, एवं कंता ९, पिया १०, मणुन्ना ११, मणामा १२ । सू० ८२, दुविहा सद्दा पं० तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव १, एवमिट्टा जाव मणामा २-६, दुविहा रूवा पं० तं०-अत्ता चेव अणत्ता चेव १, जाव मणामा २-६, एवं गंधा रसा फासा, एवमिाक्किके छ आलावगा भाणियव्वा १३-३०। सू० ८३ १ आगमोदय समितिनी प्रतमां परिसाडिज्ञांति एवो पाठ छे.	X ८२-८३ सत्रे X Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж

www.kobatirth.org

\* \* \*

\*\*\*

≫ ¥

\*\*\*

\*\*\*

	मूलार्थः-बे कारणवडे पुद्गलो एकठा थाय छे-बंधाय छे, ते आ प्रमाणे-पोतानी मेळे विस्तसास्वभाववडे पुद्गलो वंधाय छे अथवा पर-बीजा(प्रयोग)वडे पुद्गलो बंधाय छे. (१), बे कारणवडे पुद्गलो भेदाय-जुदा थाय छे, ते आ प्रमाणे- पोतानी मेळे अने बीजावडे पुद्गलो जुदा थाय छे. (२), बे कारणवडे पुद्गलो सडे छे, ते आ-पोतानी मेळे पुद्गलो सडे छे अथवा बीजावडे पुद्गलो सडे छे. (३), एवी रीते पडे छे. (४), विध्वंस-विनाश पामे छे. (५). बे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-जुदा थयेला अने जुदा न थयेला (१), बे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ-पोतानी मेळे भेदाय एवा स्वभाववाळा अने न भेदाय एवा स्वभाववाळा (२), बे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ-परमाणुपुद्गलो अने नोपरमाणु- पुद्गलो (स्कंधो) (३), बे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ-सक्ष्मपुद्गलो चार स्पर्शवाळा अने वादरपुद्गलो आठ स्पर्शवाळा (४), बे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ-सारी रीते मजबूत बंधायेला अने मात्र स्पर्श करायेला (५), बे प्रकारे पुद्गलो	****
	पुद्गलो कहेला छे ते आ–जीवोए परिग्रहपणे स्वीकारेला ते आत्ता अने जीवोए परिग्रहपणे नहि स्वीकारेला ते अनात्ता (७), वे प्रकारे पुद्गलो कहेला छे, ते आ–इष्टपुद्गलो अने अनिष्टपुद्गलो (८), एवी रीते कान्त पुद्गलो (९), प्रिय पुद्गलो (१०), मनोइपुद्गलो (११) अने मनने प्रिय ते मणामा. तेओथी विपरीत अकांत वगेरे जाणवा. (१२). (सू०८२). वे प्रकारे शब्दो कहेला छे, ते आ प्रमाणे–जीवे ग्रहण करेला अने जीवे ग्रहण नहि करेला (१), एम इष्ट, कांत विगेरे शब्दो यावत् मणामा पर्यंत, प्रतिपक्ष अनिष्ट वगेरे सहित जाणवा. (२–६). वे प्रकारे रूप कहेल छे, ते आ–जीववडे ग्रहण करायेल अने जीववडे	****
;		5 東

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद १। ११० ॥ **	प्रहण नहि करायेल (१), एवी रीते यावत् मणामा सुधी बब्बे भेद जाणवा. (२-६). एवी रीते गंध, रस अने स्पर्शना बब्वे भेद जाणवा. एवी रीते एकेकमां छ आलापको कहेवा. (१३-३०) (सू० ८३). टीकार्थः-'दोही'त्यादि० पांच सत्रो सुगम छे. विशेष ए छे के-'स्वयं वे'ति० स्वभावधी जेम वादळा वगेरेने विषे पुद्गलो संबंधवाळा थाय छे तेम, (आ कर्मकनृप्रयोग छे.) 'परेण वा' तथा पुरुष आदिवडे पुद्गलो संबंधवाळा कराय छे. (आ सकर्मकप्रयोग छे ) (१), एवी रीते भेदाय छे-जुदा पडे छे. (२), तथा पर्वतना शिखरथी जेम पडे छे तेम पुद्गलो पंडे छे. (३), कोढ वगेरेना निमित्तथी जेम आंगळी वगेरे सडे छे तेम पुद्गलो सडे छे. (४), वादळाना समूहनी जेम पुद्गलो नाश पामे छे. (५). हवे बार सत्रवडे पुद्गलोनुं ज निरूपण करता थका कहे छे-'दुविहे'त्यादि० जुदा पडेला अने जुदा न पडेला. (१), जे पोतानी मेळे भेदाय छे ते भिदुर अर्थात् भिदुरत्व धर्म छे जेओने ते भिदुरवाळा ( आ वाक्यमां भाव प्रत्यय अंतर्भूत छे), भिदुरत्व धर्मथी विपरीत ते नोभिदुरधर्मवाळा [ वज्र वगेरे ]. (२), जे अत्यंत सूक्ष्म ते परमाणुपुद्गलो अने स्कंघो ते	** २ स्थान- ** नाध्ययने उदेशः ३ ** पुद्गल- भेदादिः ** ८२-८३ ** स्रेत्र
11	नोपरमाणुपुद्गलो. (३), जेओनो सक्ष्मपरिणाम छे तेमज शीत, उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष लक्षणविशिष्ट चार ज स्पर्शवाळा ते भाषा वगेरे चार वर्गणाना पुद्गलो सक्ष्म छे, अने वादरो तो जेओनो बादर परिणाम छे तेमज पांच वगेरे स्पर्शवाळा जे छे ते औदारिक वगेरे वर्गणाना पुद्गलो छे. (४), शरीरनी चामडीथी रजनी जेम स्पर्शायला ते पार्श्वस्पृष्टो, तेओथी बंधायेला– शरीरमां पार्णानी जेम अतिशय मळेला, पार्श्वस्पृष्टरूप बंधायेला ते बद्धपश्चिस्पृष्टपुद्गलो. अहिं राजदंतादिगणथी 'बद्ध' शब्दनो प्रथम प्रयोग करेल छे. कह्युं छे के–पुटं रेणुं व तणुंमि बद्धमप्पीकयं पएसहिं ' ति० स्पृष्ट–शरीरमां रजनी जेम	* भेदादिः ** ८२८३ ** स्रेत्र ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **

	www.kobuliti.org
२	ल्पर्श करेल अने बद्ध-प्रदेशोवडे पोताना करेल अर्थात् तेनी साथे मळेल. आ बद्धपार्श्वस्पृष्ट पुद्गलो घार्णेद्रियादिने ग्रहणगोचर
	छ, तथा नोबध्धा-बंधायेला नहिं परंतु पार्श्वस्पृष्टो एटले बद्ध पदना निषेधवाळा पुद्गले श्रोत्रेंद्रियने ग्रहणगोचर छे. आव-
1	ध्यक स्त्रमां कह्युं छे के−
	पुट्ठं सुणेइ सद्दं, रूवं पुण पासई अपुट्ठं तु। गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्ठं वियागरे ॥ ३१ ॥
	स्पर्शमात्रवडे ज संबंध करायेल शब्दने ओत्रेंद्रिय सांभळे छे अने स्पर्श करायेला रूपने चक्षुइांद्रिय जुए छे, तथा गंध, रस
	अने स्पर्शा बद्धस्प्रष्ट करायेला ( सारी रीते मळेला ) होय तो घाणेंद्रिय, रसनेंद्रिय अने स्पर्शनेंद्रिय विषय करे छे ( ग्रहण करे
11.0	छे ). बध्धस्पृष्ट अने पार्श्वपृष्ट वे पद्ना निषेधमां श्रोत्रादिइंद्रियोनो ( उक्त पुद्गलो ) विषय न थाय परंतु चक्षुइंद्रियना विषयो
8	थाय. इंद्रियनी अपेक्षाए आ बद्धपार्श्वस्पृष्टतारूप पुद्गलोनी व्याख्या करी. एवी रीते जीवना प्रदेशनी अपेक्षाए अने अन्योन्यनी
	अपेक्षाए व्याख्या करवा योग्य छे. (५), 'परियाइय'त्ति० विवक्षित पर्यायने तजेला ते पर्यायातीत अथवा कर्म पुर्गलनी
3	तम समस्तपणे ग्रहण करेला ते पर्यायातीत. प्रतिपक्ष भेद सुगम छे अर्थात् समस्तपणे ग्रहण नहि करेला ते अपर्यायातीत. (६),
	१. गंधादि द्वव्यो करतां भाषानां द्रव्यो सूक्ष्म, तिशेव संख्यावाळा अने वासित करनार होय छे, वळी श्रोत्रेंद्रिय विषयने यहण
	करवामां घाणादि इंद्रियो करतां विशेष पटु होवाश्री स्पर्श मात्र ग्रहण करे छे. २. गंघादि द्रव्यो भाषादि द्रव्यनी अपेक्षाए स्थूल, अल्प अने 
ē	अवासित स्वभाववाळा छे. वळी विषयने ग्रहण करवामां आत्रेंद्रियनो अपेक्षाए घाणाझिइंद्रियो आरटु छे माटे ब इस्पृष्ट थवायो ग्रहण करे छे .

	जीवे परिग्रह मात्र पणाए अथवा शरीरादिपणे स्वीकारेला ते आत्ता अने प्रतिपक्ष नोआत्ता (७), अर्थक्रियाना अभिलापीओवडे इच्छायेला ते इष्ट पुद्गलो. (८), सुंदर अने विशिष्ट वर्ण वगेरेथी युक्त ते कांत पुद्गलो (९), प्रिय-प्रीतिकर अने इंद्रियोने आहलाद आपनार पुद्गलो (१०), सुंदरपणाना प्रकर्षथी जे मनवडे ' आ सारा जणाय छे' एवा विकल्पने उत्पन्न करनारा ते मनोज्ञ पुद्गलो (११), सुंदरपणाना प्रकर्षथी वधा य उपभोग करनारना मनने सदा य वछभ पुद्गले ते मणामा. निरुक्त विधिवडे भणाया (१२). बीच्चं व्याख्यान आ प्रमाणे-सामान्यपणे जीवोने सदा य वहाला ते इष्ट, हमेशां सुंदर भाववडे कांतिवाळा ते कान्त, सर्वने द्वेष करवा योग्य नहि ते प्रिय, कथनवडे पण मनने रसाडनार ते मनोज्ञ, विचारणावडे पण मनने वहाला ते मणारा. अनिष्टादि प्रतिपक्ष सर्व स्थले सुगम छे. (स० ८२) पुद्गलना अधिकारथी ज अनंतर (हमणा ज) कहेल प्रतिपक्ष सहित आत्तादि छ विशेषणविशिष्ट पुद्गलना धर्मरूप शब्दादिने 'दुविहा सद्दे'त्यादि० त्रीश सूत्रवडे कहे छे. 'दुविहे' त्यादि० त्रीश सत्रो सुगम छे. पुद्गलघर्मो कह्या, हवे धर्मना अधिकारथी जीवना धर्मोने कहे छे— दुविहे आयारे पं० तं०-णाणायारे चेव नोनाणायारे चेव १, नोनाणायारे दुविहे पं० तं०- दंसणायारे चेव नोदंसणायारे चेव २, नोदंसणायारे दुविहे पं० तं०-चरित्तायारे चेव नोचरित्तायारे चेव ३, नोचरित्तायारे दुविहे पं० तं०-तवायारे चेव वीरियायारे चेव ४। दो पडिमाओ पं० तं०- समाहिपडिमा चेव उवहाणपडिमा चेव १, दो पडिमाओ पं० तं०-विवेगपडिमा चेव विउसग्गपडिमा	*** २ स्थानका- ध्ययने उद्देशः ३ ज्ञानाद्या- चाराः प्रतिमा सामायिकं च ८४ सूत्रम् *** ***
15		1 C SMC 01

	www.kobauth.org	ACI
2		
2		
	चेव २, दो पडिमाओ पं० तं०-भदा चेव सुभदा चेव ३, दो पडिमाओ पं० तं०-महाभदा चेव सव्वतो	
	भदा चेव ४, दो पडिमाओ पं० तं०-खुडि़या चेव मोयपडिमा महछिया चेव मोयपडिमा ५, दो पडि	
	माओ पं० तं-जवमज्झे चेव चंदपडिमा वइरमज्झे चेव चंदपडिमा ६, दुविहे सामाइए पं० तं०-	5
		-
	अगारसामाइए चेव अणगारसामाइए चेव । सू० ८४	
	मूलार्थः—-बे प्रकारे आचार कहेल छे, ते आ प्रमाणे–ज्ञानाचार अने नोज्ञानाचार (१), नोज्ञानाचार बे प्रकारे कहेल छे	
	ते आ-दर्शनाचार अने नोदर्शनाचार (२), नोदर्शनाचार वे प्रकारे कहेल छे, ते आ-चारित्राचार अने नोचारित्राचार (३), नोचा	
ĺ	रित्राचार बे प्रकारे कहेल छे, ते आ-तपाचार अने वीर्याचार (४), बे श्रतिमा ( प्रतिज्ञा ) कहेल छे, ते आ-समाधिप्रतिम	
	अने उपधानप्रतिमा-तप विशेष (१), बे प्रतिमा कहेल छे, ते आ-विवेक( त्याग )प्रतिमा अने कायोत्सर्गप्रतिमा (२), वे	
	प्रतिमा कहेल छे, ते आ–भद्राप्रतिमा अने सुभद्राप्रतिमा (३), वे प्रतिमा कहेल छे, ते आ–महाभद्रा अने सर्वतोभद्राप्रतिम	
	प्रातमा कहल छ, त आन्मद्राप्रातमा अन सुमद्राप्रातमा (२), व प्रातमा कहल छ, त आन्महामद्रा अन सवतामद्राप्रातम	
	(४), वे प्रतिमा कहेल छे, ते आ-लघुमोकप्रतिमा अने वडीमोकप्रतिमा (५), वे प्रतिमा कहेल छे, ते आ-यवमध्यचंद्रप्रतिम	
	अने वज्रमध्यचंद्रप्रतिमा (६), बे प्रकारे सामायिक कहेल छे, ते आ-गृहस्थनो सामायिक-देशविरतिरूप अने अनगारनो सा	
	मायिक-सर्वविरतिरूप. ( स्व० ८४ )	
	टीकार्थः–'दुविद्दे आयारे' त्यादि० चार सत्र सुगम छे, विशेष कहे छे–आचरण करवुं ते आचार–व्यवहार, ज्ञान–श्रुत	
-		

	www.kobaliti.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun Gya
श्रस्थिा- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ।। ११२ ॥	<ul> <li>ज्ञान, ते संपंधी काल बगेरे आठ प्रकारने। आचार ते ज्ञानाचार. कहुं छे—</li> <li>काले विणए बहुमाणे, उवहाणे चेव तहय निह्नवणे। वंजणमत्थ तटुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥३२॥ <ul> <li>(१) क्षुतना कालमां भणवुं ते कालाचार, (२) विनयपूर्वक भणवुं ते विनयाचार, (२) अंतरंग प्रीतिपूर्वक भणवुं ते बहुमाना- चार, (४) ज तपवडे सत्रादिक उप-नजीक धीयते-कराय छे ते उपधानाचार, (५) तथा अनिह्ववण एटले स्वादिवुं</li> <li>अनपलाप-उत्थापन करवुं नहिं, (६) शुद्ध सत्र पाठ जेम होय तेम वोलवुं ते व्यंजनाचार, (७) सत्रनो यथार्थ अर्थ करवो ते अर्था- चार अने (८) सत्र तेमज अर्थ उभयनुं यथार्थ कथन करवुं ते तदुभयाचार-आ प्रमाणे ज्ञानना आठ आचार छे. (१), नो- चार अने (८) सत्र तेमज अर्थ उभयनुं यथार्थ कथन करवुं ते तदुभयाचार-आ प्रमाणे ज्ञानना आठ आचार छे. (१), नो- ज्ञानाचार-ज्ञानथी विलक्षण ते दर्शनादि आचार, दर्शन एटले सम्यक्त, तेना निःशंकितादि आठ प्रकारना आचार छे. कर्धु छे:—</li> <li>णिस्संकिय निर्क्वखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्टी य। उवत्रूह थिरीकरणे, वच्छछपभावणे अट्ट ॥३३॥</li> <li>(१) निप्रंथ प्रवचनमां शंकानो अभाव ते निःशंकित, (२) अन्य दर्शनने प्रहण करवानी इच्छानो अभाव ते निष्कांक्षित, (३) धर्मना फलना संदेहनो अभाव ते निर्विचिकित्सा, (४) तत्त्वार्थमां मूढदष्टिने अभव ते अमूढदर्ष्ट, (५) गुणवाननी प्रशंसापूर्वक गुणनी द्वदि करवी ते उपदृंहा, (६) धर्मथी चलित थनारन स्थिर करवुं ते स्थिरीकरण, (७) साधर्म्पिकोनी सेवा-भक्ति ते वात्सल्य अने (८) जिनशासननी प्रमावना-उद्योत करवो. आ आठ आचार दर्शनना छे. (२), नोदर्शनाचार ते चारित्रादि. चारित्राचार समिति अने गुप्तिरूप आठ प्रकारे छे. कर्धु छे:—</li> </ul></li></ul>	शानाधा- ** चाराः ** प्रतिमा ** सामायिकं ** च ** ८४ स्त्रम् **

nuia	www.kobatiliti.org	Acharya
``````````````````````````````````````	पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अटुविहो होइ नायव्वो ॥३४॥ पांच समिति अने त्रण गुप्तिवडे चित्तनी स्थिरतामां योगना ग्रुख्य व्यापार युक्त आठ आचार चारित्रना जाणवा. (३), नोचारित्राचार ते तपाचार वगेरे. तेमां तपाचार वार प्रकारे छे. कह्युं छे के— बारसाविहांमिवि तत्रे, सब्भितरबाहिरे कुसलुदिटे । अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥३४॥ कुशल पुरुषोए जोयेल [ कहेल ] अभ्यंतर सहित बाह्य वार प्रकारना तपने विषे पण ग्लानि रहितपणाए आजीविकानी इच्छा रहित-आशंसा विना ज [ तप करे छे ] ते ज तपाचार जाणवो. (४), वीर्याचार एटले ज्ञानादिने विषे शक्तिनुं गोपन करवुं-शक्तिने छ्याववी नहि तेमज शक्तिनुं उल्लंघन पण करवुं नहि. कह्युं छेः—	×××
* * * * * * * *	अणिगूहियबल्ठविरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउतो । जुंजइ य जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥३५॥ प्रगटबल-वीर्यविशिष्ट अने उपयोगवाळो-सावधान थयो थको जे यथोक्त ( ज्ञानादि ) प्रत्ये पराक्रम करे छे अने यथा- शक्ति जोडाय छे ते वीर्याचार जाणवो. (५). हवे वीर्याचारनुं ज विशेष कथन करवा माटे छ सत्रोने कहे छे-'दो पडिमे ' त्यादि० प्रतिज्ञा पर्यंत स्वीकार ते प्रतिमा, प्रश्नस्तभावरूप शांति ते समाधि, तेनी प्रतिमा ते समाधिप्रतिमा. दशाश्रुतस्कंध सत्रम	××
*****	आ समाधिप्रतिमा बे भेदवाळी कहेली छे. श्रुतसमाधिप्रतिमा अने सामायिकादिचारित्रसमाधिप्रतिमा. (१) समाधिप्रतिमा, (२) उपधान-तप तेनी प्रतिमा ते उपधानप्रतिज्ञा, ते भिक्षुनी बार प्रतिमा अने श्रावकनी इंग्यार प्रतिमारूप छे. (१), विवेचन-विवेक	×
		ß

ध्ययने

उद्देशः ३

ज्ञानाद्या-

चाराः प्रतिमा सामायिकं

च

८५ सूत्रम्

11 883 11

२ स्थानका

	in the second seco	il yci i	~
र्धास्था- नाङ्गसत् सानुवाद ॥ ११३ ॥	अर्थात् त्याग, ते अंतरंग कषायादिनो अने अजुचित बाह्य-गण (गच्छ), शरीर, भातपाणी विगेरेनो त्याग, तेनी प्रतिज्ञा ते विवेक- प्रतिमा, कायोत्सर्भचुं करखुं ते व्युत्सर्गप्रतिमा. (२), प्रत्येक पूर्वादि चार दिशामां क्रमशः चार प्रहर कायोत्सर्भ करवारूप बे अहोरात्रना प्रमाणवाळी जे प्रतिमा ते भद्राप्रतिमा. सुभद्राप्रतिमा पण ए ज प्रकारे संभवे छे, कारण के शास्त्रमां न जोयेल होवाथी तेचुं वर्णन कर्युं नथी. (३), महाभद्रा पण तेमज जाणवी. विशेष कहे छे-अहोरात्र (आठ प्रहर) प्रत्येक दिशामां क्रमशः कायोत्सर्गरूप चार अहोरात्र प्रमाणवाळी जे प्रतिमा ते महाभद्रा अने सर्वतोभद्रा तो प्रत्येक दश दिशाओमां क्रमशः अहोरात्र कायोत्सर्गरूप दश अहोरात्र प्रमाणवाळी जे प्रतिमा ते महाभद्रा अने सर्वतोभद्रा तो प्रत्येक दश दिशाओमां क्रमशः अहोरात्र कायोत्सर्गरूप दश अहोरात्र प्रमाणवाळी छे. (४), मोकप्रतिमा ते प्रसवणप्रतिमा, ते काळना भेदवडे नानी अने मोटी होय छे. व्यवहारस्वत्रमां ते माटे कर्खुं छे—' खुड्डियं णं मोयपडिमं पडिवण्णस्से ' त्यादि० आ मोकपडिमा द्रव्यथी प्रसवण विषयवाळी, क्षेत्रथी गाम वगरेथी बहार, काल्यी शरद् अने प्रीष्म कतुमां स्वीकाराय छे, जो भोजन करीने स्वकिाराय तो चतु- र्दश भक्त(छ उपवास)वडे समाप्त कराय छे, जो भोजन न करीने स्वीकाराय तो सोल भक्त (सात उपवास)वडे समाप्त कराय छे, भावथी तो दिव्यादि( देव मनुप्य बगेरे )ना उपसर्भान्धे सहन करवुं, ते क्षुछक्त ( नानी ) प्रतिमा, एम ज मोटी पतिमा पण जाणवी. विश्वेष कहे छे–जो भोजन करीने स्वीकाराय तो सोल भक्तवडे सामाप्त कराय छे अने भोजन विना जो स्वीकाराय तो अढार भक्तवडे समाप्त कराय छे. (५), यवनी जेम मध्य छे जेणीनो ते यवमध्या, चंद्रनी माफक कळानी वृद्धि अने हानिवडे जे प्रतिमा ते चंद्रप्रतिमा, ते आ प्रमाणे–गुक्कप्रेयका पढवाने दिवसे एक कवळ (कोळियो) आहार करीने, त्यारपछी दिन दिव प्रत्य अकेक कवळनी व्रदिवडे पूर्णिमाना दिवसे पंदर कवळ आहार करे, अने कृष्णपक्षना पडवाने दिवसे पंदर कवळनो आहार करीने		1

	www.kobdititi.kg	
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx		
K i		13
Š		
8	प्रत्येक दिवसे अकेक कवळनी हानिवडे यावत् अमावास्याना दिवसे एक कवळ आहार करे ते यवमध्याचंद्रप्रतिमा. जे	
	प्रतिमामां ऋष्णपक्षना पडवाने दिवसे पंदर कवळ आहार करीने अकेक कवळनी हानिवडे अमावास्याने दिवसे एक कवळ अने	
0.0	शुक्लपक्षना पडवाने दिवसे एक ज कवळ आहार करीने त्यारपछी पुनः अकेक कवळनी वृद्धिवडे यावत पूर्णिमाने दिवसे पंदर	1000000
Ş	कवळ आहार करे, एटले के वज्रनी जेम मध्यभाग जेणीमां झीणो होय ते वज्रमध्याचंद्रप्रतिमा. एवी रीते भिक्षादिने विषे पण	B
Ş		
2	जाणवुं. (६). प्रतिमाओ सामायिकवाळाओने होय छे, आ कारणथी सामायिकने कहे छे-'दुविहे' त्यादि० सम-ज्ञान, दर्शन	
ŝ.	अने चारित्रनो, आय-लाभ ते समाय, ते ज सामायिक छे. ते सामायिक अगारवान्-गृहस्थ अने अनगार-साधुरूप स्वामीना	5
<u>}</u>	भेदथी देशविरति अने सर्वविरतिरूप बे प्रकारे छे. ( स.० ८४ ) जीवधर्मना अधिकारमां जीवना बीजा धर्मोने ' दोण्हं	
2	उववाए ' इत्यादि चोवीश सत्रवडे कहे छे	
2	दोण्हं उववाए पं०तं०-देवाण चेव नेरइयाण चेव १, दोण्हं उव्वद्टणा पं० तं०-णेरइयाण चेव	
2		
	भवणवासीण चेव २, दोण्हं चयणे पं० तं०-जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव ३, दोण्हं गब्भव-	
	कंती पंगतं०-मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ४, दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे पंगतं०-	
2007	मणुस्साण चेव पंचेंदियतिरिक्खजोाणियाण चेव ५, दोण्हं गब्भत्थाणं युड्डी पं० तं०-मणुस्साण चेव	
		13
5		B
č.		R

Jain Alaunana Kenula	www.kobalililioig	Acharya Shiri Kallassayarsun
श्रीसथा- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ११४॥ *******	पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव ६, एवं निव्वुड्डी ७, विगुव्वणा ८, गतिपरियाए ९, रसमुग्धाते १०, कालसं- जोगे ११, आयाती १२, मरणे १३, दोण्हं छविपव्वा पं० तं०-मणुस्साण चेव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव १४, दो सुक्कसोणितसंभवा पं० तं०-मणुस्सा चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चेव १५, दुविहा ठिति पं० तं०-कायद्विती चेव भवद्विती चेव १६, दोण्हं कायद्विती पं० तं०-मणुस्साणं चेव पंचिं- दियतिरिक्खजोणियाण चेव १७, दोण्हं भवद्विती पं० तं०-देवाण चेव नेरइयाण चेव १८, दुविहे आउए पं० तं०-अद्धाउए चेव भवाउए चेव १९, दोण्हं अद्धाउए पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचिंदिय- तिरिक्खजोणियाण चेव २०, दोण्हं भवद्विती पं० तं०-देवाण चेव नेरइयाण चेव १८, दुविहे आउए पं० तं०-अद्धाउए चेव भवाउए चेव १९, दोण्हं अद्धाउए पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचिंदिय- तिरिक्खजोणियाण चेव २०, दोण्हं भवाउए पं० तं०-देवाण चेव गेरइयाण चेव २१, दुविहे कम्मे पं० तं०-पदेसकम्मे चेव अणुभावकम्मे चेव २२, दो अहाउयं पाल्ठेंति तं०- देवच्चेव नेरइयचेव २३, दोण्हं आउयसंवट्टए पं० तं०-मणुस्साण चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण चेव २४। सू० ८५ म्लार्थः-चे(प्रकारना) जीवोनो उपपात कहेल छे, ते आ प्रमाणे-देवोनो अने नारकोनो. (१), बे प्रकारना जीवोनी उढर्चना (मरण) कहेल छे ते आ-नैरयिकोनी अने भवनवासीओनी. (२), बे प्रकारना जीवोत्तुं च्यवन कहेल छे, ते आ-ज्यो-	<ul> <li>**</li> <li>* स्थान-</li> <li>**</li> /ul>

₩

×		
*		X
*		X
	तिष्कोनुं अने वैमानिकोनुं. (३), वे प्रकारना जीवोनी गर्भने विषे व्युत्क्रांतिउत्पत्ति कहेल छे, ते आ–मनुष्योनी अने पंचोंद्रिय-	88 I.
		۲
3 <b>X</b> }	तिर्यग्योनिकोनी. (४), वे प्रकारना गर्भस्थ जीवोने आहार कहेल छ, ते आ-मनुष्योने अने पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिकोने. (५),	×
	वे प्रकारना गर्भस्थ[ गर्भमां रहेलाओना शरीर ]नी इद्धि कहेल छे, ते आ-मनुष्योनी अने पंचेंद्रियतिर्यंचकोनी. (६), एवी	XX
	रीते निर्वेद्धि-शरीरनी हानि. (७), विकुर्वणा. (८), गतिपर्याय-गर्भमांथी बहार जवुं. (९), समुद्धात-मारणांतिकाइि. (१०),	××
X	રાય ખરાજ સરાજા શાળા (૦), વિજીવળા, (૦), ગાળવવાય ગામમાંથા પકાર ખલુ. (১), સંતુર્વાત-મારળાતિમાં (, (૬૦),	<b>\$</b>
{ <b>*</b>	कालवडे करायेली(गर्भनी) अवस्था. (११), गर्भथकी नीकळवुं-जन्मवुं. (१२), मरण. (१३), जाणवा. बेने चामडीवाळा संधिना	×
`*******************************	बंधनो कहेला छे, ते आ प्रमाणे-मनुष्योने अने पंचेंद्रियतिर्यंचोने. (१४), वे शुक्र( वीर्य ) अने शोणित( रुधिर )वडे उत्प-	*
		<b>.</b>
X	त्तिवाळा कहेल छे, ते आ-मनुष्यो अने पंचेंद्रियतिर्यंचो. (१५), वे प्रकारे[ जीवनी ] स्थिति कहेली छे, ते आ-कायस्थिति	××
	अने भवस्थिति. (१६), बेनी कायस्थिति कहेली छे, ते आ–मनुष्योनी अने पंचेंद्रियतिर्यंचोनी. (१७), बेनी भवस्थिति कहेली छे,	$\mathbf{\hat{x}}$
	ते आ-देवोनी अने नारकोनी. (१८), बे प्रकारे आयुष्य कहेल छे, ते आ प्रमाणे-काळप्रधान आयुष्य अने भवप्रधान आयुष्य.	*
$\mathbb{R}$	(00) તેને જેને ગામ માર્ગ નાંગ તે તે તે નુ નાંગ છે. તે ગા તમાંગ માંજવાને ગાંડુવ્ય ગયે મયત્રવાને ગાંડુવ્ય,	<b>3</b>
3 <b>X</b> 3	(१९), बेनो अद्धायु-काळप्रधान आयुष्य कहेल छे, ते आ-मनुष्योने अने पंचेंद्रियतिर्यंचोने. (२०), बेनुं भवप्रधान आयुष्य	×
	कहेल छे, ते आ–देवोनुं अने नारकोनुं. (२१), वे प्रकारे कर्म कहेल छे, ते आ–प्रदेशकर्म अने अनुभव कर्म.(२२), वे	* *
	यथायु (जेवी रीते वांध्युं होय तेवी रीते आयुष्य पाळे छे-भोगवे छे) कहेल छे, ते आ-देवी अने नारको. (२३), बेनुं आयुष्य	×.
$\mathbf{X}$	મયાલુ (ગયા રાપ માંગ્લુ દામ પંચા રાપ ગાલુંગ્ય યોજ છે–માંગય છે) વહેલ છે, તે બા–લવા બન મારવા. (૧૧), વલું બાલુંગ્ય	×
{ <b>X</b> }	संवर्त्तक(उपक्रमवाछं) कहेल छे, ते आ-मनुष्योनुं अने पंचेंद्रियातिर्यंचोनुं (२४).	X
×.	टीकार्थः-आ खत्रे। सुगम छेः विश्वेष एके-'दोण्हं' ति० चे प्रकारना जीव स्थानकनुं उत्पन्न थवुं ते उपपात. गर्भ अने संमूर्छन-	××
		<b>Ö</b>
×	२०	××
8		×

	www.kobalititi.org	Acharya Shin Kallassayarsun G
श्वीस्था- नाङ्गच्छत्र सानुवाद ॥ ११५॥ **********	लक्षण जन्मना वे प्रकार छे तैथी आ विलक्षण ( जुदुं ) जन्मविशेष छे. दीव्यन्ति इति देवाः-दीपे छे ते देवो. चार निकॉप्तना देवो अने पूर्वनी माफक कहेल नारकोनो ज उपपात-उपजवुं थाय छे. (१), उद्वर्त्तचुं ते उद्वर्त्तना अर्थात् देवादिनां श्ररीरथी नीकळवुं-मरण जाणवुं. ते नैरयिको अने भवनवासी देवोने ज ए प्रमाणे व्यपदेश कराय छे कारण के मनुष्यादिने तो मरण ज कहेवाय छे. नारकोनी तथा भवनोने विपे-अधोलोकमां रहेला देवोना आवास विशेषोमां वसवानो स्वभाव छे जेओनो ते भवनवांसीओनी उद्वर्त्तना छे. (२), ज्योतिष्को अने वैमानिकोनुं मरण ते च्यवन कहेवाय छे. ज्योतिष्णु-नक्षत्रोमां उत्पन्न थयेल ते ज्योतिष्को. आ प्रमाणे शब्दव्यु:पत्ति छे, पण प्रवृत्तिना निमित्तनो आश्रय करवाथी तो ज्योतिष्को चंद्र वगेर छे. ऊर्ध- लोकमां वर्तनारा-विमानोमां उत्पन्न थनारा सौधर्मादिवासी देवो, ते वैमानिको. तेवन्नेनुं (मरण) च्यवन कहेवाय छे. (३), गर्भ- गर्भाशयमां जे उत्पत्ति ते गर्भच्युरकांति, मनुना अपल्यो-संतानो ते मनुष्यो तेओनी अने जे तिर्च्छा जाय छे ते तिर्यंचो, तेओना संबंधवाळी योनि-उत्पत्ति हो सर्भच्युरकांति, मनुना अपल्यो-संतानो ते मनुष्यो तेओनी अने जे तिर्च्छा जाय छे ते तिर्यंचो, तेओना संबंधवाळी योनि-उत्पत्ति हो गर्भच्युरकांति, मनुना अपत्यो-संतानो ते मनुष्यो तेओनी अने जे तिर्व्य्ञ हो छे. (४), गर्भमा रहेला बन्ने (मनुष्य-तिर्यंच) ने आहार होय छे, बीजा ( देव-नारक) ने गर्भनो ज अभाव होय छे. (५), द्वद्वि-ग्रारीत्तुं वधत्रुं. १ भवनवासो शब्दर्थी व्यंतरोनुं पण ग्रहण थाय छे, कारण के तेओना नगरो पण अधोलेकमां छे. अहि वे स्थानकनो अधिकार होवाथी व्यंतरनो अंतर्भाव करेल छे.	** काध्ययने ** उदेशः ३ उदेशः ३ ** उपपाताद् ** वर्तनच्य- ** वर्तादः ** ८५ सत्रम् ** **

(	६), वात, पित्त विगेरेथी हानि थाय छे ते निवृद्धि. 'निवृद्धि' शब्दमां 'नि' शब्दनो अर्थ अभाव छे. 'निवरा कन्या'-पतिना
अ	भाववाळी कन्यानी माफक. (७), वैक्रियलब्धिवाळा(मनुष्य-तिर्यंचो)ने विकुर्वणा होय छे. (८), गतिपर्याय-चालवुं अथवा
म	रीने गत्यंतरमां गमन करवारूप अथवा वैक्रियलब्धिवाळो गर्भमांथी नकिळीने प्रदेशोवडे बहार संग्राम करे छे ते गतिपर्याय. श्री
भ	गवतीसत्रमां कह्युं छे-'जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे णेरइएसु उववज्जेजा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेजा
े 	त्थेगइए नो उववजेजा, से केणहेणं० ?, गोयमा ! से णं सन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए
व	ोरियलद्वीए विउव्विअलद्वीए पराणीयं आगतं सोचा णिसम्म पएसे निच्छुब्भइ २ वेउव्वियसमुग्धा-
	णं समोहन्नइ २ चाउरंगिणिं सेणं विउव्वइ २ चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं साद्धिं संनामं संगामेई ' गदि० [प्रश्न] हे भदंत ! जीव गर्भमां रह्यो थको नारकोमां उत्पन्न थाय ? [उत्तर] हे गौतम ! कोई एक उत्पन्न
	ाय अने कोई एक उत्पन्न न थाय. [प्र॰] ते ञा माटे एम कहो छो ? [उ॰] गौतम ! ते संज्ञीपंचेंद्रिय, सर्व पर्याप्तिवडे पर्याप्तक,
1	र-अन्यनी सेनाने आवेली सांभळीने, विचारीने वीर्यलब्धिवडे अने वैक्रियलब्धिवडे प्रदेशोने बहार काढे, काढीने वैक्रिय-
स	म्रद्घातवडे नर्वान पुद्गलोने ग्रहण करे छे, ग्रहण करीने चार अंगवाळी सेनानी विकुर्वणा करे अने विकुर्वणा करीने चार अंग-
	१. प्रत्यंतरमां 'निर्श्वद्धि' शब्द छे अने त्यां निरुदरा कन्यानुं दृष्टांत आपेल छे. त्यां निर् शब्द अभावार्धक छे. अथवा निर्धनो राजा
(' अम भ अर्च ए स प म	ण कहेबाय छे.

श्रीस्था- नाङ्गखत्र सानुवाद सामडी एवो अर्थ छे. गर्भस्थ मनुष्प अने पिंचेनों पांचमा खत्न श्र्यात् छवियत्ता 'ति० एवो पाठ छे त्यां चामडीना सानुवाद 'स' सानुवाद स' सानुवा 'स' सानु	श्रीस्था- नाङ्गद्धत्र नाङ्गद्धत्र सानुवाद श्री अवस्था. (११), आयाति-गर्भथी नीकळवुं. (१२), मरण-प्राणनो त्याग. (१३), 'दोणहं छविपव्व'त्ति० बन्नेना 'छवि'त्ति० सानुवाद सानुवाद श्री यत्ययना लोपथी चामडीवाळा ' पव्व 'त्ति० पर्वो-संधिनां बंधनो छे, ' छवियत्त 'त्ति० एवो पाठ छे त्यां चामडीना १। ११६ ॥ स्रामडी एवो अर्थ छे. गर्भस्थ मनुष्य अने तिर्यंचोनो पांचमा सत्रथी चौदमा सत्र सुधीनो संबंध जोडवो. (१४), 'दो सुके'त्यादि० सानुवाद	<b>J</b>
* १. पन्नवणा सूत्रना कायस्थितिपदमां एकेंद्रियादिनी कायस्थिति कहेल छे. *	अग्रिम गाढ, सार्य के सार्य के सार्य के होय छे. (१८), 'दुचिहे'त्यादि० अद्धा-काळ, काळप्रधान आयुष्य अर्थात् उत्पत्ति न होवाथी देव अने नारकोने भवस्थिति जहोय छे. (१८), 'दुचिहे'त्यादि० अद्धा-काळ, काळप्रधान आयुष्य अर्थात् आयुकर्मविशिष्ट अद्धायुष्य. वर्तमान भवनो नाश थये छेते काळांतरमां अनुगामी-जेम मनुष्यना आयुष्यनी माफक पाछळ जनारुं, ** ** ** ** ** **	ायने : ३ तेन- तिः स्त्रम्
भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ भ	र. पत्रवणा सूत्रना कावारथातपदमा एकाद्रवादिना कावारथात कहल छ. ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४	7 44

<b>※※※※※※※</b> ※※※※※※ A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A.A	
K K K	कोईने पण भवनो नाश थये छते पण दूर थतुं नथी परंतु उत्कृष्टथी सात अथवा आठ भव मात्र काळ पर्यंत अनुवर्ते छे- साथ रहे छे, तथा भवप्रधान आयुष्य ते भवायुष्य. ते भवनो नाश थये छते ज दूर जाय छे परंतु काळांतरमां (बीजा भवमां) देवना
X	ताप रहे छ, तथा भगप्रयाम आयुष्य त मयायुष्य. त मयमा मांश यथ छत्त जदूरआप छ परंतु काळातरमा (पाजा जनमा) प्रमा आयुष्यनी माफक साथे जतुं नथी.(१९), 'दोण्ह'मित्यादि० वे सूत्र कहेवाइ गयेल अर्थवाळा छे. (२०-२१), 'दुविहे कम्मे'-
XXX	आयुष्यनी माफक साथे जतुं नथी.(१९), 'दोण्ह'मित्यादि० वे सूत्र कहेवाइ गयेले अर्थवाळा छे. (२०-२१), 'दुविहे कम्मे'- इत्यादि० जे कर्मना पुद्गलो ( दलिको ) ज वेदाय छे, परंतु जेवी रीते बांधेल रस तेवी रीते नथी वेदातो एटले कर्मना प्रदेश मात्रपणावडे वेदवा योग्य कर्मते प्रदेशकर्म, तेम ज जे कर्मनो जेम बांधेल रस तेमज भोगवाय छे अर्थात् कर्मना अनुभाव(रस)थी वेदवा योग्य जे कर्म ते अनुभावकर्म छे. (२२), 'दो'इत्यादि० जेवी रीते बांधेलुं आयुष्य ते यथायुष्य, तेने तेवी रीते भोगवे
****	वेदवा योग्य जे कर्म ते अनुभावकर्म छे. (२२), 'दो'इत्यादि० जेवी रीते  बांघेछं आयुष्य ते यथायुष्य, तेने तेवी रीते भोगवे छे, उपक्रम थतो नथी ते यथायुष्य.
X X X	देवा नेरइयावि य, असंखवासाउया य तिरिमणुआ। उत्तमपुरिसा य तहा, चरमसरीरा य निरुवकमा ॥३६
***	देवो, नारको, असंख्य वर्षवाळा तिर्यंचो, मनुष्यो, उत्तम ( शलाका ) पुरुषो अने चरम शरीरवाळा जीवो निरुपक्रम आयुष्यवाळा छे, आ वचन सत्य होवा छतां पण अहिं वे स्थाननुं वर्णन चालतुं होवाथी अनुरोधने अंगे देव अने नारकनुं कथन
<b>* * *</b>	करेल छे. (२३), 'दोण्ह' मित्यादि० संवर्त्तचुं ( घटचुं ) ते संवर्त्त, ते ज संवर्त्तक अर्थात् उपक्रम, आयुष्यनो जे संवर्त्तक ते आयुष्य संवर्त्तक छे. (२४). पर्यायना अधिकारथी नियत क्षेत्रना आश्रितपणाथी क्षेत्रवडे कथन करवा योग्य पुद्गलोने कहेवाने
***	इच्छता 'जंबुद्दीचे 'इत्यादि सत्रवडे क्षेत्रना विषयने कहे छे
R K K	

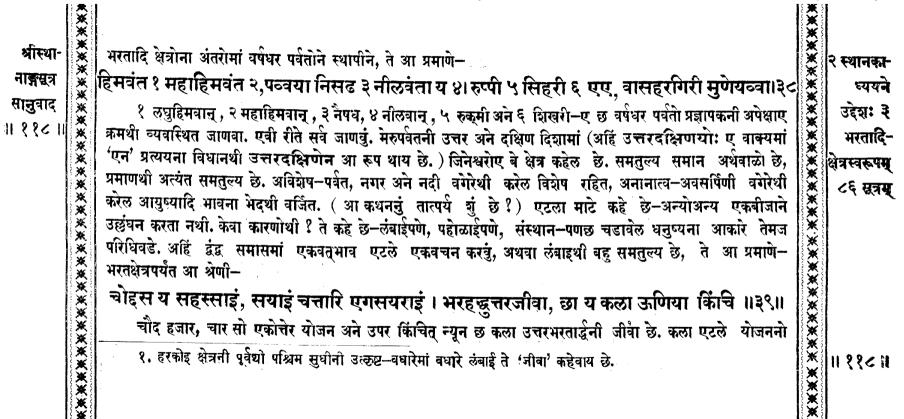
\*\*\*\* जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा [पं॰ तं॰]-बहुसमतुहा अविसेस-स्थानका-मणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवद्यंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं तं०-भरहे चेव एरवए चेव. एव-ध्ययने \*\*\*\* सानुवाद उद्देश: ३ मेएणमहिलावेणं हिमवए चेव हेरन्नवते चेव, हरिवासे चेव रम्मयवासे चेव १, जंबूद्दीवे दीवे 1122011 भरतादि-मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दो खित्ता [पं० तं०]-बहुसमतुह्ना अविसेस जाव पूव्व-\*\*\*\*\* क्षेत्रस्वरूपम ××× विदेहे चेव अवरविदेहे चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ [ पं० तं० ]-बहु-८६ सत्रम् \*\*\* समतुल्लाओ जाव देवकुरा चेव उत्तरकुरा चेव, तत्थ णं दो महतिमहालया महादुमा [पं2 तं2]-बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णाइवद्वंति आयामविक्खंभुचत्तोव्वेहसंठाणपरिणा-\*\*\*\* हेणं तं०-कूडसामली चेव जंबू चेव सुदंसणा। तत्थ णं दो देवा महिडि़ुया जाव महासोक्खा पलि-\*\*\*\* ओवमट्टितीया परिवसांति तं०-गरुले चेव वेणुदेवे अणाढिते चेव जंबूदीवाहिवती २। सू० ८६ ×× \* ×× मूलार्थः---जंबूद्वीप नामना द्वीपना मध्यमां मेरुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए वे वर्ष (क्षेत्र) कहेल छे, ते आ-अत्यंत \*\*\*\* समतुल्य अने आविशेष-समान, नाना प्रकारपणाथी रहित छे तेम ज एक बीजाने उछंघन करता नथी. [तेनां कारणो कहे छे]-₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩

श्रीस्था-

नातुस्त्र

www.kobatirth.org

<b>*************************************</b>	हरण्यवत बन्न सरखा छ, हारवर्ष अन रम्यकवेष पण समान छे. (१). जबूढाप नामना ढापना मध्यमा मरुपवतना पूर्व अन पश्चिम दिशाए बे क्षेत्र [ कहेल छे, ते आ ] अत्यंत समतुल्य अने अविशेष छे, यावत लंबाई वगेरेथी सरखा छे. ते पूर्वविदेह अने पश्चिमविदेह. जंबुढ़ीपना मेरुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए बे कुरुक्षेत्र [कहेल छे, ते आ] अत्यंत समतुल्य अने विशेष रहित, यावत लंबाई वगेरेथी सरखा छे. ते देवकुरु अने उत्तरकुरु. ते बन्ने क्षेत्रोमां अतिशय मोटा बे वृक्षो [ कहेला छे, ते रहित, यावत लंबाई वगेरेथी सरखा छे. ते देवकुरु अने उत्तरकुरु. ते बन्ने क्षेत्रोमां अतिशय मोटा बे वृक्षो [ कहेला छे, ते अा ] अत्यंत समतुल्य अने विशेष रहित-नाना प्रकारपणाथी रहित, परस्पर एक बीजाने उछंघन करता नथी तेम ज लंबाई, पहोळाइ, ऊंचाइ, ऊंडाई, संस्थान (आकार) अने परिधिवडे समान छे, ते आ प्रमाणे-कुटशाल्मली अने जंबू-सुदर्शन. ते वृक्षोने विषे महार्द्धिक यावत महासौख्यवाळा अने एक पल्योपमनी स्थितिवाळा बे देवो वसे छे. ते देवोना नाम आ प्रमाणे- गरुड-सुपणकुमार जातिनो वेणुदेव अने जंबूढ़ीपनो अधिपति अनादृत देव छे. (२) टीकार्थ:-आ खत्र सुगम छे, विशेष ए के-अहिं जंबूढीप प्रकरण छे. जंबूढीप परिपूर्ण चंद्रमंडलना आकारवाळे। छे, तेनी मध्यमां [रहेल] मेरुनी उत्तर अने दक्षिण दिशाथी अनुक्रमे वर्ष(क्षेत्रो)ने स्थापन करीने, ते आ प्रमाणे- भरहं हेमवयांति य, हरिवासंति य महाविदेहंति । रम्मय एरझवयं, एरवयं चेव वासाइं ॥ ३७ ॥ १ भरत, २ हैमवत, ३ हरिवर्ष, ४ महाविदेह, ५ रम्यक्रवर्ष, ६ हैरण्यवत अने ७ ऐरवत-आ सात वासक्षेत्रो छे, प्रजायकरी	******
***	तेनी मध्यमां [रहेल] मरुनी उत्तर अने दक्षिण दिशाथी अनुक्रमे वर्ष(क्षेत्रो)ने स्थापन करीने, ते आ प्रमाणे- भरहं हेमवयंति य, हरिवासंति य महाविदेहंति । रम्मय एरन्नवयं, एरवयं चेव) वासाइं ॥ ३७ ॥	× : : :
****	अपेक्षाए आ प्रत्यक्ष देखातो भरत क्षेत्र छे तेथी उत्तर दिशाए क्रमथी क्षेत्रनी अपेक्षाए बीजा हैमवतादि क्षेत्रो व्यवस्थित छे.	****
BQ8	For Private and Personal Lise Only	₩3I



 $z = -\infty$ 

। ।	शोगणीशमो भाग जाणवो. एवी रीते ऐरवत क्षेत्रमां जाणवुं. तथा अविश्लेष-पहोळाइथी बन्ने आ प्रमाणे छे-पंच सए छट्टीसे, छच कला वित्थडं भरहवासं 'ति० पांचसो छवीस योजन अने छ कला अधिक भरतक्षेत्र पहोळुं छे. एज प्रमाणे
	ररवत क्षेत्रचं पण पहोळाईपणुं जाण्चुं. अनानात्व-बन्ने क्षेत्र संस्थानथी परस्पर सरखा छे. परिधि एटले जीवा अने धनुष्टछं
96	ने प्रमाण ते परिधि. तेमां जीवानुं प्रमाण उपर कहेलुं छे, धनुपृष्ठनुं प्रमाण नीचे प्रमाणे जाणवुं.
	चोद्दस य सहस्साइं, पंचेव सयाइं अट्ठवीसाइं।एगारस य कलाओ, धणुपुट्टं उत्तरद्वस्स ॥ ४० ॥
	चौद हजार पांचसे। अव्यावीश योजन अने अग्यार कला अधिक उत्तर भरताई उं धर्नुपृष्ठ छे. जेम भरतनुं कह्युं तेम
	ररवतनुं पण जाणी लेवुं. अथवा बहुसमतुल्य वगेरे पदो एकार्थवाळा छे. अतिश्वयार्थपणुं होवाथी पुनरुक्ति दोष नथी. कह्युं
	ड के-अनुवाद, आदर, वीप्सा-बे वार उचार, अतिशयार्थ, विनियोग हेतु, अस्तया-गुणमां दोषनुं आरोपण, कंइक संभ्रम,
Í	वेस्मय, गणना अने स्मरण-आ अर्थोमां पुनरुक्ति दोष नथी. ते वे क्षेत्रो, आ प्रमाणे-' भरहे चेव ' त्यादि॰ ' उत्तर-
	दाहिणेणं ' आ पाठने यथासंख्य (क्रम) न्यायनो आश्रय न करवाथी अने यथासत्ति ( जेम रहेल छे तेम ) न्यायनों आश्रय
	करवाथी. जंबूद्वीपना दक्षिण भागमां भरत, हेमवान् पर्वत पर्यंत छे, अने जंबूद्वीपना उत्तर भागमां शिखरी पर्वत पर्यंत ऐरवत
8	क्षेत्र छे. 'एव' मिति० भरत अने ऐरवतनी माफक आ अभिलापवडे 'जंत्रृद्दीवे दीवे मंदरस्से ' त्यादि० शब्दना उचारवडे
	१ हरकोइ क्षेत्रनो ' जीवा 'ना पूर्व अने पश्चिमना छेडारूप सीमावडे समुद्र सुधो पहोंचतो जे परिधि ते 'धनुपृप्ठ' कहेवाय छे.

भीस्था- नाह्रखन सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सानुवाद सार के स्वर्भ कहेवां. ते बेमां आ विशेष छे के 'हेमवए चेवे' त्यादि० हेमबंत क्षेत्रे (मेरुनी) दक्षिण दिशाए हिमवान अने महा- हिमवान पर्वतनी मध्यमां छे, हरेप्यवतक्षेत्र मेरुनी उत्तर दिशाए रुक्मी अने शिखरी पर्वतनी मध्यमां छे, हरिवर्धक्षेत्र मेरुनी दक्षिण दिशाए महाहिमवान् अने निषधपर्वतनी मध्यमां छे, रम्यकवर्ष मेरुनी उत्तरदिशाए ने शिरुवान अने रुक्मपिर्वतनी मध्यमां छे, हरेर्वर्धक्षेत्र मेरुनी दक्षिण दिशाए महाहिमवान् अने निषधपर्वतनी मध्यमां छे, रम्यकवर्ष मेरुनी उत्तरदिशाए नालवान् प्रांतन मध्यमां यशक्रमे पूर्व छे. (१). 'जंब्र्हीव' त्यादि० 'पुरच्छिम्पचलियमेणं' त्ति॰ पुरस्तात् पूर्वदिशामां, पश्चात्-पश्चिम दिशामां यशक्रमे पूर्व एवो विदेह ते पूर्अविहेह, एम ज अपर (पश्चिम) विदेह, आ बकेतुं लंबाई विगेरेतुं वर्णन अन्य प्रंथोधी जाणवुं. 'जंच् '- स्त्यादि० मेरुनी दक्षिण दिशाए देवकुरु अने उत्तर दिशाए उत्तरकुरुक्षेत्र छे. ते बन्नेमां पहेलो देवकुरु हाथीना दांतना आकार- हत्याति० मेरुनी दक्षिण दिशाए देवकुरु अने उत्तरकुरु अत्रे उत्तरकुरु अर्व उत्तरकुरु अर्व उत्तरकुर अर्व देवकुरु आकोरे छे अने दक्षिण अने उत्तर दिशामां विस्तृत-विस्तारवाळा छे. तेओतुं प्रमाण नीचे प्रमाणे छेः— अटुत्सया बायाला, एक्कारस सहस[स्स ?] दो कल्लाओ य । विक्त्लंभो य कुरूणं, तेवन्नसहस्स जीवा सिं ॥४१ देवकुरु अने उत्तरकुरु बनेनी पहोळाई इग्यार हजार, आठसो ने बेंतालीश योजन अने बे कळा छे अने बनेनी जीवा पूर्व्यी पश्चिम पर्यंत त्रेपन हजार योजन छे. ' महहमहालप्य 'त्नि॰ मोटा 'अती'ति॰ अत्यंत-अत्यंत मोटा, महस्- घणा तेजना अथवा महोत्सवोना आल्य–आश्रयरूप ते महातिमहआल्य अथवा महातिमहाल्य अर्थत् सिद्धांतनी भाषावडे महीन्	ii Jaili Alaulialia Keliula	www.kobalitit.org	Acharya Shiri Kaliassayarsun Gyal
	नाङ्गसत्र ** सानुवाद ** ॥ ११९ ॥ **	बीजा बे सत्र कहेवां. ते बेमां आ विशेष छे के 'हेमवए चेवे' त्यादि० हेमवंत क्षेत्र (मेरुनी) दक्षिण दिशाए हिमवान् अने महा हिमवान् पर्वतनी मध्यमां छे, हैरण्यवतक्षेत्र मेरुनी उत्तर दिशाए रुक्मी अने शिखरी पर्वतनी मध्यमां छे, हरिवर्षक्षेत्र मेरुन दक्षिण दिशाए महाहिमवान् अने निषधपर्वतनी मध्यमां छे, रम्यकवर्ष मेरुनी उत्तरदिशाए नीलवान् अने रुक्मीपर्वतना मध्यम छे. (१). 'जंबुद्दीवे' त्यादि० 'पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं' त्ति० पुरस्ताल् पूर्वदिशामां, पश्चाल्-पश्चिम दिशामां यथाकमे पूर्व एवो विदेह ते पूर्वविदेह, एम ज अपर ( पश्चिम ) विदेह, आ बन्नेतुं लंबाई विगेरेतुं वर्णन अन्य प्रंथोथी जाणतुं. 'जंबू रत्यादि० मेरुनी दक्षिण दिशाए देवकुरु अने उत्तर दिशाए उत्तरकुरुक्षेत्र छे. ते बन्नेमां पहेलो देवकुरु हाथीना दांतना आकार वाढा विद्युत्यम अने सौमनस नामना बे वक्षस्कार पर्वतवडे घेरायेलो छे, बीजो उत्तरकुरुक्षेत्र तो गंधमादन अने माल्यवान् पर्वतवडे घेरायेल छे. आ देवकुरु अने उत्तरकुरु अर्ढचंद्रने आकारे छे अने दक्षिण अने उत्तर दिशामां विस्तृत-विस्तारवाळा छे. तेओत् प्रमाण नीचे प्रमाणे छे: अट्ठस्या बायाला, एक्कारस सहस[स्स?] दो कलाओ य । विक्खंभो य कुरूणं, तेवन्नसहस्स जीवा सिं ॥ध	ो ** ध्ययने i ** उद्देशः ३ ** भरतादिक्षे- - ** तस्वरूपम् ८६ स्रत्रम् ** **

a	www.kobaliti.org	Acric
<u>************************************</u>		X
×I		
×1		15
×1		ĽŚ
	प्रशस्तपणाए बे महाद्रुम छे, तेनी पहोळाई, ऊंचाई, ऊंडाई, आकार अने परिधि. तेमां बे वृक्षोनुं प्रमाण आ प्रमाणे छे—	****
2		BX
R I	रयणमया पुष्फफलला, विक्खंभो अट्ठ अट्ठ उच्चत्तं। जोयणमद्धुव्वेहो, खंधो दो जोयणुव्विद्धो ॥४२॥	88
X II		8
	दो कोसे विच्छिन्नो, विडिमा छज्जोयणाणि जंबूए।चाउद्दिसिंपि साला, पुव्विछे तत्थ सालांमे ॥४३॥	K
		ľS
	भवणं कोसपमाणं, सयणिजं तत्थऽणाढियसुरस्स । तिसुपासाया सालेसु, तेसु सीहासणा रम्मा॥४४॥	
	जंबुवक्षना पुष्पो अने फळो रत्नमय छे, विष्कंभ आठ योजननो पहोळो छे, आठ योजननो ऊंचो छे, वे कोञ्च ( गाउ )	
		K
	जमीनमां ऊंडो छे, स्कंध (जंबूवृक्षना कंदथी उपरनो अने शाखा ज्यांथी नीकळी त्यां सुधीनो भाग) ते बे योजननो ऊंचो छे अने बे	3
\$	कोश पहाळो छे, चोतरफ विस्तरेली शाखाओना मध्यमां 'विडिम' नामनी एक शाखा सर्व शाखाथी ऊंची छे. ते छ योजन	85
		ß
	ऊंची छे. चारे दिशामां चार शाखाओ छे तेमां पूर्व दिशानी शाखानी वचे अनादत देवनुं शयन करवा योग्य भवन एक कोशनुं	8
	लांबुं छे, शेष त्रण शाखाओमां प्रासादो छे अने ते प्रासादोमां मनोहर सिंहासनो छे. शाल्मली द्वक्षमां पण एमज जाणवुं.	Į į
- Z		Į į
ŝ	क्रट-शिखरना आकारवाळो शाल्मली वृक्ष ते क्रूटशाल्मली वृक्ष, ए संज्ञा छे. सुंदर छे दर्शन जेणीनुं ते सुदर्शना, ए पण संज्ञा	8,
÷. –	र गाथामां कहेल आठ योजन जमीनना कंदथी आरंभीने बे योगननो स्कंध अने छ योजननी शाखा मळीने आठ योजन	Į
		85
<pre>{</pre>	जंबूवृक्ष ऊंचो जाणवो. अने कंदघी नीचे बे कोश जमीननी अंदर छे. २ जेनी लंबाई-पहोळाई विषम होय ते भवन, अने समान लंबाई-	}:
	पहोळाई होय ते प्रासाद कहेवाय छे. आ सामान्य नियम छे. अहि तेम न जाणवुं.	ß
	તાલાજી દાસ (( નાલાપ માલ્યામ છે, માં પ્લયમ લાગવા છે, માલ્ (લ લ માળપુ,	$\left\{ \right\}$
		Į.
		Ş.
		3

श्रीस्था- नाङ्गम्रत्र सानुवाद ।। १२० ।। ******	छे. 'तत्थ'त्ति० ते वे महान् इक्षोने विषे 'मह्रे'त्यादि० मोटी ऋद्धि-आवास, परिवार अने रत्न वगेरे छे जेओने ते वे मह- द्विंक 'यावत' शब्दना ग्रहण करवाथी ' महज्ज्ज्रहया महाणुभागा महाय[ज?]सा महाबल 'त्ति० तेमां द्युति-शरीर अने आभूषणनी कांतिवाळा, अनुभाग-वैक्रिय करवा वगेरेनी अचिंत्य शक्तिवाळा, यश्च-प्रसिध्धिवाळा, वल-शरीरनुं सामर्थ्य- वाळा अने सौख्य आनंदस्वरूप, [ ' महेसक्खा ' एवो क्वचित् पाठ छे, महान् आख्या-प्रसिद्धि छे जेओनी ते बन्ने महे- शाख्य कहेवाय छे ] पल्योपम पर्यंत आयुवाळा गरुड-सुपर्णकुमार जातिवाळा वेणुदेव अने अनाइतदेव ( जंब्ह्रीपना अधिपति ) छे [ स० ८६ ] जंबूमंदरस्स पठ्वयस्स य उत्तरदाहिणेण दो वासहरपव्वया [ पं० तं०- ] बहुसमतुल्ला अ- विसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णातिवद्यंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तंजहा-जुल्ल-	(*******	२ स्थान- काभ्ययने उद्देशः ३ वर्षधरादि- स्वरूपम् ८७ स्ट्राम्
11 १२०    ***********************************	हिमवंते चेव सिहरिच्चेव, एवं महाहिमवंते चेव रुपिच्चेव, एवं णिसढे चेव णीळवंते चेव, जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं हेमवंतेरण्णवतेसु वासेसु दो वद्ववेतड्डपव्वता [पं० तं०] बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती चेव वियडावाती चेव, तत्थणं दो देवा महिडिया जाव पलिओव- मट्ठितीया परिवसंति तं०-साती चेव पभासे चेव १, जंबूमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवासरम्मतेसु	************************************	। १२० 🏨

**********************	वासेसु दो वद्दवेयड्रपव्वया [ पं॰ तं०- ] बहुसम० जाव गंधावाती चेव मालवंतपरियाए चेव, त- त्थ णं दो देवा महिड्रिया चेव जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं०-अरुणे चेव पउमे चेव, जंबूमंद्- रस्स पव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुठ्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अ[व]द्धचंदसंठाण- संठिया, दो वक्खारपव्वया पं॰ तं०-बहुसमा जाव सोमणसे चेव विज्जुप्पमे चेव, जंबूमंद्रस्स उ- त्तरेणं उत्तरकुराए पुठ्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अ[व]द्धचंद्रसंठाणसंठिया, दो वक्खारपठ्वया पं॰ तं०-बहुसमा जाव सोमणसे चेव विज्जुप्पमे चेव, जंबूमंद्रस्स उ- त्तरेणं उत्तरकुराए पुठ्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अ[व]द्धचंद्रसंठाणसंठिया दो वक्खार- पव्वया पं॰ तं०-बहु॰ जाव गंधमायणे चेव मालवंते चेव २, जंबूमंदरस्स पठ्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्डपव्वया पं॰ तं०-बहुसमतुल्ला जाव भारहे चेव दीहवेयड्डे एरावते चेव दीहवेयड्डे, भारहए णं दीहवेयड्डे दो गुहाओ पं॰ तं०-बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अन्नमन्नं णातिव- इंति आयामविक्खंभुचचसंठाणपरिणाहेणं, तं॰ तिमिसगुहा चेव खंडगप्पवायगुहा चेव, तत्थणं दो देवा महिड्रिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं०-कयमालए चेव नट्टमालए चेव, एरावयए णं दीह- वेयड्डे दो गुहाओ पं॰ तं०-जाव कयमालए चेव नट्टमालए चेव ३, जंबूमंद्रस्स पठ्वयस्स दाहि-	XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX
***	वेयह्वे दो गुहाओ पं० तं०–जाव कयमालए चेव नद्यमालए चेव ३, जंबूमंद्रस्प पठ्ययस्प दाहि- २१	***

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीस्था- नाङ्ग्यत्र सःतुवाद ॥ १२१॥ *********	णेणं चुछहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पं० तं०-बहुसमतुल्ला जाव विवसंभुचचसंठाणपरिणाहेणं, तं०- चुल्लहिमवंतकूडे चेव वेसमणकूडे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वए दो कूडा पं० तं०-बहुसम० जाव महाहिमवंतकूडे चेव वेरालियकूडे चेव, एवं निसढे वासहरपव्वए दो कूडा पं० तं०-बहुसमा० जाव निसढकूडे चेव रुयगप्पभे चेव ४, जंबूमंदर० उत्तरेणं नीलवंते वासहरप पव्वए दो कूडा पं० तं०-बहुसम० जाव० तं०-नीलवंतकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव, एवं निसिट्र वासहरपव्वए दो कूडा पं० वहुसम० जाव० तं०-नीलवंतकूडे चेव उवदंसणकूडे चेव, एवं सिहरिंमि वासहरपव्वए दो कूडा पं० बहुसम० जाव तं०-रुप्पिकूडे चेव माणिकंचणकूडे चेव, एवं सिहरिंमि वासहरपव्व दो कूडा पं० बहुसम० जाव तं०-सपिकूडे चेव माणिकंचणकूडे चेव, एवं सिहरिंमि वासहरपव्वते दो कूडा पं० बहुसम० जाव तं०-सिहरिकूडे चेव विभिच्छिकूडे चेव ५। सू० ८७ म्लार्थः-जंबूधीपना मेरपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए वे वर्षधर पर्वतो (कहेल छे, ते आ-) बहुसमतुल्य, अविशेष, नानात्वरहित, अन्योअन्य उछंधन करता नथी तेमज लंबाई, पहोलाई, उंडाई, संस्थान अने परिधिवडे समान छे. ते आ-चुछ( लघु)हिमवान अने शिखरी, एवी रीते महाहिमवान अने रुप्ती (रुद्या), एम ज निपध अन नीलवान. जंबूधीपना मेरपर्वतनी उत्तर अने दाक्षिण दिशाए हैमवत अने हैप्यवत क्षेत्रमां वे वर्षवरा पर्वत कह्या छे-बहुसमतुल्य, विशेपरहित, नानात्वरहित, परपर उल्लंघन करता नथी, ते आ प्रमाणे-शब्दापाती अने विकटापाती, ते बेम वे महर्त्व देवो यावत प्रत्यो	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
****	मेरुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए हैमवत अने हैरप्यवत क्षेत्रमां बे वृत्तवेताढ्य पर्वत कह्या छे-बहुसमतुल्य, विशेषरहित, नानात्वरहित, परस्पर उल्लंघन करता नथी, ते आ प्रमाणे-शब्दापाती अने विकटापाती. ते बेमां बे महर्द्धिक देवो यावत् पल्यो-	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **

.

******	पमनी स्थितिवाळा वसे छे, ते आ-स्वाति, अने प्रभास. (१), जंबूद्वीपना मेरुनी उत्तर अने दक्षिण दिशए हरिवर्ष अने रम्यक्ष्वर्ष क्षेत्रमां वे वृत्तवैताढ्य पंवेतो ( कह्या छे, ते आ- ) बहुरामतुल्य यावत् पूर्वनी माफक जाणवुं, ते आ-गंधापाती अने माल्यवंतपर्याय नामना पर्वत छे. ते बन्नेमां वे देवो महर्द्धिक यावत् पल्योपमनी स्थितिवाळा वसे छे, ते आ-अरुण अने पद्म नामना देव छे. जंबूद्वीपना मेरुपर्वतनी दाक्षण दिशाए देवकुरु क्षेत्रना पूर्व अने पश्चिमना पडखामां, अश्वना स्कंध ( खांध ) जेवा, कंइक ओटा अर्धचंद्रना आकारवाळा वे वक्षस्कार ( वखारा ) पर्वत कहेल छे, ते आ-बहुसमतुल्य यावत् सौमनस अने विद्युत्प्रभ नामे छे. जंबूद्वीपना मेरुपर्वतनी दाक्षण दिशाए उत्तरकुरु क्षेत्रना पूर्व अने पश्चिमनी बाजुमां अश्वना स्कंध ( खांध ) जेवा, कंइक ओटा अर्धचंद्रना आकारवाळा वे वक्षस्कार ( वखारा ) पर्वत कहेल छे, ते आ-बहुसमतुल्य यावत् सौमनस अने विद्युत्प्रभ नामे छे. जंबूद्वीपना मेरुनी उत्तर दिशाए उत्तरकुरु क्षेत्रना पूर्व अने पश्चिमनी बाजुमां अश्वना स्कंध सरखा, कंइक ओटा अर्ढचंद्रना आकारवाळा वे वक्षस्कार पर्वत कहेल छे, ते आ-बहुसमतुल्य यावत् पूर्वनी माफक जाणवुं. ते वे पर्वतना नाम कहे छे-गंधमादन अने माल्यवंत. (२), जंबूद्वीपना मेरपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए वे दीर्घे(लांवा)वेतात्व्य पर्वत कहेल छे, ते आ-बहुसमतुल्य यावत् पूर्वनी माफक जाणवुं. ते आ-भरतक्षेत्रमां दीर्घवैतात्व्य अने ऐरयतक्षेत्रमां दीर्घ- वेताढ्य छे. भरतक्षत्रना दीर्घवेताढ्यमां वे गुफाओ कहेल छे, ते बहुसमतुल्य, विश्वेप रहित, नानाप्रकारपणाए वर्जित, अन्योत्यने उह्तंघन करती नथी, लंबाई, पहोळाई, ऊंचाई, आकार अने परिधिवडे समान छे, ते आ-तमिस्नागुफा अने खंडप्रपात गुफा छे, त्यां वे देवो महर्डिक यावत् पत्थोपमनी स्थितिवाळा वसे छे, ते आ-कृतमालक अने नृत्यमालक नामना छे. ऐरवत क्षेत्रना दीर्घ- वेताढ्यमां वे गुफाओ कहेल छे, ते आ प्रमाणे-यावत् इत्तकमालक अने नृत्यमालक वे देव पर्यत वर्णन जाणवुं. (३), जंबूद्वीपना मेर्ह्यक्तनी दक्षिण दिशाए दिशाए चुछहिमवान नामे वर्षधर पर्वतमां वे कुट (शिखर) कह्या छे, ते आ-बहुसमतुल्य, यावत् पहो-	<pre>(************************************</pre>
		×

श्वीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ १२२ ॥ ************************	टाई, ऊंचाई, संस्थान अने परिधिवडे, ते आ-चुछहिमवान क्रुट अने वैश्रमण क्रुट. जंबूद्वीपना मेरुनी दक्षिण दिग्नाए महा- हिमवान नामे वर्षधर पर्वतमां वे क्रुट कहेल छे, ते आ-चहुसमतुल्य यावत् महाहिमवान क्रूट अने वैड्वर्य क्रुट. एवी रीते निषध नामना वर्षधर पर्वतमां वे क्रुट कहेल छे, ते आ-चहुसमतुल्य यावत् निषध क्रुट अने रुचकप्रम क्रूट. (४), जंबूद्वीपना मेरु- पर्वतनी उत्तर दिग्नाए नीलवान नामे वर्षधर पर्वतमां वे क्रुट कहेल छे, ते आ-चहुसमतुल्य, यावत् ते आ-नीलवान क्रूट अने उपदर्शन क्रुट. एवी रीते शिखरी नामे वर्षधर पर्वतमां वे क्रुट कहेल छे, ते आ-चहुसमतुल्य, यावत् ते आ-नीलवान क्रूट अने उपदर्शन क्रुट. एवी रीते शिखरी नामे वर्षधर पर्वतमां वे क्रुट कहेल छे, ते आ-चहुसमतुल्य यावत् ते आ-नीलवान क्रूट अने तिगिच्छ क्रूट. (५). (स० ८७). टीकार्थ:' जंबू ' इत्यादि० वर्ष-क्षेत्र विशेषनी व्यवस्था करनारा होवाधी बन्ने वर्षधर छे. ' चुछो 'त्ति० मोटानी अपेक्षाए लघुहिमवान ते चुछहिमवान भरतक्षेत्र पछी अंतर रहित (उत्तरप्रां) छे. वळी शिखरी पर्वत ऐरवत क्षेत्रनी आगळ छे, (अर्थात् शिखरीथी उत्तरमां ऐरवत क्षेत्र छे). अने ते वे पर्वत पूर्व अने पश्चिमयी लंबाईवडे लवणसग्रुट्र सुवी जोडायेला छे. चउवीस सहरसाइं, णव य सए जोयणाण बत्तीसे । चुद्धहिमवान अने अर्ध्वक्ता क्वेन् छे. एवी रीते शिखरी पर्व- तनी जीवा जाणवी. तथा बन्ने पर्वत भरतक्षेत्रथी बमणा विस्तारवाळा, एक सो योजन ऊंचा, पच्चीश्व योजन जमीनमां ऊंडा, आयत अने चतुरस्न (लंबचौरस) संख्यानवेड रहेला छे ते बंन्ती परिधि नीच प्रमाणे छे	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
*** ***		र् स स स स स स स

पणयाळीस सहस्सा, सयमेगं नव य वारस कलाओ। अद्धं कलाए हिम बंत-परिरओ सिहरिणो चेव ॥४६॥ पिस्ताळीस हजार, एक सो, नव योजन अने साडीबार कळा चुछहिमवान अने शिखरी पर्वतनी परिधि छे. जेम हिमवान अने शिखरी पर्वत ' जंखूदीवे ' इत्यादि॰ अभिलापवडे कक्षा एवी रीते महाहिमवान वगेरे पण कहेवा. तेमां लघुनी अप- क्षाए महाहिमवान छे. मरुनी दक्षिण दिशाए महाहिमवान अने मेरुनी उत्तर दिशाए रुक्मी पर्वत छे. एवी रीते दक्षिणमां निपध अने उत्तरमां नीलवान पर्वत छे. विशेष ए के-एओनी लंवाई वगेरे विशेष वर्णन 'क्षेत्रसमास ' नामना ग्रंथथी जाणी लेवुं. अहीं तो क्षेत्रसमासनी गाथाओवडे कंइक कहेवाय छे:- पंचसए छब्वीसे, छच्च कला वित्थडं भरहवासं । दससय वावन्नऽहिया, वारस य कलाओ हिमवंते॥४७॥ पांच सो, छच्वीस योजन अने छ कळानो पहोळो भरतक्षेत्र छे, अने एक हजार, बावन योजन ने वार कळानो पहोळो चुछ- हिमवान पर्वत छे. हेमवए पंचहिया, इगवीससया उ पंच य कलाओ । दसहियबायालसया, दस य कलाओ महाहिमवे ॥४८॥ हैमवत क्षेत्र वे हजार, एक सो पांच योजन अने पांच कळानो पहोळो छे, तथा महाहिमवान पर्वत चार हजार, बसो दश योजन अने दश कळानो पहोळो छे. हरिवासे इगवीसा, चुल्लसीइ सया कला य एक्का य । सोलससहस्स अट्रसय,बायाला दो कला णिसढे॥४९॥
--

<b>त्रीस्था-</b> नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १२३ ॥		हरिवर्ष क्षेत्र आठ इजार, चार सो, एकर्वाश योजन अने एक कळानो पहोळो छे, तथा निषध पर्वत सोळ इजार, आठ सो बेंतालीश योजन अने वे कळानो पहोळो छे. तेत्रीसं च सहस्सा, छच्च सया जोयणाण चुलसीया। चउरो य कला सकला, महाविदेहस्त विक्संभो ॥५० तेत्रीस इजार, छसें चोरासी योजन अने चार कला महाविदेह क्षेत्रनो विष्कंभ (पहोळाई) छे. जोयणसयमुव्विद्धा, कणगमया सिहरिचुछाहिमवंता। रुप्पिमहाहिमवंता, दुसउच्चा रुप्पकणगमया॥५१ शिखरी अने चुछहिमवान ए वे पर्वत सो योजनना ऊंचा अने सुवर्णमय छे. तथा रुविम अने महाहिमवान ए वे पर्वत वसो योजनना ऊंचा छे. तेमां रुक्मि पर्वत क्षेतसुवर्णमय अने महाहिमवान पीतसुवर्णमय छे. चत्तारि जोयणसए, उव्विद्धा णिसढणीलवंता य। णिसहो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवंतगिरी॥ ५२ चार सो योजनना ऊंचा निषध अने नीलवान ए वे पर्वत छे, तेमां ानेषध तपावेल सुवर्णमय अने नतिलवान पर्वत वैर्ह्यर्यमणिमय छे. उस्सेहचउब्भागो, ओगाहो पायसो नगवराणं। वट्टपरिहीउ तिउणो, किंच्र्णछभायजुत्तो य ॥ ५३ ॥ पर्वतोनो जमीनमां अवगाढ ( ऊंडाई ) प्रायः ऊंचाईथी चोथो भाग होय छे, इच ( गोळ ) परिधि तो पोतपेतानी पहो- र्ळाईथी त्रिगुण अने कंइक न्यून छ भाग युक्त होय छे. चोरस परिधि तो लंबाई अने पहोळाईथी डिगुण होय छे. 'जंच्र'इत्यादि०	\ <b>XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX</b>	२ स्थान- काध्ययने उद्देशः ३ वर्षधरादि- स्वरूपम् ८७ सूत्रम्	-
	×	For Private and Personal Use Only			

	दो वट्टवेयड्टूपव्वय 'सि० पल्य( पाला )नो आकार होवाथी वे वृत्तवैताढय नामथी ते एवा वे पर्वत छे, ने सर्वतः एक
	ता यडवयवड्ढेनज्यय गराज्य पर्यत शाण गण जाकार होगाया ज दूरापताहेय गानवा ते एया प प्यत छ, न सवतः एक जार योजनना परिमाणवाळा अने रूपामय छे. तेमां मेरुनी दक्षिण दिशाए हैमवत क्षेत्रमां शब्दापाती अने मेरुनी उत्तर
1 6 1	जार योजननी परिमाणपळि अने रूपामय छे. तमा मरुना दावण दिशाएँ हमवत क्षेत्रमा शब्दावाती अने मरुना उत्तर देशाए ऐरण्यवत क्षेत्रमां विकटापाती पर्वत छे. 'तत्थ'त्ति० ते वे वृत्तवैताढचमां क्रमवडे स्वाति अने प्रभास नामे बे देव
19	रशार एरपपत जनना निमाल मान व द्व से छे, कारण के त्यां तेना भवन छे. (१), एवी रीते हरिवर्ष क्षेत्रमां गंधापाती अने रम्यक्वर्षमां माल्यवंतपर्याय पर्वत
े रे	त छ, फारण पर पी तेती मनत छ. (२७) दना तता होतन के के निवासित के पासे अने रन्यस्तरमा माल्यवत्त्ययाय पवत 3. त्यां क्रमवडे बे देव ( अरुण अने पद्म ) वसे छे ् ' जंबू 'इत्यादि० ' पूव्वावरे पासे 'त्ति० पार्श्व शब्दनो प्रत्येकमां
$\tilde{c}$	बन्नेमां ) संबंध होवाथी ( देवकुरुना ) पूर्वना पार्श्व( पडखा )मां अने पश्चिमना पडखामां वे पर्वत छे. ते केवा छे ?
12	पत्थ 'त्ति० प्रज्ञापके उपदेश कराते छते कमशः सोमनस अने विद्युत्प्रभ देव कहेल छे. ते केवा छे ? ते बे अश्वना स्कंध
। स	मान शरुआतमां नमेल अने छेडे ऊंचा छे. आ कारणथी निषध पर्वतनी नजीकमां चारसो योजन ऊंचा अने मेरुनी पासे तो
प	ांचसो योजनना ऊंचा छे. कह्युं छे−
5	वासहरगिरिंतेणं, रुंदा पंचेव जोयणसयाइं । चत्तारिसउव्विद्धा, ओगाढा जोयणाण सयं ॥ ५४ ॥
	गंचसए उव्विद्धा, ओगाढा पंच गाउयसयाइं । अंगुलअसंखभागो, विच्छिन्ना मंद्रंतेणं ॥ ५५ ॥
] `	वक्खारपव्वयाणं, आयामो तीस जोयणसहस्सा। दोन्नि य सया णवहिया, छच्च कलाओ चउण्हं पि॥५६
	वर्षधरपैर्वतनी समीपे पांचसो योजन विस्तारवाळा, चारसो योजन ऊंचा अने एकसो योजन जमीनमां ऊंडा छे.
	१ निषधपर्वतनी समीपे सौमनस अने विद्युत्प्रभ अने नीलवान पर्वतनी समीपे गंधमादन अने माल्यवंत-आ रीते चार वक्षस्कार पर्वत छे.

	······································	
श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १२४ ॥ *** *** *** *** *** *** ***	मेरुनी पासे (चार वसारा पर्वतो ) पांचसो योजनना ऊंचा, पांचसे। कोशना ऊंडा अने अंगुलना असंख्यातमा भाग मात्र पहोठा छे. चार वक्षस्कार पर्वतोनी लंवाई त्रीश इजार योजन अने छ कठानी छे. 'अचद्धचंद'त्ति० अपार्क्षचंद्र-कंइक न्यून चंद्रनो आकार अर्थात् हाथीना दांतनी आकृतिना जेवा संस्थानवडे रहेला ते अपार्क्षचंद्रसंस्थानसंस्थित, क्वचित् ' अर्द्धचंद्रसंस्थानसंस्थितौ ' एवो पाठ छे त्यां अर्द्ध ग्रब्दवडे विभागमात्र विवक्षा कराय छे, परंतु सम (सरसो) विभाग नहिं. अने ते वे पर्वतथी देवकुरु अर्द्धचंद्राकार करायेल छे, आ कारणथी ज वक्षाराकार क्षेत्रने करनारा वे पर्वत वक्षार (वखारा) पर्वत कहेवाय छे. 'जंच्' इत्यादि० वर्णन तेमज जाणवुं. विशेष ए के-उत्तरकुरु क्षेत्रमां पश्चिमनी पासे गंधमादन अने पूर्शनी पासे माल्यवान वखारापर्वत छे. (२), 'दो दीहचेयड्ड्र' क्ति० वैताढ्यनो निपेध करवा माटे ' दीर्घ ' शब्दतुं प्रहण करेल छे. वेयट्ड् शब्दनो वैताटच अथवा विजयाड्रु संस्कार थाय छे. ते वे पर्वत भरत अने ऐरवतना मध्य भागमां पूर्व अने पश्चिमथी लवण- सम्रुद्रने स्पर्श्व करीने रहेल छे. ते बन्ने पच्चीश योजनना ऊंचा छे, पच्चीश गाउ ऊंडा छे, पच्चीश योजन पहोळा छे, आयत संठाणवाळा छे, सर्व रूपामय छे अने वन्ने पड्याथी बहार कांचनमंडनथी आंकित छे कर्ष्ड छे— पणुवीसं उविग्र्डो प-न्न्नासं जोयणाण विच्छिन्नो । वेयद्वो रिययमओ, भारहस्वेत्तसस मज्झांमि ॥५७॥ आ गाथानो अर्थ उपर कहेल छे. ' भारहए ण ' मित्यादि० वैताटव पर्वतमां पश्चिम भागमां तमिसा गुफा पचास योजन लांवी, वार योजन पहोळी अने आठ योजन ऊंची छे. आयत चतुरस्न संस्थानवाळी, विजयद्वार प्रमाणे द्वारवाळी (आठ	************************************

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*

××××

\*\*\*\*

\*\*\*\* योजन ऊंचा अने चार योजन पहोळा ), वज्रना कमाडथी ढांकेली, बहु मध्यभागमां पोतपोतामां बे योजनना अंतरवाळी अने त्रण योजनना विस्तारवाळी उन्मग्नजला अने निमग्नजला नामे वे नदीओवडे युक्त छे. तमिस्रानी माफक पूर्वभागमां खंड-प्रपाता गुफा जाणवी. 'तत्थ णं' त्ति० ते बेमां-तमिस्रा गुफामां कृतमाल्यक अने खंडप्रपाता गुफामां नृत्तमालक नामना वे देव वसे छे. 'एरावए' इत्यादि० ऐरावत क्षेत्रमां पण भरतक्षेत्रनी माफक जाणवुं. (३), ' जंबू ' इत्यादि० ( चुछ )हिमवान वर्षधर \*\*\* पर्वतमां अगियार कूट-शिखरो छे. तेना नाम आ प्रमाणे छेः-१ सिद्धायतन, २ क्षुछहिमवत, ३ भरत, ४ इला, ५ गंगा, ६ श्री, \*\*\*\* ७ रोहितांशा, ८ सिंधु, ९ सुरा, १० हैमवत अने ११ वैश्रमण छे. पूर्वदिशामां सिद्वायतनकूट छे, ते पछी कमशः पश्चिमथी वीजा कटो सर्व रत्नमय, अने कूटना नामवाळा देवताना स्थानो छे. ते पांचसो योजन ऊंचो, मूळमां तेटला ज पहोळा अने ~\*\*\* उपर तेना अर्था विस्तारवाळा छे. पहेला कूटमां सिद्धायतन छे. ते सिद्धायतन पचास योजननं, लांबं, पचीश योजन पहोळं, अने छत्रीश योजन ऊंचुं छे. वळी आठ योजनना लांबा अने प्रवेशमां चार योजनना पहोळा त्रण द्वारोवडे युक्त, तेम ज एक सो आठ जिनप्रतिमा सहित छे. शेष दश कूटोमां साडीबासठ योजनना ऊंचा, सवाएकत्रीश योजनना पहोळा तेमज तेमां निवास \*\*\*\* करनार देवताओना सिंहासनवाळा प्रासादो छे. अहिं प्रस्तुत पर्वतना अधिपतिनो निवास होवाथी अने देवोना निवासभूत क्तटोमां पहेलो होवाथी हिमवत् कूटनुं ग्रहण कर्युं, अने सर्व क्रुटोमां छेल्लुं होवाथी वैश्रमण क्रूंटनुं ग्रहण कर्युं छे, कारण के अत्यारे दिस्थानकनो अधिकार चाले छे. वळी कह्युं छेः— कत्थई देसग्गहणं, कत्थइ घेप्पंति निरवससाइं । उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसओ निउत्ताइं ॥ ५८ ॥

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद १। १२५ ॥	भारतरात् उत्तन (मन नगर) नग मन द्वक हान छ, नाउ छन्या नगरन जात-पक्षात छ. क्रुटना संग्रहना गायाआ र्	<ul> <li>**</li> <li>* २ स्थान- काध्ययने उदेशः ३ वर्षधरादि- स्वरूपम् ८७ स्त्रम्</li> <li>**</li> <li></li></ul>
	ू इत्या। ५० आमलाप जाणवा, ानपंथ वर्षधर पवतमा-८ ासद्ध, ९ ानपंध, २ हारवर्ष, ४ प्राग्।वदह, ५ हार, ६ छति, ७ ४४ ४४ ४४	** ** ॥ १२५ ॥ ** *
	· ·	

श्रीतोदा, ८ अपरविदेह अने ९ रुचक एवा पोतपोताना देवोना नामवाळा नव क्टो छे. ऑहं पण बीजा अने छेछा क्रटना ग्रहण- पूर्वक व्याख्यान करवुं. (४), ' जंबू ' हत्यादि० नीलवान वर्षधर पर्वतने विवे-? सिद्ध, २ नील, ३ पूर्वविदेह, ४ शीता, ५ कींत्तिं, ६ नारीकांता, ७ अपरविदेह, ८ रम्यक् अने ९ उपदर्शन ए नव क्रूट छे. अहिं पण बीजा अने छेछा क्रूटवुं पूर्वनी माफक ग्रहण जाणवुं. ' एव 'मित्यादि० रुक्मी वर्षधर क्षेत्रमां-१ सिद्ध, २ रुक्मी, ३ रम्यक, ४ नरकांता, ५ बुद्धि, ६ रोप्यकूला, ७ हैरण्यवत् अने ८ मणिकांचन ए आठ क्ट छे. बीजा ने छेछा क्रूटवुं पूर्वनी माफक प्रहण करवुं. ' एव ' मित्त्यादि० वर्षधर शिखरी पर्वतमां-१ सिद्ध, २ शिखरी, ३ हैरण्यवत्, ४ सुरादेवी, ५ रक्ता, ६ लक्ष्मी, ७ सुवर्णक्ला, ८ रक्तोदा, ९ गंधापाती, १० ऐरावती अने ११ तिगिच्छि-ए अगियार क्रूट छे. आहं पण बीजा अने छेछा क्रूटवुं पूर्वनी जेम ग्रहण करवुं. (५). ( द्व० ८७ ) जंबूमंदर० उत्तरदाहिणेणं चुछहिमवंतसिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पं० तं०-वहुस- मतुछा अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं णातिवद्दंति, आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं, तं - पउमहहे चेव पुंडरीयदृहे चेव, तत्थ णं दो देवयाओ महडि़याओ जाव पलिओवमट्ठितीयाओ परिक संति, तं०-सिरी चेव लच्छी चेव, एवं महाहिमवंतरुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा पं० तं०-
--

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गस्त्रत्र सानुवाद् ॥ १२६ ॥ ***********************************	बहुसम० जाव तं०-महापउमदहे चेव महापोंडरीयदहे चेव, देवताओ हिरिचेव बुद्धिचेव, एवं निसढनीलवंतेसु तिगिंछिदहे चेव केसरिदहे चेव, देवताओ धिती चेव कित्तिचेव १, जंबूमंदर० दा- हिणेणं महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमदहाओ दहाओ दो महाणईओ पवहंति, तं०- रोहियचेव हरिकंतचेव, एवं निसढाओ वासहरपव्वताओ तिगिंछिदहाओ दो म० तं०-हरिचेव सीओअचेव, जंबूमंदर० उत्तरेणं नीलवंताओ वासहरपव्वताओ केसरिदहाओ दो महानईओ पवहंति तं०-सीता चेव नारिकंता चेव, एवं रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति तं०-सीता चेव नारिकंता चेव एवं रुप्पीओ वासहरपव्वताओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महानईओ पवहंति, तं०-णरकंता चेव रुप्पकुला चेव २, जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा पं० तं०- बहुसम० तं०-गंगप्पवातद्द्हे चेव सिंधुप्पवायद्दहे चेव। एवं हिमवए वासे दो पवायद्दहा पं० तं०-	*** २ स्थान- काघ्ययने उद्देशः ३ द्रदादि- स्वरूपम् ८८ स्वम् १ १२६ ॥
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	बहु० तं०-रोहियप्पवातद्दहे चेव रोहियंसपवातद्दहे चेव, जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे वासे दो पवा- यदद्दा पं० बहुसम० तं०-हरिपवातद्दहे चेव हरिकंतपवातद्दहे चेव, जंबूमंदरउत्तरदाहिणेणं महाविदे- हवासे दो पवायद्दहा पं० बहुसम० जाव सीअप्पवातद्दहे चेव सीतोदप्पवायद्दहे चेव ३,	** ** ** ** **

Ň

जंबूमंद	रस्स उत्तरेणं	रम्मए वा	से दो पवा	ायदहा पंव	, तं०बह	৹ जाव न	रिकंतप्पवाय	हिहे चेत्र
	तप्पवायद्दहे ने							
चेव रु	प्पकूलप्पवायद	हे चेव, जंबू	मंदरउत्तरेणं	एरवए व	वासे दो प	वायदहा पं	० बहु० ज	तव रत्त-
प्पत्राय	दहे चेव रत्ताव	इप्पवायद्दहे	ेचेव, जंबूमं	दरदाहिणे	णं भरहे	वासे दो	महानईओ	पं० बहु०
জাৰ ৰ	ांगा चेव सिंग	<b>बू चेव, एव</b>	जधा पव	गतदहा प	एवं णईओ	भाणियञ्च	।।ओ, जाव	<b>एर</b> इए
वासे	दो महानईअ	र्ग पं०-बह <u>ु</u>	समतुल्लाओ	া जाव	रत्ता चेत्र	रत्तवती चे	वेव ४ । र	सू॰ ८८
मूत	ठार्थःजंब्द्रीपन	॥ मेरुपर्वतनी उ	त्तर अने दक्षिण	। दिशाए चुह	इहिमवान अने	शिखरी वर्षधर	पर्वतने विषे	बे महाद्रह
कह्या छे,	ते आ प्रमाणे-ब	हुसमतुल्य, आवे	शेष, नानात्वरा	हेत अने एक	बीजाने उछंघ	न् करता नथी	ं तेमज लंबाई	, पहोळाई, ~
	तठाण अने परिधि नी स्थिति( आयुष्य							
	ना स्थिति जायुज वृतने विषे बे मोट							
गतर ग	वि मलांस्री में गाउँ वि मलांस्रीकटा	, उस कथा छ, . अने त्यां तेर्न	्य ना त्रुपाय ी ही अने बुद्धि	न्छुतनेषुरुष नामनी अधि	गग्ध् रूपग ाधात्री देवीओ	गामम मण्डः वसे के एज	प्रमागे निवधः	जान नहा- अने नीळवंत

11

भीस्था- नाहृस्तत्र सानुवाद १। १२७ ॥ **********	पर्वतने विपे तिभिंछि अने केशरी नामे वे द्रह छे अने धृति अने कीर्ति नामनी तेनी अधिष्टात्री देवीओ छे. (१), जंब्रुद्वीपना मरुपर्वतनी दक्षिण दिशाए महाहिमवंत वर्षधर पर्वतना महापबद्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-रोहिता अने हरि- कांता. एवी रीते निषध वर्षधर पर्वतना तिगिंछि द्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-हरित् अने शीतोदा. जंब्रुद्वीपना मेरु- पर्वतनी उत्तर दिशाए नीलवान वर्षधर पर्वतना केसरीद्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-शीता अने नारीकान्ता. ए प्रमाणे रुक्सी वर्षधर पर्वतना महापुंडरीकद्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-शीता अने नारीकान्ता. ए प्रमाणे रुक्सी वर्षधर पर्वतना महापुंडरीकद्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-शीता अने नारीकान्ता. ए प्रमाणे रुक्सी वर्षधर पर्वतना महापुंडरीकद्रहथी वे महानदी नीकळे छे, तेना नाम-शाता अने रूप्यकृला छे. (२), जंब्रुद्वीपना मेरुपर्वतनी दक्षिण दिशाए भरतक्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कह्या छे, ते आ प्रमाणे-बहुसमतुल्य, तेना नाम-गंगाप्रपातद्रह अने सिंधु- प्रपातद्रह छे. ए प्रमाणे हिमवत क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कह्या छे, ते वहुसमतुल्य छे, तेना नाम गोहित्यपातद्रह अने सिंहिता- शाप्रपातद्रह छे. जंब्रुद्वीपना मेरुपर्वतनी दक्षिण दिशाए हरिवर्थ क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह ( कुंड ) कह्या छे, ते बहुसमतुल्य छे. तेना नाम-हरित्प्रपातद्रह अने हरिकान्ताप्रपातद्रह छे. जंब्रुद्वीपना उत्तर अने दक्षिण दिशाए महाविदेह क्षेत्रमां वे प्रपात द्रह कह्या छे. बहुसमतुल्य यावत् शीताप्रपातद्रह अने शीतोदाप्रपातद्रह नामना छे. (३), जंब्रुद्वीपना मेरुपर्वतनी उत्तर दिशाए रम्यक्त्वक्षित्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे, ते बहुसमतुल्य यावत् पूर्वनी माफक कहेव्रुं. तेना नाम-नरकान्ताप्रपातद्रह अने नारीकांताप्रपातद्रह छे. एवी रीते हैरण्यवत क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे, ते बहुसमतुल्य, यावत् पूर्वनी माफक. तेना नाम- सुवर्णक्त्लाप्रपातद्रह छे. एवी रीते हैरण्यवत क्षेत्रमां वे प्रपातद्रह कहेल छे, ते बहुसमतुल्य, यावत् पूर्वनी दक्षिण दिशाए बहुसमतुल्य यावत् पूर्वनी माफक. तेना नाम-रक्ताप्रयातद्रह अने रवतवतीाप्रयातद्रह छे. जंब्रुद्वीपना मेरुपर्वतनी दक्षिण दिशाए	** ** ** ** ** ** ** **
------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------

भर	रतक्षेत्रमां वे महानदी कहेल छे. ते बहुसमतुल्य यावत् रक्ता अने रक्तवती नामनी छे. (४). ( सू० ८८ )
	टीकार्थः—'जंवू' इत्यादि० अहिं हिमवान आदि छ वर्षधर पर्वतोने विषे छ ज द्रहो छे, ते आ–
	पउमे १ य महापउमे २ तिगिंछी ३ केसरी ४ दहे चेव ।
	हरए महापुंडरिए ५, पुंडरीए चेव य ६ दहाओ ॥ ६१ ॥
	१ पद्म, २ महापद्म, ३ तिगिंछी, ४ केशरी, ५ महापुंडरीक अने ६ पुंडरीक. आ छ द्रहो क्रमशः छे. हिमवान पर्वतनी
	पर बहुमध्यभागने विषेपद्म छे जेनी अंदर तेवो पबद्रह नामनो हद छे. एवी रीते शिखरी पर्वतनी उपर बहुमध्यभागने विषे
	डरकि नामनो द्रह छे. ते बन्ने द्रह, पूर्व अने पश्चिममां हजार योजन लांबा अने पांचसो योजन पहोळा, चार ख़्णाने विषे दज्ञ
	ोजन ऊंडा, चांदीना कांठावाळा, वज्रमय पाषाणवाळा, तपनीय(रक्तसुवर्ण)ना तलीआवाळा, सुवर्ण मध्य रजतमाणिनी
	छवाळा छे, चारे दिशाए मणिना पगथिआवाळौ, सुखपूर्वक उतरी शकाय एवा, तेारण, ध्वज अने छत्र वगेरेथी सुशोभित,
	लोत्पल अने पुंडरीक कमल वगेरेथी रचित विविध पक्षी अने मत्स्यो जेमां फरी रहेला छे एवा तेमज अमरोना समू-
	ग्रेडे उपभोग्य   छे.  ' तत्थ णं 'ति० ते बे द्रहुने  विषे बे देवीओ वसे छे, पद्मद्रहमां  श्रीदेवी अने  पुंडरीकद्रहमां लक्ष्मी-
देव	त्री छे. ते बन्ने देवीओ <b>सुवनपतिनिकायमां अंतर्भूत छे, कारण के</b> तेओ पल्योपमना आयुष्यवाळी छे. व्यंतरनी देवीओनुं तो
	१. टोकामां चतुर्दशमणिसोपानो पाठ छे, पण जंबूद्वीपपन्नती वगेरेमां चारे दिशाए पगथिआनुं वर्णन छे माटे ते प्रमाणे लखेल छे.

श्रोस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १२८ ॥	उत्कृष्ट अर्द्वपल्पोपमनुं आयुष्य होय छे. भवनपतिनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य साडाचार पल्योपम प्रमाण होय छे. कह्युं छे के- अद्भुट्ट अद्धपंचम, पलिओवम असुरजुयलदेवीणं । सेस वणदेवयाणं, देसूणं अद्धपलियमुक्कोसं॥ ६२॥ दक्षिण दिशाना असुरकुमारनी देवीओनी उत्कृष्ट स्थिति साडात्रण पल्योपमनी अने उत्तर दिशाना असुरकुमारनी देवीओनी साडाचार पल्योपमनी उत्कृष्ट स्थिति होय छे. शेष उत्तर दिशाना नागकुमारादि नव भवनपतिनी देवीओनी उत्कृष्ट स्थिति देशे जणी एक पल्योपमनी, अने दक्षिण दिशाना नव भवनपतिनी देवीनी तथा व्यंतरनी बन्ने दिशानी देवीनी स्थिति अर्द्ध- पल्योपमनी होय छे. ते वे मोटा द्रहना मध्यमां एकेक योजनना लांबा-पहोळा कमळ छे अने ते अर्क्ध योजन जाडा छे, जलमां दश योजन बुडेला छे अने अर्द्ध योजन ऊंचा छे. वळी तेमां वन्नमय मूल, रिष्ठात्लमय कंद, वैद्दर्यत्तनमय नाळ, वैद्वर्यरत्नमय बाह्यपत्रो जांब्न्वर(सुवर्ण)मय अंदरना पत्रो, पीळा सुवर्णनी कर्णिका (डोडो) अने तपावेल सुवर्णनी केशरा तंतुओ छे. ते वे कमलनी वे कर्णिका अर्द्ध योजननी लांवी पहोळी अने एक कोश (बाहल्य) ऊंची छे. तेना उपर वे देवीओना भवन छे. ' एव 'मित्यादि० महाहिमवान पर्वतमां महापबद्रह अने रुक्सी पर्वतमां तो महापुंडरीकद्रह छे. ते बंने द्रह वे इजार योजन लांवा अने एक इजार योजन पहोळा छे. वे योजनना लांवा-पहोळा कमळवाळा छे, ते वे कमळमां वे देवीओना भवन छे. भएव 'मित्यादि० महाहिमवान पर्वतमां महापबद्रह अने रुक्सी पर्वतमां तो महापुंडरीकद्रह छे. ते बंने द्रह वे इजार योजन लांवा अने एक इजार योजन पहोळा छे. वे योजनना लांवा-पहोळा कमळवाळा छे, ते वे कमळमां वे देवीओ वसे छे. महापद्यमां हीदेदी अने महापुंडरीक्रमां बुद्धिदेवी छे. 'एव'मित्यादि० निषध पर्वतने विषे तिगिंछिद्रहमां घृतिदेवी अने नीलवान पर्वत पर केशरीद्रहमां कीचिंदेवी वसे छे. ते वे द्रह चार हजार योजन लांवा अने वे हजार योजन पहोळा छे. आ संवंधनी गाथा नीच प्रमाणे छे-	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
		X

पएसु सुरवहूओ, वसंति पळिओवमट्टितीयाओ। सिरिहिरि धितिकित्तीओ, बुद्धीलच्छी सनामाओ॥६३। आ गाथानो भावार्थ उपर कहेवायेल छे. (१), ' जंबू ' इत्यादि० तेमां रोहित् नदी, महापबद्रहथी दक्षिण तरफना तोरणयी नीकळीने एक हजार, छसो पांच योजन कांइक अधिक (पांच कळा) दक्षिण दिशाए पर्वत उपर जड़ने (वहीने) हारना आकारने धारण करवावाळा, कंडक अधिक बर्शे योजनप्रमाणवाळा, मगर( मत्स्य )ना म्रुख जेवा पडनाळरूप प्रपात-प्रवाह- वडे महाहिमवान पर्वतना रोहित् नामना कुंडमां पडे छे. मगरना म्रुखनी जीभ एक योजन लांबी, साडावार योजन पहोळी अने एक योजन जाडी छे, अने (रोहित् नदी) रोहितप्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी अने एक योजन जाडी छे, अने (रोहित् नदी) रोहितप्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी अने एक योजन जाडी छे, अने (रोहित् नदी) रोहितप्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी अने एक योजन जाडी छे, अने (रोहित् नदी) रोहितप्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी अने एक योजन जाडी छे, ज्वे (रोहित् नदी) रोहितप्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी अने एक योजन जाडी छे, ज्वे (रोहित् नदी) राहित्त्रपातकुंडमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने, हैमवान पहोळी, अढी योजन पहोळी अने एक गाउ ऊंडी छे, त्यारपछी क्रमशः इद्धि पामती मुख( समुद्रप्रवेश) )मां एकसो पचीश योजन पहोळी, अढी योजन ऊंडी तेमज बन्ने पासे वे वेदिका अने वे वनखंडवडे युक्त छे. एवी रीते सर्व महानदी शो, पर्वतो, कुटो अन वेदिका वगेरेथी युक्त छे. हरिकान्ता नदी तो महापद्मद्रहथी ज उत्तरदिशाना तोरणद्वारा नीकळीने कंड्क अधिक सोळसो ने पांच योजन सुधी उत्तर सन्मुख थइ, पर्वत उपरथी जइने कंडल बर्शे योजनप्रमाणवाळा प्रपात( धोघ)वडे हरिकांताकुंडमां तेम ज पडे छे. मगरना मुखनी जीभिका( जीभ) हो प्रमाण पूर्वे कहेल प्रमाणथी बेवई जाणवुं. ते प्रपातकुंडथी उत्तरदिश्वाना तोरणद्वारा
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

**%** \*\*\*\*\* \* \* \* नीकळीने हरिवर्षक्षेत्रना मध्य भागमां रहेनार गंधापाती नामना वृत्तवैताढच पर्वतथी एक योजन दर रहीने. पश्चिमदिशा सन्मख अस्था-२ स्थानж Ж \*\*\*\*\* थइ छप्पन हजार नदीओ सहित समुद्रमां जाय छे. आ हरिकांता नदी रोहित नदीना प्रमाणथी बमणा प्रमाणवाळी छे. 'एच' नानसत्र काध्ययने मित्यादि० एवी रीते, 'जंबूदीवे' त्यादि० अभिलापनुं सूचन करवा माटे कहेल छे. हरित महानदी तिगिछिद्रहनी दक्षिण सानुवाद उद्देशः ३ दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने कंइक अधिक सात हजार, चारसो, एकवीश योजन दक्षिण दिशा सन्मुख थइ, पर्वत उपर जईने × × 11 828 11 'हदनद्यादि-कंडक अधिक चारसो योजनना प्रमाणवाळा प्रपातवडे हरिकुंडमां पडीने पूर्वना समुद्रमां पडे छे, शेष ( लंबाई वगेरे ) हरि-Ж स्वरूपम् × × कांता नदीनी माफक जाणवुं. शीतोदा महानदी तिगिछिद्रहनी उत्तरदिशाना तोरणद्वारा नीकळीने तेटल। ज ( पूर्व कहेल कंइक अधिक सात हजार, चारसो, एकवीश योजन ) पर्वत उपर उत्तर सन्मुख जइने कंइक अधिक चारसो योजनग्रमाणवाळा प्रपात-८८ सूत्रम् ×× वडे शीतोदाक़ुंडमां पडे छे. मगरना मुखनी जीभिका चार योजन लांबी, पचास योजन पहोळी अने एक योजननी जाडी \* \* समजवी. शीतोदाकुंडथी उत्तरदिशाना तोरणद्वारा नीकळीने देवकुरु क्षेत्रनो विभाग करती थकी, चित्र अने विचित्र क्रटवाळा Ж ్× बे पर्वतोने अने निषधद्रहादि पांच द्रहोनो वे भाग करती थकी चोराशी हजार नदीओनी साथे मळवापूर्वक. भद्रशाळ वनना Ж मध्यमां, मेरुपर्वतथी बे योजन दूर रहीने त्यांथी पश्चिम सन्मुख फरीने, विद्युत्प्रभ नामना वक्षस्कार पर्वतना नीचेना भागने \*\*\*\*\* Ж Ж विदारीने मेरुनी पश्चिम दिशाथी अपर ( पश्चिम ) महाविदेहना मध्य भागद्वारा एक एक विजयमांथी अठ्यावीश-अठ्यावीश ж \*\*\*\*\* हजार नदीओ साथे मळीने, जयंतद्वारनी नीचेथी पश्चिम समुद्रमां प्रवेश करे छे. शीतोदा नदी प्रवाहमां तो पचाश योजन पहोळी अने एक योजन ऊंडी छे, त्यारपछी अनुक्रमे वधती वधती ग्रुखमां ( सग्रुद्रमां भळती वखते ) पांचसो योजन पहोळी **१२९ 11** 

\*\*\*\* \*\*\*\*\*\*\*\*\* अने दश्च योजन ऊंडी थाय छे. ' जंबू ' इत्यादि० शीता महानदी केशरीद्रहना दक्षिण तोरणथी नीकळी, क़ुंडमां पडीने. मेरु-पर्वतना पूर्वथी पूर्वविदेहना मध्यथी विजयद्वारनी नीचेथी पूर्व समुद्रमां प्रवेश करे छे. बाकीनी बधी वक्तव्यता शीतोदा समान जाणवी. नारीकांता नदी तो उत्तरदिशाना तोरणथी नीकळीने रम्यक्क्षेत्रनो विभाग करती छती हरितमहानदीनी वक्तव्यता प्रमाण रम्यकवर्षना मध्य भागथी पश्चिम समुद्रमां प्रवेश करे छे. 'एच' मित्यादि० नरकांता नदी महाप्रंडरकिंद्रहमांथी दक्षिण दिशाना तोरणद्वारा नीकळीने रम्यक्वर्षनो विभाग करती छती, हरिकांतानी वक्तव्यता प्रमाणे पूर्व समुद्रमां प्रवेश करे छे. रूप्यकूला नदी तो महापुंडरीकद्रहना उत्तरदिशाना तोरणथी नीकळीने ऐरण्यवान क्षेत्रना वे विभाग करती छती रोहित नदीनी वक्तव्यता प्रमाण पश्चिम समुद्रमां प्रवेश करे छे. (२), 'जंबू' इत्यादि० 'पवायदह' त्ति० पडवुं ते प्रपात, ते प्रपातवंडे ओळखाता जे द्रह ते बे \*\*\*\*\* प्रपातद्रह. अहिं ज्यां हिमवान आदि पर्वतथी गंगा वगेरे महानदी प्रणाल-पडनाळ(धोध)थी नीचे पडे छे ते प्रपातद्रह एटले प्रपात कुंड. 'गंगापवायदद्दे चेव'त्ति० हिमवान वर्षधर पर्वतनी उपर रहेल पबद्रहना पूर्व दिशाना तोरणथी नीकळीने, पूर्व सन्मुख पांचसो योजन जइने गंगावर्त्तन कूटमां ( कूटनी नीचेथी ) पाछी वळती छती पांच सो त्रेवीश योजन अने साडीत्रण कळा सुधी दक्षिण दिशा सन्मुख पर्वत उपरथी जइने गंगा महानदी, लंबाइवडे अर्ध योजनप्रमाण, पहोळाईवडे सवा-छ योजनवाळी, जांडाईवडे अर्द्धगाउवाळी जीभिकाथी युक्त एवा काडेला मगरना मुख समान धोधवडे कंइक अधिक एकसो योजन प्रमाणवाळा अने मोतीना हारना जेवा प्रपात(ऊंचेथी पडवुं, ते)थी जे गंगाप्रपातकुंडमां पडे छे ते कुंड. साठ योजन लांबो अने पहोळो, कंईक न्यून एकसो नेवुं योजननी परिधि(धेरावा)वाळो, दश योजन ऊंचो अने विविध मणि-

श्रीस्था- ना <b>ङ्ग</b> सत्र सानुवाद १। १३० ॥ ***	वडे बंधायेल छे. ते कुंडनी पूर्व, पश्चिम अने दक्षिण दिशामां त्रण त्रण पगथिया जोवा लायक छे. ते विविध तोरणो सहित छे. मध्य भागमां गंगा देवीनो द्वीप छे. ते द्वीप आठ योजन लांबो-पहोळो, कंईक अधिक पच्चीस योजननो परिक्षेप-घेरावावाळो छे. पाणीथी उपर बे कोश ऊंचो अने वज्रमय छे. एक कोश लंबाइवाळा, अर्द्ध कोश पहोळाईवाळा, कंईक न्यून एक कोश ऊंचाईवाळा, अनेक (सेंकडो) स्तंभ(थांभला)वडे जोडायेला गंगादेवीना भवनवडे सुशोभित करायेल छे उपरनो भाग जेनो एवो ते कुंड छे. गंगाप्रपात छुंडथी दक्षिण दिशाना तोरणथी नीकळीने प्रवाहमां (नीकळती वखते) सवा छ योजननी पहोळी, अर्द्ध कोश ऊंडी गंगा नदी उत्तराई भरतना बे भाग करती छती सात हजार नदीओ साथे मळीने खंडप्रपातगुफाना पूर्व भागथी नीचे वेताटय पर्वतने विदारीने-भेदीने दक्षिणाई भरतना बे विभाग करती छती ते विभागना मध्य भागथी जईने, पूर्व सन्युख वळीने वधी मळीने चौदं हजार नदीओ साथे युखमां (प्रवेशस्थलमां) साडावासठ योजन पहोळी अने सवा योजन ऊंडी एवी ते जगतीने भेदीने पूर्वना ल्वणसमुद्रमां प्रवेश करे छे. ते गंगाप्रपातद्रह. गंगाप्रपातद्रहना प्रमाणे सिंधु- प्रपातद्रह पण व्याख्यान करवा योग्य छे अर्थात् तेचुं व्याख्यान करखुं. आ कारणथी ज बे द्रह, लांचा, पहोळा, ऊंडा अने परिधि- वडे समान विशेषणवाळा माववा. बधा य प्रपातद्रहो द्व योजन ऊंडा कहेवा. अहि वर्षधर पर्वतनी नदीओना अधिकारमां गंगा, सिंधु	
<b>****</b>	प्रपातद्रह पण व्याख्यान करवा योग्य छे अर्थात् तेनुं व्याख्यान करवुं. आ कारणथी ज बे द्रह, लांबा, पहोळा, ऊंडा अने परिधि-	*** *** *** *** *** *** *** *** ***

****************************	अधिकार होवाथी तेतुं वर्णन करेल नथी. 'एव' मित्यादि० एम पूर्वनी माफक जाणवुं. 'रोहिमप्पवायदहे चेव' त्ति० कहेवायेल स्वरूपवाळी रोहित नदी ज्यां (जे कुंडमां) पडे छे, वळी जे कुंड एक सो वींक्ष योजननो लांबो-पहोळो छे, कंडक न्यून त्रणसो एंसी योजनना घेरावावाळो अने जेना मध्यभागमां रोहित द्वीप सोळ योजननो लांबो-पहोळो, कंडक अधिक पचाग्र योजन घेरावावाळो, पाणीना उपर बे कोश ऊंचो छे, गंगादेवीना भवन समान रोहित्देवीना भवनवडे सुश्रोभित उपरनो भाग छे जेनो ते रोहितप्रपातद्रह ' रोहिमंसप्पचायदहे चेव ' त्ति० हिमवान वर्षधर पर्वतनी उपर रहेल पद्मद्रहना उत्तरदिशाना तोरणथी नीकळीने रोहितांशा महानदी, कंइक अधिक बसो ने छोतेर योजन पर्यंत उत्तर सन्मुख थई, पर्वत उपरथी जइने लंबाईथी एक योजनवाळी, पहोळा- ईथी साडाबार योजनवाळी, जाडाइवडे एक गाउवाळी, जीभिकावडे पहोळो करेल मगरना मुखनी जेम प्रणालवडे अने मो- तीना हारना आकारवाळा कंइक अधिक एकसो योजनप्रमाणवाळा प्रपातवडे ज्यां पडे छे अने जे रोहितप्रपातकुंड समान मानवाळी छे ते खुंडना मध्यमां रोहितद्वीप समान प्रमाणवाळो रोहितांग्रदीप छे. ते रोहितांशभवनवडे पूर्वे कहेल प्रमाणवडे अलंकुत छे, अने जे कुंडथी रोहित् नदी समान प्रमाणवाळी रोहितांग्रदा छ. ते रोहितांशभवनवडे पूर्वे कहेल प्रमाणवडे अलंकुत हे , जो के कुंडथी रोहित् नदी समान प्रमाणवाळी रोहितांग्रदीप छे. ते रोहतांशभवनवडे पूर्वे कहेल प्रमाणवडे अलंकुत हे , जने जे कुंडथी रोहित् नदी समान प्रमाणवाळी रोहितांग्रा नदी उत्तर तोरणद्वारा नीकळीने, पश्चिम समुद्रमां प्रवेश करे छे ते रोहितांग्राप्रपातद्रह छे. 'जंच्'इत्यादि० 'हरिप्पचायद्दहे चेच'त्ति० पूर्वे कहेल लक्षणवाळी हरित् नदी ( कुंडमां ) ज्यां पंडे छे, वळी जे बसो ने चालीश योजन लंबाई अने पहोळाईथी, अने सातसो ने ओगणसाठ योजन परिधि- बडे छे, अने जेना मध्यभागमां हरित् देवीनो द्वीप छे ते द्वीप बत्रीश योजन लंबो, पहोळा तेमज एक सो ने एक योजननी परि- थिवाळो छे अने जळना उपर बे कोश ऊंचो छे, वळी हरित्देवीना भवनवडे सुशोभित उपरनो भाग छे जेनो, ते आ इरिय- थिवाळो छे अने जळना उपर बे कोश ऊंचो छे, वळी हरित्देवीना भवनवडे सुशोभित उपरनो भाग छे जेनो, ते आ इरिय-
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	

श्रीस्था- नाङ्गग्रत् सानुवाद ॥ १३१ ॥ ******	पातद्रह छे. 'हरिकंतप्पचायददे चेव' त्ति॰ पूर्वे कहेल स्वरूपवाळी हरिकांता महानदी जे कुंडमां पडे छे, वळी जे कुंडनुं प्रमाण हरितकुंड समान छे, अने हरित्द्वीप समान भवन सहित हरिकांतादेवीना द्वीपवडे भूपित मध्यभाग छे जेनो ते हरि- कांताप्रपातद्रह छे. 'जंबू' इत्यादि॰ 'सीयप्पचायद्दहे चेव' क्ति॰ नीलवान पर्वतथी ग्रीतानदी नीकळीने जे कुंडमां पडे छे, वळी जे कुंड लांबो अने पहोळो चारसो एंसी योजन छे अने पंदरसो अदार योजन विशेष न्यून परिधिवाळो छे, तथा जेनी मध्यमां चेसठ योजन लांबो अने पहोळो, बसो अने वे योजननी परिधिवाळी, जलना उपर वे कोश ऊंचो श्रीता द्वीप छे, तथा जेनी मध्यमां देवीना भवनथी सुशोभित उपरनो भाग छे जेनो ते शताप्रपातद्रह छे. 'सीतोदप्पचायद्दहे चेव' त्ति॰ निपधपर्यतथी शीतोत्ता नदी नीकळीने ज्यां (कुंडमां) पडे छे ते शीतोदाप्रपातद्रह छे. ते शीताप्रपातद्रह समान छे अने शीतादेवीना द्वीप अने भवन समान शीतोदादेवीनो द्वीप अने भवन छे. (३), 'जंबू' इत्यादि॰ नरकांता अने नारीकांताप्रपातद्रह (ए बझे) तो हरिकांता अने हरित्यपातद्रह ( समान छे. अने पोताना नाम समान द्वीप अने देवीओ छे. 'एव' मित्यादि॰ सुवर्णकूला अने रूप्यकूला प्रपातद्रह( ए बन्ने )ने रोहितांशा अने रोहितप्रपातद्रह सरसा जाणवा. विशेप स्वयं समजवा योगय छे. 'जंबू' इत्यादि॰ रक्ता अने रक्तावतीप्रपातद्रह(ए बन्ने)ने गंगा अने सिंधुप्रपातद्रह समान कहेवा, परंतु रक्ता प्रवंससुद्रमां मळनारी, अने रकवती पश्चिम समुद्रमां मळनारी छे. 'जंबु' इत्यादि॰ 'जंबुद्दीवे २ मंदरस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो महानदीओ? इल्यादि॰ 'एव' मिति॰ अनंतरक्रमवडे 'जह'त्ति॰ जेम पूर्वे क्षेत्र क्षेत्रमां वे वे प्रपातद्रह कबा तेवी रीते नदीओपण कहेवी. ते आ प्रमाणे– <b>गंगा १ सिंधू २ तह रोहियंस ३, रोहीण्टादी य ४ हरिकंता ५ ।</b>	***************************************	२ स्थान- काध्ययने उदेशः ३ इदनद्यादि- स्वरूपम् ८८ स्रत्रम्	
---------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------	--

हरिसलिला ६ सीयोया ७, सत्तेया होंति दाहिणओ ॥ ६४ ॥ सीया य १ नारिकांता २, नरकांता चेव ३ रुप्पकूला ४ य । सलिला सुवण्णकूला ५, रत्तवती ६ रत्त ७ उत्तरओ ॥ ६५ ॥ [मेकनी] दक्षिण दिशामां गंगा, सिंधु, तथा गेहितांशा, गेहितनदी, हरिकांता, हरितसलिला अने शीतोदा-आ सात नदीआं होय छे. शीता, नारीकांता, नरकांता, रूप्यरूला, सुवर्णकूला, रक्तवती अने रक्ता-आ सात नदीओ मेरुनी उत्तर दिशामां होय छे. शंबुद्दीपना अधिकारथी अने क्षेत्रवडे कथन करवा योग्य पुद्रगल धर्मना अधिकारथी जंबुद्वीपना भरतादि संबंधी काल, लक्षण, पर्यायधर्मोंने अनेक प्रकारे अढार सत्रवडे कहे छे जंबुद्दीवे २ भरहेरवषसु वासेसु तीताप उस्सप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए दो सागरो- वमकोडाकोडीओ काले होत्था १, एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पन्नत्ते २, एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति ३, जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुस- माए समाए मणुया दो गाउयाइं उडं उच्चत्तेणं होत्था ४, दोन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था ५, एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पालयित्था ६, एवमागमेस्साते उस्सप्पिणीए जाव पालिस्संति ७,
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्वास्था- नाङ्गसत्त्र सानुषाद ॥ १३२ ॥ ********************	जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमये एगजुगे दो अरिहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उपज्जंति वा उप्पज्जिसंति वा ८, एवं चक्कवद्विवंसा ९, दसारवंसा १०, जंबूभरहेरवएसु एगसमते दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ११, एवं चक्कवद्विणो १२, एवं वल्ठदेवा एवं वासुदेवा (दसारवंसा) जाव उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्संति वा १३, जंबू० दोसु कुरासु मणुआ सया सुसमसुसममुत्तमिड्डिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं०-देवकुराए चेव उत्तरकुराए चेव १४, जंबु- दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमं इड्डिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं०-हरिवासे चेव रम्मगवासे चेव १४, जंबू० दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुत्तमुत्तमामीर्ड्डिं पत्ता पच्चणुब्भ- वमाणा विहरति, तं०-हमवए चेव एरझवए चेव १६, जंबुद्दीव दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दूसमसु- सममुत्तममिड्डिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति तं०-पूब्वविदेहे चेव अवरविदेहे चेव १७, जंबूदीवे दोवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं०-भरहे चेव एरवते चेव १८। सू०८९ म्लार्थः—जंबूद्दीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरगत क्षेत्रने विषे अतीत उत्सर्पिणीमां सुपमद्र्पम नामना (चोथा) आरानो	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	F
------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------	---

i i	काळ वे कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण हतो. (१), एवी रीते आ वर्तमान अवसर्विणीमां सुषमदुष्षम नामना (त्रीजा) आरानो काळ
	बे कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण कहेल छे. (२), एवी रीते आगामी उत्सर्पिणीमां सुषमदुष्षम नामना (चोथा) आरानो काळ
	पूर्व प्रमाणे थशे. (३), जंबुद्वीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे अतीत उत्सर्थिणीना सुवम नामा (पांचमा) आरामां
	मनुष्यों बे गाउनी ऊंचाईवाळा तेमज (४), बे पल्योपमना आयुष्यने पाळनारा हता. (५), एवी रीते आ अवसर्पिणीमां सुषम नामना
	(बीजा) आरामां वे पल्योपमना आयुष्यने भोगवनारा हता. (६), एवी रीते आगामी उत्सर्थिणीमां सुषम नामना (पांचमा) आरामां
	बे पल्योपमना आयुष्यने पाळनारा थशे. (७), जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे एक युगना एक समयम i
	बे अरिहंतना वंश उत्पन्न थया छे, उत्पन्न थाय छे अने उत्पन्न थशे. (८), एवी रीते बे चक्र वर्तना वंश (९), बे दशार-वासुदेवना
	वंश उपज्या छे, उपजे छे अने उपजशे. (१०), जंबूद्वीपना भरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे बे अरिहंत उत्पन्न थया छे, उत्पन्न थाय
	छे अने उत्पन्न थरो. (११), एवी रीते बे चकवर्ती उपज्या छे, उपजे छे अने उपजग्ने. (१२), एवी रीते बे बलदेव अने बे वासुदेव
	उत्पन्न थया छे, उत्पन्न थाय छे अने उत्पन्न थशे. (१३), जंबूद्वीपना वे कुरुक्षेत्रने विथे मनुष्यो सदा सुषमसुषम (पहेला)
	आरानी उत्तम ऋष्धिने पामीने भोगवता थका विचरे छेते क्षेत्रो देवकुरु अने उत्तरकुरु (१४), जंबूद्रीप नामना द्वीपमां बे वर्षने
	विषे मनुष्यो सदा सुषम नामना (बीजा) आरानी उत्तम ऋद्विने पामीने भोगवता थका विचरे छे, ते वर्षक्षेत्रो हरिवर्व अने
}	रम्यकवर्ष (१५), जंबूद्वीपना वे क्षेत्रोमां मनुष्यो सदा सुषमदुष्षम नामना (त्रीजा) आरानी उत्तम ऋद्विने पामीने भोगवता
}	थका विचरे छे, ते क्षेत्रो हैमवत अने हैरण्यवत (१६), जंबूद्वीप नामना द्वीपमां बे क्षेत्रने विषे मनुष्यो सदा दुष्षमसुषम २३

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १३३ ॥ ********	(चोथा) आरानी उत्तम ऋष्धिने पामीने भोगवता थका विचरे छे, ते आ-पूर्वविदेह अने अपरविदेह (१७), जंबूद्वीपना वे क्षेत्रमां मनुष्यो छ प्रकारना काल संबंधी आधुष्यादि ऋदिने पामीने मेगगवता थका विचरे छे, ते आ-भरत अने ऐरवतक्षेत्र (१८). द्व० ८९ टीकार्थः-आ सत्रो सुगम छे. विग्नेष ए के 'तीताए'त्ति० गयेली उत्त्सपिणीनुं स्वरूप पूर्वनी माफक जाणवुं. ते उत्त्सपिं णीमां अथवा उत्सपिंणीना सुषमदुष्यमा-बहु सुखवाळा, समा-चोथा आराना लक्षणरूप काल विभागनी स्थिति (अथवा प्रमाण) वे कोडाकोडी सागरोपम हती (१), एवी रीते जंबुंदीवे २ इत्यादि० कहेचुं, विशेप 'इमसिं' त्ति० आ प्रत्यक्ष वर्तमान पूर्वोक्त अर्थवाळी अवसपिंणीमां 'जाव'त्ति० दृषमदूष्यमा नामना त्रीजा आराने विषे 'दो सागरोवमकोडाकोडीओ काले' 'पन्नत्ते' बहेल छे. ए ज पूर्वसत्रथी विशेष छे. पूर्व सत्रमां 'होत्थ'त्ति कहेल छे (२), 'एव'मित्यादि० 'आगामिस्साए'त्ति० आवती उत्स- पिंणीमां 'भविष्यति' थशे. ए ज पूर्वसत्रथी विशेष छे (३), 'जंबू' इत्यादि० सुष्म नामना गांचमा आरामां 'होत्थ'त्ति० डातती उत्स- पिंणीमां 'भविष्यति' थशे. ए ज पूर्वसत्रथी विशेष छे (३), 'जंबू' इत्यादि० 'एगजुगे'ति० पांच वर्षनो युग काल विशेष कहेवाय छे. युगना एक वर्षना एक समयमां, 'एगसमए एगजुगे' आ प्रमाणे पीठ होवा छतां पण व्याख्या उत्त कमवडे ज करवी. अर्थना संवर्ध्यी आ प्रकारे ज कहेली व्याख्या छे, अथवा बीजी रीते मावना करवी. आरहतीना वे वंग्न-प्रवाह छे, एक <u>भरतक्षेत्रमां उत्पन्त थयेल अने बीजो ऐरवत क्षेत्रमां उत्पन्त</u> थयेल. 'दसार'त्ति० सिद्धांतनी परिभाषावडे वासुदेवो (८१३), १ बीजा सुत्रथी तेरमा सूत्र सुधीनु वर्णन टीकाकारे कोइक शब्दनो अर्थ संक्षेपथी करेल छे माटे मूलसूत्रना अनुवादची जाणी हेवुं.	*** २ स्थान- काध्ययने उदेशः ३ सुषमादुःष- मादि- स्वरूपम् ८९ सत्रम् **** **** ***** *****
× × × × × × × ×	१ बाजा सूत्रयों तरमा सूत्र सुधानु वणन टॉकाकार काइक शब्दनों अध संक्षेपथी करेल छे माटे मूलसूत्रना अनुवादघी जाणी लेवुं.	

'जंच्'इत्यादि० सर्वदा 'सुसमसुसमं'नि० पहेला आरा जेवो जे विपाक ते सुपमसुपमा तेना संबंधवाळी जे ऋढि ते सुपम सुपमज, ते उत्तम ऋढिने-प्रधान ऐश्वर्यने अर्थात् उच्च आयुष्य, कल्पष्टक्षे आपेल भोग अने उपभोगादिकने प्राप्त थया छतां, ते भोगो प्रत्ये अनुभव करता थका विचेरे छे, पण सत्ता मात्रथी नहिं, अर्थात् वेदे छे अथवा सुपमसुपम नामना काल विशेषने पामेला अने उत्तम ऋढिने अनुभवता थका रहे छे. कछुं छे के— दोस्नुवि कुरासु मणुया, तिपछपरमाउणो तिकोसुच्चा। पिट्टिकरंडसयाइं,दो छप्पन्नाइं (तु) मणुयाणं ॥६६॥ सुसमसुसमाणुभावं, अणुभवमाणाणऽवच्चगोवणया। अउणापन्नदिणाइं, अट्टमभत्तरस आहारो ॥६७॥ देवकुरु अने उत्तरकुरु ए वे क्षेत्रने विषे मनुष्यो उत्कृष्ट त्रण पत्न्योपमना आयुष्यवाळा [ जघन्यथी पल्यना असंख्य भाग न्यून पण पल्यनुं आयुष्य होय छे. ], त्रण कोश ऊंचा छे. ते मनुष्योने बर्शे छप्पन पांसळी होय छे. सुपम- सुपम-अत्यंत सुखने अनुभवे छे, तथा अपत्य( संतान )नी प्रतिपालना ओगणपचाश दिवस करे छे. वळी अट्टम भक्त आहार करे छे. दक्षिणमां देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र उत्तरमां, ते बन्नेमां उपरोक्त ' जंचू ' इत्यादि० 'सुसमं'त्ति० सुपमा–बीजा आरा जेचुं सुख, शेष तेमज जाणवुं. कह्युं छे के— हरिवासरम्मएसु, आउपमाणं सरीरउस्सेहो। पलिओवमाणि दोान्नि उ, दोन्नि य कोसा समा भणिया ६८ छट्ठस्स य आहारो, चउसट्टिदिणाणुपालणा तेसिं । पिट्टिकरंडाण सयं, अट्ठावीसं मुणेयटवं ॥ ६९ ॥	'जंचू'इत्यादि० सर्वरा 'सुसमसुसमं'ति० पहेला आरा जेवो जे विपाक ते सुपमसुपमा तेना संबंधवाळी जे ऋदि ते सुपम- सुपमज, ते उत्तम ऋदिने-प्रधान ऐश्वर्यने अर्थात् उच्च आयुष्य, कल्पच्छे आपेल भोग अने उपभोगादिकने प्राप्त थया छतां, ते भोगो प्रत्ये अनुभव करता थका विचरे छे, पण सत्ता मात्रथी नहिं, अर्थात् वेदे छे अथवा सुपमसुपम नामना काल विशेषने पामेला अने उत्तम ऋदिने अनुभवता थका रहे छे. कष्ठुं छे के— दोसुवि कुरासु मणुया, तिपछपरमाउणो तिकोसुच्चा। पिट्टिकरंडसयाइं,दो छप्पन्नाइं (तु) मणुयाणं ॥६६॥ सुसमसुस्तमाणुभावं, अणुभवमाणाणऽवच्चगोवणया। अउणापन्नदिणाइं, अट्टमभत्तरस आहारो ॥६९॥ देवकुरु अने उत्तरकुरु ए वे क्षेत्रने विषे मनुष्यो उत्कृष्ट त्रण पत्योपमना आयुष्यवाळा [ जवन्यथी पल्यना आसंख्य भाग न्यून पण पल्यनुं आयुष्य होय छे. ], त्रण कोश्च ऊंचा छे. ते मनुष्योने बरों छप्पन्न पांसळी होय छे. सुपम- सुपम-अत्यंत सुखने अनुभवे छे, तथा अपत्य( संतान )नी प्रतिपालना ओगणपचाछा दिवस करे छे. वळी अट्टम भक्त आहार करे छे. दक्षिणमां देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र उत्तरहर श्वेत्र उत्तरा हे, ते मनुष्योने बरों छप्पन पांसळी होय छे. सुपम- सुपम-अत्यंत सुखने अनुभवे छे, तथा अपत्य( संतान )नी प्रतिपालना ओगणपचाछा दिवस करे छे. वळी अट्टम भक्त आहार करे छे. दक्षिणमां देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र उत्तरगं, ते बन्नेमां उपरोक्त ' जंबू ' इत्यादि० 'सुसमं'त्ति० सुपमा-वीजा आरा जेचुं सुख, शेष तेमज जाणवुं. कक्षुं छे के— हरिवासरम्मएसु, आउपमाणं सरीरउस्सेहो। पलिओवमाणि दोन्नि उ, दोन्नि य कोसा समा भणिया ६८ छट्ठस्स य आहारो, चउसट्टिदिणाणुपालणा तेर्सि । पिट्टिकरंडाण सयं, अट्ठावीसं मुणेयव्वं ॥ ६९ ॥
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र	हरिवर्ष अने रम्यक्वर्ष क्षेत्रने विषे वे पल्योपम आयुष्यनुं प्रमाण अने शरीरनी ऊंचाइ वे गाउनी छे. तेओने छट भक्ते	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
	आहार अने चोसठ दिवस पर्यंत अपत्यनी पालना होय छे, तथा तेओनी पांसळीओ एकसो ने अठचावीश जाणवी. ' जंचू '	🕱 काध्ययने
सानुवाद 🗶	इत्यादि॰ ' सुसमदुस्समं ' ति॰ सुषमदुष्षम नामना त्रीजा आराना अनुभावनी ऋद्धि ते सुषमदुष्पमऋद्धि, शेष पूर्ववत् जणानं जनां के के	😴 उद्देशः ३
॥ १३४ ॥ 👷	जाणवुं. कह्युं छे के—	🌋 सुषमादुःष-
×	गाउयमुचा पलिओ–वमाउणो वज्जरिसहसंघयणा । हेववएरन्नवए, अहमिंदणरा मिहुणवासी ॥७०॥	🕱 मादि-
11 838 11 ** ********************************	चउसईी पिडिकरं–डयाण मगुयाण तेसिमाहारो।भत्तस्स चउत्थस्स य,उणसीतिदिणाँगुपाळणया।७१॥	
	हैमवत अने ऐरण्यवत क्षेत्रने विषे मनुष्यो एक गाऊना ऊंचा, एक पल्योपमना आयुष्यवाळा, वज्रऋषभनाराच संघयण-	× × ८९ सत्रम्
X X X X	वाळा, अहमिंद्र (स्वामी-सेवकभाव सिवायना) अने युगलीआ होय छे, ते मनुष्योने पांसळीओ चौसठ होय छे, चोथ भक्ते	
×	( एकांतरे ) आहार होय छे अने तेओने ओगण्यासी दिवस सुधी अपत्यनी पालना होय छे. 'जंबू' इत्यादि० 'दूसमसुसमं'	8
	ति॰ दुष्षमसुषमा एटले चोथा आरानो भाव, तेना संबंधवाळी जे ऋद्धि ते, दुष्षमसुषमज जाणवी. बाकी पूर्वनी माफक समजवुं.	
××××	कह्युं छे के—	X .
X	मणुयाण पुव्वकोडी, आउं पंचुस्सिया धणुसयांइ।दूसमसुसमाणुभावं,अणुहोंति णरा निययकालं७२	**************************************
	पूर्वविदेह तथा अपरविदेहने विषे मनुष्योनुं आयुष्य क्रोडपूर्वनुं अने ऊंचाइ पांचसो धनुष्यनी हाय छे. तथा दुष्षमसुषमा-	×    १३४ !
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	જે તે મુદ્ધ તે મુદ્ધ મુદ્ધ મુદ્ધ મુદ્ધ મુદ્ધ માલું મુખ્ય જે મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુદ્ધ મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય	×    १३४ !  ★    १३४ !

ĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸĸ	चोथा आरा समान अनुभावने मनुष्ये हमेशां अनुभवे छे. ' जंबद्दीवे ' इत्यादि० 'छव्विहंपि ' त्ति० सुषमसुषमादिक उत्सर्षिणी अवसर्षिणीरूप छ आरानो अनुभव भरत, ऐरवतने विषे मनुष्यो अनुभवे छे. १८. ( स० ८९ ) अनंतर जंबूद्वीपने विषे काललक्षण, द्रव्यना पर्याय विश्नेषो कह्या, हवे तो जंबूद्वीपमांज कालपदार्थने प्रगट करनार ज्योतिष्कोनी वे स्थानकना अनुपातवडे प्ररूपणा करे छे. जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभार्सिस् वा पभासंति वा पभासिस्संति वा, दो सूरिआ तार्विंसु वा तंवति वा तविस्संति वा, दो कत्तिया, दो रोहिणीओ, दो मगासिराओ, दो अद्दाओ, एवं भाणि- यव्वं, (गाथा)-कत्तियं रोहिणि मगसिर, अदाँ य पुणव्वसूँ अ पूसो य । तत्तोऽवि अस्सलेसाँ, महाँ य दो फग्गुणीओ य ॥१॥ हत्थों चित्तें साई, विसाईाँ तहय होति अणुराईाँ। जेट्ठाँ मूल्ठोँ पुटर्वा य, आसाढा उत्तरीं चेव ॥ २ ॥ अभिईँसवणैधणिट्ठौ सयभिसयौँ दो य होति भद्दर्वयौँ । रेवर्तै अस्सिणि " भरणी <sup>26</sup> नेतव्वा आणुपुठ्वीए ॥३॥ एवं गाहाणुसारेणे णेयव्वं जाव दो भरणीओ [१], दो अग्गी, दो पयावती, दो सोमा, दो रहा, दो अदिती, दो बहस्सती, दो सप्पी, दो पीती, दो	******************************
××		×

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ १३५ ॥ *********	भगा, दो अज्जमा, दो सविता, दो तट्टा, दो वाऊ, दो इंदग्गी, दो मित्ता, दो इंदा, दो निरती, दो आऊ, दो विस्सा, दो बम्हा, दो विण्हू, दो वसू, दो वरुणा, दो अया, दो विविद्धी. दो पुस्सा, दो अस्सा, दो यमा [२], दो इंगालगा १, दो वियालगा २, दो लोहितक्खा ३, दो सणिच्चरा ४, दो आहुणिया ५, दो पाहुणिया ६, दो कणा ७, दो कणगा ८, दो कणकणगा ९, दो कणगविताणगा १०, दो कणगसंताणगा ११, दो सोमा १२, दो सहिया १३, दो आसासणा १४, दो कज्जोवगा १५, दो कब्बडगा १६, दो अयकरगा १७, दो दुंदुभगा १८, दो संखा १९, दो संखवन्ना २०, दो संखवन्नामा २१, दो कंसा २२, दो कंसवन्ना २३, दो कंसवन्नामा २४, दो रूप्भी २५, दो त्रणमासा २६, दो णीला २७, दो णीलोमासा २८, दो भासा २९, दो मासरासी ३०, दो तिला ३१, दो तिल- पुष्फवण्णा ३२, दो दगा ३३, दो दगपंचवन्ना ३४, दो काका ३५, दो कक्वंधा ३६, दो इंद्र्गगी	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
**************************************	पुष्फवण्णा ३२, दो दगा ३३, दो दगपचवन्ना ३४, दो काका ३५, दो ककधा ३६, दो इदगी [वा] ३७, धूमकेऊ ३८, दो हरी ३९, दो पिंगला ४०, [३], दो बुद्धा ४१, दो सुका ४२, दो	× × ×
<b>****</b>	१. सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्रना टीकाकारे आपेल पाठमां ' इंद्ग्गी ' पाठ छे ते हाुद्ध जणाय छे.	* * ॥ १३५ ॥ * *

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra	
-----------------------------------	--

*****	वहस्सती ४३, दो राहू ४४, दो अगत्थी ४५, दो माणवगा ४६, दो कासा ४७, दो फासा ४८, दो धुरा ४९, दो पमुहा ५०, दो वियडा ५१, दो विसंधी ५२, दो नियल्ला ५३, दो पइछा ५४, दो जडियाइलगा ५५, दो अरुणा ५६, दो अग्गिन्ना ५७, दो काला ५८, दो महाकालगा ५९, दो सोस्थिया ६०, दो सोवस्थिया ६१, दो वद्धमाणगा ६२, दो पूर्ंससमाणगा ६३, दो अंकुसा ६४, दो पलंबा ६५, दो निच्चालेगा ६६, दो णिच्चुज्जोता ६७, दो सयंपभा ६८, दो ओभासा ६९, दो सेयं- करा ७०, दो सेमंकरा ७१, दो आभंकरा ७२, दो पभंकरा ७३, दो अपराजिता ७४, दो अरया ७५, दो असोगा ७६, दो विगतसोगा ७७, दो विमला ७८, दो वित्तता ७९, दो वितत्था ८०, दो विसाला ८१, दो साला ८२, दो सुव्वता ८३, दो अणियद्या ८४, दो एगजडी ८५, दो दुजडी ८६, दो करकरिगा ८७, दो रायग्गला ८८, दो पुप्फकेतू ८९, दो भावकेऊ ९०, [४] सू० ९०
*****	

31

अस्थिा- नाङ्गस्तत्र सानुवाद ॥ १३६ ॥ ********	मूलार्थः—-जंबूद्वीप नामना द्वीपमां वे चंद्र प्रकाश करता हता, प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. वे स्वर्प तपता हता, तपे छे अने तपशे. वे कृत्तिका, वे रोहिणी, वे सृगशिर, वे आर्द्रा एवी रीते बीजा नक्षत्रो पण जाणवा. कृतिका १, रोहिणी २, मृगशिर ३, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ५, पुष्य ६, त्यारपछी अश्रेषा ७, मघा ८, पूर्वाफाल्गुनी ९, उत्तराफाल्गुनी १०, हस्त ११, चित्रा १२, स्वाती १३, विशाखा १४, तेमज अनुराधा १५, जेष्ठा १६, मूल १७, पूर्वापाढा १८, उत्तरापाढा १९, अभि- जित् २०, अवण २१, घनिष्ठ २२, श्वतभिषा २३, पूर्वाभाद्रपद २४, उत्तरामाद्रपद २५, देवती २६, अधिनी २७ अने भरणी २८ अनुक्रमे आ नक्षत्रो जाणवा. एवी रीते गाथाना अनुसारे दरेक नक्षत्रो बच्चे जाणवा यावत् भरणी पर्यत. (१), [हेव अठ्यावीश नक्षत्रोना आधिपति देवोनां नाम कहे छे ]-आप्त, प्रजापति, सोम, रुद्र, अदीति, वृहदस्पति, संपे, पितर्, भग, अर्थमा, सविता, त्वष्टा, वायु, इंद्रागिन, मित्र, इंद्र, निर्कती, आप, विश्व, ब्रह्मा, विष्णु, वसु, वरुण, अज, विष्टद्वि, पुषा, अश्वी अने यम. आ प्रत्येक देवो बच्चे जाणवा. (२), [हवे अठ्यासी ग्रहोनां नाम कहे छे]-आंगरक(मंगळ) १, व्यालक २, लोहिताक्ष ३, शनैश्वर ४, आहुणिक ५, प्राहुणिक ६, कण ७, कनक ८, कणकनक ९, कनकवितानक १०, कनकसंतानक ११, सोम १२, सहित १३, अश्वासन १४, कज्जोवगा १५, कर्घट १६, आयस्कर १७, दुंदुमक १८, शंख १९, शंखवर्ण २०, शंखवणीम २१, कंस २२, कंसवर्ण २३, कंसवर्णाभ २४, रुपी २५, रौप्पामास २६, नील २७, नीलाभास २८, भस्म २९, भस्मराश्नि ३०, तिल ३१,तिलपुष्पर्यर्थ ३२, दक ३३, दकपंचवर्ण ३४, साक ३५, कार्क ३६, इंद्राग्नि ३७, धूमकेतु ३८, हरि ३९, पिंगल ४०, (३) चुघ ४१, जुक ४२, बृहस्पति ४३, राहु ४४, अगस्ति ४५,	*** *** काध्ययने उदेशः ३ चन्द्रादित्य- नक्षत्रादि- स्वरूपम् ९० स्रत्रम् ***
----------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------

माणवक ४६, कास ४७, स्पर्श ४८, धुर ४९, प्रमुख ५०, विकट ५१, विसंधि ५२, नियल ५३, पड़ल ५४, झटितालक ५५, अरुण ५६, आगिल ५७, काल ५८, महाकाल ५९, स्वस्तिक ६०, सौवस्तिक ६१, वर्ध्वमान ६२, पुष्पमानक ६३, अंकुश ६४, प्रलंब ६५, नित्यालोक ६६, नित्योद्योत ६७, स्वपंप्रभ ६८, अवभास ६९, श्रेयंकर ७०, क्षेमंकर ७१, आमंकर ७२, प्रमंकर ७३, अपराजित ७४, अरज ७५, अशोक ७६, विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त ८०, विशाळ ८१, साल ८२, सुत्रत ८३, अनिष्टत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुत्रत ८३, अनिष्टत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुत्रत ८३, अनिष्टत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (स० ९०) टीकार्थ:- 'जंबुद्दि' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभासिंसु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. वन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओतुं प्रभासनपणुं कर्खु अने वन्ने स्वर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुतुं तपत्रुं कर्खु. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोतुं अस्तिपणुं कर्खु, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्वां जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. शंकत-सत्निवेश विशेपवाळं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान पुरुपवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान पुरुषना कारणपणातुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां वुद्धिमान पुरुषना कारणपणातुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर		
माणवक ४६, कास ४७, स्पर्शे ४८, धुर ४९, प्रमुख ५०, बिकट ५१, विसंधि ५२, नियल ५३, पहल ५४, झटितालक ५५, अरुण ५६, अगिल ५७, काल ५८, महाकाल ५९, स्वस्तिक ६०, सौवस्तिक ६१, वर्ध्धमान ६२, पुष्पमानक ६३, अंकुरा ६४, प्रलंब ६५, नित्यालेक ६६, नित्योद्योत ६७, स्वयंप्रम ६८, अवभास ६९, श्रेयंकर ७०, क्षेमंकर ७१, आभंकर ७२, प्रभंकर ७३, अपराजित ७४, अरज ७५, अशेक ७६, विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त ८०, विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (स० ९०) टीकार्ध:- 'जवुद्दीवे' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभासिंस्रु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कखुं अने बन्ने स्वर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाधी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावश्रे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपवुं कखुं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावानुं अस्तिपणुं कखुं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्टशं जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छेरेषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर		X
५५, अरुण ५६, अगिल ५७, काल ५८, महाकाल ५९, स्वस्तिक ६०, सौवस्तिक ६१, वर्ध्यमान ६२, पुण्पमानक ६३, अंकुश ६४, प्रलंब ६५, नित्यालेक ६६, नित्योद्योत ६७, स्वयंप्रम ६८, अवभास ६९, श्रेयंकर ७०, क्षेमंकर ७१, आमंकर ७२, प्रमंकर ७३, अपराजित ७४, अरज ७५, अशोक ७६, विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त ८०, विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुण्पकेतु ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुण्पकेतु ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (स० ९०) टीकार्थ:- 'जवुद्दीवे' इत्यादि सूचद्वद्वयं, 'पभासिंसु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. वन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओवुं प्रभासनपणुं कढ्युं अने वन्ने सर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावश्रे. आ हेतुथी वस्तुतुं तपचुं कढ्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कढ्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीवृट्रां जगदि'ति० क्योरे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सक्तिश विशेषवाळ जे द्रव्य ते कारणपूर्वक दुद्धिमान पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा युथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर स्व	वक ४६, कास ४७, स्पर्शे ४८, धुर ४९, प्रम्रुख ५०, विकट ५१, विसंधि ५२, नियल ५३, पड्ल ५४, झटिता	
अंकुश ६४, प्रलंब ६५, नित्यालोक ६६, नित्योद्योत ६७, स्वयंप्रभ ६८, अवभास ६९, श्रेयंकर ७०, क्षेमंकर ७१, आभंकर ७२, प्रभंकर ७३, अपराजित ७४, अरज ७५, अशोक ७६, विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त ८०, विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेत ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेत ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेत ८९ विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेत ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व प्रहो बब्बे जाणवा. (४) (स० ९०) टीकार्थ:-'जवुद्दीवे' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभार्सिस्रु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओतुं प्रभासनपणुं कर्द्यु अने वन्ने सर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुतुं तपदुं कर्द्यु. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोतुं अस्तिपणुं कद्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्टशं जगदि'ति० क्यारे पण आना लेचुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. ज्ञांका-सन्निवेश विशेषवाळं जे द्रव्य ते कारणर्घ्तक दुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे दुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां दुद्धिमान पुरुषना कारणपणातुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	अरुण ५६, अगिल ५७, काल ५८, महाकाल ५९, स्वस्तिक ६०, सौवस्तिक ६१, वर्ध्धमान ६२, पुष्पमानक १	६३, 🙀
अाभंकर ७२, प्रभंकर ७३, अपराजित ७४, अरज ७५, अशोक ७६, विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त ८०, विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिवृत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (सू० ९०) टीकार्थः-'जचुद्दीवे' इत्यादि सूचद्वयं, 'पभासिंसु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कढ्युं अने वन्ने स्वर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपचुं कढ्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कढ्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्रशं जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सत्रिवेश विशेषवाळं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. सन्निवेश-विशेषवाळो वर्ल्माक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणप्रणानुं जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्क्ता ईश्वर	श ६४, प्रलंब ६५, नित्यालेक ६६, नित्योद्योत ६७, स्वयंप्रभ ६८, अवभास ६९, श्रेयंकर ७०, क्षेमंकर ५	9१, 👹
विशाळ ८१, साल ८२, सुव्रत ८३, अनिष्टत्त ८४, एकजटी ८५, द्विजटि ८६, करकरिक ८७, राजगल ८८, पुष्पकेतु ८९ अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (सू० ९०) टीकार्थ:-'जंबुद्दीवे' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभासिंस्यु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओतुं प्रभासनपणुं कद्युं अने बन्ने सर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपचुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्रां जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. शंका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	कर ७२. प्रभंकर ७३. अपराजित ७४. अरज ७५. अशोक ७६. विगतशोक ७७, विमल ७८, वितत ७९, वित्रस्त	۵۰, 🛞
<ul> <li>अने भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (स० ९०)</li> <li>टीकार्थ:-'जंबुद्दीवे' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभासिंस्यु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे</li> <li>अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कह्युं अने बन्ने सर्यने तीक्ष्ण किरणपणुं</li> <li>होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपवुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे</li> <li>सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्रां जगदि'ति० क्यारे पण</li> <li>सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्रां जगदि'ति० क्यारे पण</li> <li>आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सन्तिवेश विशेषवाळं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल</li> <li>ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी.</li> <li>सन्तिवेश-विशेषवाळो वर्ल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर</li> </ul>	ळ ८१. साल ८२. सवत ८३. अनिवत्त ८४. एकजटी ८५. द्विजटि ८६. करकरिक ८७. राजगल ८८, पुष्पकेतु	<u> ۲</u> ۲۵
टीकार्थः-'जंबुद्दीवे' इत्यादि सूत्रद्वयं, 'पभासिंस्तु व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश करे छे अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कह्युं अने वन्ने द्वर्थने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपवुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्ट्रां जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. शंका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल हे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. संस्थे संस्थित्र-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	भावकेतु ९०- आ सर्व ग्रहो बब्बे जाणवा. (४) (सू० ९०)	*
अने प्रकाश करशे. बन्ने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कह्युं अने बन्ने स्र्यने तीक्ष्ण किरणपणुं होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपनुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीट्टशं जगदि'ति० क्यारे पण आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी, कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. शंका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल के ते तेने माटे प्रमाण नथी. शंका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल से सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	टीकार्थः-'जबुद्दीवे' इत्यादि सत्रद्वयं, 'पभासिंस व'त्ति० प्रकाश करता हता, प्रकाशवा योग्यने प्रकाश क	रे छे 🛞
<ul> <li>होवाथी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपावशे. आ हेतुथी वस्तुनुं तपवुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथनवडे</li> <li>सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीदृद्यां जगदि'ति० क्यारे पण</li> <li>आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी,</li> <li>आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी,</li> <li>कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. द्रांका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल</li> <li>के, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी.</li> <li>सन्तिवेश-विशेषवाळो वर्ल्माक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपूर्णतुं जोवापणुं (अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर</li> </ul>	प्रकाश करशे. बने चंद्र सौम्य (शांत) प्रकाशवाळा होवाथी तेओनुं प्रभासनपणुं कह्युं अने बन्ने सर्यने तीक्ष्ण किरण	ापणुं  🔆
<ul> <li>सर्वकाल पर्यंत चंद्रादि भावोनुं अस्तिपणुं कह्युं, आ कारणथी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीदृद्रां जगदि'ति० क्यारे पण</li> <li>आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी,</li> <li>कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. द्रांका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल</li> <li>के, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी.</li> <li>सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर</li> </ul>	थी तपावता हता, एम ज तपावे छे अने तपाव <b>रो. आ हेतथी वस्तुनुं तप</b> वुं कह्युं. आ त्रण कालमां प्रकाशना कथ	नवड 💱
<ul> <li>आना जेवुं जगत न हतुं एम नहि (पण हमेशां छे,) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य नथी,</li> <li>कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल</li> <li>छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी.</li> <li>सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपूर्ण जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर</li> </ul>	हाल पर्यंत चंदादि भावानं अस्तिपणं कहां. आ कारणशी ज कहेवाय छे-'न कदाचिदनीदृशं जगदि'ति० क्योरे	्पण 💥
* कारण के तेने माटे प्रमाण नथी. दांका-सन्निवेश विशेषवाळुं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान् पुरुषवडे घडानी जेम जोवायेल * छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनो कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. * सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	ा जेवं जगत न हतं एम नहि (पण हमेशां छे.) अथवा विद्यमान जगतनो कर्त्ता छे एम कल्पना करवी ते योग्य न	नथी, 👹
* छे, ते सन्निवेश विशेषवाळा पृथ्वी, पर्वत वगेरे छे. जे बुद्धिमान् छे ते आ ईश्वर जगतनों कर्त्ता छे. समाधान-एम नथी. * सन्निवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	ण के तेने माटे प्रमाण नथी. ठांका-सन्निवेश विशेषवाळं जे द्रव्य ते कारणपूर्वक बुद्धिमान पुरुषवडे घडानी जेम जोव	।।येल 👹
* सनिवेश-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बुद्धिमान पुरुषना कारणपणानुं जोवापणुं ( अर्थात् जगतनो कर्त्ता ईश्वर	ते सन्निवेश विशेषवाळा पथ्वी, पर्वत वगेरे छे, जे बद्धिमान छे ते आ ईश्वर जगतना कर्त्ता छे. समाधान-एम	નથી. 🛱
	विश्व-विशेषवाळो वल्मीक (राफडो) छते पण तेमां बद्धिमान परुषना कारणपणानं जोवापणं ( अर्थात जगतनो कर्चा	ईश्वर 🎇

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ १३७॥ ****	नथी पण स्वाभाविक छे) नथी. अहिं घणुं कहेवा योग्य छे ते स्थानांतरथी (ग्रंथांतरथी) जाणी लेवुं. चंद्रनी वे संख्या होवाथी तेना परिवारनुं पण दित्वपणुं कहे छे. 'दो कत्तिए' आदि सूत्रथी 'दो भावकेऊ' ए छेल्ला सत्र पर्यंत कहेल छे. आनो अर्थ सुगम छे. विशेष ए छे के-बे कृतिका छे ते नक्षत्रनी अपेक्षाए जाणवुं, पण तारानी अपेक्षाए नहिं. एवी रीते सर्वत्र समजी लेवुं. 'कत्तिए' त्यादि० त्रण गाथावडे नक्षत्र सत्रनो संग्रह छे. कृत्तिकादि अव्यावीश नक्षत्रना अनुक्रमे अग्नि बगेरे अठ्यावीश देवो होय छे, ते कहे छे-बे अग्नि १, एवी रीते प्रजापति २, सोम ३, रूद्र ४, अदिति ५, वृहस्पति ६, सर्प ७, पितर ८, भग ९, अर्यमा १०, सविता ११, त्वष्टा १२, वायु १३, इंद्राग्नि १४, मित्र १५, इंद्र १६, निर्ऋति १७, आप १८, विश्व १९, ब्रह्मा २०, विष्णु २१, वसु २२, वरुण २३, अज २४, विष्टदि २५, (ग्रंथांतरमां अहिर्वुध्न छे.) पूपा २६, अश्वी २७, यम २८. ग्रंथांतरमां वळी अश्विनी नक्षत्रची आरंभीने रेवती नक्षत्र सुधी देवताओना नाम आ प्रमाणे छे-१ अर्था २ यम ३ दहन ४ कमलज ५ श्रशी. ६ शलभन, ७ अदीति, ८ जीव, ९ फणी १० पितर, ११ योति, १२, अर्थमा	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
(*************************************	अश्वा २७, पम २८. प्रयोतरमा पळा आश्वमा पद्यप्रयो आरमान रपता पद्यप्र छुवा दपताआना नाम आ प्रमाण छूट्र अश्वा, २ यम, ३ दहन, ४ कमलज, ५ शशी, ६ शूलभृत, ७ अदीति, ८ जीव, ९ फणी, १० पितर, ११ योनि, १२ अर्यमा, १३ दिनकृत, १४ त्वष्टु, १५ पवन, १६ शक्राग्नि, १७ मित्र, १८ ऐंद्र, १९ निर्ऋति, २० तोय, २१ विश्व, २२ ब्रह्मा, २३ हरि, २४ बुध, २५ वरुण, २६ अजपाद, २७ अहिर्बुध्न, २८ पुषा एम जाणवा. अंगारक वगेरे अठवासी ग्रहो सूत्रमां कहेला ते केवळ अमारावडे जोवायेल केटलाएक पुस्तकोमां यथोक्त संख्या मळती छे. अहिं सूर्यप्रज्ञाप्तियत्रने अनुसारे आ संख्या १. अहिआ क्रममां फरक छे पण नाम एक ज छे. सोमने बदले शशी छे इत्यादि एकार्थवाचक छे. फक्त २७ मो अहिर्बुध्न नामनो फरक छे.	₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩ ₩
	For Private and Personal Use Only	

मळववा ज विमालए	ाइए. आ प्रमाणे सर्यप्रज्ञप्तिनुं सत्र छे–''तत्थ खऌं इमे अट्टासीईं महागहा पन्नत्ता, तंजहा–१,इंगालए,२, (यावत्)८८ भावकेऊ." सूर्यप्रज्ञप्तिसत्रता आ पाठनी मतलब संग्रहणी नीचेनी गाथाओमां कहेल छे, ते आ प्रमाणे–
	इंगालए १ वियालए २, लोहियक्खे ३ सणिच्छरे ४ चेव ।
	आहुणिए ५ पाहुणिए ६, कणगसनामा उ पंचेव ११ ॥ ७३ ॥
	सोमें १ सहिए २ आसा-सणे य ३ कज्जोवए य ४ कब्बडए ५।
	अयकरए ६ दुंदुहए ७, संखसनामाओ तिन्नेव १० (२१) ॥ ७४ ॥
	तिन्नेव कंसनामा ३, नीला ५ रुप्पी य ७ होंति चत्तारि ।
	भास ९ तिलपुप्फवन्ने ११ [दगे य] दग पण [पंच]वण्णे य १३ काय काकंधे ॥१५ (३६) ७५
	इंदग्गि १ धूमकेऊ २, हरि ३ पिंगलए ४ बुहे य ५ सुके य ६ ।
	बहस्सइ ७ राहु ८ अगत्थी ९, माणवए १० कास ११ फासे य १२ (४८) ॥ ७६ ॥
<u> </u>	ोकामां सूर्यभग्नसिनो पाठ आपेल छे ते संक्षिप्त कगेने लखेल छे, कारण के ए ज पाठमां कहेल ग्रहोना नामो संग्रहणीनी

धूरे १ पमुहे २ वियडे ३, विसंधिणियले ४-५ तहा पयछे य ६। जडियाइलए ७ अरुणे ८, अग्गिल ९ काले १० महाकाले ११ (५९) ॥ ७७ ॥ सोत्थिय १ सोवत्थिय[ए] २, वद्धमाणगे ३ तहा पलंबे य ४। निचालोए ५ णिच्चुजोए ६ सयंपमे ७ चेव ओभासे ८ (६७) ॥ ७८ ॥ सेयंकर १ खेमंकर २, आभंकर ३ पभंकरे य ४ बोद्धव्वे । अरए ५ विरए य ६ तहा, असोग ७ तह वीयसोगे य ८ (७५) ॥ ७९ ॥ विमल १ वितत्त २ वितत्थे ३, विसाल ४ तह साल ५ सुव्वए ६ चेव । अनियदी ए एगजडी ८ य होइ बिजडी य ९ बोद्धव्वे (८४) ॥ ८० ॥ करकरए १ रायग्गल २, बोद्धव्वे पुष्फ ३ भावकेऊ य ४। (८८) अट्ठासीई गहा खल्ल, णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥ ८१ ॥ आ गाथाओनो अर्थ मूलस्त्रना अनुवाद प्रमाणे जाणी लेवो. हवे जंबूद्वीपना अधिकारथी बीजुं वर्णन करे छे---

\*\*\*\*\* २ स्थान-काध्ययने उदेशः ३ जंबद्वीपस्य अपरवर्णनम् ९१ सत्रम् 826 11

श्रीस्था-

नाङ्गसत्र

सानुवाद

11 230 11

× × ×

××××

	जंबूदीवस्स णंदीवस्स वेइआ दो गाउयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पन्नत्ता। लवणे णं समुद्दे दो जोयण
~~~~	सयसहरसाईं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते। लवणस्स णं समुद्दस्स वेतिया दो गाउयाइ उद्धं उच्च-
	त्तेणं पन्नत्ता । सू० ९१, धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेणं मंद्रस्त पव्वयस्त उत्तरदाहिणेणं दो वासा
	पन्नत्ता बहुसमतुद्धा जाव भरहे चेव एरवए चेव, एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थवि भाणियव्वं जाव
	दोसु वासेंसु मणुया छव्विहंपि काळं पचणुभवमाणा विरहंति तं० भरहे चेव एरवते चेव, णवरं
	कूडसामली चेव धायइरुक्खे चेव, देवा गरुले चेव वेणुदेवे सुदंसणे चेव (१), धाततीसंडदीवपच-
	च्छिमद्धे णं मंदरस्त पव्वयस्त उत्तरदाहिणेणं दो वाता पन्नता बहु० जाव भरहे चेव एरवए चेव
	जाव छविवहंपि कालं पचणुभवमाणा विहरंति भरहे चेव एरवए चेव, णवरं कूडसामठी चेव
`	महाधायतीरुक्ले चेव, देवा गरुळे चेव वेणुदेवे पियदंसणे चेव, धायइसंडे णं दीवे दो भरहाइं
5	दो एरवयाइं दो हेनवयाइं दो हेरन्नवयाइं दो हरिवासाइं दो रम्मगवासाइं दो पुब्वविदेहाइं दो
3	अवरविदेहाइं दो देवकुराओ दो देवकुहमहदुमा दो देवकुहमहदुमवासी देवा दो उत्तरकुराओ दो
	२४

www.kobatirth.org

श्रीस्था- नाङ्गस् त्र सानुवाद ॥ १३९ ॥ ********	उत्तरकुरुमहद्दुमा दो उत्तरकुरुमहद्दुमवासी देवा (२), दो चुछहिमवंता दो महाहिमवंता दो निसहा दो नीळवंता दो रूपी दो सिहरी दो सद्दावाती दो सद्दावातवासी साती देवा दो वियडावाती वो वियडावातिवासी पभासा देवा दो गंधावाती दो गंधावातिवासी अरुणा देवा दो माळवंतपरियागा दो मालवंतपरियागावासी पउमा देवा दो मालवंता दो चित्तकूडा दो पम्हकूडा दो नलिणकूडा दो एगसेला दो तिकुडा दो वेसमणकूडा दो अंजणा दो मातंजणा दो सोमणसा दो विज्जुप्पभा दो अंकावती दो पम्हावती दो आसीविसा दो सुहावहा दो चंदपव्वता दो सूरपव्वता दो णाग- पत्त्वता दो देवपव्वया दो गंधमायणा दो उसुगारपव्वया (३), दो चुछाहिमवंतकुडा, दो वेसमणकूडा, दो महाहिमवंतकूडा, दो वेरुलियकृडा, दो निसहकूडा, दो रुयगकृडा, दो नीलवंतकूडा, दो उव- दंसणकृडा, दो रुप्पिकृडा, दो मणिकंचणकूडा, दो सिहरिकूडा, दो गतिगिच्छिकूडा, दो उव- दंसणकृडा, दो पउमदहबासिणीओ सिरीदेवीओ दो महापउमदहा दो महापउमदहहासिणीओ हिरी- [तो] देवीओ, एवं जाव दो पुंडरीयदहा, दो पोंडरीयदहवासिणीओ लच्छीदेवीओ, दो गंगापवाय-	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **

दहा, जाव दो रत्तवतिपवातदहा (४), दो रोहियाओ, जाव दो रुप्पकूलातो दो गाहवतआि दो दह-वतीओ दो पंकवतीओ दो तत्तजलाओ दो मत्तजलाओ दो उम्मत्तजलाओ दो खीरोयाओ दो सीहसोताओ दो अंतोवाहिणीओ दो उम्मिमालिणीओ दो फेणमालिणीओ दो गंभीरमालिणीओ दो कच्छा दो सुकच्छा दो महाकच्छा दो कच्छगावती दो आवत्ता दो मंगलावत्ता दो पुक्खला दो पुबखलावई दो वच्छा दो सुबच्छा दो महावच्छा दो वच्छगावती दो रम्मा दो रम्मगा दो रमणिज्जा दो मंगलावती दो पम्हा दो सुपम्हा दो महपम्हा दो पम्हगावती दो संखा दो णलिणा दो कुमुया दो सलिलावती( णलिणावती ) दो वप्पा दो सुवप्पा दो महावप्पा दो वप्पगावती दो वंग्गू दो सुवग्गू दो गांधिला दो गांधिलावती ३२ (५), दो खेमाओ दो खेमपुरीओ दो रिट्राओ दो न्ट्रिपुरीओ दो स्गीतो दो मंजुसाओ दो ओसधीओ दो पॉडरिगिणीओ दो सुसीमाओ दो कुंडलाओ दो अपराजियाओ दो पमंकराओ दो अंकावईओ दो पम्हावईओ दो सुभाओ दो रयण संचयाओ दो आसपुराओ दो सीहपुराओ दो महापुराओ दो विजयपुराओ दो अपराजिताओ

\*\*\*\*

 $\begin{array}{l} \\ \end{array}$ 

www.kobatirth.org

<ul> <li>सिलाओ दो रत्तकंवलसिलाओ दो अइरत्तकंबलसिलाओ दो मंदरा दो मंदरचूलिताओ, धाय-</li> <li>तिसंडस्स णं दीवस्स वेदिया दो गाउयाइं उद्धमुच्चत्तेणं पन्नत्ता। सू० ९२, कालोदस्स णं समुद्दस्स</li> <li>वेइया दो गाउयाइं उह्वं उच्चतेणं पन्नत्ता। पुक्खरवरदीवहुपुरच्छिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदा-</li> <li>हिणेणं दो वासा पं० बहुसमतुल्ला जाव भरहे चेव एरवए चेव तहेव जाव दो कुराओ पं० देवकुरा</li> <li>चेव उत्तरकुरा चेव, तत्थ णं दो महतिमहालता महदुमा पं० तं०-कूडसामली चेव पउमरुक्से चेव,</li> <li>देवा गरुले चेव वेणुदेवे चेव पउमे चेव, जाव छठिवहांप कालं पचणुभवमाणा विहरांति। पुक्खरवरदी-</li> <li>बहुपच्चच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पं० तं०-तहेव नाणत्तं कुडसामली चेव</li> </ul>	
---	--

श्रीस्था-

नाङ्गसूत्र

सानुवाद

11 880 11

www.kobatirth.org

.

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Ų	ररवयाइं जाव दो मंद्रा दो मंद्रचूलियाओ, पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्डमुचनेणं
	ान्नत्ता, सब्वेसिंपि णं दीवसमुद्दाणं वेदियाओं दो गाउयाइं उड्ढमुचत्रणं पण्णत्ताओं (२) सू० ९३
	मूलार्थः
वरे	डे बे लाख योजननो छे. लवणसमुद्रनी वेदिका बे गाउ ऊंची कहेल छे. (स्० ९१). धातकीखंड नामना द्वीपना पूर्वाधमां
मे	रुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिणदिशाए बे क्षेत्र कह्या छे. तेबहुसमतुल्य छे यावत् भरत अने ऐरवत क्षेत्र, जेम जंबुद्वीपना भरत तथा
È.	रवतनुं वर्णन कर्युं छे तेम आहें पण एवी ज रीते जाणचुं, यावत् बने क्षेत्रमां मनुष्यो, छ प्रकारना कालना (छ आराना)
	।नुभावने अनुभवता थका विचरे छे. ते आ भरत अने ऐरवत क्षेत्रमां विशेष ए के−कूटशाल्मली अने धातकी वृक्ष छे. बे गरुल
(सु	पुर्वर्णकुमार जातीय) देव छे ने तेमनां नाम वेणु अने सुदर्शन छे (१). धातकी खंड द्वीपना पश्चिमाईमां मेरुपर्वतनी उत्तर अन
	क्षिण दिशाए वे क्षेत्र कह्या छे, ते बहुसमतुल्य छे, यावत् भरत अने ऐरवत क्षेत्र, यावत् छ प्रकारना कालना अनुभावने
	ानुभवता थका विचरे छे. ते भरत अने ऐरवत क्षेत्रमां एटऌं विशेष के–कूटशाल्मली अने महाधातकी नामे वृक्ष छे.
	वर्णेकुमारजातीय वेणुदेव अने प्रियदर्शन नामना देवो छे. घातकीखंड नामना द्वीपने विषे भरत, ऐरवत, हैमवत, हैरण्यवत,
-	रिवर्ष, रम्यकवर्ष, पूर्वविदेह, अपरविदेह, देवकुरु, उत्तरकुरु, देवकुरुना महाद्रक्षो, देवकुरुना महाद्वक्षना वासी देवो,
ल	त्तरकुरु, उत्तरकुरुना महावृक्षो अने उत्तरकुरुना महावृक्षवासी देवो, ए दरेक बब्बे जाणी लेवा. (२). चुछहिमवंत,

रिस्थानका-

ध्ययने

उद्देशः ३

९३ स्रत्राणि



सानुवाद

11 888 11

××× महाहिमवंत, निषध, नीलवान, रुवमी, शिखरी, शब्दापाती, शब्दापाती( वृत्तवैताढ्य )ना वसनारा स्वातीदेव, विकट-×× पाती, विकटापाती( इत्तवैताढच )ना वासी प्रभासदेव, गंधापाती, गंधापाती( वृत्तवैताढ्य )ना वासी अरुणदेव, माल-Ж वंतपर्याय, मालवंतपर्याय( वृत्तवैताढच )ना वासी पद्मदेव, मालवत ( गजदंत पर्वत ), चित्रकूट ( वखारापर्वत ), × पबकट, नलीनकट, एकशैल, त्रिकट, वैश्रमणकट, अंजनपर्वत, मातंजन, सौमनस ( गजदंत ), विद्युत्प्रभ, अंकावती, पद्मावती, 🖉 अपरवर्णनम् Ж आशिःविषा, सुखावह, चंद्रपर्वत, सूर्यपर्वत, नागपर्वत, देवपर्वत, गंधमादन अने इषुकारपर्वत आ दरेक बब्बे कहेवा. ( ३ ). × \* × चल्लहिमवंतकूट, वैश्रमणकूट महाहिमवंतकूट, वैडुर्यकूट, निषधकूट, रुचककूट, नीलवंतकूट, उपदर्शनकूट, रुक्मीकूट, \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* ж Ж मणिकंचनकूट, शिखरीकूट, तिगिच्छीकूट, पद्मद्रह, पद्मद्रहमां वसनारी श्रीदेवीओ, महापद्मद्रह, महापद्मद्रहमां वस-Ж नारी हीदेवीओ, एवी रीते यावत पुंडरीकद्रह, पौंडरीकद्रहमां वसनारी लक्ष्मीदेवीओ, गंगाप्रपातद्रह यावत रक्तवतीप्रपातद्रह. ए दरेक बब्बे छे. (४). बे रोहिता यावत बे रुप्यकूला छे. ग्राहवती, द्रहवती, पंकवती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्तजला, \*\*\*\* र्क्षारोदा, सिंहश्रोता, अंतर्वाहिनी, ऊर्मिमोलिनी, फेनमालिनी, गंभीरमालिनी ए दरेक बब्बे नदीओ छे. कच्छ १, सुकच्छ २, महाकच्छ ३, कच्छावती ४, आवर्त ५, मंगलावर्त ६, पुष्कल ७, पुष्कलावती ८, वत्स ९, सुवत्स १०, महावत्स ११,वत्सावती १२, रम्य १३, रम्यक १४, रमणीय १५, मंगलावती १६, पर्स्म १७, स्रपक्ष्म १८, महापक्ष्म १९, पक्ष्मावती २०, शंख २१, नलिन २२, कुग्रुद २३, सलिलावती [नलिनावती] २४, वप्र २५, सुवप्र २६, महावप्र २७, वप्रावती २८, वल्गु २९, सुवल्गु ३०, गंधिल १ पम्ह-- 'पद्म' अर्ध बाबूवाळी प्रतमां छे.

888 11

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*

\*\*\*\*

(\*\*\*\*\*\* \*\*\*\*

३१ अने गंधिलावती ३२ ए विजयो दरेक बब्बे छे. (५). क्षेमा १, क्षेमपुरी २, रिष्ट ३, रिष्टपुरी ४, खड्गी ५, मंजूपा ६, औषधि ७, पुंडरीकिणी ८, सुसीमा ९, कुंडला १०, अपराजिता ११, प्रभंकरा १२, अंकावती १३, पक्ष्मवती १४, शुभा १५, रत्न-संचया १६, अश्वपुरी १७, सिंहपुरी १८, महापुरी १९, विजयपुरी २०, अपराजिता २१, अपरा २२, अशोका २३,विंगतशोका २४, विजया २५, वैजयंती २६, जयंती २७, अपराजिता २८, चक्रपुरी २९, खड्गपुरी ३०, अवंध्या ३१ अने अयोध्या ३२-आ बत्रशि विजयोनी क्रमशः बब्बे राजधानीओ छे. (६). बे भद्रशालवन, बे नंदनवन, बे सोमनसवन अने बे पांडुकवन छे. बे पांडुकंबलशिला, बे अतिपांडुकंबलशिला, बे रक्तकंबलशिला अने बे अतिरक्तकंबलशिला छे, बे मेरुपर्वत छे, मेरुपर्वतनी बे चूलिका छे. धातकी खंड नामना द्वीपनी वेदिका बे गाउ ऊंची कहेली छे. (७). ( स्व० ९२ ) कालोदधि समुद्रनी वेदिका बे गाऊनी ऊंची कहेली छे. पुष्करवरद्वीपार्ध्वना पूर्वार्धने विषे मेरुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए बे क्षेत्र कहेला छे. ते बहुसमतुल्य यावत भरत अने ऐरवत, तेमज यावत बे कुरुक्षेत्र कह्या छे ते देवकुरु अने उत्तरकुरु नामना छे. ते बे कुरु-क्षेत्रमां अतिशय शोभावाला वे महान् वृक्षों कह्या छे तेना नाम-कूटशाल्मली अने पद्मवृक्ष. ते वृक्षोना अधिष्ठाता वे देवो सुपर्णकुमार जातीय वेणुदेव अने पद्म नामना छे. यावत् त्यां सुधी जाणी लेवुं के छ प्रकारना कालने एटले छ आराना अनु-भावने भोगवता थका त्यांनां मनुष्यो (भरत तथा ऐरवतमां) विचरे छे. (१). पुष्करवरद्वीपार्धना पश्चिमार्धने विषे मेरुपर्वतनी उत्तर अने दक्षिण दिशाए बे क्षेत्र कह्या छे ते आ प्रमाणे-पूर्वनी माफक जाणी लेवुं. विशेष ए कहे छे-वृक्षो कूटशाल्मली अने महापदा नामना छे. देवो ( तेना अधिपति ) सुवर्णकुमारजातीय वेणुदेव अने पुंडरीक नामना छे. पुष्करवरद्वीपाईद्वीपने विषे बे भरत. बे

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद	ऐरवत यावत् वे मेरु अने वे मेरुपर्वतनी चूलिका छे. पुष्करवरद्वीपनी वेदिका बे गाउनी ऊंची कही छे. ( एवी रीते ) वधा य द्वीप तथा समुद्रोनी पण वेदिकाओ बे गाउनी ऊंची कहेली छे. (२) ( स० ९३ ) टीकार्थः-'जंबू' इत्यादि० सत्र सुगम छे. विशेष कहे छे के-जंबूद्वीपरूप नगरने फरता कोट(गढ)नी जेवी जगती छे, ते	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
॥ १४२ ॥ 🎽	वज्न (मणि)मय छे, आठ योजननी ऊंची, उपर चार योजननी पहोळी अने नीचे (मूलमां) बार योजननी पहोळी छे. ते	🔆 अपरवर्णनम्
	वज्ञ( मणि )मय छे, आठ योजननी ऊंची, उपर चार योजननी पहोळी अने नीचे ( मूलमां ) बार योजननी पहोळी छे. ते जगती बे गाउ ऊंचा, पांचसो धनुष्य पहोळा अने विविध रत्नमजाल करकवडे घेरायेली छे. ते जगती उपर जे वेदिका छे तेने पद्मवरवेदिका कहे छे. ते बे गाउनी ऊंची अने पांचसो धनुष्यनी बिस्तारवाळी छे. ते गवाक्ष अने सुवर्णनी घुघरी- वाळी घंटा सहित, देवोने वेसचुं, सचुं, मोहित थचुं वगेरे क्रीडाना स्थानरूप तथा वे पडखे वनखंड(वर्गाचा)वाळी छे. जंबूद्वीपना वर्णन पछी लवणसमुद्रनी वक्तव्यता कहे छे-'लवणे पा' मित्यादि० आ सुगम छे. विशेष ए के-चक्रवाल-गोळनुं पहोळाईपणुं ते चक्रवालविष्कंभ जाणचुं. लवणसमुद्रनी वेदिकानुं सत्र जंबूद्वीपनी वेदिकाना सत्रनी जेम कहेचुं. (स० ९१). क्षेत्रना प्रसंगर्थी लवणसमुद्रनी वक्तव्यता पछी धातकी खंडनी वक्तव्यता ' घायइ संडे दीवे ' विगेरे सत्रथी आरंभीने वेदिका सत्र पर्यंत कहे छे ते सुगम छे. विशेष ए के-धातकी खंडनुं प्रकरण पण, जंबूद्वीप अने लवणसमुद्र छे मध्यमां जेने एवा वल्य (चूडी) आकारे धातकीखंडने आलेखी (चीत्रीने) जंबूद्वीपनी माफक हिमवान आदि वर्षधरपर्वतोने उभयथी-पूर्व तथा पश्चिम विभाग-	** अपरवर्णन <b>म्</b> ** ९१-९२- ** ९२ सत्राणि ** ** ** **
	वडे भरत अने हैमवत वगेरे क्षेत्रोने स्थापीने पूर्व अने पश्चिम दिशामां वल्रयनी पहोळाईना मध्यमां मेरुँपर्वतनी कल्पना १. जाळीवाळो गोख, २ मेरुपर्वत पूर्व दिशामां अने बाजो पश्चिममां होय छे.	*    १४२ <b>  </b> * * * *

कर्र	गिन् जाणवुं. ए क्रमवडे पुष्करवरद्वीपार्द्ध पण जाणवो. जेमां धातकी वृक्ष विशेषोनो खंड-वनसमूह ते धातकीखंड अने तेथी
युत्त	क जे द्वीप ते धातकीखंडद्वीप कहेवाय छे. जेम दंडना योगथी दंड कहेवाय छे ते कारणथी धातकीखंड एवा जे द्वीप
ते ।	धातकीखंड द्वीप छे. तेनो जे पूर्व अर्थविभाग ते धातकीखंडद्वीपपूर्वार्द्ध छे. पूर्व अने अपर-अर्ध्धता तो लवणसमुद्रनी
वांव	देकाथी दक्षिण अने उत्तरर्था यावत् धातकीखंडनी वेदिका सुधी गयेला ( पहोंचेला ) इपुकार पर्वतोवडे धातकीखंडनुं
	भक्तपणुं (विभागपणुं) होत्राथी कह्युं छे के
ų.	चसयजोयणुचा, सहस्समेगं च होंति विच्छिन्ना । कालोययलवणजले, पुट्ठा ते दाहिणुत्तरओ ॥८२
द्	ो इसुयारनगवरा, धायइसंडस्स मज्झयारठिया । तेहि दुहा णिहिस्सइ, पुव्वद्धं पच्छिमद्धं च ॥८३
	्पांचसो योजन ऊंचा, एक हजार योजन पहोळा, तथा दक्षिण अने उत्तरथी कालोदधि समुद्र अने लवणसमुद्रने स्पर्धा-
ने	रहेला, अर्थात् कालोदधि समुद्र अने लवणसमुद्र पर्यंत लांबा एवा बे श्रेष्ठ इषुकार पर्वतो धातकीखंडना मध्यमां रहेला छे.
ते व	बे इषुकार पर्वतवडे पूर्वार्ध्व अने पश्चिमार्ध्व एवा बे विभाग धातकीखंडना कहेवायल छे. त्यां 'णं' शब्द वाक्यालंकार तरीके
वप	।रायेल छे. मंदरस्य−मेरुना, एवी रीते धातकीखंडना दरेक पूर्वार्ध्ध अने पश्चिमार्ध्धना प्रकरणमां ओगणोतेर सत्र प्रमाणने
जब्	र्ह्वीपना प्रकरणनी माफक कहेवुं अने व्याख्यान करवुं. आ ज कारणथी कहे छे ' एवं जहा जंबूदीवे तहे 'इत्यादि०
विः	शेष ए के-वर्षधर वगरनुं स्वरूप-लंबाई वगेरेनी समानता आ प्रमाणे विचारवी.

श्रीस्था- नाम्नस्वत्र सानुवाद ॥ १४३ ॥ ***	पुब्बद्धस्स च मज्झे, मेरू तस्स पुण दाहिणुत्तरओ। वासाइं तिन्नि तिन्निवि, विदेहवासं च मज्झंमि ॥८४ अरविवरसंठियाइं,चउरो लवखाइं ताइं खेत्ताइं (दीर्घतया)। अंतो संखित्ताइं, रुंदतराइं कमेण पुणो॥८५ भरहे मुहविक्खंभो, छावट्ठिसयाइं चोद्दसहियाइं । अउणत्तीसं च सयं, वारसहियदुस्तयभागाणं॥ ८६॥ [ ६६१४ क्षेड् अट्ठारस य सहस्सा, पंचेव सया हवंति सीयाला। पणपण्णं अंससयं, वाहिरओ भरहविक्खंभो ॥ ८७॥ [१८५४७ क्षेड घातकीखंडना पूर्वार्ध्ध अने पश्चिमार्ध्धना मध्यभागे प्रत्येकमां अकेक मेरु छे, ते अकेक मेरुनी दक्षिण अने उत्तर- दियाए त्रण त्रण क्षेत्रो छे अने मध्यभागमां महाविदेह क्षेत्र छे. अर-चक (पैडा)ना आरा, तेना विवर(मध्य)ना आकारे भरतादिक्षेत्रो रहेला छे, ते आ प्रमाणे–चक्रनाभिस्थाने जंबुद्वीप अने ठवणसम्रद्र छे, आराने स्थाने वर्षधर पर्वतो रहेल छे अने आराना आंतराने स्थाने वर्षधरपर्वतोनी वरूचमां आवेला क्षेत्रो छे. ते दरेक क्षेत्रो चार चार लाख योजनना लांवा छे, अंतमां (लवणसम्रुद्रनी दिशामां) पहोळाईने रुईने सांकडा छे ते फरी क्रमथी पहोळाईमां इष्धि पामता रहेला छे. भरत क्षेत्रमां अंदर्रनी पहोर्ळाई छ हजार, छसो चौद योजन अने <sup>455</sup> बसो ने बारीआ एकसो ओगणत्रीश भाग अधिक छे. भरतनी र. ल्वणसमुद्रनो दिशामां.	*************************************
	(. જવળતવુપ્રમા મ્યુસમામ	X X X X X X X X X X X X X X X X X X X

बाहे	रैनी पहोळाई अढार हजार, पांचसो सुडताळीस योजन अने <sup>२ु५५</sup> एकसो पंचावन, बसो ने  बारीआ भाग अधिक छे.
	चउगुणियभरहवासो [ व्यास इत्यर्थः ], हेमवए तं चउग्गुणं तइयं ।
	हरिवासं [ हरिवर्षमित्यर्थः ] चउगुणियं, महाविदेहस्स विक्लंभो ॥ ८८ ॥
जह	इ विक्खंभा दाहिण-दिसाए तह उत्तरेऽवि वासतिए। जह पूक्वद्धे सत्त उ, तह अवरद्धेऽवि वासाइं॥८९
	भरतक्षेत्रना अंदरना भागमां अने बाहरना भागमां जे व्यास-पहोळाई छे तेने चारगुणी करवाथी हैमवंत क्षेत्रनी
क्रम	थी अंदर अने बाहरना भागनी पहोळाई थाय. हैमवत क्षेत्रना व्यासने चतुर्गुणित करवाथी हरिवर्षक्षेत्रनों व्यास थाय
अन	हरिवर्षक्षेत्रना व्यासने चतुर्गुणित करवाथी महाविदेह क्षेत्रने। व्यास (पहोळाई) थाय. जेम दक्षिण दिशाना भरतादि क्षेत्रनो व्यास कह्यो तेम ज उत्तरदिशाना ऐरवतादि त्रण क्षेत्रनो व्यास क्रमग्नः जाणवो. जेवी रीते पूर्वार्ध्व धातकीखंडना
नग सात	क्षेत्रानी ज्यास कह्यों तेवी रीते पश्चिमार्थ्व धातकीखंडना सात क्षेत्रोनो व्यास पण एम ज जाणवो.
	तत्ताणउई सहस्सा, सत्ताणउयाइं अट्ट य सयाइं ।
	तेन्नेव य लक्खाइं, कुरूण भागा य बाणउई ॥ ९० ॥ [ विष्कम्भ इति ] ३९७८९७ । ३९
	१. कालोदधिनी दिशाए. २. भरतनी जेम ऐरवत, हैमवंतनी जेम हैरण्यवत अने हरिवर्षनी जेम रम्यकवर्षनी व्यास जाणवो.

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ १४४ ॥ ***	अडवण्णसयं तेवीस, सहस्सा दो य लक्ख जीवाओ। दोण्ह गिरीणायामो, संखित्तो तं धणू कुरूणं ॥९१॥ देवक्ठरु अने उत्तरकुरु क्षेत्रनो विष्कंभ (पहोळाई) त्रण लाख, सताणु हजार, आठसो सताणु योजन अने उपर बसो बारीआ बाणु भाग छे. वे लाख, त्रेवीस हजार, एकसो अठावन योजन बन्ने कुरुक्षेत्रनी 'जीवा' छे. ते जीवामां वे गजदंत आक्ठतिवाळा पर्वतोनी लंबाई एकत्र करवाथी जे परिमाण थाय ते परिमाणवाळुं कुरुक्षेत्रोनुं धनुपृष्ठ जाणवुं. वासहरगिरी १२ वक्स्वा–रपव्वया ३२ पूठ्वपच्छिमद्धेसु। जंबुद्दीवगदुगुणा, वित्थरओ उस्सए तुछा ॥९२॥ धातकी खंडना पूर्वार्ध्व अने पश्चिमार्ध्वना बार वर्षधर पर्वतो अने बत्रीग्र वक्षस्कार पर्वतो, ते जंबूद्वीपना वर्षधर अने	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
****	चित्रविचित्र नामना बे पर्वत, वृत्तवेताढ्य पर्वतो अने दीर्घवैताढ्य पर्वतो-आ बधा पर्वतोनी पहोळाई, ऊडाई अने ऊचाई जंगदीगचा पर्वतो प्रपणे जणानी	** ९१-९३- ** ९१-९३- ** ९३ सत्राणि *** *** *** ***

अउण	गट्ठा दोन्नि सया, उणसत्तरि सहस्स पंचलक्खा य। सोमणस मालवंता, दीहा रुंदा दस सयाइं ॥९५।
दे	वकुरुथी पश्चिम दिशाए विद्युत्प्रम अने उत्तरकुरुयी पश्चिम दिशाए गंधमादन पर्वत छे. ते बन्नेनी लंबाई त्रण लाख,
छप्पन	हजार, बसे। सत्यावीश योजननी छे. देवकुरुनी पूर्व दिशाए सौमनस अने उत्तरकुरुनी पूर्व दिशाए माल्यवान पर्वत छे.
ते बन्ने	नी लंबाई पांच लाख, उगणोतेर हजार, बसो ने उगणसाठ योजननी छे. आ प्रमाण पूर्व मेरुनी समीपमां जाणवुं अने
पश्चिम	मेरुनी समीपमां तो विद्युत्प्रभ अने गंधमादननी लंबाई कही ते त्यां सौमनस अने माल्यवंतनी जाणवी; कारण के त्यां
संकीण	क्षेत्रमां रहेल छे अने जे सौमनस अने माल्यवंतूनी लंबाई कही ते त्यां विद्युत्प्रभ अने गंधमादननी जाणवी, कारण के
त्यां लां	ंबा क्षेत्रमां रहेल छे. वळी चारे पर्वतो वर्षधर पर्वतनी पासे एक हजार योजन पहोळा छे.
	सब्वाओऽवि णईओ, विक्खंभोव्वेहदुगुणमाणाओ ।
	सीयासीयोयाणं, वणाणि दुगुणाणि विक्खंभो ॥ ९६॥ [ विस्तरतो वनमुखानीत्यर्थः ]
	वासहरकुरुसु दहा [ वर्षधरेषु कुरुषु च ये हूदा इत्यर्थः ], नदीण कुंडाइं तेसु जे दीवा ।
	उव्वेहुस्सयतुत्ता, विक्खंभायामओं दुगुणा ॥ ९७ ॥ [ जंबूद्वीपापेक्षयेति ]
17	गतकीखंडद्वीपमां बधी नदीओ जंबुद्वीपमां रहेल नदीनी अपेक्षाए पहोळाई अने ऊंडाईमां बेवडा प्रमाणवाळी छे.

		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
श्रीस्था- नाङ्गस्वत्र सानुवाद ॥ १४५ ॥ *******	सीता अने सीतोदा नदीना वे वनमुख पहोळाईमां बमणा प्रमाणवाळा छे. धातकीखंडना पूर्वार्ध्व अने पश्चिमार्ध्वमां वर्षधर हिमवान आदि पर्वतोने विषे अने देवकुरु तथा उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे जे पत्न वगेरे द्रहो, गंगा नदी वगेरेना कुंडो अने छुंडोमां रहेला जे गंगाद्वीप वगेरे छे ते जंब्द्वीपमां रहेला द्रह वगेरेनी ऊंडाई अने ऊंचाईवडे समान छे अने लंबाई अने पहोठाईवडे बेवडा प्रमाणवाळा छे. पूर्वार्ध्व धातकीखंडना अभिलापवडे जंबूद्वीपतुं प्रकरण ( जंबूद्वीपमां कहेल विषय ) क्यां सुधी कहेतुं ? ते माटे कहे छे-' जाव दोसु वासेसु मणुए 'त्यादि० आ सत्रथी आगळ जंबूद्वीपना प्रकरणमां चंद्रादि ज्योतिष्कोना सत्रो कहेला छे ते सत्रो धातकीखंड अने पुष्कराध्यद्वीपना पूर्वाध्वादि प्रकरणोमां संभवता नथी; कारण के आ अध्ययनमां वे स्थानकनो अधिकार छे ज्यारे धातकीखंड वगेरेमां तो चंद्र वगेरेतुं बहुपणुं ( घणी संख्या ) छे. कर्खु छे के— दो चंदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे ऌवणतोए । धायइसंडे दीवे, वारस चंदा य सूरा य॥९८॥ आ जंबूद्वीपमां वे चंद्र ( वे सर्य ) छे, लवणससुद्रमां चार छे अने धातकीखंडमां वार वार चंद्र अने सूर्य छे. चंदोनुं वे पणुं न होवाथी अर्थात् घणा होवाथी नक्षत्र वगेरेनुं पण वेपणुं न होय. ते कारणथी वे स्थानमां तेनो अवतार ( वर्णन ) नथी. जंबूद्वीपना प्रकरणथी धातकीखंडनुं विशेषपणुं देखाडता थका कहे छे-' णवर 'मित्यादि० केवल विशेष ए के—कुरु- क्षेत्रना सत्र पछी जंबूद्वीपना प्रकरणमां 'क्रिड्यामल्टी चेव जंबू चेव सुदंसणे'ति० आ पाठ कहेल छे. अहिं तो जंबूद्वश्वना स्थानमां धातकीवृक्ष कहेल छे. ते बन्ने वृक्षनुं प्रमाण जंबूद्वीपना शाल्मलीवृक्ष वगेरेनी जेम जाणवुं. ते वे वृक्षना देवस्वने	***** २ स्थान- काध्ययने उद्देशः ३ अपरवर्णनम् ९१-९२- ९३ सत्राणि *******

नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १४६ ॥	नामना वे वक्षस्कार पर्वतो छे. ते पछी विजय आंवे छे, ते पछी अंतरनदी छे. ते पछी आंवल विजयने छेडे वे पद्महट पर्वतो छे. तेवी ज रीते विजय अन अंतरनदी पछी आंवल विजयना अंतमां वे नलिनक्रटपर्वत छे, एम ज अंतरित वळी एकरोल लामना वे पर्वतो छे. वळी पूर्वना वनमुखनी वेदिका अने विजयथी पहेलां (पश्चिममां) सीता नदीना दक्षिण किनारा पर रहेल तेम ज (पूर्वनी माफक) त्रिक्ट, वैश्वमण, अंजन अने मातंजन आ चार नामना बच्चे पर्वतो छे. त्यारपछी देवक्करन्नेवर्ध पूर्व दिशामां रहेल सौमनस नामना वे गजदंत पर्वतो छे. त्यारपछी गजदंतना ज आकारवाळा देवकुरुधी पश्चिमदिशामां वे विद्युत्त्रम पर्वतो छे. त्यारपछी मद्रशाल वन, तेनी देदिका अने विजयथी आगळ तेवी ज रीते अंकापाती, प्रधापाती, आशीविप अने सुखावह नामना वच्चे पर्वतो सितोदा नदीना दक्षिण किनाराए रहेल छे. वळी वीजा पर्वतो–पश्चिमने सामे वनमुखशळी वेदिका अने विजययी पूर्व दिशाए क्रमशः चंद्र, सर, नाग अने देव ए नामवाळा बच्चे पर्वतो छे. त्यारपछी उत्तरकुरुक्षेत्रना पश्चिम भागमां रहेल गंवमाइन नामना वे गजदंत पर्वतो छे. आ पर्वतो वाजा पर्वतो–पश्चिमने सामे वनमुखशळी वेदिका अने विजययी पूर्व दिशाए क्रमशः चंद्र, सर, नाग अने देव ए नामवाळा बच्चे पर्वतो छे. त्यारपर्छी उत्तरकुरुक्षेत्रना पश्चिम भागमां रहेल गंवमाइन नामना वे गजदंत पर्वतो छे. आ पर्वतो धातकीखंडद्वीपना पूर्वार्द्ध अने पश्चिमार्द्धमा ईोय छे माटे वच्चे कह्या छे. वे इषुकार पर्वतो दक्षिण अने उत्तर दिशामां रहेल छे. ते घातकीखंडना वे विभाग करनारा छे. (३). 'दो चुछिहिमवंतक्त्इडा'इत्यादि० हिमवान वगेरे छ वर्षधर पर्वतो छे, तेमां वच्चे क्र्टो, जंबूद्वीपना प्रकरणमां जे कहेल छे ते पर्वतोना चमणापणार्थी एक एक नामवाळा बच्चे होय छे. पर्वतो छे. वर्तताना दिगुणपणाथी पत्रादि द्रहो पण बमणा छे. ते द्रहमां वसनारी देवीओ पण बमणी छे. गंगादि चौद महानदीओनुं पूर्व अने पश्चिमार्द्धनी अपेक्षाए द्रिगुणपणुं होवाश्वी ते गंगादि नदीओनाा प्रपातद्रहो ( कुंडो ) पण बच्चे होय छे. ए हेतुयी कहे	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
	For Private and Personal Use Only	

1/200.51

	छे के−'दो गंगापवायददे'त्यादि० ( ४ ). 'दो रोहियाओ ' इत्यादि० नदीना अधिकारमां गंगादि नदीओनुं द्विपणुं
	होवा छतां पण कद्युं नथी कारण के जंबूद्वीप प्रकरणमां कहेल-'महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमददाओ
	दो महानदीओ पवहंती 'त्यादि० आ सत्रना कमनो आश्रय छे. त्यां ( जंबूद्वीप विषयमां ) रोहित वगेरे आठ
	नदीओ ज संभळाय छे. चित्रकूट अने पद्मकूट ए बे वक्षस्कार पर्वतना मध्यमां ( अंतरमां ) नीलवंत वर्षधर पर्वतना नितंब-
	( कडना पाछळना भाग )पण व्यवास्थित होवाथी तथा ग्राहवती कुंडथी दक्षिण तोरणवडे नीकळेली, अठ्यावीश हजार नदीना
5	परिवारवाळी, सीता नदीमां मळनारी, सुकच्छ अने महाकच्छ ए वे विजयोना विभाग करनारी एवी ग्राहवती नामनी नदी छे.
	एवी रीते यथायोग्य वे वृक्षस्कार पर्वत अने विजयना आंतरामां क्रमथी प्रदक्षिणाए बार अंतरनदीओ पण जोडवी, तेनुं
	दित्वपणुं ( वे पणुं ) पूर्वनी माफक जाणवुं. अहिं पंकवती नाम छे तेनुं ग्रंथांतरमां वेगवती एवं नाम देखाय छे. तेम क्षारोद
	एवं आहि नाम छे तेनुं क्षीगेद (नदी) एवं नाम बीजे स्थले छे. वळी आ सूत्रमां सिंहश्रोता नाम छे तेनुं अन्यत्र सीत-
	श्रोता एवं नाम कहेल छे. फेनमालिनी अने गंभीरमालिनी आ बन्ने नामोत्तुं अहिं ऊलटी रीते कथन देखाय छे. माल्यवत्
	नामना गजदंत पर्वत अने भद्रशाल वनथा आरंभीने कच्छ वगेरे बत्रीश विजय क्षेत्रो बब्बे प्रदक्षिणाथी जाणी लेवा. (५). तथा
222	कच्छादि विजयोने विषे कमथी क्षेमादि नगरीओना बत्रीश युगले। (बे बे) जाणी लेवा. (६). मेरुना भद्रशालादि चार वनो छे-
	भूमीए भदसालं, मेहलजुयलंमि दोन्नि रम्माइं । नंदणसोमणसाइं, पंडगपरिमंडियं सिहरं ॥ ९९॥

× * *		
श्रीस्था- 🎽	भूद्रशाल वन् मेरुपर्वतनी तूलेटी-भूमिमां छे. नंदन् अने सौमनस ए बे रम्यवूनो मेरुप्वतनी बे मेखलाए क्रमशः छे. पांडू-	<b>-</b>
नाङ्गस्त्र 💥	कवन शिखरथी शोभित छे अर्थात् सर्वथी उपर छे. उपरोक्त शास्त्रना वचनथी मेरुपर्वतना विभागथी वनोना विभाग छे. मेरुपर्व-	•
सानुवाद 🛞	तना पांडुकवननी मध्यमां चूलिका उपर क्रमशी पूर्वादि चार दिशाआने विषे चार शिलाओ छे. अहिं ते संबंधी वे गाथा कहे छे-	
II १४७ II 💥	भद्रशाल वन मेरुपर्वतनी तलेटी-भूमिमां छे. नंदन अने सौमनस ए बे रम्यवनो मेरुपर्वतनी बे मेखलाए क्रमशः छे. पांडु- कवन शिखरथी शोभित छे अर्थात् सर्वथी उपर छे. उपरोक्त शास्त्रना वचनथी मेरुपर्वतना विभागथी वनोना विभाग छे. मेरुपर्व- तना पांडुकवननी मध्यमां चूलिका उपर क्रमथी पूर्वादि चार दिशाआने विषे चार शिलाओ छे. अहिं ते संबंधी बे गाथा कहे छे- पंडगवणंमि चउरो, सिलाउ चउसुवि दिसासु चूलाए। चउजोयणउस्सियाओ, सठवज्जुणकंचणमयाओ	
××××		•
X	पचसयायामाआ, मजझ दाहत्तणऽध्धरुदाआ । चदध्धसाठयाआ, कुमुआयरहारगाराआ ॥ १०१ ॥ पांडुकवनमां चारे दिशामां पण चूलिका उपर चारे शिलाओ छे, ते चार योजन ऊंची, श्वेत सुवर्णवाळी, पांचसो योजन लांबी अने मध्यमां दीर्घपणा( जाडाई )थी अढीसा योजन पहोळी, अर्ध्धचंद्रना आकारे रहेली अने कुमुद- ( श्वेत कमल )ना गर्भमां रहेल मोतीना हार समान गौर (स्वच्छ) वर्णवाळी चारे शिलाओ छे. मेरुना उपर चूलिका एटले शिखर विश्वेष. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे- मेरुस्स उवरि चूला, जिणभवणविहूसिया दुवी(४०)सुच्चा। बारस अट्ठ य चउरो,मूले मज्झुवरि रुंदा य १०२ क्रू	ण
× ×	योजन लांबी अने मध्यमां दीर्घपणा( जाडाई )थी अढीसा योजन पहोळी, अर्ध्धचंद्रना आकारे रहेली अने कुमुद- 🌋	
( <b>X</b> )	( श्वेत कमल )ना गर्भमां रहेल मोतीना हार समान गौर (स्वच्छ) वर्णवाळी चारे शिलाओ छे. मेरुना उपर चूलिका एँटले 🌋	
	शिखर विद्येष. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे-	
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	मेरुस्स उवरि चूला, जिणभवणविहूसिया दुवी(४०)सुचा। बारस अट्ठ य चउरो,मूले मज्झुवरि रुंदा य १०२ 💥	
	मरुपर्वतनी उपर जिनभवनोथी विभूषित, चालीश योजन ऊंची तथा मुलमां बार योजन पहोळी. मध्यमां आठ 💥	
×		
****	१. प्रत्यंतरमां कुम्मो॰, कुसुमोव॰ पाठ छे.	11

<u>*************************************</u>	पछी कालोद समुद्र होय छे माटे तेनी वक्तव्यता कहे छे−'कालोदे' त्यादि० सुगम छे. कालोद समुद्र पछी अंतर रहित- पणाथी पुष्करवर द्वीपना पूर्वार्ध्व, पश्चिमार्ध्व अने तदुभय प्रकरणोने कहे छे−'पुक्खरे' त्यादि० त्रण सत्रो पण अतिदेशप्रधान- वाळा छे. अतिदेशथी मळेलो अर्थ सुगम ज छे. विशेष ए के−पूर्वार्ध्वता अने अपरार्ध्वता धातकी खंडनी माफक वे इषुका-
XX	पछी कालोद समुद्र होय छे माटे तेनी वक्तव्यता कहे छे-'कालोदे' त्यादि० सुगम छे. कालोद समुद्र पछी अंतर रहित- पणाथी पुष्करवर द्वीपना पूर्वार्ध्ध, पश्चिमार्ध्ध अने तदुभय प्रकरणोने कहे छे-'पुक्खरे' त्यादि० त्रण सत्रो पण अतिदेशप्रधान-
R K	पणाथा पुष्करवर द्वापना प्रवाध्व, पावनाध्व जन तिषुनय प्रकरणान कह छ- पुवस्वर त्याापण प्रणादपा पण जातप्राप्रवान- वाळा छे. अतिदेशथी मळेलो अर्थ सुगम ज छे. विशेष ए के-पूर्वार्घ्वता अने अपरार्ध्वता धातकी खंडनी माफक बे इषुका-
~ X	रपर्वतोथी थयेली जाणी लेवी. भरतक्षेत्र वगेरेनी लंबाई वगेरेनी समानता आ प्रमाणे विचारवी- इगुयालीस सहस्सा, पंचेव सया हवंति उणसीया ।
K K	तेवत्तरमंससयं, मुहाविक्खंभो भरहवासे ॥ १०३ ॥ [४१५७९ ३३]
× ~   × ~	पन्नट्ठि सहस्साइं, चत्तारि सया हवंति छायाला। तेरस चेव य अंसा, बाहिरो भरहविक्खंभो ॥ १०४॥ [ ६५४४६ 👯 ]
XXX	एकतालीश हजार, पांचसो ने ओगणएंशी योजन अने उपर एक सो तोंतेर भाग भरतक्षेत्रनो मुख (अभ्यंतर) विष्कंभ
× ×	छे. तथा पांसठ हजार, चारसो छेंतालीश योजन अने उपर तेर भाग बसो बारीआ भरतक्षेत्रनो बहारनो विष्कंभ छे. चउगुणिय भरहवासो [विस्तर इत्यर्थः], हेमवए तं चउम्गुणं तइयं। [हरिवर्षमित्यर्थः]
× ×	हरिवासं चउगुणियं, महाविदेहस्स विक्लंभो ॥ १०५ ॥
×××	

श्रीस्था- नाङ्गम्दत्र सानुवाद ॥ १४८ ॥ ** ********	भरतक्षेत्रना विष्कंभ( पहोळाई )थी चारगुणो हैमैवतक्षेत्रनो विष्कंभ होय छे, हैमवतक्षेत्रना विष्कंभथी चारगुणो हरिवर्ष क्षेत्रनं विष्कंभ छे अने हरिवर्ष क्षेत्रना विष्कंभने चारगुणो करवाथी महाविदेह क्षेत्रनं विष्कंभ थाय छे. एवी रीते ऐरवतौदि क्षेत्रनुं जाणी लेवुं. सत्तत्तरिं सयाइं, चोद्दस अद्दियाइं सत्तरस लक्खा। होइ कुरूविक्खंभो, अट य भागा अपरिसेसा ॥ १०६ ॥ [१७०७७९४ २६ँ२] सत्तर लाख, सात हजार, सातसो ने चौद योजन उपर आठ भाग बसो बारीआ प्रत्येक दुरुक्षेत्रनो विष्कंभ छे. चत्तारि लक्ख छत्तीस, सहस्सा नव सया य सोलहिया। [एषा कुरुजीवा] [ ४३६९१६ ] दोण्ह गिरीणायामो, संखित्तो तं धणू कुरुणं ॥ १०७ ॥ चार लाख, छत्रीस इजार, नवसो ने सोल योजन प्रत्येक कुरुक्षेत्र( देवकुरु)नी जीवा छे. ते जीवामां वे गजदंत आ- कृतिवाळा पर्वतोनी लंबाई भेळववाथी जेटलुं प्रमाण थाय तेटलुं कुरुक्षेत्रना धनुप्रष्ठतुं प्रमाण जाणवुं. सोमणसमालवंता, दीहा वीसं भवे सयसहस्सा । १ गरतना बाहेरना विष्कंभथी चोगुणो हैमवतनो बहारनो विष्कंभ अने अंतरना विष्कंभथी चोगुणो अंतरनो विष्कंभ होय छे. १ भरत जेरलो हे देमवत्त जेरले हेरण्यवतनो अने हरिवर्ष जेरले या रात्रे का राण्य के ये होठा हे ये छे.	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **
****		* * * * * *

( मह धाय वगेरे वारू	तेयालीस सहस्सा, अउणावीसा य दोन्नि सया ॥ १०८ ॥ [२०४३२१९]
	सौमनस अने माल्यवान ए बे पर्वतनी लंबाई वीश लाख, तेंतालीश हजार, बसो ने ओगणीश योजन छे.
	सोलहियं सयमेगं, छव्वीससहस्स सोलस य लक्ला ।
	विज्जुप्पभो नगो, गंधमायणा चेव दीहाओ ॥ १०९ ॥ [१६२६११६]
( मह	सोळ लाख, छवीश हजार, एकसो ने सोळ योजनना विद्युत्प्रभ अने गंधमादन ए बे पर्वत लांबा छे. महाद्रुमो ावृक्षो ) जबूद्वीप संबंघी महाद्रुमनी सरखा छे. तथा-
धाय	।इवरंमि दीवे, जो विक्खंभो उ होइ उ णगाणं। सो दुगुणो णायव्वो, पुक्खरद्धे णगाणं तु ॥ ११० ॥
	धातकींखंड नामना द्वीपमां जे हिमवान वगेरे पर्वतोनो विष्कंभ छे, तेथी बमगो विष्कंभ पुष्करार्थ्ध द्वीपना हिमवान पर्वतनो होय छे.
	तहरा वक्तवारा, दहनइंकुंडा वणा य सीयाई। दीवे दीवे दुगुणा, वित्थरओ उस्सए तु <b>छा ॥१</b> ११॥
	वर्षधंर पर्वतो, वक्षरैकार पर्वतो, पबद्रह वगेरे द्रहो, गंगा वगेरे नदीओ, गंगाप्रपात वगेरे छंडो अने सीतादि नदीओना
	१. हिमयान वगेरे. २. चित्र वगेरे.

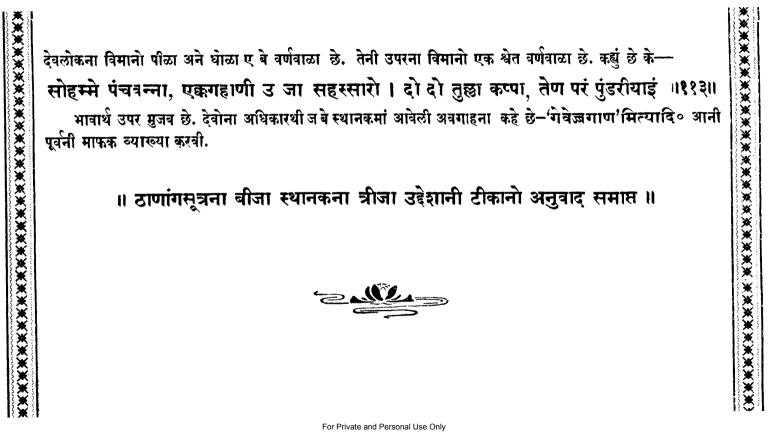
श्रीस्था- नाइस्ट्रत्र सानुवाद ॥ १४९ ॥ ***	वनो, ए दरेक विस्तारथी ( पहोळाईथी ) पूर्वना द्वीपथी पछीना द्वीपमां अनुक्रमे बमणा जाणवा अने ऊंचाईथी सरखा जाणवा. उसुयार जमगकंचण, चित्तविचित्ता य वद्ववेयड्ढा । दीवे दीवे तुस्छा, दुमेहला जे य वेयड्ढा ।।११२॥ इषुकार पर्वतो, उत्तरकुरुमां रहेल यमक पर्वतो, देवकुरु अने उत्तरकुरुमां द्रहनी नजीक रहेला कंचनगिरि पर्वतो, देवकुरुमां रहेला चित्रविचित्र पर्वतो अने वैताढ्य पर्वतो ए सर्वे पर्वतो दरेक द्वीपमां तुल्य होय छे अने जे बे मेखलावाळा वैताढ्य पर्वतो (दीर्घवैताढ्यो) छे ते पण तुल्य जाणवा. पुष्करवरद्वीपनी वेदिकानी प्ररूपणा पछी शेष द्वीप समुद्रनी वेदिकानी प्ररूपणा कहे छे:-' सञ्वेसिंपि ण 'मित्यादि० इत्यादि सुगम छे. ( स्र० ९३ ) आ द्वीपसमुद्रो इंद्रोना उत्पातपर्वतना आश्रय- वाळा छे माटे हवे इंद्रनी वक्तव्यता कहे छे:	* * इंद्रस्य * वर्णनम्	
<b>II ?</b> 89 II ***********************************	दो असुरकुमारिंदा पन्नत्ता तं०-चमरे चेव बली चेव १, दो णागकुमारिंदा पं० तं०-धरणे चेव भूयाणंदे चेव २, दो सुवन्नकुमारिंदा पं० तं०-वेणुदेवे चेव वेणुदाली चेव ३, दो विज्जुकुमारिंदा पं० तं०-हरिच्चेव हरिस्सहे चेव ४, दो अग्गिकुमारिंदा पन्नत्ता तं०-अग्गिसिहे चेव अग्गिमाणवे चेव ५, दो दीवकुमारिंदा पं० तं०-पुन्ने चेव विसिट्ठे चेव ६, दो उदहिकुमारिंदा पं० तं०-जलकंते चेव जलप्पभे चेव ७, दो दिसाकुमारिंदा पं० तं०-अमियगती चेव अमितवाहणे चेव ८, दो	** ९४ स्त्रम् *** *** *** *** *** *** *** ***	

********************************	वातकुमारिंदा पं० तं०-वेलंबे चेव पभंजणे चेव ९, दो थाणियकुमारिंदा पं० तं - घोसे चेव महाघोसे चेव १०, दो पिसाइंदा पन्नत्ता तं०-काले चेव महाकाले चेव १, दो भूइंदा पं० तं०- सुरूवे चेव पडिरूवे चेव २, दो जर्किंखदा पं० तं०-पुन्नभद्दे चेव माणिभद्दे चेव ३, दो रक्खासिंदा पं० तं०-भीमे चेव महाभीमे चेव४, दो किन्नरिंदा पं० तं०-किन्नरे चेव किंपुरिसे चेव ५, दो किंपु- रिसिंदा पं० तं०-सप्पुरिसे चेव महापुरिसे चेव ६, दो महोरगिंदा पं० तं०-अतिकाए चेव महाकाए
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	चेव ७, दो गंधव्विंदा पं० तं०-गीतरती चेव गीयजसे चेव ८, दो अणपन्निंदा पं० तं०-संनिहिए चेव सामण्णे चेव ९, दो पणपन्निंदा पं०तं०-धाए चेव विहाए चेव १०, दो इसिवाइंदा पं० तं०- इसिच्चेव इसिवालए चेव ११, दो भूतवाइंदा पं० तं०-इस्सरे चेव महिस्सरे चेव १२, दो कंदिंदा पं० तं०-सुवच्छे चेव विसाले चेव १३, दो महाकंदिंदा पं० तं०-हस्से चेव हस्सरती चेव १४, दो कुभंडिंदा पं० तं०-सेए चेव महासेए चेव १५, दो पतइंदा पं० तं०-पतए चेव पतयवई चेव १६,
***	जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पन्नत्ता तं०-चंदे चेव सूरे चेव ३, सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु दो

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ १५० ॥ ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **	इंदा पं० तं०-सके चेव ईसाणे चेव, एवं सणंकुमारमाहिदेंसु कप्पेसु दो इंदा पं० तं०-सणंकुमारे चेव माहिंदे चेव, बंभलोगलंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पं० तं-बंभे चेव लंतए चेव, महासुकस- हस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं० तं०-महासुक्के चेव सहस्सारे चेव, आणयपाणतारणच्चुतेसु णं कप्पेसु दो इंदा पं० तं०-पाणते चेव अच्चुते चेव, महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पं० तं०-हालिद्दा चेव सुक्किला चेव, गेविज्जगाणं देवा णं दो रयणीओ उड्डमुच्चत्तेणं पन्नत्ता। सू० ९४, द्वितीयस्थाने तृतीयोद्देशकः समाप्तः २-३। मूलार्थः-बे असुरकुमार देवोना इंद्रो कहेला छे, तेना नाम-चमरेंद्र अने वलीन्द्र (१), वे नागकुमार देवोना इंद्रो कहेल छे, तेना नाम-धरणेंद्र अने भूतानेंद्र (२), बे सुपर्णकुमार देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-वेणुदेवेंद्र अने वेणुदारींद्र (३), बे वियुत्कमार देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-हरींद्र अने हरिस्सहेंद्र (४), बे अग्निकुमार देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-आग्रिशिख	ĸ <i>`</i> ```````````````````````````````````	२ स्थान- काध्ययने उदेशः ३ इंद्रस्य वर्णनम् ९४ स्रत्रम्
×××××××××××	अने अग्निमाणव (५), बे द्वीपकुमारदेवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ–पूर्ण अने वशिष्ट (६), बे उदधिकुमार देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ–जळकान्त अने जळप्रभ (७), बे दिक्कुमार देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ–अमितगति अने अमितवाहन (८), बे वायुकुमार देवोनां इंद्र कहेल छे, ते आ–वेलंब अने प्रभंजन (९), बे स्तनित( मेघ )कुमार देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ–वोष	(**********	॥ १५० ॥

(६), बे महोरगोना इंद्रो कहेला छे, तेना नाम-अतिकाय अने महाकाय (७), बे गंधवोंना इंद्रो कहेल छे, ते आ-गीतरति अने गीतयग्ना (८). (आठ आठं व्यंतरजातिना क्रमशः दक्षिण अने उत्तरना इंद्रो छे) [२] बे अँणपन्नी देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ- सन्निहित अने सामानिक (९), बे पणपन्नी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-धाता अने विधाता (१०), बे ऋषिवादी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-ऋषि अने ऋषिपालित (११), बे भूतवादी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-ईश्वर अने महेश्वर (१२), बे कंदी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-द्यवत्स अने विशाळ (१२), बे भूतवादी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-हास्य अने महेश्वर (१२), बे कंदी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-द्यवत्स अने विशाळ (१२), बे महाकंदी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-हास्य अने हास्यरति (१४), बे कुंभड (कोहंड) देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-खेत अने महाश्वेत (१५), बे पतंगदेवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-हास्य जे पतंगपति (१६), बे ज्योतिष्क देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-चंद्र अने स्वर्थ [३]. सौधर्म अने ईशान देवलोकने विषे बे इंद्रो १. आ आठ व्यंतरदेवो रत्नप्रभाना हनार योननना तलामां नीचे उपर सो-सो योनन छोडीने होष आठ सो योजनमां रहे छे. २ अलपन्नो बगेरे आठ वाणव्यंतरदेवो रत्नप्रभा पृथ्वीना उपरना सो योननमां नोचे उपर दश -दश योजन छोडीने शेष पित पे योननमां रहे छे. ३ ज्योतिष्कोना असंख्य चंद्र अने असंख्य सूर्य होवाथी असंख्य इन्द्रो छे, तथापि जातिनी अपेक्षण् सामान्यथी बे इन्द्रो कहेल छे. २६	<u> </u>	अने महाघोष (१०). उपरोक्त दश भुवनपति देवोना क्रमशः दक्षिण अने उत्तरदिशाओना मळी वीश इंद्रो छे. वे पिशाचना इंद्रो कहेला छे, तेना नाम-काल अने महाकाल (१), वे भूतोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-सुरूप अने प्रतिरूप (२), वे यक्षोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-पूर्णभद्र अने माणिभद्र (३), वे राक्षसोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-साम अने महाभीम (४), वे किन्नरोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-किन्नर अने किंपुरुष (५), वे किंपुरुषोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-साम अने महाभीम (४), वे किन्नरोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-किन्नर अने किंपुरुष (५), वे किंपुरुषोना इंद्रो कहेला छे, तेना नाम-सत्पुरुष अने महापुरुष (६), वे महोरगोना इंद्रो कहेल छे, ते आ-नित्नर अने किंपुरुष अने महाकाय (७), वे गंधवोंना इंद्रो कहेल छे, ते आगीतरति अने गीतयशा (८). (आठ आठं व्यंतरजातिना क्रमशः दक्षिण अने उत्तरना इंद्रो छे) [२] वे अंणपन्नी देवोना इंद्रो कहेल छे, ते आ- सन्निहित अने सामानिक (९), वे पणपन्नी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-धाता अने विधाता (१०), वे ऋषिवादी देवोना इंद्रो
🦌 अणपन्नो वगेरे आठ वाणव्यंतरदेवो रत्नप्रभा पृथ्वीना उपरना सो योननमां नोचे उपर दश –दश योजन छोडीने शेष ऐंसी योजनमां रहे		देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-सुवत्स अने विशाळ (१३), बे महाकंदी देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-हास्य अने हास्यरति (१४), बे कुंभड (कोहंड) देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-श्वेत अने महाश्वेत (१५), बे पतंगदेवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-पतंग अने पतंगपति (१६), बे ज्योतिष्क देवोना इंद्रो कहेला छे, ते आ-चंद्रै अने स्वर्य [३]. सौधर्म अने ईशान देवलोकने विषे बे इंद्रो १. आ आठ व्यंतरदेवो रत्नप्रभाना हनार योजनना तलामां नीचे उपर सो-सो योजन छोडीने शेष आठ सो योजनमां रहे छे. २

2 2 2 2		
श्रीस्था-	** * कहेला छे, ते आ–शकेंद्र अने ईशानेंद्र, एम ज सनत्कुमार अने माहेंद्र देवलोकने विषे वे इंद्रो कहेला छे,ते आ–सनत्कुमारेंद्र	** ** २ स्थान-
नाङ्गस्रत्र	अने माहेंद्र, ब्रह्मलोक अने लांतक देवलोकने विषे वे इंद्रो कहेला छे, ते आ-ब्रह्मेंद्र अने लांतकेंद्र, महाग्रुक अने सहसार देव-	🔆 काध्ययने
सानुवाद	👻 लोकने विषे बे इंद्रो कहेला छे, ते आ-महाशत्रेंद्र अने सहस्रारेंद्र, आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत देवलोकने विषे वे इंद्रो	<ul> <li>काध्ययन</li> <li>उदेशः ३</li> <li>इंद्रस्य</li> <li>इंद्रस्य</li> <li>वर्णनम्</li> <li>९४ स्रत्रम्</li> <li>४</li> </ul>
11 242 11	<ul> <li>लाकन विष ब इद्रा कहला छ, त आ-महाशकद्र अन सहस्रारद्र, आनत, प्राणत, आरण अन अच्युत दवलाकन विष ब इद्रा कहेला छे, ते आ-प्राणतेंद्र अने अच्युतेंद्र. महाशक अने सहस्रार देवलोकने विषे विमानो बे वर्णवाळा कहेला छे, ते आ</li> <li>कहेला छे, ते आ-प्राणतेंद्र अने अच्युतेंद्र. महाशक अने सहस्रार देवलोकने विषे विमानो बे वर्णवाळा कहेला छे, ते आ</li> <li>प्रमाणे-पीळा अने घोळा ( शुक्ल ), प्रैवेयक[ नव ]ना देवो ऊंचपणे बे हाथनी अवगाहनावाळा कहेला छे [४].</li> <li>टक्तिार्थ:-असुरकुमार वगेरे दश भवनपति निकायोना, मेरुप्वतनी अपेक्षाए दक्षिण अने उत्तर बे दिशाओना आश्रित-</li> <li>पणाए बे प्रकार होवाधी वीश इंद्रो कहेल छे. तेमां चमरेंद्र दक्षिणदिशानो अने वलींद्र उत्तरदिशानो अधिपति छे, एवी</li> <li>रीते सर्वत्र जाणवुं. (१). एम ज आठ जातिना व्यंतरनिकायना द्विगुणपणार्थी सोळ इंद्रो छे (२). तथा अणपन्नी वगेरे आठ</li> <li>च्यंतर विशेष [ पेटाभेद ] निकायोना बमणापणार्थी सोळ इंद्रो छे. ज्योतिष्कोमां तो असंख्यात् चंद्र अने सर्य होवा छतां पण</li> <li>जाति मात्रनो आश्रय करवार्थी चंद्र अने सर्य नामना बे ज इंद्रो कहेला छे (२). सौधर्मादि देवलोकना तो दश इंद्रो छे-एवी</li> </ul>	🔅 इंद्रस्य
	🗱 प्रमाणे-पीळा अने घोळा ( शुङ्क ), ग्रैवेयक[ नव ]ना देवो ऊंचपणे वे हाथनी अवगाहनावाळा कहेला छे [४].	🌋 वर्णनम्
	टीकार्थः-असुरदुमार वगरे दश भवनपति निकायोना, मेरुपर्वतनी अपेक्षाए दक्षिण अने उत्तर वे दिशाओना आश्रित-	🌋 ९४ सूत्रम्
5	🕱   पणाए वे प्रकार होवाशी वीश इंद्रो कहेल छे. तेमां चमरेंद्र दक्षिणदिशानो अने वलींद्र उत्तरदिशानो अधिपति छे, एवी	
	🗱 रीते सर्वत्र जाणवुं. (१). एम ज आठ जातिना व्यंतर्गनकायना द्विगुणपणाथी सोळ इंद्रो छे (२). तथा अणूपन्नी वगेरे आठ	
	🙀 ट्यंतर विशेष [ पेटाभेद ] निकायोना बमणापणाथी सोळ इंद्रो छे. ज्योतिष्कोमां तो असंख्यात चंद्र अने सर्य होवा छतां पण	× × × ×
		× .
	🌋 🛛 रीते सर्व मळीने चोसठ इंद्रो थाय छे. देवोना अधिकारथी तेना वसवाना स्थानभूत विमाननी वक्तव्यता कहे छे-'महासुके'-	×
	😴 त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-हारिद्र एटले पीळा. आ सौधर्मादि देवलोकना विमानोना वर्णोना विषयनो कम आ प्रमाणे छे-	
	🏵 सौधर्म अने ईशान देवलोकना विमानो पांच वर्णवाळा छे. त्रीजा अने चोथा देवलोकना विमानो कृष्ण वर्ण सिवाय शेष	
	🗮 चार वर्णवाळा छे. पांचमा अने छट्टा देवलोकना विमानो कृष्ण अने नील वर्ण सिवाय शेष त्रण वर्णवाळा छे. सातमा आठमा	🛞 🛛 ૧५१ 🕦
	<ul> <li>शेते सर्व मळीने चोसठ इंद्रो थाय छे. देवोना अधिकारथी तेना वसवाना स्थानभूत विमाननी वक्तव्यता कहे छे-'महासुके'-</li> <li>त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-हारिद्र एटले पीळा. आ सौधर्मादि देवलोकना विमानोना वर्णोना विषयनो क्रम आ प्रमाणे छे-</li> <li>सौधर्म अने ईशान देवलोकना विमानो पांच वर्णवाळा छे. त्रीजा अने चोथा देवलोकना विमानो कुष्ण वर्ण सिवाय शेष</li> <li>चार वर्णवाळा छे. पांचमा अने छटा देवलोकना विमानो कुष्ण अने नील वर्ण अने पी सिवाय शेष त्रमा को प्रमाणे छे-</li> </ul>	<del>8</del>   1 १५१    -  ★
		× *
ł		13 <b>X</b> 31



श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद १। १५२ ॥ ***	अय द्वितीयस्थानकाध्ययने चतुर्थोद्देशकः त्रीजो उद्देश कहो, हवे चोथा उद्देशाने। आरंभ करे छे. आ जीवाजीवनी वक्तव्यताना प्रबंधवाळा चोथा उद्देशानो पूर्वना उद्देशोनी साथे आ संबंध छे. पूर्वना उद्देशानां पुद्गल अने जीवोना धर्मो कह्या, आईं तो वधुंए जीव अने अजीवात्मक स्वरूप छे एम कहेवुं छे. आ संबंधवडे आवेल उद्देशकने समयेत्यादि पचवीश क्षत्रोद्वारा करे छे. समयाति वा आवल्यियाति वा जीवाति या अजीवाति या पतुच्चति १, आणापाण्यूति वा थो वेति वा जीवाति या अजीवाति या पतुच्चति २, खणाति वा ल्ववाति वा जीवाति या अजीवाति या पव्युच्चति ३, एवं मुहुत्ताति वा अहोरत्ताति वा ४, पक्खाति वा मासाति वा ५, उड्रूति वा अयणाति वा ६, संबच्छ्याति वा जगाति वा ७. वाससयाति वा वाससहस्साइ वा ८. वाससतसहस्साइ वा वास-	<ul> <li>२ स्थान- काध्ययने उदेशः ४</li> <li>जीवाजीव- वक्तव्यता</li> <li>९५ सत्रम्</li> <li>*******</li> <li>*************</li> </ul>
(*************************************	संवच्छराति वा जुगाति वा ७, वाससयाति वा वाससहस्साइ वा ८, वाससतसहस्साइ वा वास- कोडीइ वा ९, पुव्वंगाति वा पुव्वाति वा १०, तुडियंगाति वा तुडियाति वा ११, अडडंगाति वा अडडाति वा १२, अववंगाति वा अववाति वा १३, हूहूअंगाति वा हूहूयाति वा १४, उप्पलंगाति वा उप्प- लाति वा १५, पउमंगाइ वा पउमाति वा १६, णलिणंगाति वा णलिणाति वा १७, अच्छाणिकुरंगाति वा	** ** ** ** ** ** ** **

XXXXXXXXXXX

\*\*\*\*

XXXXXXX

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

अच्छणिउराति वा १८, अउअंगाति वा अउआति वा १९, णउअंगाति वा णउआति वा २०, पउ-तंगाति वा पउताति वा २१, चूलितंगाति वा चूलिताति वा २२, सीसपहेलियंगाति वा सीसप-हेलियाति वा २३, पलिओवमाति वा सागरोवमाति वा २४, उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा जीवाति या अजीवाति या पवुच्चति २५, (१)। गामाति वा णगराति वा १, निगमाति वा रायहाणीति वा २, खेडाति वा कब्बडाति वा ३, मडंबाति वा दोणमुहाति वा ४, पट्टणाति वा आगराति वा ५, आसमाति वा संवाहाति वा ६, संनिवेसाइ वा घोसाइ वा ७, आरामाइ वा, उजाणाति वा ८, वणा-ति वा वणसंडाति वा ९, वावीइ वा पुक्खरणीति वा १०, सराति वा सरपंतीति वा ११, अगडाति वा तलागाति वा १२, दहाति वा णदीति वा १३, पुढवीति वा उदहीति वा १४, वातखंधाति वा उवासंतराति वा १५, वलताति वा विग्गहाति वा १६, दीवाति वा समुदाइ वा १७, वेलाति वा वेतिताति वा १८, दाराति वा तोरणाति वा १९, णेरतिताति वा णेरतितावासाति वा जाव वेमाणियाइ वा वेमाणियावासाति वा २०-४३, कप्पाति वा कप्पविमाणावासाति वा ४४, वासाति वा

त्रीस्था- नाङ्गस्त्र सानुवाद ॥ १५३ ॥ ************	वासधरपव्वताति वा ४५. क्रूडाति वा क्रूडगाराति वा ४६, विजयाति वा रायहाणीइ वा ४७, जीवाति या अजीवाति या पबुच्चति (२) । छाताति वा आतताति वा १, दोसिणाति वा अंधगाराति वा २, ओमाणाति वा उम्माणाति वा ३, अतिताणगिहाति वा उज्जाणगिहाति वा ४, अवार्छिंबाति वा सणिप्पवाताति वा ५, जीवाति या अजीवाति या पवुच्चइ । दो रासी पं० तं०-जीवरासी चेव अजीवरासी चेव ॥ सू० ९५ मूलार्थःसमय अने आवलिका (काल) ए जे स्थितिपणे छे ते जीव अथवा अजीवपणाए कदेवाय छे (१), आनप्राण- उच्छ्वासनिःश्वास काल जने स्तोक काल जीव अने अजीवपणे कदेवाय छे (२), क्षण अने लव (काल) जीव अने अजीवपणे कदेवाय छे (३), एवी रीते मुहूर्च अने अहोरात्र (४), पक्ष अने मास (५), ऋतु अने अयन (६), संवत्सर (वर्ष) अने युग (७), सो वर्ष ने हजार वर्ष (८), लाख वर्ष अने क्रोड वर्ष (९), पूर्वांग अने पूर्व(१०), शुटितांग अने त्रुटित (११), अडडांग अने अडड (१२), अपपांग अने अपपात (१३), हहूतांग अने हहूत (१४), उत्पलांग अने उत्पल (१५), जीव अने अजीवपणे कदेवाय छे. पद्मांग अने पद्म (१६), नलिनांग अने नलिन (१७), अक्षनिक्ररांग अने अक्षनिक्रर (१८), अयुतांग अने अयुत (१९), नियुतांग अने नियुत (२०), प्रयुतांग अने प्रयुत (२१), चूलिकांग अने चूलिका (२२), शर्षिप्रहेलिकांग अने श्रीपंप्रहे	*** *** काध्ययने जदेशः ४ जीवाजीव- वक्तव्यता ** ९५ स्वत्रम् *** ***

\*\*\*\*\*

लिका (२३), पल्योपम अने सागरोपमं (२४), उत्सर्पिणी अने अवसार्पिणी (२५) ए दरेक जीव अने अजीवपणे कहेवाय छे. [१] गाम ने नगर (१), निगम ने राजधानी (२), खेड ने कर्बट (३), मटं[ड]व ने द्रोणमुख (४), पाटण ने आकर (५), आश्रम ने संवाह (६), सन्निवेश ने घोष (७), आराम ने उद्यान (८), वन ने वनखंड (९), वापी (वाव) ने पुष्कारिणी (१०), सरोवर ने सरपंक्ति (११), क्रूप(क्रुओ) ने तळाव (१२), द्रह ने नदी (१३), ष्टथवी (रत्नप्रभादि) ने घनोदधि (१४), वातस्कंध (घनवात बंगरे) ने अवकाश्वांतर (१५), वलय-पृथ्वीने वेष्टन(बींटवा)रूप घनोदधि वगेरे ने विग्रह-लोकनाडीना वक्ष (१६), द्वीप ने समुद्र (१७), ए बधा य जीव अने अजीवस्वरूप छे. वेल-समुद्रना जलनी द्वधि वगेरे ने विव्रह-गढना कांगरा (१८), द्वार- दरवाजा ने तोरण (१९), नैरयिको अने नरकावासो, एवी रीते यावत् चोवीश दंडकमां वैमानिक अने वैमानिकना वासो ( विमानो ) पर्यन्त जे छे ते सर्व जीव अने अजीव स्वरूप छे (२०-४३), कल्प ते देवलोक, अने ते देवलोकना अंशो ते कल्पविमानवासो (४४), वर्ष (क्षेत्रो) अने वर्षधरपर्वता (४५), क्रूट ते शिखर, अने क्रूटागारो (४६), विजय अने राजधानीओ (४७) ए बधा जे छे ते जीव अने अजीवस्वरूप कहेवाय छे. [२], बुक्षादिकनी छाया अने स्रर्यनो आतप (१), ज्योत्सना- कान्ति अने अंधकार (२), अवमान-क्षेत्रादिचुं प्रमाण हस्तादि अने उन्मान-कर्षादि ( तोलो वगेरे ) (३), आतियानगृह- नगर वगेरेना प्रवेशमार्ग के घेरो होय ते अने उद्यानगृह ते वगीचामां रहेला घरो (४), अवर्लिय अने सणिप्रपात ते रुढियी जाणवा (५) बे साधि कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जीवराशि अने अजीवराशि. ( स० ९५ ) टीकार्थ:-आ स्रत्रोनो अनंतर सत्रवी आ संबंध छे-पूर्वना सत्रमां जीव विशेपोन्ठं उत्यत्व लक्षण( ऊंचाई)धर्म कस्रो,	

\*\*\*\* २स्थानका -अहिं तो धर्मना अधिकारथी ज समयादि स्थिति लक्षण धर्म-जीव अने अजीव संबंधी धर्म अने धर्मीना श्रीस्था-अभेद-ष्ययने पणाथी जीवें अने अजीवपणाए ज कहेवाय छे. तेमां संघळा य कालप्रमाणोमां आद्य (पहेला) परम सक्ष्म, अभेद्य, अवयव नाङ्गसूत्र रहित, उत्पल-कमलना सेंकडो पत्रना भेदनना उदाहरणवडे ओळखातो समय कहेवाय छे. ते समयनुं अतीत वगेरे कालनी उद्देशः ४ सानुवाद विवक्षावडे बहुपणाथी बहुवचन छे, माटे सत्रकार कहे-'समयाइ वा' इत्यादि० ' इति ' शब्द समीप अर्थ बताववामां जीवाजीव-1 948 11 अने 'वा' शब्द विकल्पार्थमां छे. असंख्याता समयना समुदायवाळी आवलिका, क्षिष्ठक भवग्रहण कालना बसो ने छप्पन वक्तव्यता ×× भागे छे [ अर्थात् २५६ आवलिकानो एक क्षुल्लक भव थाय छे ]. ते सूत्रमां समयो अथवा आवलिकाओ छे. जे कालवस्तु ९५ सूत्रम् छे ते सामान्यथी जीव छे, कारण के जीवनों पर्याय छे. पर्याय अने पर्यायवाळानो कथंचित अभेद छे तथा अजीवोनो-पुद्गलादिनो पर्याय होवाथी अजीव कहेवाय छे. मूलमां वे 'च' कार छे ते सम्रुचय अर्थमां छे अने जे दीर्घपणुं छे ते \*\*\*\* प्राकृत शैलीने कारणे छे. प्रोच्यते-कहेवाय छे. जीवांदिना व्यतिरेकथी (सिवाय) समय वगेरे नथी, ते कहे छे-जीव अने अजी-वोनी सादि अने सपर्यवसानादि ( अंत सहित ) वगेरे भेदवाळी जे स्थिति छे ते स्थितिना भेदो समय वगेरे छे. ते जीव ×× अने अजीवनो धर्म छे. धर्म अने धर्मीनो अत्यंत भेद नथी. जो अत्यंत भेद होय तो एक अंशमात्र धर्म [वस्तुनो] जणाते छते × \* \* प्रतिनियत (चोकस) धर्मीना विषयमां संग्रय ज नहिं थाय, कारण के ते धर्मीना अन्य धर्मीथी पण तेने। भेद अविशेषपणे छे. १. काल वस्तुत द्रव्य नथी कारण के ते पंचास्तिकायनो पर्याय छे, वर्त्तना लक्षण पर्याय सर्व द्रव्यमां सामान्य छे. तेने उपचारशी (**XXXXXXX** 248 11 द्रव्य, व्यवहारनयवडे कहेल छे.

उच्छ्वासनिःश्वासकाल छे ते संख्यात आवलिका प्रमाणवाळो छे. कह्युं छे के— हट्टस्स अणवगल्लरुस्स. निरुवकिट्टस्स जंतुणो । एगे उत्सासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चई ॥११४॥ हर्षित, ग्लानि-रोग रहित, निरुपकृष्ट-क्षुधा, तृषा, श्रम विगेरेथी रहित प्राणीनो जे एक उच्छ्वासनिःश्वास छे तेने प्राण हर्षित, ग्लानि-रोग रहित, निरुपकृष्ट-क्षुधा, तृषा, श्रम विगेरेथी रहित प्राणीनो जे एक उच्छ्वासनिःश्वास छे तेने प्राण [आनप्राण] कहेवाय छे. तथा स्तोक, ते सात उच्छ्वासनिःश्वास काल प्रमाणवाळो छे. संख्यात आनप्राणवाळा क्षणो छे. अने सात स्तोक प्रमाण कालवाळो लव कहेवाय छे. ए प्रमाणे जेम पूर्वना त्रण सत्रमां जीव अने अजीव एवी रीते कहेवाय छे एम कह्युं, तेमज बधा य आगळना सत्रो जाणवा सतोतेर लव प्रमाणवाळा म्रहर्त्तो होय छे. कह्युं छे के— सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे । लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते वियाहिए ॥११५ ॥	<b><u> </u></b>	हर्षित, ग्लानि-रोग रहित, निरुपक्रप्ट-क्षुधा, तृषा, श्रम विगेरेथी रहित प्राणीनो जे एक उच्छ्वासनिःश्वास छे तेने प्राण [आनप्राण] कहेवाय छे. तथा स्तोक, ते सात उच्छ्वासनिःश्वास काल प्रमाणवाळो छे. संख्यात आनप्राणवाळा क्षणो छे. अने सात स्तोक प्रमाण कालवाळो लव कहेवाय छे. ए प्रमाणे जेम पूर्वना त्रण सूत्रमां जीव अने अजीव एवी रीते कहेवाय छे एम कह्युं, तेमज बधा य आगळना सूत्रो जाणवा सतोतेर लव प्रमाणवाळा ग्रुहूर्त्तो होय छे. कह्युं छे के	
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--

*****		
श्रीस्था-	* * भावार्थ उपर ग्रुजब छे.	*
नाङ्गस्त्र	तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाणि तेवत्तरिं च ऊसासा। एस मुहुत्तो भणिओ, सब्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥११६	* * २ स्थान-
सानुवाद	त्रण हजार, सातसो अने तोंतेर उच्छ्वासनिःश्वासनो एक मुहूर्त्त सर्वे अनंतज्ञानीओए कहेल छे. त्रीश मुहूर्त्त प्रमाण	🎇 काध्ययने
1 શ્પ્પ 1	👻 एक अहोरात्रि काल छे. पंदर अहोरात्रि प्रमाण एक पक्ष छे. वे पक्ष प्रमाण एक मास छे. वे मास प्रमाण एक वर्सतादि ऋतुओ	🌋 उद्देशः ४
}	💥 छे. त्रण ऋतुना प्रमाणवाळा अयनो छे. बे अयनना प्रमाणवाला वर्षो छे. पांच वर्ष प्रमाणवाला युगो छे. सो वर्ष वगेरे प्रतीत	🌋 जीवाजीव-
	🔆 छे. चोराशी लाख वर्ष प्रमाणवाला प्राांगो छे. प्राांगने चोराशी लाखवडे गुणवाथी एक पूर्व थाय छे. आ प्र्वेतुं मान	
	🏵 नीचे प्रमाणे छे	💲 ९५ सत्रम्
	🐐 पुव्वस्स उ परिमाणं, सयरिं खल्ज होंति कोडिलक्खाओ। छप्पन्नं च सहस्सा, बोद्धवा वासकोडीणं ॥११७	* वक्तव्यता * ९५ खत्रम् * * * * * * * * * *
	😴 🛛 ७०५६०००००००००० पूर्वनुं प्रमाण तो सिंतेर लाख क्रोड अने छष्पन हजार क्रोड वर्षनुं होय छे एम जाणवुं. पूर्वने	<b>X</b>
	🖉 चोराशी लाखगुणो करवाथी एक त्रुटितांग थाय छे एवी रीते पूर्व-पूर्वनी संख्याने चोराशी लाखवडे गुणवाथी उत्तर-उत्तर-	
	🦉 (आगळ)नी संख्या थाय छे. एम यावत् शीर्षप्रहेलिका पर्यंत जाणी लेवुं. ते शीर्षप्रहेलिकानुं एकसो ने चोराणुं अंकनुं स्थान	X
	💥 होय छे. अहिं करण (करवानी रीत) गाथा कहे छे	
	8. प्रजा करापा करापाला प्रसार गर्म अन्य परिवर्ण सिर्मा सिर्मा सिर्मा सिर्मा सिर्मा सिर्मा सुर्पा के उपसा सिर्मा स्वित् छे. चोराशी लाख वर्ष प्रमाणवाला पूर्वांगो छे. पूर्वांगने चोराशी लाखवडे गुणवाथी एक पूर्व थाय छे. आ पूर्वनुं नान नीचे प्रमाणे छे पुठवस्स उ परिमाणं, सयरिं खलु होंति कोडिलक्खाओ। छप्पन्नं च सहस्सा, बोद्धवा वासकोडीणं ॥१९७ ७०५६०००००००० पूर्वनुं प्रमाण तो सिंतेर लाख कोड अने छष्पन हजार कोड वर्षनुं होय छे एम जाणवुं. पूर्वने चेाराशी लाखगुणो करवाथी एक त्रुटितांग थाय छे एवी रीते पूर्व-पूर्वनी संख्याने चोराशी लाखवडे गुणवाथी उत्तर-उत्तर- (आगळ)नी संख्या थाय छे. एम यावत् शीर्षप्रहेलिका पर्यंत जाणी लेवुं. ते शीर्षप्रहेलिकानुं एकसो ने चोराणुं अंकनुं स्थान होय छे. आई करण (करवानी रीत) गाथा कहे छे- १ एक सो ने चोराणु अंक पर्यंत संख्या थाय छे ते उपर संख्यानो विषय सरसवना प्रमाणधी बतावेल छे, अंकनो विषय नधी.	Ж Ж    १५५    Ж Ж
		× :
13	* 1	R ₩ <1

www.kobatirth.org

इच्छियठाणणे गुणं, पणसुन्नं चउरसीतिगुणितं च। काऊणं तइवारे, पुठवंगाईण मुण संखं ॥११८॥ प्रथम पांच ग्रून्य (मींडां) लखवा, पछी इच्छित स्थान अहिं एक अंक ( एकडो ) लखवो. तेने एकवडे गुणवाथी ते ज संख्या थाय अर्थात् एक लाख थाय, तेने चोराशीवडे गुणवाथी चोराशी लाख थाय, ए पूर्वांगतुं प्रमाण थयुं; ज्यारे पूर्वतुं प्रमाण जाणवाने इच्छीए त्यारे पांच ग्रून्य अने इच्छित बीजो अंक (८४) लखवो अर्थात् चोराशी लाखने चोराशी लाखवडे गुणवा त्यारे पांच ग्रून्यने पांच ग्रून्य अने इच्छित बीजो अंक (८४) लखवो अर्थात् चोराशी लाखने चोराशी लाखवडे गुणवा त्यारे पांच ग्रून्यने पांच ग्रून्यवडे गुणवाथी वमणा शून्य ( दश ) थाय अने चोराशीना अंकने चोराशीना अंकवडे गुणवाथी ७०५६ थाय एटले सर्व मळीने ७०५६०००००००००० संख्या थाय. एवी रीते आगळ पण गुणाकार यावत् शीर्षप्रहेलिका थाय त्यां सुधी करवुं. शीर्षप्रहेलिका पर्यंत सांव्यवहारिक संख्यातकाल छे. तेनावडे प्रथम पृथिवी( रत्नप्रिमा )ना नारकोत्तुं, भवनपति अने व्यंतरोत्तुं तथा भरत, ऐरवत क्षेत्रने विपे सुप्रमदुष्पम समय- (त्रीजा आरा)ना पश्चिम-ऊतरता भागमां मनुष्य अने तियंचोना आयुष्यनुं मान कराय छे. परंतु शीर्षप्रहेलिकानी उपर पण संख्यातो काल छे ते अतिशय ज्ञानी सिवायना मनुष्योने व्यवहारनो विषय थतो नथी, एम जाणीने उपमाने विपे दाखल करेल (बतावेल) छे. ए ज कारणथी शीर्षप्रहेलिकाथी आगळ पल्योपम बगेरे(काळ)नो उपन्यास करेल छे. तेनां व्यवड उपमा छे जेओनो ते पल्योपमो असंख्यात कोडाकोडी वर्षप्रमाण आगळ कहेवामां आवशे एवा लक्षणवाळा छे. सागरयंड उपमा छे जेओने विषे ते सागरोपमो—दश्च कोटाकोटी पल्योपम प्रमाणवाळा छे. दश कोटाकोटी (कोडाकोडी) सागरोपम

श्रीस्था-

नाङ्गस्त्र

सानुवाद

11 १५६ 11

	*****	प्रमाणवाळी उत्सर्पिणी छे, एटला ज प्रमाणवाळी अवसर्पिणी छे. (१) कालना विशेष(भेद)नी माफक ग्रामादि वस्तुना विशेषो पण (क्षेत्रभेदो) जीव अने अजीव ज छे ए हेतुथी बे पदद्वारा सडतालीश स्रत्रोवडे कहे छे-'गामे' त्यादि० अहिआं	×	२ स्थान- काध्ययने
		प्रत्येकमां 'जीवाई या'-इत्यादि आलापक कहेवो. गामादिनुं जीव अने अजीवपणुं तो प्रतीत जू छे. कर (टेक्ष) वगेरेथी	X	उद्देशः ४
N	×	गम्य अर्थात् ज्यां कर वगेरे लेवाते। होय ते गाम अने जेओमां कर न लेवातो होय ते न-कर अर्थात् नगर (१), निगम-ज्यां	× 2	जीवाजीव-
	¥	वेपारीओनो निवास होय ते निगम अने जेमां राजाओनो अभिषेक थाय छे ते राजधानी (२), धूळना गढयुक्त जे स्थान होय	<b>्रि</b> व	क्तव्यता
	XX	ते खेट अने जे कुनगर होय ते कर्बट (३), जेनी चारे दिशाए अर्ध्धयोजनथी आगळ गामो रहेल होय ते मंडळ अने जे स्थानमां	× «	९५ स्त्रम्
	<b>XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX</b>	जलनो अने स्थलनो एम बे प्रकारनो मार्ग होय ते द्रोणग्रुख (४), जे स्थानमां जलमार्ग अथवा स्थलमार्ग ए बन्नेमांथी एक मार्गवडे जचुं-आवचुं थाय ते पत्तन (पाटण) अने लोह वगेरेनी उत्पत्तिवाळी जमीन ते आकर अर्थात खाण (५), जे तीर्थ- स्थान होय ते आश्रम अने सम (सरखी) भूमिमां खेती करीने जे दुर्गभूमिस्वरूप अर्थात् कठण भूमिमां खेइतो धान्योने रक्षाने माटे राखे ते संवाह (६), ज्यां सार्थ अथवा सेना ऊतरे ते सन्निवेग्न अने नदीना कांठा पासे वसवाचुं स्थान-गायोने रहेवाउं स्थान ते घोष (७), विविध वृक्षनी लतावडे ग्रोभायमान अने कदली (केळा) वगेरेथी ढांकेल गृहने विषे स्त्री सहित पुरुपोना जे रमवाना स्थानभूत ते आराम, तथा पत्र, पुष्प, फल अने छाया युक्त वृक्षोवडे ग्रोभायमान, विविध प्रकारना वेषवाळा, उत्कुष्ट मानवाळा एवा घणा जनाने भोजन करवाने माटे जे स्थानने विषे जचुं थाय ते उद्यान (८), ज्यां एक जातना वृक्षो होय ते वन अने अनेक जातना उत्तम वृक्षो होय ते वनखंड (९), चोखूणी ते वापी (वाव) अने जे वृत्त पटले गोळ होय अथवा जेमां	©	<b>શ્પદ્દ II</b>

X ж

ж Ж

\*\*\*\*

ж

\*\*\*

धणा कमल होय ते पुष्करिणी (१०), सरोवर एटले जलतुं स्थान अने सरपंक्ति ते सरोवरनी पंक्ति-वे चार श्रेणी (११), अगड-कृप (कुओ), तळाव, द्रह तथा नदी प्रसिद्ध छे (१२-१३), पृथ्वी-रत्नप्रभा बगेरे अने उदधि ते रत्नप्रभादि पृथ्वीनी नीचे रहेल घनोदधि (१४), वातस्कंध-धनवायु, तनवायु अथवा बीजा पण वायु अने अवकाशांतर-वातस्कंधोनी नीचे रहेल आकाश-ए उपरोक्त वस्तुओनुं जीवपणुं तो सूक्ष्म पृथ्वीकायिक वगेरे जीवोवडे व्याप्त होवाथी छे. (१५), वलय-पृथ्वीना वेष्टन(बंध)रूप घनोदधि. घनवात, तत्तवात लक्षण, अने विग्रह-लोकनाडीना वक्र स्थान, एओतुं जीवपणुं तो पूर्वनी माफक समजवुं. (१६), द्वीप अने समुद्र प्रतीत छे (१७), वेला-समुद्रना पाणीनी वृद्धि अने वेदिका प्रतीत छे (१८), द्वारो-विजय वगेरे दरवाजाओ अने तोरणो-ते दरवाजाओमां जे रहेला होय ते (१९), नैरयिको-किलष्ट (दुःखित) जीवावे शेषो, तेओनुं अजीवपणुं कर्म पुद्गला-दिनी अपेक्षाए जाणवुं अने ते नैरयिकोनी उत्पत्तिनी भूमिओ ते नरकावासी, तेतुं जीवपणुं पृथ्वीकायिकादिनी अपेक्षाए जाणवुं. एवी रीते चोवीश दंडको कहेवा (२०-४३), आ ज कारणथी (सत्रकार) कहे छे-'याव' दित्यादि० कल्प, देवलोक अने \*\*\*\* ते देवलोकना अंश ते कल्पविमानावास (४४), वर्ष-भरतादिक्षेत्र अने वर्षधर पर्वत ते हिमवान वगेरे (४५), क्रुट-हिमवतक्रुट वगेरे अने कूटागार-ते कूटोमां ज रहेल देवना भवने। (४६), विजय-चक्रवर्त्ताने जीतवा योग्य कच्छादि क्षेत्रना खंडस्वरूप अने राज-धानी-क्षेमादि नगरी ( ज्यां राजा रहे ते ) 'जीवे ' त्यादि० अहिंया कहेलुं सर्वत्र जोडवुं (४७), [२]. जे पुद्गलधर्मी छे ते पण तेमज छे. ए हेतुथी कहे छे-'छाये'त्यादि० आ पांच सत्रो कहेल अर्थवाळा छे. हवे विशेष कहे छे-छाया वुक्षादिनी जाणवी, आतप-सूर्यनो जाणवो. (१), 'दोसिणाति व' त्ति० ज्योत्स्ना एटले प्रकाश अने अंधकार एटले तम (२), अवमान -क्षेत्र वगेरेनुं ২৩

\*\*\*\* प्रमाण ते हस्त (हाथ), गज विगेरे, अने उन्मान-त्राजवाना तोल, कर्ष, मासो वगेरे ( जोख ) (३), अतियानगृह-नगरादिना श्रीस्था-२ स्थान-प्रवेशमां जे गृह होय ते. अने उद्यानगृह-बगीचामां घर होय ते (४), अवलिंब अने सणिप्रपात रूढिथी (देश विशेषथी)जाणी काध्ययने नाङ्गसूत्र लेवा. आ बधा य ग्नं छे? ते बतावे छे-जीवा इति च० जीवोवडे व्याप्त होवाथी अथवा ते जीवोना आश्रितपणाथी अने उद्देशः ४ सानुवाद अजीवा इति च पुद्गलादि अजीवरूप होवाथी अथवा ते(अजीव)ना आश्रितपणाथी, प्रोच्यते-जिनेश्वरोए प्ररूपेल छे. 11 840 11 जीवस्य अहिंयां 'जीवाइ येत्यादि' सत्रपंचकमां पण प्रत्येकने कहेवुं. हवे समयादि वस्तु, जीव अने अजीवरूप ज कया हेतुशी कहेवाय बद्धमुक्त-छे ? ते प्रश्नना जवाबमां जणावे छे के-जीव अने अजीवथी जुदी राशिनो अभाव छे. ए ज कारणणी कहे छे-'दो रासी' भेदौ ж Ж त्यादि० सगम छे. (स्व० ९५) जीवराशि तो बे भेदे छे (१) बद्ध-कर्मथी बंधायेल अने (२) मुक्त-कर्मथी छटेल. तेमां ९६ सूत्रम बंधाएल जीवोना बंधना निरूपणने माटे कहे छे----दुविहे बंधे पन्नत्ते तं०--पेजबंधे चेव दोसबंधे चेव, जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं \*\*\*\* बंधंति, तं०-रागेण चेव दोसेण चेव, जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावं कम्मं उदीरेंति, तं०-अब्भोवगामिताते चेव वेतणाते उवक्कमिताते चेव वेयणाते, एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति-अब्भोवगमिताते चेव वेयणाते उवकामिताते चेव वेयणाते । सू० ९६ मूलार्थः-बे प्रकारे बंध कहेल छे. ते आ प्रमाणे-प्रेम( राग )बंध अने द्वेषबंध. जीवोने बे स्थानकद्वारा पापकर्मनो \*\*\*\* 11 940 11

	बंध थाय छे, ते आ-रागथी अने द्वेषथी. जीवोने वे स्थानकद्वारा पापकर्मनी उदीरणा थाय छे, ते आ-अभ्युपगमिकी-स्वयं
	शिरोलोचनादिवडे स्वीकारेल वेदना, अने औपक्रमिकी-ताव, अतिसारादिवडे उदीरणा थयेली वेदना. एवी रीते वे प्रकारे
	वेदे अर्थात् उदयमां आवेछं कर्म <sub>्</sub> भोगवे, वे प्रकारे निर्ज्जरे-क्षय करे, ते आ प्रमाणे-अभ्युपगमिकी वेदनावडे निर्ज्जरे
3	अने औपक्रमिकी वेदनावडे निर्ज्जेर ( सू० ९६ )
	टीकार्थः–प्रेम–राग, माया अने लोभरूप कषायलक्षण, अने द्वेष तो क्रोध अने मानरूप कषायलक्षण छे. जे माटे
2	कहे छे के−माया लोभकषाय−श्चेत्येतद् रागसंज्ञितं द्वन्द्रम् । कोधो मानश्च पुनर्द्वेष इति समासनिर्दिष्टः ॥ १ ॥
1	प्रेम−प्रेमलक्षण चित्तनो विकार उत्पन्न करनार मोहनीय कर्मना पुद्गलनी राशिनुं बंधन छे. जीवना प्रदेशोने विषे
1	योगप्रत्यय( निमित्त )थी प्रकृतिरूपपणे अने प्रदेशरूपपणे संबंध थाय छे. तथा कषायना प्रत्ययथी स्थिति अने
	अनुभाग(रस)रूप विशेषनुं प्राप्त थवुं ते प्रेमबंध. एवी रीते द्वेषमोहनीय कर्मनो बंध ते द्वेषबंध छे. कह्युं छे के-
	अडुगागर(रा) विग्रिति के प्राप्त पुरुष अगयमः ्या राष द्वागार्रगाय मनगा पर्य ते द्वपर्य छ. केढु छ क− ''जोगा पयडिपदेसं, ठितिअणुभागं कसायओ कुणइ ''त्ति० प्रकृतिबंध अने प्रदेशबंध योगथी अने स्थितिबंध
	ડાાંગા પંચાહપંચ, ાઠાતાબાળુ માંગ વાસાયબા જીંગફ ાત્તાં પ્રછાતથય અને પ્રદેશથય યોગથી અને સ્થિતિવધ जेल अन्यर्थनांग नेपाली तो ने के के कि नामनन नननां को कि नामने कि कि कि कि कि कि कि कि कि
_	तथा अनुभागवंध कषायथी करे छे. प्रेम अने द्वेष लक्षणरूप उदयमां आवेल कर्मोवडे जीवोने अशुभ कर्मनो वंध थाय छे,
	१. उदयमां नहि प्राप्त थयेल कर्मने आकर्षीने उदयमां लाववा ते उदीरणा कहेवाय, ते जीवनावीर्यवडे थाय छे अने उदय स्वयं
	अबाधाकाल पूर्ण थये आवे छे.

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १५८ ॥	माटे कहे छे-'जीवाण' मित्त्यादि० अथवा पूर्व छत्रनी बीजी रीते व्याख्या करीने आनो संबंधांतर कराय छे. सामान्यथी बंध बे प्रकारे छे, प्रेमथी अने द्वेपथी. ते ते बंघ तो अंनिवृत्ति अने छक्षमसंपराय पर्यंत गुणठाणावाळा जीवोने आश्रयीने जाणवो. अने जे उपशांतमोह, क्षीणमोह अने सयोगी गुगठाणावाळाने बंघ छे ते फक्त योगप्रत्ययवाळो ज छे. तेनी बंघपणाए विवक्षा करी नथी, केमके बंधने पण शेष कर्मबंधना विठञ्जग(जुरी रीते) पणाथी अबंघ कल्प (समान) छे. जे कर्मनो (सातावेद- नीयनो) आ बंध छे ते अल्पस्थितिक वगेरे विशेषण युक्त छे. कह्युं छे के अप्पं खायर मउयं, खटुं च रुक्सलं च सुक्तिरुं चेव। मंदं महठ्वयं तिय, सायाबहुठं च तं कम्मं॥१ १९॥ ते योगप्रत्ययिक कर्म अल्प, बादर, कोमळ, घणुं, ऋक्ष, ग्रुञ्न, मंद, महाव्ययवाळं अर्थात् घणी निज्जरावाळं अने बहु सातावाळं होय छे. स्थितिवडे अल्प (बे समयनी) स्थितिवाळुं, परिणामथी वादर, विपाकवडे कोमल, प्रदेशोवडे घणुं, वाऌक- (रेती)नी माफक लेपश्री मंद, सर्वथा नाझ थवाश्री महाव्ययवाळुं छे. ए जबतावता थका कहे छे-'जीवा ण'मित्यादि० जीवो सत्तो ('णं' वाक्यालंकारमां छे) बे स्थानथी-कारणश्री पाप-अछाभ भवना निवंधनपणाथी अछाभ छे, पण निरजुवंध नथी, कारण के बे समयनी स्थितिवाळुं कर्म अत्यंत छभ छे, तेने। मात्र योग निमित्त छे, बांघे छे एटले राग अने देषरूप कशय- बंड ज स्प्रष्टादि (आत्मानी साये ए वर्यात ग्रुभ छे, तेता मात्र योग निमित्त छे, बांति, कशय अने योग ए चार वंधना १.नवमुं अनिवृत्ति अने दशमुं सूक्षसंपराय गुणठाणु छे. तदुपरांत बीतरागगुणठाणा छे.	<ul> <li>काध्ययने</li> <li>उद्ग्राः ३</li> <li>जीवस्य</li> <li>बद्धमुक्त</li> <li>भेदौ</li> <li>९६ सत्रम्</li> <li>४४</li> <l< th=""></l<></ul>
	¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ *	× × ॥ १५८ ॥ ×
	Fax Devices and Devices and Line Only	

<b>;</b> ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ; ;	हेतुओ छे तो अहिं फक्त कषायो ज केम कर्मवंधनां कारण कह्या ? समाधान-कपायोर्चु पापकर्मना वंधमां प्रधानपर्णु जणाववा माटे कह्युं छे. स्थिति अने अनुभागना उत्क्रष्ट कारणपणाथी अथवा अत्यंत अनर्थना करनार होवाथी तेओनुं प्रधानपणुं-मुख्यपणुं छे. कह्युं छे के	***
*****	को दुक्स्वं पावेज्जा, कस्स व सोक्स्वेहिं विम्हुओ होज्जा शको वा न ऌहेज्ज मोक्स्वं ? रागद्दोसा जइ न होज्जा १२० जो रागढेष न होत तो कोण दुःख पामत ? अथवा कोने सुखमां विस्मय थात ? अथवा मोक्षने कोण प्राप्त न करत ? [अर्थात् बधा प्राप्त करत, पण राग ढेष ज अटकावनार छे] अथवा बंधना हेतुओनो देशग्राहक आ सत्र छे, कारण के दिस्थानक- ने। अनुरोध होवाथी दोष नथी. कहेल वे स्थानवडे बांधेल पापकर्मनी जेम उदीरणा, वेदना अने निर्ज्जरा प्राणीओ करे छे तेम त्रण सत्रवडे कहे छे-' जीवे 'त्यादि० विशेष ए के-अवसरने प्राप्त न थया छतां उदयमां ज लावे छे ते उदीरणा कहेवाय छे. अभ्युषगमेन-अंगीकार करवावडे थयेली अथवा अंगीकार करवामां थयेली ते अभ्युपगमिकी, ते मस्तकनो लोच करवावडे अने तप-आचरणादिवडे वेदना-पीडा जाणवी अने बीजी उपकमबडे-कर्मना उदीरण कारणवडे थयेली अथवा ते कर्मना उदीरणमां थयेली औपक्रमिकी, ते ज्वर अने अतिसारादि व्याधि उत्पन्न थवावडे वेदना जाणवी. एव'मिति० कहेल वे प्रकारथी ज वेदे छे-उदीरित थया छतां तेना विपाकने मोगवे छे 'निर्जरयन्ति' प्रदेशोधी खपावे छे. ( सू० ९६ ) कर्मनी निर्जरामा तो देशथी अथवा सर्वथी भवांतरमां के मोक्षमां जतां शरीरथी नीकठत्रं थाय छे ए हेतुथी स्वतंचकवडे ते विषय वर्णवे छे.	``````````````````````````````````````

		***
श्रीस्था-	दोहिं ठाणेहिं आता सरीरं फुसित्ताणं णिजाति, तं०-देसेणवि आता सरीरं	* * * * २स्थानका- * जागने
नाङ्गस्त्रत्र	फ़ुसित्ताणं णिज्जाति सब्वेणवि आया सरीरगं फुसित्ताणं णिज्जाति, एवं	💥 व्ययग
सानुवाद	अत्रित्ताणं एवं फुडित्ता एवं संबद्दतित्ता एवं निवद्दतित्ता । सू० ९७	💥 उद्देशः ४
11 849 11	मूलार्थः-ब स्थानथी आत्मा शरीरने स्पर्शाने नीकळे छे, ते आ प्रमाणे-देशथी पण आत्मा शरीरने स्पर्शाने नीकळे छे	¥ जीवस्य ¥ देहा−
	🗱 ( इलिकागातीवडे उत्पत्तिस्थाने जतां ) अने सर्वथी पण आत्मा शरीरने स्पर्शीने नीकळे छे ( कंदुकगतिवडे उत्पत्तिस्थाने	* देहा-
	😴 जतां ). एवी रीते देशथी अथवा सर्वथी शरीरने फरकावीने ( कंपावीने ) एम ज देशथी अथवा सर्वथी शरीरने फोडीने, एवी	🌋 न्निर्गमनम्
	जतां ). एवी रीते देशथी अथवा सर्वथी शरीरने फरकावीने (कंपावीने ) एम ज देशथी अथवा सर्वथी शरीरने फोडीने, एवी से रीते शरीरने संकोचीने, एवी रीते शरीरने जीवप्रदेशोथी जुदुं करीने नीकळे छे. ( स॰ ९७ )	🎽 ९७ सूत्रम्
2	¥ं।रीकार्थः—'दोद्दी 'त्यादि० सगम छे. विशेष–बे प्रकारथी 'देसेणवि'(त्ते० देशथी पण–केटलाएक प्रदेश लक्षणवडे–	* चिर्गमनम् * ९७ सत्रम् ** ** ** **
	केटलाएक प्रदेशोनो इलिकागतिवर्ड उत्पत्तिस्थानमां जतां जीवे शरीरथी बहार काढेला होवाथी आत्मा-जीव शरीरने	
	🗱 स्पर्शीने नीकळे छे-मरणकालमां शरीरथी नीकळे छे. "'सव्वेणवि'त्ति० सर्वेण-सर्वात्मवडे अर्थात् जीवना सर्व प्रदेशोवडे	8
	🔆 कन्दुक(दडा) जेवी गातिवडे उत्पत्तिस्थाने जतां (जीव) घरीरथी बहार प्रदेशोने नूहिं काढेल होवाथी, अथवा देशेनापि-देशथी,	
	अपि शब्दवडे सर्वथी पण, आ अपेक्षा छे. आत्मा, शरीर प्रत्ये, आनो शो अर्थ छे ?-शरीरना देशने-पग वगेरेने स्पर्श करीने	×
	अवयवना अंतरवडे प्रदेशना संकोचथी नीकळे छे ते संसारी जीवो जाणवा. संवपणाथी पण तथा अपि शब्दवडे देशथी पण, आ	* 11 849 11
	केटलाएक प्रदेशोनो इलिकागतिवर्ड उत्पत्तिस्थानमां जतां जीवे शरीरथी बहार काढेला होवाथी आत्मा-जीव शरीरने स्पर्शाने नीकळे छे-मरणकालमां शरीरथी नीकळे छे. "सव्वेणवि'त्ति० सर्वेण-सर्वात्मवर्ड अर्थात् जीवना सर्व प्रदेशोवडे कन्दुक(दडा) जेवी गतिवडे उत्पत्तिस्थाने जतां (जीव)शरीरथी बहार प्रदेशोने नहिं काढेल होवाथी, अथवा देशेनापि-देशथी, अपि शब्दवडे सर्वथी पण, आ अपेक्षा छे. आत्मा, शरीर प्रत्ये, आनो शो अर्थ छे ?-शरीरना देशने-पग वगेरेने स्पर्श करीने अवयवना अंतरवडे प्रदेशना संकोचथी नीकळे छे ते संसारी जीवो जाणवा. संवपणाथी पण तथा अपि शब्दवडे देशथी पण, आ	<pre></pre>

\*\*\*\*\*

\*\*\*\*

(XXXX)

\*\*\*

\*\*\*\*

Ж

\*\*\*\*\* अपेक्षा छे. संपूर्ण शरीरने पण स्पर्श करीने नीकळे छे ते सिद्ध जाणवा. आगळ कहेवाशे के "पायणिज्जाणा णिरएस उच-वज्रंती"त्यादि० यावत " सव्वंगणिज्ञाणा सिद्धेसु"ति (पगमांथी नीकळनारा जीवो नरकमां उपजे छे) इत्यादि यावत सर्वांगमांथी नीकळनारा जीवो सिद्धमां उपजे छे. आत्मावडे शरीरनुं स्पर्शन करते छते स्फुरण (कंपन) थाय छे, आ कारणथी कहे छे-'एव'मित्यादि० ' एव 'मिति० ' दोहिं ठाणेही 'त्यादि० कथन सूचन करवा माटे छे. तेमां देशवडे पण केटलाएक आत्माप्रदेशवडे इलिका (इयळ) माफक गतिकालमां होय छे. 'सच्चेणावि'त्ति० सर्व आत्मप्रदेशोवडे पण दडानी जेम गतिकालमां शरीरने फरकावीने [कंपावीने ] नीकळे छे. अथवा देशतः शरीरना देशथी फोडीने पग वगेरेथी \*\*\*\*\* नीकळवाना समयमां छे, सर्वतः-संपूर्ण शरीरने फोडीने सर्वांगथी नीकळवाना समयमां होय छे. स्फ़ुरणथी तो सात्मकत्व (आत्मपणुं) स्फुट-प्रकट थाय छे. आ हेतुथी कहे छे 'एव' मित्यादि० 'एव' मिति० तेमज देदेान-आत्माना देजवडे ज्ञरी-रने 'फुडित्ताणं' ति० सचेतनपणाए स्फुरणलिगथी प्रगट करीने इलिकागतिमां छे. सर्वेण-सर्वात्मवडे प्रगट करीने गेंडक-(दडा) गतिमां छे. अथवा शररिना देशथी आत्मकपणाए प्रगट करीने पग वगेरेथी नीकळवाना समयमां छे अने सर्वतः-सर्वांगथी नीकळवाना प्रस्तावमां होय छे. अथवा फुडित्ता-फोडीने अर्थात् नाश करीने, तेमां देशथी-आंख वगेरेना विघात ( नाश )-वडे, अने सर्चतः समस्त नाशवडे, देवदीपादि जीवनी माफक जाणवुं. शरीरने सात्मकपणाए स्फ़ुट करतो थको कोईक (जीव) ते शरीरनुं संकोचन पण करे छे. आ कारणथी कहे छे-' एव 'मित्यादि॰ ' एव 'मिति तेमज ' संवद्यइत्ताणं '-त्ति० संवर्त्ध-शरीरने संकोचीने देशवडे इलिकागतिमां शरीरमां रहेल प्रदेशोवडे अने सर्वेण-सर्वात्मवडे दडानी जेम गतिमां

श्रीस्था- नाङ्गसूत्र सानुवाद ॥ १६० ॥ ***	सर्वात्मप्रदेशोनुं शरीरमां रहेल होवाथी नीकठे छे अथवा उपचारथी दारीरकं-शरीरी (जीव) प्रत्य दंडना योगर्था दंड पुरुषनी जेम जाणचुं. तेमां देशथी संकोच, मरनार संसारी जीवोने पग वगेरेथी जीवना प्रदेशोना संकोचथी छे अने सर्वथी तो मोक्षमां जनारने होय छे अथवा शरीरने देशथी संकोचीने हाथ वगेरेना संकोचवडे अने सर्वथी सर्व शरीरना संकोचनवडे पिपीलिका (कीडी) वगेरेनी जेम जाणचुं. आत्मानुं संवर्त्तन ( संकोच ) करता थकां तो शरीरने निवर्त्तन ( जुदुं ) करे छे, माटे कहे छे-एवं 'निवद्यित्ताणं'ति० तेमञ निवर्त्त्य-जीवना प्रदेशोथी शरीरने अलग करीने ए अर्थ छे. तेमां देशथी इलिकागतिमां अने सर्वथी गेन्दुकगतिमां करे छे अथवा देशथी शरीरने आत्माथी दृश्वर्थ करीने पग वगेरेथी नीकठनार अने सर्वथी सर्वांगमांथी नीकठनार, अथवा पांच प्रकारना शरीरना समुदायनी अपेक्षाए देशथी औदारिकादि शरीरने छोडीने अने तैजस कार्मण शरीरने तो प्रहण करीने ज, तथा सर्वथी वधा ( पांच ) शरीरना समुदायने छोडीने नीकळे छे अर्थात सिंढ थाय छे. ( स्र० ९७) अनंतर स्वत्रमां सर्वथी नीकळवुं कर्खु, ते तो परंपरावडे धर्मश्रवणना लाभ वगेरेमां थाय छे. ते मा थाय छे तेम दर्शावता थका कहे छे-	*****	२ स्थान- काध्ययने उदेशः ४ जीवस्य धर्मप्राप्तिः ९८ सूत्रम्
**** ****	दोहिं ठाणेहि आता केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणताते, तं०-खतेण चेव उवसमेण चेव, एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेजा तं०-खतेण चेव उवसमेण चेव । सू० ९८ मूलार्थः-बे स्थान(प्रकार )वडे आत्मा केवलीप्ररूपित धर्मने श्रवणपणाए प्राप्त करे अर्थात् धर्म सांभळवाना लाभने	****	। १६० ॥

पामे, ते आ प्रमाणे-ज्ञानावरण ने दर्शनमोहनीय कर्मना क्षयथी अने उपशमथी ( क्षयोपश्रमथी ), एवी रीते यावन् मनःपर्य- वज्ञानने उत्पच्च करे. ते आ-क्षयथी अने उपशमथी ( क्षयोपशमथी ) ( स० ९८ ) टीकार्थः-'दोही'त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के 'खएण चेव'त्ति० ज्ञानावरणयिना अने दर्शनमोहनीय कर्मना उदयमां प्राप्त थयेल( दलिक )ने क्षय-तिज्जेरा करवाथी अने उदयमां नहिं प्राप्त थयेलने उपशम करवाथी-विपाकनो अनुभव न करवाथी अर्थात् क्षयोपश्रमथी एम कहेलुं थाय छे. यावत् शब्दथी केवलं वोहिं वुज्झोज्जा मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगगारियं पच्चएज्जा केवलं चंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमिज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं पच्चएज्जा केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमिज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियनाणमुप्पांडेज्जा इत्यादि जाणवुं. केवल वोधिने प्राप्त करे, ग्रुंडित थईने गृहवासथी अनमारपणाने स्वीकारे ( प्रत्रजे ), केवल त्रज्ञचर्यवासमां वसे, केवल संयममां यत्न करे, केवल संवरवडे संवृत्त थाप, केवल मतिज्ञानने उत्पच करे एवी रीते यावत् मनःपर्यवज्ञानने उत्पच्च करे. केवलज्ञान तो कर्मना क्षयथी ज थाय छे माटे कर्खु नथी. अहिंत्यां जे के वोधि वगेरे सम्यक्त्व अने चारित्ररूप होवाथी मात्र क्षयथी अने उपश्रमथी ( पण ) थाय छे, तो पण ए ( सम्यक्त्व अने चारित्र ) क्षयोपश्रमथी पण थाय छे. अवण अने आभिनिवोधिकादि तो क्षयोपशमथी ज थाय छे. आ हेतुथी पर्वसाधारण क्षयोपशम बे (क्षायक अने उपशम ) पदवडे कहेल छे. ( स० ९८ ) बोधि, आभिनिवोधिक ( मति ) श्रुत अने अत्रधिज्ञान तो छासठ सागरोपम स्थिति सुधी उत्कर्भथी होय छे. सागरोपमो तो पल्योपमना आश्रयवाळा होय छे. आ कारणथी ते बेनी प्ररूपणा करे छे-
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद ॥ १६१ ॥	दुविहे अद्धोवमिए पन्नत्ते तं०-पलिओवमे चेव सागरोवमे चेव, से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमे जं जोयणविच्छिन्नं, पन्नं एगाहियप्परूढाणं होज निरंतरणिचितं, भरितं वालग्गकोडीणं ॥ १ ॥ वाससए वाससए, एक्केके अवहडंमि जो कालो । सो कालो बोद्धट्वो, उवमा एगस्स पछस्स ॥ २ ॥ एएसिं पछाणं, कोडाकोडी हवेज दसगुणिता । तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परीमाणं॥३॥सू०९९ मूलार्थः-बे प्रकारे अद्वोपमिक ( उपमावालो काळ ) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-पल्योपम अने सागरोपम. ते पल्योपम छं हे ? ते कहे छे-पल्योपम-जे योजन( चार गाउ )नो लांबो, पहोळो अने ऊंडो छओ-पल्य होय, तेने एक दिवसथी सात दिवसना ऊगेला कोटि ( असंख्य ) वालाग्रोवडे ठांसी ठांसीने भरवो. ते वालाग्रमांथी सो सो वर्षे एक एक वालाग्रने का ढवाथी जेटले काळे ते पल्य खाली थाय तेटला काळने एक पल्योपम काळ जाणवो. ए एक पल्योपमने दश कोडाकोडी- गुणा करवाथी एक सागरोपमना काळचुं प्रमाण थाय छे. ( स० ९९ ) टीकार्थः-उपमावडे थयेखं ते औपमिक, अद्धा-काळना विषयनी उपमावाखं ते अद्धौपमिक. उपमान सिवाय जे काळना	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
	<ul> <li>दिवसना ऊगेला कोटि ( असंख्य ) वालाग्रोवर्ड ठांसी ठांसीने भरवो. ते वालाग्रमांथी सो सो वर्षे एक एक वालाग्रने का दिवाधी जेटले काळे ते पल्य खाली थाय तेटला काळने एक पल्योपम काळ जाणवो. ए एक पल्योपमने दश कोडाकोडी- गुणा करवाथी एक सागरोपमना काळनुं प्रमाण थाय छे. ( सू० ९९ )</li> <li>टीकार्थः-उपमावडे थयेलुं ते औपमिक, अद्धा-काळना विषयनी उपमावालुं ते अद्धौपमिक. उपमान सिवाय जे काळना प्रमाणने अतिशय ज्ञान वगरना जीवोवडे ग्रहण न करी शकाय ते अद्धौपमिक जाणतुं. ते बे प्रकारे छे-पल्योपम अने सागरोपम. पल्यनी उपमा जेने विषे छे ते पल्योपम तथा सागरनी उपमा जेने विषे छे ते सागरोपम. सागरनी जेम मोटा</li> </ul>	** ** ** ** ** ** ** ** **
	For Private and Personal Use Only	

×

\*\*

\*\*\*\*

परिमाणवाळुं ए अर्थ समजवो. पल्योपम अने सागरोपमरूप औपमिक सामान्यथी (१) उद्धार, (२) अद्धा अने (३) क्षेत्रभेदर्थ त्रण प्रकारे छे. वळी एकएकना संव्यवहार अने सक्ष्म भेदथी वे प्रकार छे. तेमां संव्यवहारपल्योपम-एक योजनन लंबाई, पहोळाई अने ऊंचाईवाळा पल्यने मुंडन पछी एकथी सात अहोरात्र पर्यंतना ऊगेला वालाग्रोथी ( ठांसी ठांसी ) भरी- प्रतिसमयमां वालाग्रने काढते छते जेटला काळवडे ते पालो खाली थाय ते काळ संव्यवहारिकउद्धारपल्योपम कहेवाय छे. तेव दश कोडाकोडी व्यवहारिकपल्योपमनुं एक व्यवहारिकउद्धारसागरोपम कहेवाय छे. ते वालाग्रना ज दृष्टिगोचर अति सक्ष्म द्रव्यना आंसंख्यात भाग मात्र सक्ष्म पनक(निगोदिया जीव)नी अवगाहनाथी असंख्यात गुणरूप अवगाहनावाळा खंड करीने मरेल पल्य (पालो) समये समये एक एक वालाग्रना अपहार( काढवा )वडे जेटला काळे खाली थाय तेटला काठ सक्ष्मउद्धारपल्योपम थाय छे. तेवा दश कोडाकोडी सक्ष्मउद्धार पल्योपमवडे सक्ष्मउद्धारसागरोपम थाय छे. आ सक्ष्मउद्धा सागरोपमवडे द्वीप अने सम्रुद्रोनी परिसंख्या-गणत्री कराय छे. कधुं छे के- उद्धारसागराणं, अड्ढाइजाण जत्तिया समया । दुगुणादुगुणपवित्थर, दीवोद्हि रज्जु एवइया ॥ १२१ अढी उध्धारसागरोपमना जेटला समयो छे तेटला द्वीप अने समुद्रो छे. ते अनुक्रमे एक एकथी बमणा वमण	
१. उत्तरकुरुक्षेत्रना युगलीआना वालाग्रो लेवा एम जंबूद्वीपपन्नतिमां कहेल छे. ग्रन्थांतरमां सामान्य वालाग्र शब्द छे अने क्षेत्र समासमां वालाग्रना खंड करवा एम पण कहेलुं छे.	- XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

श्रीस्था- नाङ्गखत्र सानुवाद् ॥ १६२ ॥ *******	विस्तारवाळा छे. वळी ते सर्व द्वीप तथा समुद्रोनुं प्रमाण मलीने एक राज थाय छे. अध्धापल्योपम अने सागरोपममां पण सक्ष्म अने बादर एवा बे भेद छे. विशेष ए के-सो सो वर्षे पूर्वोक्त वालाग्रने काढवाथी वादरअध्धा अने ते वालाग्रना असंख्यात खंडने सो सो वर्षे काढवाथी सक्ष्मअध्धापल्योपम जने सागरोपम पूर्वोक्त रीते थाय छे. आ सक्ष्म अध्धापल्योपम अने सागरोपमवडे नारकादिनी स्थिति-आयुष्यनुं मान कराय छे. क्षेत्रपल्योपम अने सागरोपमना पण एवी रीते सक्ष्म अने बादर वे भेद छे. विशेष ए के-पूर्वोक्त रीते वालाग्रने भरीने तेने स्पर्शीने रहेला आकाश्चप्रदेशोने प्रतिसमये अपद्दार करतां जेटला काळे ते पल्य खाली थाय तेटला कालने व्यवहारिक (बादर) क्षेत्रपल्योपम कहेवाय छे अने ते वालाग्रना असंख्ल्यात खंडवडे ते पल्यने भरीने तेने स्पर्शीने रहेला अने अस्पृष्ट (नहि फरसेला) आकाश्चप्रदेशोने प्रतिसमये अपद्दार करतां जेटला काळे ते पल्य खाली थाय तेटला कालने व्यवहारिक (बादर) क्षेत्रपल्योपम कहेवाय छे अने ते वालाग्रना असंख्ल्यात खंडवडे ते पल्यने भरीने तेने स्पर्शीने रहेला अने अस्पृष्ट (नहि फरसेला) आकाश्चप्रदेशोने प्रति- समये अपद्दार करतां जेटला काळे ते पल्य खाली थाय तेटला कालने दक्ष्मक्षेत्रपल्योपम कहेवाय छे. तेम सागरोपम पण जाणी लेवुं. आ क्षेत्रपल्योपमादिनी प्ररूपणा मात्र विषयमां ज छे. आ क्षेत्रपल्योपम को सागरोपमनो दृष्टिवादमां स्पृष्ट अने अस्पुष्ट प्रदेशना विभागवडे द्रव्यना मानमां प्रयोजन छे एम संभळाय छे. त्रण प्रकारने बादर भेद प्ररूपणा मात्र छे. ते कारणर्था आ प्रकरणमां उध्धार अने क्षेत्र औपमिकचुं निरुग्योगपित्युं होवाथी अने अध्योपमिकचुं ज उपयोगीपिष्ठु होवाथी अध्धा एवुं विशेषण खत्रमां कहेलुं छे. आ हेतुथी ज अध्धापल्योपमना स्वरूपने कहेवानी इच्छावडे सत्रकार कहे छे 'से किं त'मित्यादि० हवे ते पल्योपम छां छे ? जे अध्धाती उपमावडे कहेल छे. आ प्रक्षमां अनुवादवडे आ उत्तर कहे छे 'पल्लिकोयमे'स्ति० पल्योपम आवी रीते थाय छे. आ हेष वाक्य छे ' जं जोयणा ' ( पेली गाथा )	*** *** काष्ययने उद्देगः ४ अध्धास्तरू- पम् ९९ सत्रम् *****
*** ******		X

	आचेल १ क्कुद्देसिय, २ सिजायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५।
	वय ६ जेह ७ पांडीकमणे ८, मासं ९ पज्जोसवणकप्पे १० ॥ २०३ ॥
9	आचेलक्य, २ औदेशिक, ३ शय्यातरपिंड, ४ राजपिंड, ५ कृतिकर्म, ६ महावत, ७ पुरुषज्येष्ठ, ८ प्रतिक्रमण, ९ मास-
	जा पर्यापन, र जादा का, र राज्याता पड़, ७ राजा ५, र छाता म, र महात्रता, उँछुला पठ, ७ जातमा भग, ९ मात ने १० पर्युषणाकल्प–आ दञ्च कल्प छे. निर्विंशमानो–जे परिहारविशुद्धि तपने आचरे छे ते परिहारको एवो अर्थ छे. तेओना
कल्प अप कल्पमां	म २७ पंतुपंजीकर्षेय-आदश कर्ष्य छे. मिनिशमामा-जे परिहारापती छे. तमा जापर छेत्त गरहारका देना जेप छे. तजाना स्थिति आ प्रमाणे होय छे-ग्रीष्म, शीत अने वर्षाकाळमां क्रमथी जघन्य चोथभक्त, छंट, अंटम, मध्यम छंट विगेरे
भएतम्। अने उस	त्थात जा प्रमाण हाव छैँ प्रतिम, रात जग पत्ति केला प्रतिपति जनव विवयत्ति छैट, जटत, तर्वत छेट तिवत् इष्ट अट्टम विगेरे तथा पारणे आंबेल ज होय छे. तथा सात पिंडैपणा पैकी पहेली बेनो अभिग्रह ज होय छे अने
जन उर्छ गाळली ।	ग्रंचमां पण एकवडे भक्त अने एकवडे पाणी लेवुं एवी रीते बेनो अभिग्रह होय छे. कह्युं छे के
110\4	
	बारस १ दस २ अट्ठ ३ दस १ ट्ठ २, छट्ठ ३ अट्ठेव १ छट्ठ २ चउरो य ३।
	उकोसमज्झिमजह-न्नगा उ वासासिसिरागेम्हे ॥ २०४ ॥
	पारणगे आयामं पंचसु गहो दोसुऽभिग्गहो भिक्खे ।
परि	रेहारविशुद्धिक मुनि वर्षाऋतुमां उत्कृष्टथी पांच उपवास, मध्यमथी चार उपवास अने जघन्यथी त्रण उपवास करे छे,
	-शियाळामां उत्क्रष्टथी चार, मध्यमथी त्रण अने जघन्यथी बे उपवास, तथा ग्रीष्म-उनाव्वामां उत्क्रष्टथी अहम,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra	www.kobatirth.org	Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
<b>X</b>		
× × ×		
श्रीस्था- 🐰		
	मध्यमथी छठ अने जघन्यथी एक उपवास करे छे. पारणे आंबेल करे छे. तथा सात् पिंडैपणामां पहेली वे छोडीने पांचतुं	💥 ३ स्थान-
नाङ्गसत्र 🗶	ग्रहण होय छे, तेमां पण एक भक्तमां अने एक पाणीमां ग्रहण करवानो विवक्षितादिने आभग्रह होय छे. 'निर्विष्टा'-सेवेल	🛞 काध्ययने
सानुवाद 🛞	विवक्षित चारित्रवाळा अर्थात् अनुपरिहारको. तेना कल्पनी स्थिति आ प्रमाणे जाणवी-दररोज आंबिल मात्र तप अने भिक्षामां	💥 उद्या ४
N 300 II X	पहेली बे पिंडैषणा छोडीने शेष पांचनुं ग्रहण, तेमां पण एक अमुक भक्तनी ने एक पाणीनी एम बे विवक्षित ग्रहण करे;	¥ ¥ कल्पस्थि-
× ×	रोष नहिं. कह्युं छे के-	× भूलपारय-
	कप्पट्टियावि पइदिण, करेंति एमेव चायामं ॥ २०५ ॥	😧 तिः २०६
	યાગ્યાદ્વપાય પદ્દાવળા, પ્રશંત હેમવે ચાયામાં ૧૦૩ ။	😧 सत्रम्
	कल्पमां रहेला पण एवी रीते ज प्रतिदिन आंबिल करे छे. तेओनो-परिहारविशुद्धिकोनो नव जणानो गण ( समुदाय )	
	होय छे. ते आ प्रकारे होय छे−	X
(XXXX)	सब्वे चरित्तवंतो उ, दंसणे परिनिट्टिया । नवपुट्विया जहन्नेणं, उक्कोसा दसपुट्विया ॥ २०६ ॥	** ३ स्थान- काध्ययने उदेशः ४ कल्पस्थि- तिः २०६ स्वत्रम्
	पंचविहे ववहारे, कप्पंमि दुविहंमि य। दसविहे य पच्छित्ते, सब्वे ते परिनिट्रिया ॥ २०७ ॥	
	ते सर्वे निर्विश्वमानको अने निर्विष्टकायिको-परिहारविशुद्धिको सम्यक्त्वमां परिनिष्ठित अर्थात् निश्वल समाकितवाळा	
<b>X</b>	होय छे, जघन्यथी नव पूर्ववाळा एटले नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तुना अध्ययनवाळा अने उत्क्रष्टथी देश पूर्वी होय छे तथा	
	पांच प्रकारना व्यवहारमां, अवस्थित अने अनवस्थित ए बे प्रकारना कल्पमां तेमज दग्च प्रकारना प्रायश्चित्तमां परिनिष्ठित-	- 200 1
■(_ )	For Private and Personal Lise Only	- / · -

××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	दक्षं होय छे. जिन एटले गच्छथी नीकटेल साधुविशेषो, तेओना कल्पनी स्थिति ते जिनकल्पस्थिति. ते आवी रीते-जवन्यथी पण नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तुनो अभ्यास छते, उत्क्रुप्टथी तो दश पूर्व कंईक न्युन होते छते, प्रथम संहनन छते, तथा दिव्यादि उपसर्ग अने रोगनी वेदनाने जे सही शके छे ते जिनकल्प स्वीकारे छे. ते एकाकी ज होय छे. दश गुणयुक्त स्थंडिलमां ज उच्चारादि अने जीर्ण वस्तादिने त्यजे छे, एने वसति स्व उपाधि रहित विशुद्ध होय छे, भिक्षाचर्या त्रीजी पोरसीमां होय छे, पाछली पांच पिंडैपणामां एक ज (अभिग्रह करेली) कल्पे छे, विहार मासकल्पवडे, ते ज वीर्थामां (श्वेरीमां) छट्टे दिने भिक्षाटन होय छे-आ प्रमाणे आ मर्यादा 'सुयसंघयणे' त्यादिकाद्द० गाथाना समूहथी कल्प(भाष्य)मां कहेल छे त्यांर्था जाणवी. कर्खु छे के- गच्छमिम य निम्माया,धीरा जाहे य गहियपरमत्था। अग्गहि जोग अभिग्गहि,उवेंति जिणकपियचरित्तं॥ बच्छमां निर्माता-क्रियाशिक्षादिकमां निपुण, बुद्धिमान् अथवा परिषहादिकमां निश्चल तथा ग्रहण करेल परमार्थवाला अने अग्राह्या एटले वे पिंडेपणा नहिं ग्रहण करवा लायक अने शेष पांच पिंडेपणा संबंधी बेना योगमां बेनी मध्ये एकनो ज योग १. परिहारविशुद्धिकोनो नव व्यक्तिने गण होय छे. तेमां चार तर करनारा, चार वेयावृत्य करनारा अने एक वाचनाचार्य होय छे. तेवी रीते छ मास पर्यन्त तथ कर्या बाद जे चार जणा वेयावृत्य करनारा होय छे ते प करे अने तप करनारा वेयावच्य करे एम
××××××××××××	्पर जत्राखा २८७ प सिंध पर परि परि परि परि जय परि से परि तमा समार दिया समार परि वियावृत्य करनारा अने एक वाचनाचार्व होय १. परिहारविशुद्धिकोनो नव व्यक्तिनो गण होय छे. तैमां चार तप करनारा, चार वैयावृत्य करनारा अने एक वाचनाचार्व होय छे. तेवी रीते छ मास पर्यन्त तप कर्या बाद जे चार जणा वैयावृत्य करनारा होय छे ते तप करे अने तप करनारा वैयावच करे एम छ मास कर्या पछो वाचनाचार्य तप करे अने रोष आठ वैयावृत्य करे. आवी रीते अढार मास सुधी आ तप चाले छे.

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद १ २०८॥ ********	एटले व्यापार ज्यारे होय छे त्यारे जिनकल्पिक चारित्रने स्वीकारे छे. धिइवालिया तवसूरा, निंती गच्छाउ ते पुरिससीहा । बलवीरियसंघयणा, उवसग्गसहा अभीरुया ॥ धिर्यवलवाळा अने तपमां शूरा-छमास पर्यंत तप करनारा ते पुरुषसिंहो गच्छमांथी नीकळे छे, वळी बल, वीर्य अने संघ- यण(मजबूत)वाळा, उपसर्ग सहन करवावाळा तथा भय रहित होय छे. स्थविरो-आचार्यादि गच्छमां रहेला, तेत्रोनी कल्प- स्थिति ते स्थविरकल्पस्थिति. ते आ प्रमाणे- पठवर्ज्जौ सिक्स्वोबर्य-मत्थॅगहणं च अनिर्धयो वासो । निर्ष्फत्ती च विद्दारो , सार्मायारी ंठिई चेवा।२१०॥ पहेला प्रत्रज्या कहेवी, त्यारपछी शिक्षापद, पछी व्रतो, पछी छत्रना अर्थनुं प्रहण, पछी अनियतवास-नाना प्रकारना देशनुं वर्यां न्यारपछी शिक्षापद, पछी व्रतो, पछी छत्रना अर्थनुं प्रहण, पछी अनियतवास-नाना प्रकारना देशनुं वतावन्तुं, त्यारपछी शिक्षापद, पछी व्रतो, पछी छत्रकल्प प्रतिपन्ननी सामाचारी अने बीजाने तेमां ज स्थिति. (आ चहत्कल्पमां द्वार गाथा छे) अहिं सामायिक छते छेदोपस्थापनीय होय छे तेमां होते छते परिहारविग्चढिक मेदरूप निर्विश्वमानक, त्यारपछी निर्विष्टकायिक, त्यारपछी जिनकल्प अथवा स्थविरकल्प प्रतिपन्ननी सामाचारी अने बीजाने तेमां हथिति (आ चहत्कल्पमां द्वार गाथा छे) आहिं सामायिक छते छेदोपस्थापनीय होय छे नेमां होते छते परिहारविग्चढिक मेदरूप निर्विश्वमानक, त्यारपछी निर्विष्टकायिक, त्यारपछी जिनकल्प अथवा स्थविरकल्प होय छे माटे सामायिककल्पस्थिति विगेरे चे छत्रन्ज क्रमबडे स्थापन करे छे (२०६). कहेल कल्पनी स्थितिन्तुं उर्छधन करनारा नारकादि शरीरवाळा थाय छे, माटे नारकादिना शरीरनुं निरूपण करवा माटे कहे छे. नेरइयाणं ततो सरीरगा पं० तं०-वेउठिवते तेयए कम्ममए, असुरकुमाराणं ततो सरीरगा पं०	*****	३ स्थान- काध्ययने उद्देशः ४ कल्पस्थि- तिः २०६ स्वत्रम् स्वत्रम्
		<b>₹</b> ¥ ¥ ¥ ¥	11 4ºC (§

<pre>KXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX</pre>	तं०-एवं चेव, एवं सब्वेसिं देवाणं, पुढविकाइयाणं ततो सरीरगा पं० तं०-ओरालिते तेयए कम्मते, एवं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं ॥ सू० २०७, गुरुं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-आयारिय- पडिणीते उवज्झायपडिणीते थेरपडिणीते १, गतिं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओ लोगपडिणीए २, समूहं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओ लोगपडिणीए २, समूहं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-इहलोगपडिणीए परे संघपडिणीते ३, अगुकंपं पडुच्च ततो पडिणीया पं० तं०-तवस्सिपडिणीए गिलाणपडि- णीए संघपडिणीते ३, अगुकंपं पडुच्च ततो पडिणीया पं० तं०-तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए ४, भावं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-णाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए ५, सुयं पडुच्च ततो पडिणीता पं० तं०-सुत्तपडिणीते अत्थपडिणीते तदुभयपडिणीए ६ । सू० २०८ मूलार्थः-नैरयिकोने त्रण शरीर कहेला छे, ते आ-वैक्रिय, तैजस अने कार्मण. असुरकुमारोने त्रण शरीर कहेला छे, ते आ- वैक्रिय, तेजस अने कार्मण. एवी रीते सर्वे देवोने त्रण शरीर होय छे. प्रथ्वीकायिकोने त्रण शरीर कहेला छे, ते आ- वैक्रिय, तेजस अने कार्मण. एवी रीते सर्वे देवोने त्रण शरीर होय छे. प्रथ्वीकायिकोने त्रण शरीर कहेला छे, ते आ- त्रेण प्रत्यनीक (प्रतिक्रल) कहेल छे, ते आ-आचार्यनो प्रत्यनीक (अवर्णवाद बोलनार), उपाध्यायनो प्रत्यनीक अने स्थविरनो प्रत्त्यनीक १, गतिने आप्रयीन त्रण प्रत्यनीक कहेल्ड हे, ते आ-आलोकप्रत्यनीक रंजारिज तापादिवडे शरीरने कष्ट आपतार, पर्लोक-	$\begin{array}{c} \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\$
****	प्रत्यनीक १, गतिने आश्रयीने त्रण प्रत्यनीक कहेल छे, ते आ—आलोकप्रत्यनीक-पंचाग्नि तापादिवडे श्ररीरने कष्ट आपनार, परलोक-	~×××××

३ स्थान-काध्यय**ने** उदेशः ४ प्रत्यनीकाः 2010-२०८ म्रत्रे

11 209 11

Acharya Shri Kailass
×××

<b></b>	जाति, इल विगरेनो दोष काढीने अवर्णवाद बोले, सेवामां वर्ततो नथी, अनुचित करे ले, लिद्र जुए ले, बीजानी समक्ष गुरुना दोषने कहे छे तथा गुरुथी प्रतिकूल रहे ले. अहवावि वए एवं, उवएसं परस्स देंति एवं तु । दस्तविहवेयावचे, कायटव सयं न कुटवंति ॥ २१२॥ अथवा एवी रीते पण बोले छे-बीजाने उपदेश आ प्रमाणे आपे छे के-दश प्रकारतुं वैयावृत्त्य करतुं परंतु पोते करता नथी. गति-मनुष्यपणा संबंधी विगेरे, तेमां आ लोकनो-प्रत्यक्ष मतुष्यत्व लक्षणपर्यायनो प्रत्यनीक एटले इंद्रियना अर्थने प्रतिकूलना करनार होवाथी पंचाधि तपस्वीनी माफक आलोकप्रत्यनीक, परलोक-जन्मांतर प्रत्ये प्रत्यनीक एटले इंद्रियना अर्थने प्रतिकूलना करनार होवाथी पंचाधि तपस्वीनी माफक आलोकप्रत्यनीक, परलोक-जन्मांतर प्रत्ये प्रत्यनीक एटले इंद्रियना अर्थने प्रतिकूलना करनार होवाथी पंचाधि तपस्वीनी माफक आलोकप्रत्यनीक, परलोक-जन्मांतर प्रत्ये प्रत्यनीक एटले इंद्रियना अर्थने प्रतिकूलना करनार होवाथी पंचाधि तपस्वीनी माफक आलोकप्रत्यनीक, परलोक-जन्मांतर प्रत्ये प्रत्यनीक एटले इंद्रियना अर्थने तत्पर [ विषयसुखलंपट ], बंने प्रकारना लोकनो प्रत्यनीक-चोरी विगेरेवर्ड इंद्रियना अर्थ (भोग) साधवामां तत्पर. अथवा बीजी रीते जणावे छे के-आ लेकमां उपकारी पुरुषोना भोगसाधनादिने उपद्रव करनार ते आलोकप्रत्यनीक, एवी रीते ज्ञानादिने उपद्रव करनार ते परलोकप्रत्यनीक अने बक्षेने उपद्रव करनार ते उभयलोकप्रत्यनीक. अथवा आ लोक ते मतुष्य लोक, परलोक नारकादि अने उभयलोक एटले बन्ने. प्रत्यनीकरा तो तेनी विपरीत प्ररूपणामां छे. कुल-चांद्रादिक, ते कुलोनो समूह ते मण- कोटिकादि, ते गणोना समूह ते संघ. प्रत्यनीकराणु तो एओना अवर्णवाद कहेवावडे जाणवुं. कुलादिनुं लक्षण आ प्रमाले- एत्थ कुल विन्नेयं, एगायरियस्स संतई जा उ । तििण्ह कुलाण मिहो, पुण सावेक्स्वाणं गणो होड़ ॥२९३॥ एक आचार्यर्नी संतति ( शिष्यादि परंपरा ) ते कुल, जेम बज्रसेन आचार्यनी संतति ते चंद्रकुल. तथा अहिं परस्पर
	बीजी रीते जणावे छे के-आ लोकमां उपकारी पुरुषोना भोगसाधनादिने उपद्रव करनार ते आलोकप्रत्यनीक, एवी रीते ज्ञानादिने उपद्रव करनार ते परलोकप्रत्यनीक अने बन्नेने उपद्रव करनार ते उभयलोकप्रत्यनीक. अथवा आ लोक ते मनुष्य लोक, परलोक नारकादि अने उभयलोक एटले बन्ने. प्रत्यनीकता तो तेनी विपरीत प्ररूपणामां छे. कुल-चांद्रादिक, ते कुलानो समूह ते गण- कोटिकादि, ते गणोना समूह ते संघ. प्रत्यनीकपणुं तो एओना अवर्णवाद कहेवावडे जाणवुं. कुलादिनुं लक्षण आ प्रमाणे एत्थ कुलं विन्नेयं, एगायरियस्स संतई जा उ। तिण्ह कुलाण मिहो, पुण सावेक्खाणं गणो होइ॥२१३॥ एक आचार्यनी संतति ( शिष्यादि परंपरा ) ते कुल, जेम वज्रसेन आचार्यनी संतति ते चंद्रकुल. तथा अहि परस्पर

www.kobatirth.org

		A charya chin ranacougaroan c
श्रीस्था- नाङ्गखत्र सानुवाद् ।। ३१० ।।	सापेक्ष त्रण कुलने गणं होय छे. सटवोऽवि नाणदंसण-चरणगुणविभूसियाण समणाणं । समुदायो पुण संघो,गुणसमुदाओ ति का उ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रगुणवडे विभूषित वथा य साधुओनो समुदाय ते संघ कहेवाय छे, केम के गुणोनो समुद संघ छे एम करीने अर्थात गुण वगर संघ न कहेवाय. ''आणाजुत्तो संघो'' इतिवचनात ''अनुकम्पाय'' सहायने आ तपस्थी-अपक, ग्लान-रोगादिवडे असमर्थ, येक्ष-नवीन दीक्षित, आ वथा य मदद करवा योग्य होय छे. तेओने मदद न क तथा बीजावडे न कराववाथी प्रत्यनीकता ( यत्रुता ) छे. भाव एटले पर्याय, ते जीव अने अजीव संवर्ध्यी, तेमां जीवनो प्र (रुडो) अने अप्रश्नस्त (माठो) भाव छे. त्यां प्रशस्त क्षायिकादि भाव अने अप्रशस्त भावविवक्षावडे औदयिक भाव छे. वठी क कादि भाव ज्ञानादिरूप छे, तेथी भाव-ज्ञानादिने आश्रयीने तेओनी विपरीत प्ररूपणा करवाथी अथवा दोष आपवाधी प्रत्य भाय छे. कक्षुं छे के पाययसुत्तनिबद्धं, को वा जाणइ पणीय केणेयं ? किं वा चरणेणं त्, दाणेण विणा उ किं हवड़ ॥२ प्राकृत भाषामां गुंथेछं एकादशांगीरूप सिद्धांत कोण जाणे छे के ए कोणे रचेछं छे, केम के सकलाक्षरसंयोगना गणधरो, संस्कृत भाषाने छोडीने प्राकृतभाषामां केवी रीते सव गूंथे १एवी रीते सिद्धांत ज्ञान)ने अवर्णयाद. चारित्रने आ आ प्रमाण-चारित्रयडे श्रुं ? दान विना चारित्र पाळवाथी शुं थवात्तु छि ? अर्थात् सिद्धि न थाय; दानश्री ज सिद्धि थाय इत	ाय ते ** उद्दशः ४ अयीने ** प्रत्यनीकाः वाथी ** २०७- राशस्त ** २०७- राशस्त ** २०८ रायि- ** सुने सनीक ** १९॥ ** जाण **

सुत्र	∽व्याख्या करवा योग्य,अर्थ-सूत्रनुं व्याख्यान निर्धुक्ति विगेरे अने तदुभय−ते वन्नेनी. सूत्रादिनी प्रत्यनीकता आ प्रमाणे−
का	ाया वया य ते चिय, ते चेव पमाय अप्पमाया य। मोक्खाहिगारियाणं, जोइसजोणीहि किं कज्जं ?
at i	छकाय अने वतो ते ज छे, पण बीजा नथी. वळी प्रमाद अने अप्रमाद पण ते ज छे तो सिद्धांतमां वारंवार एतुं कथन करवाथी
	पुनरुक्ति दोष नहिं आवे १ तेमज मोक्षना अधिकारी एवा गणधरोने ज्योतिषशास्त्रतुं−अम्रुक नक्षत्रमां अम्रुक  भोजन करीने र्यनी सिद्धि करे छे एम  कहेवातुं  प्रयोजन शुं १  वळी  क्रूमेंव्ितादि  त्रण  प्रकारनी  योनिनी प्ररूपणा  करवातुं प्रयोजन
શું	े आवी रीते कहेवुं ते सिद्धांतनो अवर्णवाद जाणवो. आवी रीते दूषणनुं कथन करवुं ( सू० २०८ ) कहेल कल्पस्थिति,
गर्भ	ज मनुष्योने ज छे, अने तेनुं शरीर माता अने पिताना कारणथी छे माटे ते बन्नेनुं शरीरना अंगोमां हेतुपणुं होते छते
तेन	ा विभागने कहे छे—
	ततो पितियंगा पं० तं०–अट्ठी अट्टीमिंजा केसमंसुरोमनहे ।
	तओ माउयंगा पं० तं०-मंसे सोणित मत्थुलिंगे । सू० २०९
	म्लार्थः-पिताना त्रण अंग कहेल छे, ते आ प्रमाणे-१ अस्थि-हाड, २ अस्थिनुं मध्यरस अने ३ केश-दाढी, मूंछ, रोम,
नख	1. त्रण अंग माताना कहेला छे, ते आ प्रमाणे-१ मांस, २ लोही अने २ मेद ( चरवी ) तथा फेफसा विगेरे (सू० २०९)
	टीकार्थ:-बंने सत्रो सुगम छे. विशेष ए के-मात्र पिताना अवयवो-अंगो ते पितृअंगो, प्रायः वीर्यनी परिणतिरूप छे. १ अस्थि

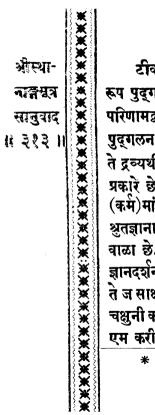
सानुवाद भक्तसा विगेरे. केटलाएक कपालना मध्यमां रहेछं भेछं कहे छे. (यू० २०९) प्र्वोक्त स्थविरकल्पनी स्थिति अंगीकार करेलाने विश्विष्ट निर्जराना कारणो कहेवा अर्थे खत्रकार कहे छे के— तिहिं ठाणोहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति तं०-कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिजिस्सामि, कया णमहमेकछविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि, कया णमहमपच्छिममारणंतितसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते काल अणवकं- खमाणे विहरिस्सामि, एवं स मणसा स वयसा स कायसा पागडेमाणे (पहारेमाणे) निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तिहिं ठाणेहिं समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं०-कया णमहमप्पं वा बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि १, कया णं अहं मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारितं पव्वइस्सामि २, कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिते भत्तपाण-	11 995 IL ***	र् विशिष्ट निर्जराना कारणो कहेवा अर्थे सत्रकार कहे छे के निहिं ठाणोहिं समणे णिगांधे महानिज्जरे महाप्रज्जवसाणे भवति तं०-कया ण अहं अप्पं वा बहयं	३ स्थान काध्ययने उद्देशः ४ श्रमण मनोरथ वर्णनम् २१०स्रत्रम्
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------

पडियातिक्सित पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि ३, एवं स मणसा स वयसा स कायसा पागडेमाणे (जागरमाणे) समणोवासते महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवति । स्० २९० म्रूलार्थः-त्रण स्थानक-मनोरथवडे अमणनिशंथ महान्जिरावाळो अने महापर्यवसान एटले समाधिमरण विगेरेवाळो थाय छे, ते आ प्रमाणे-१ क्यारे हुं थोडुं अथवा घणुं श्रुत भणीश, २ क्यारे हुं एकलविहारीनी प्रतिमाने अंगीकार करीने विचरीश अने ३ क्यारे (हुं) अपधिम मारणांतिक संलेखनानी सेवनावडे सेवित (आचरणवालो) थयो थको भातपाणीनो प्रत्याख्यान करतो थको, पादपोपगमन-छेदायेल द्वश्वनी मारफ स्थिर रहेतो थको, काळने न इच्छतो थको हुं विचरीश, ए प्रमाणे मनवडे, वचनवडे अने कायावडे विचारणा करतो थको निग्रंथ, महानिर्जरा अने महापर्यवसानवाळो थाय छे. ते आ प्रमाणे-१ क्यारे हुं जल्प अथवा बहु परिग्रहने छोडीश्व १ २ क्यारे हुं द्रव्यभावथी ग्रंडित थई, घरथी नीकळीने अणगारपणाने खीकारीश्व अने इं उल्य अथवा बहु परिग्रहने छोडीश्व १ २ क्यारे हुं द्रव्यभावथी ग्रंडित थई, घरथी नीकळीने अणगारपणाने खीकारीश्व अने दे क्यारे अपश्विम (छेल्ली) मरणांतिक संलेखनानी सेवावडे सेवित थयो थको, भक्तपाननो प्रत्याख्यान करतो थको, पाद- पोपगनन-इक्षनी माफक स्थिर रहेवापूर्वक काळने न इच्छतो थको हुं विचरीश, एवी रीते मनवडे, वाणीवडे अने कायावडे विचारणा करतो थको (जागृत थयो थको) अमणोपासक, मोटी निर्जरावाळो अने महापर्यवसानवाळो थाय छे. ( स० २१० ) टीकार्थः-'तिही' त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-मोटी निर्जरावाळो अने महापर्यवसानवाळो थाय छे. वे महानिर्जरा, महत्-
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गस्त्र सानुवाद् स ३१२ ।। Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж	प्रशस्त अथवा अत्यंत पर्यवसान-छेवट अर्थात् समाधिमरणथी एटले के फरीने मरण न करवाथी छेडो छे जे जीवने ते महापर्यवसान. ' एवं समणसा 'त्ति० एवी रीते जणावेल त्रण लक्षण छे. स इति-साधु, ' मणस ' त्ति० मनवडे, ( प्राक्वतंशेलीथी हस्वपणुं छे ) एवी रीते स 'वयस'त्ति० वचनवडे अने स 'कायस'त्ति० कायावडे एवो अर्थ छे. आहें 'कायसा ' ए शब्दमां सकारनो आगम प्राक्वतपणाथी ज छे. त्रणे करणोवडे ए अर्थ छे. अथवा स्व (पोताना) मनवडे विचारणा करतो थको, कोईक प्रतमां तो 'पागडेमाणे' एवो पाठ छे त्यां प्रगट करतो थको एवो अर्थ जाणवो. जेम साधुने कह्या तेम श्रावकने पण निर्जरादिनां त्रण कारणो (मनोरथो )छे,ए बतावतां थका कहे छे-'तिह्ती'त्यादि० सुगम छे.(स० २१०)	** ३ स्थान- काष्म्ययने ** उद्देशः ४ ** चक्षुः- स्वरूषम् * २११-१३
XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	अनंतरकर्मनी निर्जरा कही, ते पुद्गलना परिणामविशेषरूप छे माटे पुद्गलना परिणामविशेषने कहेवा माटे सत्रकार कहे छे- तिविहे पोग्गलपडिघाते पं० तं०-परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहन्निज्जा लुक्खत्ताते वा पडिहण्णिज्जा लोगंते वा पडिहन्निज्जा।सू०२९१, तिविहे चक्खू पं० तं०-एगचक्खू विचक्खू तिचक्खू , छउमत्थे णं मणुस्से एगचकखू देवे बिचक्खू तहारूवे समणे वा माहणे वा उप्पन्ननाणदंसणधरे से णं तिचक्खृति वत्तव्वं सिया। सू०२९२, तिविधे अभिसमागमे पं० तं-उड्ढं अहं तिरियं, जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जति से णं तप्पडमताते उड्डमभिसमोति	¥ सत्रावि ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ 11 २१२ ॥

* * *	नेगिनं ननो गन्न	्यने व्यक्तीयों मां	राजिताले जन्मने	<del></del>	
¥ मूर ¥ पुद्गल,	तर्थः−त्रण प्रकारे पुद्गलो ीजा परमाणुपुद्गलने पा	अहे, अहोलोगे णं (परमाणु विगेरे)नो प्रतिघात( तीने-अथडाईने गतिनी स्खलन	ंगतिनी स्खलना ) कहेल 11 थाय. ( जम पाषाणने	छे, ते आ प्रमाणे- फेंकतां थकां बीजा प	-१ परमाणु-
३० अथडाईने अते स्वॉ ३० प्रमाणे-(* ३० प्रमाणे-(*	ઝત थાય છે−अटके છે; વ યક્ષુ, દ્રવ્યથી નેત્ર अને મા	रुक्ष( ऌखा )पणाथी परमाणुपु तरण के त्यां धर्मास्तिकायनो वथी ज्ञानरूप समजवुं.) १ एव	अमाव छे ( सू० २११ ) ह चक्षु, २ बे चक्षु अने ३ त्र	त्रण प्रकारे चक्षु कहेले ण चक्षु (अहिं चक्षु श	छ, ते आ
* वाळा सम * अवधिज्ञार * आ प्रमाणे	। सहित होवाथी ) अने उ -१ द्रव्यनेत्र, २ परमश्रु	वेशिष्ट ज्ञान-चक्षु रहित होवाः ज्यन थयेल ज्ञानदर्श्वनने धरन 1 अने ३ अवधिज्ञानरूप् नेः	।र एवो तथारूपश्रमण-मा त्र) ( स्० २१२ ) त्रण	हण त्रण चक्षुवाळो क । प्रकारे अभिसमाग	हेवाय. ( ते ) म ( वस्तुने )
🗶 यथार्थ स ** जाणे छे. ** पहेलां ऊ	ज्यारे तथारूप (श्रुतचारिः वेलेकने जाणे छे, त्यारप	ते आ प्रमाणे–ऊंचो, नीचो । युक्त) श्रमण–माइणने अतिशे छी तिच्छी लोकने जाणे छे,	ष परमावधिरूप ज्ञान अने र त्यारबाद अधोलोकने जाप	दर्शन उत्पन्न थाय छे व	त्यारे ते साधु
* मुनिने अ * * * * * *		माटे अधोलोकने छेल्छं जाणे	छे. ( सू० २१३ )		

टीकार्थ:-'तिविहे' इत्यादि० परमाणु विगेरे पुदुगलोनो प्रतिघात-गतिनी स्खलना ते पुदुगलप्रतिघात छे. १ सक्ष्म अणु-३ स्थान-रूप पुद्गल ते परमाणुपुद्गल, ते बीजा परमाणुने पामीने अटके-गतिनी स्खलना थाय, २ ऌखापणाथी अथवा तथाविध बीजा परिणामद्वारा गतिथी स्खलना पाम, ३ लोकना अंतमां अटके, केमके त्यांथी आगळ धर्मास्तिकायनो अभाव छे (स॰ २११) पुद्गलना प्रतिघातने चक्षुवाळो ज जाणे छे, माटे चक्षुनुं निरूपण करवा माटे कहे छे-'तिविहे'इत्यादि॰ सुगम छे. चक्षु-नेत्र, ते द्रव्यथी आंख अने भावथी ज्ञान, ते छे जेने ते तेना योगथी \*चक्षुज अर्थात् चक्षुवाळो जाणवो. चक्षुनी संख्याना भेदथी ते त्रण काध्ययने उद्देशः ४ चक्षुः-स्वरूपम् \* \* २११-१३ \* \* \* \* \* \* प्रकारे छे. तेमां एक चक्षु छे जेने ते एकचक्षु, एवी रीते दिचक्षु अने त्रिचक्षु पण जाणवा. छादयतीति० छद्म-ज्ञानावरणीयादि (कर्म)मां जे रहे छे ते छद्मस्थ, ते जो के जेने केवळज्ञान उत्पन्न नथी थयुं तेवा बधाय कहेवाय छे तो पण अहिं अतिशयवाळा श्रुतज्ञानादि रहित विवक्षित छे, आ हेतुथी एक चक्षु, चक्षुरिंद्रियनी अपेक्षाए छे. देव, चक्षुरिंद्रिय अने अवधिज्ञानवडे बे चक्ष-वाळा छे. आवरणना क्षयोपश्रमथी उत्पन्न थयेल छे श्रुत अने अवधिरूप ज्ञान तेमज अवधिदर्शनने जे धारण करे छे ते उत्पन्न ज्ञानदर्श्वनघर कहेवाय, एवो जे मुनि ते त्रिचक्षु अर्थात् ? चक्षुरिंद्रिय, २ परमश्रुत अने ३ परमावधिवडे पूर्वोक्त कथन योग्य थाय, × × ते ज साक्षातनी माफक हेय अने उपादेय समस्त वस्तुने जाणे छे. अहिं केवलीनुं व्याख्यान कर्युं नथी. केवलज्ञान अने दर्शनरूप व \*\*\*\*\* चक्षनी कल्पनानो संभव छते पण चक्षरिंद्रिय लक्षण चक्षुना उपयोगनो अभाव होवाथी असत्कल्पनावडे तेने त्रण चक्ष विद्यमान नथी. एम करीने केवलीन प्रहण करेल नथी. द्रव्येंद्रियनी अपेक्षाए तो ते पण (केवली पण) विरुद्ध नथी अर्थात त्रिचक्ष घटी शक \* अहिं जातूप प्रत्ययनो छोप होवाथी मुलमुत्रमां चक्षुप्मानने बदले चक्ष शब्द छे. ३१३ ॥



छे. (	(सू० २१२) हमणां ज चक्षुवाळानुं वर्णन कयुं, तेने अभिसमागम-वस्तुनुं जाणवुं थाय छे ते हेतुथी तेने दिशाना भेदवडे
विभ	ाग करता थका कहे छे-'तिविहे' इत्यादि० ''आभे''-अथेने सन्मुखपणाए परंतु विपर्यास-विपरीतपणाए नहि, ''सम्''-
यथा	ार्थ, परंतु संशयपणाए नहिं, तथा 'आ'-मर्यादावडे गमन-जाणवुं ते अभिसमागम अर्थात् वस्तुनुं ज्ञान. अहिं ज (दिशामां)
ज्ञान	ना भेदने कहे छे-'जया ण' मित्यादि० 'अइसेस' ।त्ति० शेष-वाकीना छद्मस्थ ज्ञानोतुं उद्घंघन करनारुं आतेशेष, ते
ज्ञान	दर्शन परमावधिरूप जणाय छे-घटी शके छे, कारण के केवलज्ञाननो अर्ध्वादिक्रमवडे उपयोग न होय, जेन लईने
तत्र	प्रथमतघेत्यादि० सत्र निर्दोष थाय. परमावधिवाळाना उत्पन्न थयेल ज्ञानादिनी प्रथमता, ते प्रथमपणामां 'उडुंति'ऊर्ध्व-
लोक	हने जाणे छे, त्यारपछी तिच्छांलीकने अने त्यारबाद त्रीजा स्थानमां अधोलोकने जाणे छे. एवी रीते सामर्थ्यथी प्राप्त थयेल
अधो	लोक दुःखपूर्वक क्रमैवडे छेवटमां जाणवा योग्य होवाथी जाणी शकाय तेम छे. हे आयुष्मन् अमण ! आ शिष्यने आमंत्रणरूप
छे.	(२१३) हमणा अभिसमागम वह्यो, ते ज्ञान अने ज्ञान ऋदिरूप अहिं ज कहेवामां आवतुं होवाथी ऋद्विना समानपणाथी
तेना	भेदोने कहे छे-
	विहाइड्डी पं० तं०-दोविड्डी राइड्डी गणिड्डी १, देविड्डी तिविहा पं० तं०-विमाणिड्डी विगुव्वणिड्डी
परि	रेयाराणिड्ढी २, अहवा देविड्ढी तिविहा पं० तं०-सचिता अचित्ता मीसिता ३, राइड्ढी तिविधा
41	र्याराजहा र, जहना पानहा गामरा के सामरा जानरा नागरा र गामरा र र, राइडा राममा र. अहि क्रमग्र: ऊर्ध्वलोकादिनुं जाणवानुं कहेलुं छे तेनुं कारण ए के क्षायोपशमिक ज्ञान होय छे.

श्रीस्था- नाङ्गम्रत सानुवाद ।। ३१४ ।।	पं० तं०-रन्नो अतियाणिह्वी रन्नो निजाणिह्वी रण्णो वलत्राहणकोसकोट्टागारिह्वी ४, अहवा रातिष्ट्वी तिविहा पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिता ५, गणिट्टी तिविहा पं० तं०-णाणिह्वी दंसणिह्वी चरित्तिट्टी ६, अहवा गणिट्टी तिविहा पं० तं०-सचित्ता अचित्ता मीसिया ७। सू० २१४ मूलार्थः-त्रण प्रकारे ऋदि कहेली छे, ते आ प्रमाणे-देवद्धि-इंद्रादिकनी ऋदि, राजर्दि-चक्रवर्त्ता विगेरेनी ऋदि, गणर्दि- आचार्य विगेरेनी ऋदि १, देवर्दि त्रण प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-विमाननी ऋदि, विक्वर्वणानी ऋदि अने परिचारणा- विषयसेवानी ऋदि २, अथवा देवर्द्धि त्रण प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-सिपान-पोतानुं शरीर अने अग्रमहिषीनुं शरीर विगेरे, अचित्त-वस्त्राभूषण विगेरे, मिश्र-भूषण सहित देवी विगेरे ३, राजानी ऋदि त्रण प्रकारे कहेली छे, ते आ प्रमाणे-राजानी	**** ३ स्थान- काध्ययंन उदेशः ४ देवराज- रेवराज- बणेनम् २१४ स्वम् ******
	े ५, त्रण प्रकारे गणिनी ऋद्धि कहेली छे, ते आ प्रमाणे-ज्ञानऋद्धि-विशिष्ट श्रुतसंपत्ति, दर्शनऋद्धि-निःशंकितपणादि समाकतनी त्रिद्धि अने चारित्रऋद्धि-निरतिचार महाव्रतादि ६, अथवा त्रण प्रकारे गणि-आचार्यनी ऋद्धि कहेली छे, ते आ प्रमाणे- सचित्त-शिष्यादि, अचित्तवस्त्र विगेरे अने मिश्र-उपधि सहित शिष्यादि ७. (स० २१४)	XX XX XX XX XX XX XX XX XX XX XX XX XX

**************************************	टीकार्यः-'तिविहा इड्ढी' इत्यादि० सात खत्रो सुगम छे. विशेष कहे छे के-देव-इंद्रादिनी जे ऋदि-पेश्वर्थ ते देवऋदि, एवी रीते राजा-चकवर्त्ता विगेरेनी ऋदि अने गणि-गच्छना अधिपति आचार्थनी ऋदि १, विमानोनी अथवा विमानरुधण ऋदि, ते वत्रीश लाख विमानरूप बाहुल्य ( अधिकपणुं ), मोटाई अने रत्न विगेरेतुं सुंदरपणुं ते विमाननी ऋदि. सौधर्मादि देवलोकने विषे वत्रीश लाख विगेरे विमाननी संख्यारूप बाहुल्य ( अधिकपणुं ) होय छे. कह्युं छे के— वत्तीस अटुवीसा, बारस अटु चउरो सयसहस्सा। आरेण बंभलोगा, विमाणसंखा भवे एसा ॥२१७॥ बत्रीश लाख, अद्वावीश लाख, वार लाख, आठ लाख अने चार लाख विमान अनुक्रमे पहेला देवलोकथी आरंभीने यावत् पांचमा त्रख नामना देवलोक सुधी होय छे. पंचास चत्तं छच्चेव, सहस्सा लंतसुकसहसारे। सयचउरो आणयपाण-एसु तिन्नारणच्चुयए ॥२१८॥ लांतकमां पचास इजार, महाश्चकमां चालीश इजार, सदसारमां छ इजार, आनत अने प्राणतना मळीने चार सो तथा आरण अने अच्छुत देवलोकमां वन्नेना मळीने त्रण सो विमानो छे. एकारसुत्तर, हेट्टिमेसु सत्तुतरं च मज्झिमए । सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ २१९ ॥ नव प्रैवेयकनी हेठली त्रिकमां एक सो ने अगियार, मध्यम त्रिकमां एक सो सात अने उपरली त्रिकमां एक सो विमानो छे.	*****
×××××	नव प्रैवेयकनी हेठली त्रिकमां एक सो ने अगियार, मध्यम त्रिकमां एक सो सात अने उपरली त्रिकमां एक सो विमानो छे.	****

अंग्स्था- जान्नसत्र स्ततुवाद् ३) २१५ ॥ ******	तेनी उपर पांच ज अनुत्तर विभानो छे. आ विमानो भवन अने नगरोना उपलक्षणरूप छे. वैक्रिय करवाना लक्षणवाळी ऋदि ते वैक्रिय ऋदि. वैक्रिय शरीरोवडे ज बे जंबूद्वीपने अथवा असंख्यात समुद्रोने पूरे छे-भरे छे [आ शक्तिरूप समजत्रुं]. श्रीभगवती खत्रमां क्छुं छे के-''चमरे णं भंते! केमहिड्डिए जाव केवतियं च णं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा! चमरे णं जाव पभू णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य देवीहि य आइझं जाव करेत्तए, अ- दुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरे जाव तिरियमसंखेज्जे दीवसमुदे बहहिं असुरकुमारेहिं आइझे जाव करेत्तए, अ- दुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरे जाव तिरियमसंखेज्जे दीवसमुदे बहहिं असुरकुमारेहिं आइझे जाव करेत्तए, अ- दुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरे जाव तिरियमसंखेज्जे दीवसमुदे बहहिं असुरकुमारेहिं आइझे जाव करेत्त तत्ए, एस णं गोयमा ! चमरस्स ३ अयमेयारूवे विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए।विडव्विसु ३, एवं स- केऽवि दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे जाव आइझे करेज्ज"ति० प्र०-हे भगवन्! चमरेंद्र केवी ऋदिवाळो छे? अने यावत् केवी विक्रुवेणा करवाने समर्थ छे ? ड० हे गौतम! चमरेंद्र यावत् समर्थ छे जंबृद्वीप जेवा द्वीपने घणा असरकुमार जातिना देवो अने देवीओवडे भरी शके. त्यारबाद हे गौतम ! चमरेंद्र यावत् समर्थ छे अंसंख्यात द्वीप-समुद्रोने असुरकुमार जातिना देवो अने देवीओवडे परिपूर्ण भरवा माटे. हे गौतम ! आ चमरेंद्रनो आवा प्रकारनो विषयमात्र कह्यो, परंतु संपत्ति- बडे करेल नथी, करतो नथी अने करशे नहि. एवी रीते शक्तेंद्र पण वे जंबुद्वीप जेवडा वे द्वीपने यावत् परिपूर्ण भरवा माटे समर्थ छे. परिचारणा-विषयनी सेवनानी ऋदि. अन्य देवो प्रत्ये, बीजा देवोने स्वाधीन देवीओ प्रत्ये, पोतानी देवीओ प्रत्ये तेओने वश्व करीने अने पोताने (स्वश्तरीरने) विक्रुवींने परिचारणा करे छे. सचित्ता-पोतातुं शरीर अने अग्रमहिरी	······································
**************************************	१. बधा विमानो मळीने चोरासी लाख, सताणु हजार अने त्रेवीश छे.	२ २ २ २ २ २ २ १ ।। ३१५ ।। २१५ ।।

\*\*\*\*\*\* विगेरे [स्वरूपवार्ळा] सचेतन वस्तुनी संपत्ति, अचेतना-वस्त्र अने आभूषण विगेरे स्वरूपवाळी अने मिश्रा-अलंकृत थयेल देवी विगेरे स्वरूपवाळी संपत्ति ३, अतियान-नगरमां प्रवेश, तेमां ऋदि-तोरण, हाटनी शोभा, मनुष्योनी भींड (समुदाय) विगेरे स्वरूपवाळी. निर्यान-शहेरमांथी नीकळवुं, तेमां ऋदि-हाथीनी अंबाडी अने सामंतपरिवार विगेरे स्वरूपवाळी, बल-चतरंग सेना, वाहनो-घोडा विगेरे, कोश-भंडार, कोष्ठ-धान्यना भंडार, तेओना घर ते कोष्ठागार अर्थात धान्यतुं घर, तेओनी ऋद्धि अथवा ते ज ऋदि ते बल, वाहन, कोश, कोछागार ऋदि. ४, सचित्तादि ऋदि पूर्वनी माफक विचारवी-समजवी ५, ज्ञानऋदि-विशिष्ट श्रुतनी संपत्ति, दर्शनऋद्धि-जिनवचनमां निःशंकितादिपणुं अथवा शासनने दीपावनार शास्रोनी संपत्ति (तर्कशास्त्रतं ज्ञान ), चारित्रऋद्धि-निरतिचारपणुं. ६, सचिता-शिष्यादि स्वरूपवाळी, अचित्ता-वस्तादि विषयवाळी, मिश्रा-तेवी ज रीते वस्त्रादि सहित शिष्य स्वरूपवाळी. ७. प्रस्तुत विकुर्वणा विगेरे ऋद्विओ बीजाओने पण होय छे; मात्र देवो विगेरेने विशेष \*\*\*\* र्वरू प्वाळी होय छे माटे तेओने ज कहेली छे. ऋदिनो सद्भाव छते गौरव-अभिमान थाय छे, आ हेतुथी तेना भेदोने कहे छे-ततो गारवा पं० तं०-इड्ढीगारवे रसगारवे सातागारवे । सू० २१५, तिविधे करणे पं० तं०-धम्मिते करणे अधाम्मए करणे धम्मिताधाम्मए करणे। सू० २१६, तिविहे भगवता धम्मे पं० तं०-सुआधाज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते, जया सुअधिज्झितं भवति तदा सुज्झातियं भवति जया सुज्झातियं भवति तदा सुतवस्सियं भवति, से सुअधिज्झिते सुज्झातिते सुतवस्सिते

भारपा नाङ्ग इत्र नाङ्ग इत्र म्ह्लार्थः-त्रण प्रकारे गौरव-भारीपणुं के अभिमान कहेल छे, ते आ प्रमाणे-ऋद्विगौरव-राजादिकनी पूजाथी थयेल भानुवाद भानुवाद भानुवाद भानुवाद भानुवाद भानुवाद भानुवाद भागि भहावीरे त्रण प्रकारे करण-क्रियाअनुष्ठान कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-धार्मिक करण-साधुनी किया, अधार्मिक करग-अविरतिमिथ्या- हिंदीनी क्रिया अने धार्मिकाधार्मिक करण-देशविरतिनी क्रिया (स॰ २१६) श्री सुधर्मास्वामी श्री जंबूस्वामीने कहे छे के-भगवान् महावीरे त्रण प्रकारे धर्म अनुष्ठान कहेल छे, ते आ प्रमाणे-सुअधित-काल, विनयादि आराधनावडे मणेलुं, सुध्यान-सारी रीते भागि स्थान अर्थनं मनन करेलं अने सुतपसित-आशंसा ( वांच्छा ) रहित सारी रीते तप अनुष्ठान करेलं. ज्यारे सारी रीते अध्य-	स्थान- गध्ययने देशः ध गे गार- यादीन्डि २१५- २१७ स्रजाणि
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------

रीते बीजामां पण जाणवुं. रस-रसनेंद्रियनो अर्ध मंधुर विगेरे, सातं-सुख अथवा ऋदि विगेरेने विषे गौरव एटले आदर ( इच्छा ) (स् २१५). हमणा चारित्रऋदि कही, अने चारित्रने करण (किया ) छे माटे तेना भेदोने कहे छे-'तिविहे'- हत्यादि० कृति!-अचुष्टान करवुं. ते धार्मिकादि स्वामंनिा भेदवंडे त्रण प्रकारे छे, तेमां धार्मिक-साधुचुं आ धार्मिक ज छे, एम वीजामां पण जाणवुं. विरोप ए के-अधार्मिक-असंयत ( अविरति ) अने त्रीजो देशविरति. अथवा धर्ममां थयेछं अथवा धर्म छे प्रयोजन जेचुं ते दीरेप ए के-अधार्मिक-असंयत ( अविरति ) अने त्रीजो देशविरति. अथवा धर्ममां थयेछं अथवा धर्म छे प्रयोजन जेचुं ते धार्मिक अनुष्टान अने तेथी विपरीत ते अधार्मिक अनुष्टान. एवी रीते त्रीचुं पण (धार्मिक अधार्मिक) अनुष्टान जाणवुं (स० २१६) हमणां ज धार्मिककरण कहेछुं ते धर्म ज छे, माटे तेना भेदोने कहे छे-'तिविहे'त्यादि० सुगम छे. मात्र आपहावार भगवाने कहेछुं छे एवी रीते सुधर्मास्वामी जंब्र्सामी प्रत्ये कहेता हता. सु-सारी रीते काळ अने विनयादिनी आराधनावडे अधित-गुरुनी पासे सूत्रथी मणेछुं ते स्वधित, तथा सु-विधिपूर्वक गुरु आगळ ज व्याख्यानद्वारा अर्थथी सांमळीने प्यात-यारंवार चितन करेछुं जे श्रुत ते सुध्यातं, चिंतननो अभाव छते तचनो बोध न थवावडे अध्ययन ( भणवुं ) अने श्रवण (सांमळवुं) ए बच्चंतु प्रायः फल होतुं नथी. आ वे भेदवडे श्रुतधर्म कह्यो. तथा सु-आत छोत विगेरेना सुखनी आशा सिवाय तर्यासत-तपनुं अनुष्ठान ते सुतपसित. आ पदथी चारित्रधर्म कह्यो. जा यणेना पण उत्तरोत्तर अविनामाव ( सहचाररूप कारण- कार्यमाव)ने बतावे छे-'जया' इत्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-दोष रहित अभ्यास विना श्रुतना अर्थनी प्रतीति न थवाधी सुध्यात थतुं नथी, सारी रीते चिंतनना आवे ज्ञान-दोष क्रेत य व थाय, ए भाव छे. जे सुत्रधित विगेरे त्रण पद छे ने भगवान् श्रीवर्द्वमानस्वामीए धर्म कहेलो छे. ' से ' त्ति० ते धर्म सारी रीते कहेल छे, कारण के सम्यग्ज्ञान अन
---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद स ३१७ ॥	<ul> <li>क्रियारूप अने बन्ने( ज्ञान-क्रिया )ने विपे एकांतिक अने आत्यंतिक ( अतिशय ) सुखना सफल उपायवडे उपचार रहित धर्म सुगतिने विपे धारण करवाथी ज धर्म कहेवाय छे, आवश्यकमां कधुं छे के- नाणं पयासयं सोद्दओ, तवो संजमो य गुत्तिकरो। तिण्हंपि समाओगे, मोबखो जिणसासणे भणिओ॥ ज्ञान प्रकाशक एटले स्वरूपने बतावनार छे, तप-कर्मरूप कचराने शोधनार छे अने संयम गुप्तिकर-नविन कर्मने अटका- वनार छे. जे आ त्रणेनो समायोग-मिलाप तेने जिनशासनमां मोक्ष कहेल छे ( ' णंकार ' वाक्यना अलंकारमां छे.) सारी रीते करेलुं तप ते चारित्र कखुं, अने ते प्राणातिपात विगेरेथी विशेष विरातिस्वरूप छे माटे हवे विरतिना भेदोने कहे छे- तिविधा वावत्ती पं० तं०-जाणू अजाणू वितिगिच्छा, एवमजझोववज्ञणा परियावज्ञणा। स्रृ० २१८, तिविधे अंते पं० तं०-लोगंते वेयंते समयंते । स्रृ० २१९, ततो जिणा पं० तं०-ओहिणाणजिणे मणपज्जव- णाणजिणे केवल्णाणजिणे १, ततो केवल्ठी पं० तं०-ओहिनाणकेवल्ठी मणपज्जवनाणकेवल्ठी केवल्लाण- केवल्ठी २, तओ अरहा पं० तं०-ओहिनाणअरहा मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा ३ । स्रृ० २२० मूलार्थ:-त्रण प्रकारे व्याद्यत्ति निद्यतिकनी निद्यत्ति कहेली छे, ते आ प्रमाणे-जाण्-हिंसादिना फलने दुःखदायक जाणी- ने तेथी निवर्त्ते ते, अजाण्-हिंसादिना स्वरूपने समज्या सिवाय तेथी निवर्त्ते ते, विचिकिरसा-हिंसादिकथी अन्नुम कर्क थशे</li> </ul>	*** *** *** *** *** *** *** *** *** **
		X

<b>:</b> ************************************	के नहिं एवा संशय सहित तेनाथी निवर्ते ते, एवी रीते अध्युपपादनआसक्ति त्रण प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-विषयने अनर्थ- रूप जाणीने स्वीकारे छे, विषयने अनर्थरूप न जाणीने स्वीकारे छे अने अनर्थरूप छे के नहि एम संशयथी स्वीकारे छे. एवी ज रीते पर्यापदन-मोगववुं, जाणतो छतो, अजाणतो छतो अने संशयथी विषयने मोगवे छे. (स॰ २१८) त्रण प्रकारे अंत (रहस्य) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-लौकिक शास्तुतुं रहस्य, वेद (ऋग्वेदादि) तुं रहस्य अने समय-जिनेश्वर आदिना सिद्धांतो- तुं रहस्य. (स॰ २१९) त्रण प्रकारे जिन ( रागादिने जीतनार ) कहेल छे, ते आ प्रमाणे-अवधिप्रधान जिन ते अवधिज्ञान- जिन, एवी ज रीते मनःपर्यायजिन अने केवलज्ञानजिन छे. १, त्रण प्रकारे केवली कहेल छे, ते आ प्रमाणे-जे केवलीनी जेम विशिष्ट प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा ते अवधिज्ञानकेवली, एवी रीते मनःपर्यायकेवली अने केवलज्ञानकेवली २, त्रण प्रकारे अर्ह ( देवादिकने पूज्य ) कहेल छे, ते आ प्रमाणे अवधिज्ञानप्रधान अर्हत, एवी रीते ते मनःपर्यायकेवली अने अर्हत ३ ( स॰ २२० ) टीकार्थ:- 'तिचिहे'त्यादि॰ व्यावर्तन-कोई पण प्रकारे हिंसादिनी मर्यादाथी निवृत्ति, आ अर्थ छे. ते निद्यत्ते हिंसादिना हेतु, स्वरूप अने फळने ते जाणनारनी ज्ञानपूर्वक जे विराति ते ज्ञातानी साथ अभेद होवाथी 'जाणू' एम कहेली छे. अज्ञ-	****
****	अईंत ३ ( स॰ २२० ) निकार्थः-'निविद्दे'त्यादि० व्यावर्तनकोई पण प्रकारे हिंसादिनी मर्यादाथी निवृत्ति, आ अर्थ छे. ते निवृत्ति हिंसादिना	*****

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३१८ ॥ ********	'अञ्झोववज्जण'सि० अध्युपपादन-कोईक इंद्रियना विषयने विषे आसकि, आ अर्थ छे. तेमां विषयजन्य अनर्थने जाणनारनी विषय परत्वे जे आसकि ते जाणू अने अजाणनी जे आसक्ति ते अजाणू तेमज संशयवाळानी जे आसक्ति ते विचिकित्सा. 'परियावज्जण' सि० पर्यापदन-समस्तरूपे सेववुं. आ सेवा पण 'जाणू' विगेरे त्रण प्रकारे छे. (२१८) 'जाणु' सि० ज्ञः, ते ज्ञानथी थाय एम कढ़ुं, अने ज्ञान ते अतींद्रियना अर्थोमां प्रायः शास्त्रथी थाय छे माटे शास्त्रना भेदवडे तेना भेदने कहे छे- ' तिचिंहे अंत ' इत्यादि० ' अमनमधिगमनमन्तः '-निर्णय, तेमां लोक-लीकिकशास्त्र, लोकोए बनावेल होवाथी अने तेत्रो द्वारा भणवा योग्य होवाथी-अर्थशास्त्र विगेरे, तेथी अंत-निर्णय अथवा तेष्ठुं परम रहस्य अथवा पर्यंत ( छेवट ) ते लोकांत, एवी रीते वेदना अने समय( जिन सिद्धांतो )नो अंत पण जाणवो. विशेष ए के-ऋगवेद विगेरे चार चेदो अने समयो-जंन विगेरेना सिद्धांतो. (स० २१९) इमणां समयनो अंत कह्यो, अने समय ते जिन, केवली तथा अर्हत् शब्दवाच्य पुरुषोवडे कहेल यथार्थ होय छे, माटे जिनादि श्रब्द( पुरुषो )ना भेदोने कहेवा माटे त्रण छत्रो कहे छे-' ताओ जिपे '- त्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-राग, द्वेष अने मोहने जेत्रो जीते छे तेओ जिनो-सर्वज्ञो छे. कर्छ छे के-''रागदेष तथा मोहने जेत्रोए जीत्या छ ते जिन कहेवाय छे. वळी स्ती, शस्त्र अने अक्ष-जपमाला रहित होवाथी अर्हत् ज अनुमान कराय छे. '' तथा निश्वयधी प्रत्यक्ष ज्ञानपणाए जिनोनीश्र मासक जेओ वॉते छे तेओ जिनो-सर्वज्ञो छे. कर्छ छे के-''रागद्वेष तथा मोहने जेत्रोए जीत्या छे ते जिन कहेवाय छे. वळी स्ती, शस्त्र अने अक्ष-जपमाला रहित होवाथी अर्हत् ज अनुमान कराय छे. '' तथा निश्वयधी प्रत्यक्ष ज्ञानपणाए जिनोनीश्र माफक जेओ वॉते छे तेओ पण जिनो छे. तेमां अवधिज्ञान छे प्रधान जेने श्र रागदेषादि जेओने उपशांत थयेल होय एवा मुानओ उपचार्रथी जिन कहेवाय छे.	*****	३ स्थान- काध्यव्वे उद्देशः ध अवधिदि नादिस्त- रूपम् २१८- स्ताणि
× ×		X	

ते अवधिजिन, एम बीजा वे मनःपर्यायजिन अने केवळज्ञानजिन पण जाणवा. विशेष ए के-पहेला वे भेद उपचार करायेल
छे अने छेह्यों भेद उपचार रहित छे ( वास्तविक छे ). उपचारनुं कारण तो प्रत्यक्ष ज्ञानीपणुं छे. ' केवलम् ' एक,
अनंत अथवा पूर्ण ज्ञानादि छे जेओने ते केवलीओ कढेवाय. कढ़ुं छे के—
कसिणं केवलकप्पं, लोगं जाणंति तह य पासंति। केवलचरित्तणाणी, तम्हा ते केवली होंति ॥२२१॥
समग्र, अनंत अथवा परिपूर्ण लोकने जाणे छे तथा देखे छे, वळी एक ज यथाख्यात चारित्र अने केवळज्ञान छे जेने ते
केवलचारित्रज्ञानी, ते कारणथी केवली होय छे. अहिं पण जिननी माफक व्याख्या करवी. देवादिवडे करायेल पूजाने
जे योग्य छे ते अईतो अथवा कंई पण छानुं नथी जेओने ते अरहस, रोष पूर्वनी माफक जाणवुं. आ जिन विगरे
लेक्या सहित पण होय छे माटे लेक्या-प्रकरणने कहे छे
ततो लेसाओ दुब्भिगंधाओ पं० तं०-कण्हलेसा णीललेसा काउलेसा १, तओ लेसाओ
सुबिभगंधातो पं० तं०तेऊ० पम्ह० सुक्कलेसा २, एवं दोग्गतिगाभिणीओ ३, सोगतिगा-
मिणीओ ४, संकिलिट्टाओ ५, असंकिलिट्टाओ ६, अमणुन्नाओ ७, मणुन्नाओ ८, अविसुद्धाओ ९,
निर्णाओं ४, साकोलट्टाओं ५, असीकोलट्टाओं ५, अनेशुम्नाओं ७, नशुमाओं ८, आवसुम्राओं ५,
ते अवधिजिन, एम बीजा वे मनःपर्यायजिन अने केवळज्ञानजिन पण जाणवा. विशेष ए के-पहेला वे भेद उपचार करायेल छे अने छेछो भेद उपचार रहित छे (वास्तविक छे). उपचारतुं कारण तो प्रत्यक्ष ज्ञानीपणुं छे. 'केवल्म् ' एक, अनंत अथवा पूर्ण ज्ञानादि छे जेओने ते केवलीओ कढेवाय. कखुं छे के कसिणं केवलकप्पं, लोगं जाणंति तह य पासंति। केवलचरित्तणाणी, तम्हा ते केवली होंति ॥२२९॥ समग्र, अनंत अथवा परिपूर्ण लेकने जाणे छे तथा देखे छे, वळी एक ज यथाख्यात चारित्र अने केवळज्ञान छे जेने ते केवलचारित्रज्ञानी, ते कारणथी केवली होय छे. आईं पण जिननी माफक व्याख्यात चारित्र अने केवळज्ञान छे जेने ते केवलचारित्रज्ञानी, ते कारणथी केवली होय छे. आईं पण जिननी माफक व्याख्या करवी. देवादिवडे करायेल पूजाने के योग्य छे ते अहंतो अथवा कंई पण छानुं नथी जेओने ते अरहस, शेष पूर्वनी माफक जाणन्तुं. आ जिन विगरे लेक्या सहित पण होय छे माटे लेक्या-प्रकरणने कहे छे ततो लेसाओ दुब्भिगंधाओ पं० तं०-कण्हलेसा णीलललेसा काउलेसा १, तओ लेसाओ सुब्भिगंधातो पं० तं०तेऊ० पम्ह० सुक्कलेसा २, एवं दोग्गतिगामिणीओ ३, सोगतिगा- मिणीओ ४, संकिलिट्ठाओ ५, असंकिलिट्ठाओ ६, अमणुन्नाओ ७, मणुन्नाओ ८, अविसुद्धाओ ९, विसुद्धाओ १०, अप्पसरथाओ १९, पसत्थाओ १२, सीतलुक्खाओ १३, णिद्धुण्हाओ ९२,
લ્છ

VII Jaili Alaulialia Keliula	www.kobainin.org	Acharya Shin Kallassayarsun G
अास्था- नानन्धत्र सानुवाद् अ ३१९ ॥ ******	सू० २२१. तिविहे मरणे पं० तं०-वालमरणे पंडियमरणे बालपंडियमरणे १, बालमरणे तिविहे पं० तं०-ठितलेसे संकिलिटुलेसे पज्जवजातलेसे २, पंडियमरणे तिविहे पं० तं०-ठितलेसे असंकि- लिटुलेसे पज्जवजातलेसे ३, वालपंडितमरणे तिविधे पं० तं०-ठितलेस्से असंकिलिटुलेसे अपज्जव- जातलेसे ४। सू० २२२ मूलार्धः-त्रण लेक्याओ दुर्गंधवाद्या छे, ते आ प्रमाणे-इप्ण, नील अने कापोत १, त्रण लेक्याओ सुगंधवाद्यी कहेली छे, ते आ प्रमाणे-तेजोलेक्या, पद्मलेक्या अने इडिलेक्या २, एवी रीते पहेली त्रण लेक्याओ दुर्गतिमां लई जनारी छे ३, पाछली त्रण लेक्याओ सुगातिमां लई जनारी छे ४, पहेली त्रण लेक्याओ संक्लिप्ट-अग्रुभ अध्यवसायना हेतुभूत छे ५,	¥ २२२ सत्रे ¥
****	हेही त्रण हेझ्याओ असंह्लिप्ट-शुभ अध्यवसायना हतुभूत हे ६, पहेली त्रण लेझ्याओ अमनोज्ञ-माठा रसवाळी छे ७, छेछी त्रण लेझ्याओ मनोज्ञ-सारा रसवाळी छे ८, पहेली त्रण लेझ्याओ अविशुद्ध-खराब वर्णवाळी छे ९, छेछी त्रण लेझ्याओ सारा वर्णवाळी छे १०, पहेली त्रण लेझ्याओ अप्रशस्त-अकल्याण करनारी छे ११, छेछी त्रण लेझ्याओ प्रशस्त-कल्याण करनारी छे १२, पहेली त्रण लेझ्याओ श्रीत अने रुक्ष स्पर्शवाळी छे १३, छेछी त्रण लेझ्याओ उष्ण अने स्निग्ध स्पर्शवाळी छे १७ ( द्रच्य लेझ्या पुद्गलमय होय छे. ) ( स० २२१ ) त्रण प्रकारे मरण कहेल छे, ते आ प्रमाण-अज्ञानी-अविरतिनुं मरण ते बालमरण, ज्ञान युक्त संयत-साधुनुं मरण ते पंडितमरण अने देशविरातिनुं मरण ते बालपंडितमरण १, बालमरण त्रण प्रकारे हे १९ प्राप्त क्राल संयत-साधुनुं मरण ते पंडितमरण अने देशविरातिनुं मरण ते बालपंडितमरण १, बालमरण त्रण प्रकारे	(¥

कहेल छे, ते आ प्रमाणे-जे मरणमां इष्णादि लेख्या अविशुद्धपणाथी अवस्थित (कायम ) छे ते स्थितलेख्य मरण, जे मरणमां संक्लिक्ष्यमान महाकल्लपभावथी लेख्या आवे छे ते संक्लिष्टलेख्य मरण अने जे मरणमां लेख्याना पर्यायोनी विशुद्धि थाय छे ते पर्यवजातलेख्य मरण २, पंडितमरण त्रणे प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-स्थितलेख्य एटले शुकललेख्यामां मरण पाभी शुक्ललेक्ष्या- वाला देवमां ज उपजे ते, असंक्षिष्टिलेख्य मरण-जे मरणमां संक्षिष्ट लेख्या नथी ते अने पर्यवजातलेख्य मरण-वर्द्धमान लेख्यावडे मरण पामीने उपजे ते ३, वालपंडित मरण त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-स्थितलेख्य पटले शुकललेख्यामां मरण पाभी शुक्ललेक्ष्या- पामीने उपजे ते ३, वालपंडित मरण त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-स्थितलेख्य मरण-अे विशुद्ध लेख्याल मे ते ज रेख्यावाळा देवमां उपजे, असंक्षिटलेख्य मरण-ते श्रावकना संविलष्ट मरणमां लेख्या न होवाथी अने अपर्यवजातलेख्य मरण-ते श्रावकना मरणमां वर्द्धमान लेब्या न होवाथी ४. ( सु० २२२ ) टीकार्थः- ' तओ 'इत्यादि० सुगम छे. विशेष ए के- ' दुब्भिगंधाओ 'सि० खराव गंधो ते दुर्गंधो. लेख्याओ पुद्रगलात्मक होवाथी तेओत्तुं दुर्गंधपर्णु छे अने पुद्रगलोने गंधादिनो अवक्ष्य माव होय छे. कक्षु छे केः जह गोमडरस्स गंधो, सुणगमडरस व जहा आहिमडरस्स । एत्तोवि अणंतरागुणो. लेस्पाणं अप्पस्तत्थाणं !२२२। जेम गायना स्रतकनी दुर्गंध, श्वानना स्रतकनो दुर्गंध अने सर्पना मृतकनो दुर्गंध छे, तेनाथी पण अनंतगुण दुर्गंध अन्नश्रसत हर्णादे त्रण लेख्याने होय छे. आ हिभ्याओनो र्थ(रंग) नाम प्रमाणे छे. कर्योतवर्णवाळी लेख्या ते कापोत लेक्या, युंदाडाना वर्ण जेवी एवो अर्थ छे. १, 'सुब्भिगंधाओ 'सि० सुर्गिभंघो. कह्युं छे केः	कहेल छे संकिलक्य पर्यवजात वाळा देख पामीने रेत्रस्यावा मरण−ते पुद्गला जह ग जह ग जाह ग	जे ते ३, बारुपंडित मरण त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-स्थितलेक्य मरण-जे विशुद्ध लेक्याए मरे ते ज देवमां उपजे, असंविल्दलेक्य मरण-ते आवकना संविल्ष्ट मरणमां लेक्या न होवाशी अने अपर्यवजातलेक्य विकना मरणमां वर्डमान लेक्या न होवाशी ४. ( ख़० २२२ ) र्श्वः-' तओ 'इत्यादि० सुगम छे. विशेष ए के-' दुव्भिगंधाओ 'सि० खराव गंधो ते दुर्गंधो. लेक्याओ क होवाशी तेओनुं दुर्गंधपणुं छे अने पुद्गलोने गंधादिनो अवक्य भाव होय छे. कखुं छे केः सडस्स गंधो, सुणगमडस्स व जहा आहिमडस्स । एत्तोवि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ।२२२। गायना मृतकनो दुर्गंध, श्वानना मृतकनो दुर्गंध अने सर्पना मृतकनो दुर्गंध छे, तेनाशी पण अनंतगुण दुर्गंध कृष्णादि त्रण लेक्यानो होय छे. आ लेक्याओनो वर्ण(रंग) नाम प्रमाणे छे. कपोतवर्णवाह्या लेक्या ते कापोत लेक्या,
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुवाद् ।। ३२० ।। *************	जह सुरमिक्ठसुमगंथो, गंधो वासाण पिस्समाणाणं। एत्तोवि अगंतगुणो,पसत्थछेसाण तिण् इंपि ॥२२३॥ जेम सुगंधी जाई विभेरे फूलोनो अने चूर्ग करेल चंदनादि वास द्रव्योनो जे गंध छे तेनाथी अनंतगुण गंध प्रयस्त तेजोलेश्यादि त्रण्नो होव छे. तेज़:-आभि, तेना जेवी वर्णवाळी (लाल रंगवाळी) ते तेजोलेश्या. पद्यक्रमलता गर्भ-मध्य मागना जवा वर्णवाळी-पीळा वर्णवाळी ते पद्य ठेश्या श्रुक लेश्या धोठा वर्णवाळी छे. २, एवं आ शब्द वी प्रयम खत्रनी माकक 'तओ'इत्यादि अभिलापवडे वाकीना खरो कहेवा योग्य छे. तेमां दुर्गति एटठे नरक अने तिर्यंचरूप दुर्गति प्रत्ये प्राणीने लई जाय छे ते दुर्गातेगामिनी लेश्याओ ३, सुगति-देव अने मतुष्यरूप ४, दुःख अध्यतसाय अथवा दुःखना कारणभूत होवाथी संक्लिष्ट त्रण लेश्याओ छे. ५, विरुद्ध पक्ष सुगम छे अर्थात् त्रण लेश्या असंक्लिष्ट छे. ६, मनने न गमता रसयुक्त पुद गलमय (लश्या) होवाधी त्रण अमनोज्ञ छे. ७, त्रण मनोज्ञ छे. ८, अविशुद्ध-वर्णथी त्रण लेश्या मलिन छे. ९, वण लेश्या विशुद्ध छे. १०, अप्रश्वस्त-त्रण लेश्या अकल्याणरूप छे अर्थात् स्वीकारवा योग्य नथी. ११, त्रण लेश्या प्रश्न छे. १२, पहेली त्रण लेश्या स्पर्श्व होति खोत्ते क्षे रुथ कर्या प्रसंक्लिष्ट छे. ६, मनने न गमता रसयुक्त पुद्ध- गलमय (लश्या) होवाधी त्रण अमनोज्ञ छे. ७, त्रण मनोज्ञ छे. ८, अविशुद्ध-वर्णथी त्रण लेश्या मलिन छे. ९, त्रण लेश्या विशुद्ध छे. १०, अप्रशस्त-त्रण लेश्या अकल्याणरूप छे अर्थात् स्वीकारवा योग्य नथी. ११, त्रण लेश्या प्रशस्त छे. १२, पहेली त्रण लेश्वा स्पर्श्व शीति अने रुक्ष छे. १३, पाछली त्रण लेश्वा स्वर्ग्ध सिनग्ध अने उष्ण छे. १४. ( ख० २२१ ) हमणा लेश्वया भही, हवे लेश्याविधिष्ट मरण्यनुं निरूपण करवा माटे कहे छे:-' तिविहे 'त्यादि०-चाल-अजाणती माफक जे वत्ते छे अर्थात् विरतिनो साधक जे विवेक तेनाथी रहित होवाथी वाल-अर्थयत कहेदाय, तेन्तं मर्था निरतिरूप फलवडे फलनी माफक विद्वानसंयुक्त होवाथी पंडित-तत्त्वनो जाण अर्थात् संयत, आविरतप्रणाए वालपण्लं होवाथी अने [ काईंक ]	`*************************************	३ स्थान काष्ययन उद्देशः ४ लेश्यामर- णवर्णनम् २२१- २२२ स्रुप्ते	त ३ -
--------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------	-------------

र्भ क्षत्रमा पण स्थितलञ्थ विगरना विमाग जाणवा, पाडतमरणन विष लञ्थान्त सावलञ्चनानपन्तु गया, कम क सपसिगाग ** ** *	******************************	विरतपणार पंडितपणुं होवाथी बालगंडित-संयतासंयत कहेवाय १, 'स्थिता'-मूलस्वरूप रहेली अर्थात् विशुद्धिने प्राप्त न थती अने संक्लिप्टपगाने नहिं प्राप्त थती कृष्णादि लेक्या छे जे (मरण)ने विषे ते स्थितलेक्य(मरण), संक्लिप्ट-संक्लेयने प्राप्त धती लेक्या छे जे (मरण)ने विषे ते संक्लिप्टलेक्ष्य (मरण), तथा पर्यवाः-अवशिष्टथी विशुध्धि विशेषयो (विशुध्धिना तरतमयोगो) प्रतिसमयमां थयेला छे जे लेक्याने विषे ते पर्यवज्ञातलेक्ष्यमरणा. अहिं पहेलां कृष्णादिलेक्यावाळो ज्यारे कृष्णादिलेक्यावाळा नरकादिने विषे ज उपजे छे त्यारे प्रथम स्वितलेक्ष्य मरण होय छे. ज्यारे (पहेलां) नीलादिलेक्यावाळो कृष्णादिलेक्यावाळामां उत्पन्न थाय छे त्यारे त्रीचुं परिवज्ञातलेक्ष्य मरण होय छे. ज्यारे (पहेलां) नीलादिलेक्यावाळो कृष्णादिलेक्यावाळामां उत्पन्न थाय छे त्यारे त्रीचुं पर्यवज्ञातलेक्ष्य मरण होय छे. अयारे (पहेलां) नीलादिलेक्यावाळो नलि-कापोतलेक्यावाळामां उत्पन्न थाय छे त्यारे त्रीचुं पर्यवज्ञातलेक्ष्य मरण होय छे. अो भगवती सत्रमां छेछा वे मरणने लगतुं कथन कहेलुं छे, ते आप्रमाणे-'' से णूणं भंते ! कण्हलेसे नीललेसे जाव सुक्कलेसे भवित्ता काउलेसेखु नेरइएखु उववज्ञड?, हंता गोयमा!, से केगडेगं भंते! एवं बुबइ?, गोयमा! लेसाठाणेखु संकिलिस्समाणेखु वा विद्यु- क्रमागोसु वा काउलेस्सं परिणमङ् २ काडलेसेखु नेरइएखु उववज्ञड "ति० प्रक्ष-हे भगवन्! निथय कृष्णलेक्ष्य, नोललेक्ष्य यावत् शुक्ललेक्यावाळो बईने कापोतलेक्यावाळा नैरयिकोने विवे उत्पन्न थाय ? उ०-हे गौतम ! हा, थाय. ज्ञा माटे हे भगवन् ! एम कहो छो ? हे गौतम ! संक्लिक्यावाळा नैरयिकोने विवे उत्पन्न थाय छे. आ कथनना अनुसारे पाछला बे स्त्रमां पण स्थितलेक्ष्य विगेरेने विभाग जाणवो. पंडितमरणने विषे केक्ष्यानुं संक्लिक्ष्यमानपणुं नथी, केम के संयतपणोन	************************************
------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------

श्रीस्था- नाङ्गधत्र सानुवाद ॥ ३२१॥ Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж Ж	रुधि ज बालमरणथी तेनुं विशेषत्व छे. ३, बालपंडित मरणने विपे तो लेक्ष्यानुं मिश्रपणुं होवाथी ज संक्लिक्यमानपणुं अने विशुद्धमानपणुं नथी, माटे आ विशेष छे. एवी रीते पंडितमरण वस्तुतः वे प्रकारे ज छे, केमके तेने संक्लिक्यमान लेक्यानो निषेध छते अवस्थित अने वर्ध्धमान लेक्ष्यत्व होय छे; त्रिविधपणुं तो कथन मात्रथी ज छे. वालपंडितमरण तो एक प्रकारे ज छे, केम के तेने संक्लिक्यमान अने पर्यवजात लेक्यानो निषध छते अवस्थित लेक्यत्व होय छे. आनुं त्रिविधपणुं तो इतर-संबिलक्यमान अने पर्यवजात लेक्यानी व्यावृत्तिथी ( न होवाथी ) त्रणना कथननी प्रवृत्तिमात्र छे (सू० २२२). अनंतर मरण कह्युं अने जेवी रीते मरेलाने तो जन्मांतरमां जे त्रण वस्तु जेना वास्ते प्राप्त थाय छे ते तेना वास्ते देखाडवा माटे कहे छे—	****	३ स्थान- काध्ययने उद्देशः ४ शङ्कितेतर- त्वाद्यहि- तादिक- त्वाय
××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	तओ ठाणा अब्ववसितरस अहिताते असुभाते अखमाते अणिस्सेसाते अणाणुगामियत्ताते भवंति, तं०-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंथे पावयणे संकिते कंखिते विति-	(* * * *	२ <b>२</b> ३ सूत्रम्
11 3-56 11 (XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX	गिच्छिते भेदसमावन्ने बऌुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं णो सद्दहात णो पत्तियति णो रोएति तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति,णो से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ (१),से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारित पव्वतिते पंचहिं महव्वएहिं संकिते जाव बलुससमावन्ने पंच महव्वताइं नो सद्दहति	****	॥ ३२१ ॥

<b>***</b>	जाव णो से परिस्सहे अभि जुंजिय २ अभिभवति (२), से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ (३),ततो ठाणा ववसियस्स हिताते जाव आणुगामितत्ताते भवंति, तं०-से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतिते णिग्गंधे पावयणे णिस्संकिते णिक्कंखिते जाव नो कळुससमावन्ने णिग्गंथं पावयणं सद्दहति पत्तियति रोतेति से परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति (१), से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्व- तिते समाणे पंचहिं महत्वपहिं णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति (१), से णं मुंडे भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्व- तिते समाणे पंचहिं महत्वपहिं णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति (२), से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व- इए छहिं जीवनिकाएहिं णिरसंकिते जाव परिस्सहे आभिजुंजिय २ अभिभवति, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति ३ । सृ० २२३ मूलार्थः-त्रण स्थानक, जेणे निश्वय नथी कयों तेने ए त्रण स्थानक, अहितने माटे, अग्रभ-दुःखने माटे, अयथार्थ- पणाने माटे, अनिश्रेयस-अकल्याणने माटे के अमोक्षने माटे, अने अग्रुभ दर्भना अनुवंधने माटे थाय छे, ते आ प्रमाणे-जे द्रव्य, भावथी ग्रुंड थईने, यरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थयेल एवो साधु निर्श्वथ प्रवत्तनमां शंकावाळो, कांक्षावाळो, विति-
**	द्रव्य, भावथी म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थयेल एवो साधु निर्प्रंथ प्रवचनमां शंकावाळो, कांक्षावाळो, विति-

VII Jaili Alaulialia Keliula	www.kobatititi.org	Acharya Shiri Kallassayarsun
भीस्था- नाङ्गतत् सानुवाद् ॥ ३२२ ॥ ¥¥¥ ¥¥ ¥¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥ ¥	णिच्छात्राळो, भेदसमापत्र- 'आ आम छे के नहिं' एम द्विधाभावत्राळो, कछुपसमापत्र- 'आ वचन सत्य नथी' एम स्वीकारनार थयो थको, निग्रंथ प्रवचनने अध्ये नहिं, प्रतीति-विश्वास आणे नहिं, रुचि करे नहिं, आता प्रकारना साधु प्रत्ये संबंधनां आत्रीने परिसहो तेनो पराभत्र करे छे परंतु ते साधु परिसह प्रत्ये संबंधमां आत्रीने सहन करता नथी ?, ते म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थरे छे परंतु ते साधु परिसह प्रत्ये संबंधमां आत्रीने सहन करता नथी ?, ते म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थरे छे परंतु ते साधु परिसह प्रत्ये संबंधमां आत्रीने सहन करता नथी ?, ते म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थरे संवंधमां आत्रीने सिंह न करे नहि ?, ते म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थरे संत्र महात्र तोने सहहे नहि, यात्रत् ते परिसहो प्रत्ये संवंधमां आत्रीने सहन करे नहि ?, ते म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थये छ छ जीवनिकायने त्रिपे ग्रंकात्राळो थको यात्रत् परिसहोने सहे नहि, त्रण स्थानक, जेणे निश्चय कर्या छे तेने त्रण स्थानक, हितने माटे यात्रत् गुभ कर्मना अनुबंध(परंपरा)ने माटे थाय छे, ते आ प्रमाणे-ते म्रंड धईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थयेल साधु-निग्रंथ प्रवचनने विषे ग्रंका रहित, कांक्षारहित, यात्रत् कछपभावने प्राप्त च थयो थको निग्रंथ प्रवचन प्रत्ये सइहे छे, प्रतीत आणे छे, रुचि करे छे, परिसहो प्रत्ये संवंधमां आत्रीने तेने सहन करे छे ( जय करे छे ) परंतु तेने परिसहो आत्रीने पराभव करता नथी. १, ते साधु म्रुंड थईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त चरी थको पांच महात्रतोने तिथे गंका रहित, कांक्षा रहित यावत् परिषहने जीते छे ( सहे छे ) परंतु परिषहो तेनो पराभव करी शकतता नथी. २, ते साधु मुंड धईने, घरथी नीकळी अणगारपणाने प्राप्त थयो थको छजीत्रनिकायने विषे ग्रंका रहित, यागत परीषहो प्रत्ये जीते छे; परंतु परिषहो तेनो पराभव करी शकत्रा नथी ३. ( सू० २२३ ) टीकार्थः- ' तओ टाणे 'त्यादि० त्रण स्थानो–प्रवचन, महावत अने जीतनिकायस्वरूप. अव्यवसित–निश्चय न	X

3	हरनारने थशना पारूम न करनारने शनित-शाश्म मारे अमल-दरन मारे अश्रम-असंगतण्णा मारे. अति:-
	हरनारने अथवा पराक्रम न करनारने, अहित–अपथ्य माटे, असुख−दुःख माटे, अक्षम–असंगतपणा माटे, अनिः- ग्यस–अमोक्ष माटे अने अननुगामिकत्व–अञ्जभना अनुबंधने माटे थाय छे. 'से णं' ति० जेने त्रण स्थानको अहितादिपण⊺
Ŧ	ताटे थाय छे, ते शंकित-देशथी अथवा सर्वथी संशयवाळो, तेमज कांक्षित-मतांतरने पण सारापणाए माननार, विचिकित्स-
ų	हल प्रत्ये शंकायुक्त, आ कारणथी ज भेदसमापन-द्रिधाभावने पामेलो, अर्थांत् 'आ एम छे के नहिं' एवी मतिवाळो, कलुप-
¥,	रमापूच-'आम् नथी ज' एम स्वीकारनारों, आ कारणूथी ज-निर्प्रथो संबंधी जे आ ते नैप्रंथ, प्रशस्त प्रगत युक्त अथवा प्रथम
Ų	रवुं जे वचन ते प्रवचन-आगम. ( अहि मूलमां दीर्घपणुं प्राकृतपणाने अंगे छे. ) सामान्यथी अद्वा करतो नथी, प्रीति
2	करतो नथी, करवानी इच्छावाळी थतो नथी. 'त' मित्ति० जे आवी स्थितिवाळो छे ते साधुना आभासवाळा प्रत्ये, सर्वथा
5	त सहन कराय छे ते क्षुधा विगेरे परीषहो, तेना संबंधमां आवीने अथवा परस्पर स्पर्द्धा करीने पराजय करे छे-तिरस्कार करे छे.
	राकीतुं सुगम छे. ३, कहेल सूत्रथी विपरीत सूत्र पूर्ववत् जाणवुं. हित-पोताने अने बीजाने आ लोक अने परलोक-
	नां, पथ्य अन्नना भोजननी जेम, दोष नहिं करनार, सुख–तृषातुरने शीतळ जळपाननी जेम आनंदरूप, क्षम–तथाप्रकारना व्याधिने नाश करनार औषध पीवानी जेम योग्य, निःश्रेयस–भावथी पंचपरमेष्ठीने नमस्कार करवानी जेम चोकस कल्याण
	व्याधिन नाश करनार अपिध पावाना जम योग्य, ानःश्रयस—मावया पंचपरम्छान नमस्कार करवाना जम चाक्कस कर्ल्याण अर्थात् प्रशंसवा लायक, अनुगामिक–प्रकाशवाळा द्रव्यथी थयेल छायानी माफक साथे साथे चालवाना स्वभावरूप (स॰ २२३)
9 9	त्रयात् प्रशसवा लायक, अनुगामिक−प्रकाशवाळा द्रव्यया ययल छायाना माफक साय साय चालवाना स्वमावरूप (खण्डरर) आवा प्रकारनो साधु आ प्रथ्वीमां ज होय छे, आ अर्थरूप संबंधवडे पृथ्वीना स्वरूपने कहे छे:–
3	
	एगमेगा णं पुढवी तिहिं वल्लएहिं सव्वओ समंता संपरिक्षिता, तं०-घणोद-

श्रीस्था- नाङ्गप्रत्र सानुवाद ३ २२३॥ ३ २२३॥	धिवल्रएणं घणवातवल्रएणं तणुवायवल्रतेणं । सू० २२४, णेरइया णं उक्कोसेणं तिसमतितेणं विग्गहेणं उववर्ज्जति, एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । सू० २२५ मूलार्थः-एकेकी पृथ्वी-रत्नप्रभादिक, सर्वतः-चोतरफ्थी (दिशान विदिशाओमां) त्रणवल्यवडे [कडाना आकारनी जेम] बींटाएली छे, ते आ प्रमाणे- घनोदर्धि कटण हिमनी शिलानी जेम पाणीनों समूह, तेना वल्यवडे, घनवात-कटण वायुनो समूह, तेना वल्यवडे, ततुवात-पातळो वायु, तेना वल्यवर्ड ( स० २२४) नैरयिको उन्कृष्टथी त्रण समयना विग्रह ( वक गमन )वडे उत्पन्न थाय छे. एवी रीते एकेंद्रियने छोडनि यावत् वैमानिक पर्यत् जाणवुं. ( स० २२५ ) टीकार्थ:- ' एगमेगे ' त्यादि० एकेक रत्नप्रभादि पृथ्वी सर्वथी एटले चोतरफथी अथवा दिशाओ अने विदिशाओमां बींटायेली छे. त्रण वल्यमांतुं प्रथम घनोदर्धि वल्य, त्यारवाद क्रमवर्ड वे वल्य वनवात अने तत्नुवात छे. तेमां यन हिस- ( बरफ )नी शिलानी जेम कठीन उदधि ते धनोदर्धि, बल्यनी जेम तेत्रुं वल्य ते घनोदर्धि वल्य, तेना वर्ड. एवी रीते बीजा व वल्य पण जाणवा. विशेष ए के-कटण एवो वायु, तथाविध परिणाम युक्त ते घनवात, एवी रीते तत्तुवात पण तथार्विध ( पातळा ) परिणामरूप ज छे. कर्द्य छे के- नावि अ फुसंति अलोगं, चउसुंपि दिसासु सटवपुढवीओ । संगहिया वल्टएहिं, विवखंभं तोसि वोच्छामि॥। रत्नप्रभादि सात पृथ्वीओ चार दिशाओने विषे पण अलोकने स्पर्धती नथी, कारण के बल्योवडे ते चींटायेली छे. ते	** ** ३ स्थान- काध्ययने उद्देशः ४ घनेादध्या- दिवलया- नि विग्रहो- त्पादः २२४- २२५ स्रे स्रे

<b>ਜੇ</b> ਡ	उयानां विखुम−विस्तारने हुं कहीञ.
૧૯	छच्चेव १ अछपंचम २, जोयण सर्छं च ३ होइ रयणाए ।
	उदही १ घण २ तणुवाया ३, जाहासंखेण निद्दिद्वा ॥ २२५ ॥
	रत्नप्रभा पृथ्वीमां घनोदधिनो बलय छ योजन, घनवायुनो बलय साडाचार योजन अने तनुवातनो वलय दोढ योजन
प्रम	नाण होय छे.
	तिभागो १ ( योजनस्य ) गाउयं चेव २, तिभागो गाउयस्स य ३।
	आइधुवे पक्खेवो, अहो अहो जाव सत्तमिअं ॥ २२६ ॥
	उपर्युक्त त्रण वलयोना प्रमाणमां बीजी नारकीओने माटे आ प्रमाणे वधारो करवो. घनोदधिना वलयमां योजननो त्रीजो भाग,
ध	नवातना वल यमां एक गाउ अने तनुवातना वलयमां गाउनो त्रीजो भाग अर्थात् योजननो वारमो भाग उमेरवो एटले शर्कराप्रभा प्र वीमां घनोद धिनो वलय छ योजन अने योजननो त्रीजो भाग अधिक, घनवातनो वलय पोणापांच योजन अने तनुवातना वलय एक
23	वीमां घनोद धिनो बरुय छ योजन अने योजननो त्रीजो भाग अधिक, घनवातनो बरुय पौणापांच योजन अने तनुवातना बरुय एक
यो	ोजन अने एक योजनना बार भाग करीए तेवा सात भाग १-58 छे. ए प्रमाणे दरेक पृथ्वीमां उमेरो करवो. आ सात पृथ्वी-
अ	ोने विषे नारको ज उत्पन्न थाय छे माटे तेनी उत्पत्तिनी विधिने कहेवा माटे सत्रकार कहे छेः–' नेरइया ण ' मिल्पादि०
_	ण समयो ते त्रिसमय, ते छे जेमां ते त्रिसमयिक, ते त्रिग्रह-वक्रगमनवडे. 'उक्कोसेणं' ति० त्रसोनो चोकस त्रसनार्डीमां

श्रीस्था- नाङ्गस्रत्र सानुचाद ∢। ३२४ ।। ***********************	उत्पाद- उत्पत्ति होवाथी वे वांक थाय छे अने तेमां त्रण समयो थाय छे. ते आ प्रमाणे-अग्निकोण( खूणा ) थी नैकत- कोणमां एक समयवडे जाय छे, ते पछी बीजा समयवडे समश्रेणीए नीचे जाय छे, त्यारवाद त्रीजा समये समश्रेणीए ज वायव्यकोणमां जाय छे. त्रसकायनी उत्पत्तिमां त्रसोने ज आ प्रकारे उत्कुष्टथी विग्रह-वक्रगति छे. आ कारणथी कहे छे के- ' एगेंदिये ' त्यादि० एकेंद्रियो तो एकेंद्रियोने विषे पांच समयवडे पण उत्पन्न थाय छे, कारण के त्रसनाडीथी वहार रहेला तेओ त्रसनाडीथी बहार पण उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे- विदिसाउ दिसं पढमे, बीए पइसरइ लोयनाडीए। तइए उप्पिंधावइ, चउत्थए नीइ बाहिं तु ॥२२७॥ 'पंचमए विदिसीए गंतुं उप्पज्जए उ एगिदि ' प्रथम समये विदिशार्था दिशामां जाय छे, बीजे समये त्रसना- डीमां आवे छे, त्रीजे समये ऊंच जाय छे, चोथे समये त्रसनाडीथी बहारनी दिशामां समश्रणीए जाय छे अने पांचमे समये विदिशामां जईने एकेंद्रियपणाए उत्पन्न थाय छे. आ संभव मात्र छे, परंतु होय छे तो चार समय ज. श्री भगवतीखत्रमां ते प्रमाणे कहेल होवाथी जणावे छे-'' अपज्जत्तगसुहुमपुढविकाइए ण भंते ! अहेलोगखेत्तनाल्डीए बाहिरिछे खेत्ते स- मोहए समोहणित्ता जे भविए उडुहलोयखेत्तनालीए बाहिरिछे खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयत्ताए उवव- जित्तए से णं भंते ! कतिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेजा ? गो० ! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्ग- हेण उववज्जेजा '' इत्यादि० प्र०-हे भगवन ! अपर्याप्त सक्ष्म प्रथ्वीकायिक जीव, अधोलोकनी क्षेत्रनाडीथी बहारना हेण उववज्जेजा '' इत्यादि० प्र०-हे भगवन ! अपर्याप्त स्वक्ष्म प्रथ्वीकायिक जीव, अधोलोकनी क्षेत्रनाडीथी बहारना	** ३ स्थान- काष्ययने उद्देशः ४ धनोदष्या- दिवलया- दिवलया- नि विग्रहो- त्पादः २२४- २२५ स्वे ***
(*************************************		15 🗠 (1

××××××××××××××××××××××××××××××××××××××	क्षेत्रमां मारणांतिक सम्रद्धातथी जोडाईने ऊर्ध्वलोकमां क्षेत्र( त्रस )नाडीथी बहारना क्षेत्रमां अपर्याप्त सक्ष्म पृथ्वीकाय- पणाए जे उपजवाने योग्य छे, ते जीव हे भगवन् ! केटला समयवाळा विग्रहवडे उत्पन्न थाय ? उ०-हे गौतम ! त्रण समय अथवा चार समयवाळा विग्रहवडे उत्पन्न थाय छे. " विश्वेषणवती( प्रंय )मां पण कह्युं छे के— सुत्ते चउसमयाओ, नत्थि गई उ परा विणिदिट्ठा । जुज्जइ य पंचसमया, जीवस्स इमा गई लोए॥२२८॥ सिद्धांतने विषे चार समयवाळी गतिथी उपर वकगति कहेली नथी, परंतु लोकमां जीवने आ पांच समयवाळी वक्रगति घटी श्रके छे. जो तमतमविदिसाए, समोहओ बंभलोगविदिसाए। उववर्ज्जई गईए, सो नियमा पंचसमयाए॥२२९॥ के जीव, सातमी नरकभूमिनी विदिशामां मरणसम्रद्धद्वातथी त्रक्षलोकनी विदिशामां उपजे छे ते चोकस पांच समय- वाळी वक्रगतिवडे उत्पन्न थाय छे. उववायाभावाओ, न पंचसमयाहवा न संताति । भणिया जह चउसमया, महछ्वंधे न संतावि ॥२३०॥ उक्त रीते जीवने उपजवाना अभावथी पांच समयो थता नधी, अथवा पांच समयो थाय छे छतां पण ( अपवादस्त्त होवाथी ) कहेल नथी. जेम चार समयवाळी गति छतां पण मोटा प्रबंधमां (विस्तारवाळा शास्त्रमां) कहेल नथी तेम अहीं पण जाणहें. आ हेतुथी कक्षु छे के ' एगिंदियवर्ज्ज ' ति०-एकेंद्रिय छोडीने यावत् वैमानिक पर्यतना जीयोने उत्छष्टथी त्रय
*****	

श्रीस्था- नाङ्गसत्र सानुवाद ॥ ३२५ ॥ ******	समयवाळो विग्रह ( बांक ) होय छे ( स॰ २२५ ) मोहवाळा जीवोत्तुं त्रि( त्रण संख्यावाछ )स्थानक कहीने हवे क्षणि- मोहवालाने त्रिस्थानकवडे कहे छे— खीणमोहरस णं अरहओ ततो कम्मंसा जुगवं खिडजंति तं०- नाणावरणिडजं दसणावराणिज्ञं अंतरातियं। सू॰ २२६, अभितीणवखते तितारे पं॰ १, एवं सवणो २ अस्सिणी ३ भरणी ४ मगसिरे ५ पूसे ६ जेट्ठा ७। सू॰ २२७, धम्मातो णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमोहिं तिचउब्भागप- लिओवमऊणएहिं वीतिकंतेहिं समुप्पन्ने। सू॰ २२८, समणरस णं भगवओ महावीरस्स जाव तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी, मछी णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सदिं मुंडे भवित्ता जाव पब्वतिते, एवं पासेवि । सू॰ २२९, समणरस णं भगवतो महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुब्वीणं	** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** ** **
****	अजिणाणं जिणसंकासाणां सःववखरसन्निवातीणं जिण इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चउ- इसपुटिवसंपया हुत्था। सू० २३०, तओ तित्थयरा चक्कवद्यी होत्था तं०-संती कुंथू अरो ३। सू० २३१ मूलार्थः-क्षीण थयेल छे मोहनीय कर्म जेने एवा अरिहंतने त्रण कर्मप्रकृतिओ समकाले क्षय थाय छे, ते आ प्रमाणे- १. प्रत्यंतरमां ' जिणो इव ' पाठ छे.	*** *** *** *** *** *** *** *** ***

	ीय, दर्शनावरणीय अने अंतराय. ( स० २२६ ) अभिजित् नक्षत्रना त्रण तारा छे, एवी रीते अवण, अश्विनी, भर	
	पुष्य अने जेष्ठा ए छ नक्षत्रना पण त्रण त्रण तारा छे. (सू० २२७) धर्मनाथ अरिहंत( ना मोक्ष)थी जाांतिनाथ अरि योपम ३ न्यून त्रण सागरोपम काळवडे (काळ गये छते) सग्रुरंपन्न-मोक्ष गया (सू० २२८) श्रमण भगवान् महाव	
	यापन हुन्यून प्रण सागरापन काळ्यड (काळ गेप छर) सहरपत्र=माक्ष गेया (द्वेष २२८०) त्रमण मगवान् महाव  जा पुरुष सुधी (जंबूस्वामी पर्यंत) युगांतकृतभूमि−मोक्षमाग चाल्यो, श्री मछिनाथ भगवान् त्रणर्शे पुरुषोनी साथे	
	सित थया, एवी रीते श्री पार्श्वनाथे त्रणशें पुरुषो साथे दीक्षा लीधी. (स्० २२९) श्रमण भगवान् महावीरने त्रणशें च	
પૂર્વી ઓન	ो उत्कृष्टी संपदा हती, ते केवा प्रकारना हता ते संबंधे कहे छे के−जिन नहिं पण जिन सरखा, सर्व अक्षरना सन्निष	।।त-
	ने जाणनारा अने जिननी माफक अवितथ−यथार्थ कहेनारा एवा चौदपूर्वाओ हता. (२३०) त्रण तीर्थकरो चक्र ग−शांतिनाथ, कुंथुनाथ अने अरनाथ. (स० २३१)	वर्ती
	हार्थः-'खीणे' त्यादि० क्षीणमोह−नाश पामेल छे मोहर्नाय कर्म जेने एवा अरिहंतने त्रण कर्माशो-कर्मप्रकृतिओ सम्ब छे. कह्युं छे के–	काळे
-	नाणावरणं, पंचविहं दसणं चउावेगप्पं। पंचविहमंतरायं, खवइत्ता केवली होइ ॥ २३१।	I
۶.	अहि 'समुत्पन्न' इव्दनो रूढ अर्घ जन्म पाम्या, ए अर्घ घटतो नथी, कारण के तेवो अर्थ करवाथी 'आंतरा' नहीं मळे. वि	त्रीष

३ स्थान-

काध्ययने

उद्देशः ४

प्रकाराणि

२२६-

२३१

स्रत्राणि

॥ ३२६ ॥

त्रीणि

Ж

₩

<u>ж</u>

Ж

\*\*\*\*

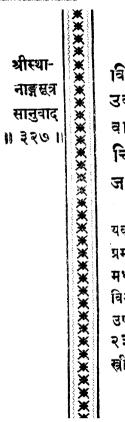
**※** ×× क्षीणमोह गुणस्थानना छेछा समये पांच प्रकारतुं ज्ञानावरणीय, चार प्रकारतुं दर्शनावरणीय अने पांच प्रकारतुं अंतराय-कम-आ चौद प्रकृतिओ (युगपत) खपावीने केवळी थाय छे; शेष सुगम छे. (सू० २२६) अनंतर-अज्ञाश्वतानुं त्रिस्थान कह्युं, ¥ ¥ हवे शाश्वतानुं त्रिस्थानक कहे छे. 'अभी' त्यादि० सात सत्रो सुगम छे. (सू० २२७) परंपर (अंतरसहित) सूत्रमां क्षीणमोहनुं × त्रण संख्याविशिष्ट स्थानक कड़ुं, हवे क्षीणमोहविशिष्ट तीर्थंकरोने ते कहे छे-'धम्मे' त्यादि० प्रकरण 'तिचउब्भाग' त्तिव एक पल्योपमना चार भाग पैकी त्रण भागवडे न्यून कहुं छे के-'' धम्माजिणाओ संती, तिहि उ तिचउभागप-×× लियऊणेहिं अयरेहिं समुव्पन्नो " त्ति० श्री धर्मनाथ जिनथी श्री शांतिजिन पोगो पल्योपम न्यून त्रण सागरोपम काळवडे × मोक्षे गया (स॰ २२८) 'समणस्से' त्यादि० युग-पांच वर्षे प्रमाण काळावेशेष, अ थवा लोकमां प्रसिद्ध जे कृतयुग विगेरे छे ते युगोक्रमथी व्यवस्थित छे, तेथी पुरुषो-गुरुशिष्यना कमवाळा अथवा पितापत्रना कमवाळा. युगोनी जेम पुरुषो ते पुरुषयुगो. पुरुषसिंह शब्दनी जेम समास छे तेथी पंचमी विभक्तिनो बीजी विभक्तिमां अर्थ छे. त्रीजा पुरुषयुग पर्यंत अर्थात जंबू-स्वामी सुधी. 'जुग' त्ति० पुरुषयुग, तेनी अपेक्षाए अंतकरो-भवना अंतने करनारानी अर्थात मोक्षगामीओनी भूमि-काळ, ते युगांतकरभूमि. कहेवानुं तात्पर्य एके भगवानू महावीरस्वामीना तीर्थमां तेनाथी ज आरंभीने त्रीजा पुरुष जंबुस्वामी पर्यंत मोक्ष-मार्ग हतो, त्यारबाद तेनो विच्छेद थयो. 'मछी' त्यादि० बे सत्रतुं कथ न-" एगो भगवं वीरो, पासो मछी य तिहिं तिहिं सएहिं" ति० श्री महावार प्रभु एकाकी अने पार्श्वनाथ तथा मछिनाथ त्रणज्ञें त्रणज्ञें पुरुषो साथे (दीक्षा लीधी). मल्लिनाथे त्रणशें स्त्रीओ साथे दीक्षा लीधी छे. (स॰ २२९) 'समणे' त्या दि॰ 'अजिणाणं'ति॰ असर्वज्ञपणाए-×

×

**★★★★★★★★**★★★★

सर्वज्ञत्वपणाए जिन जेवा नॉहं परंतु समग्र संग्रयना नाग्र करवावडे जिन जेवा, सर्व-सकल अक्षरना सन्निपातेा-अकारादि वर्णना संयोगो छे जेओने ते (स्वार्थिक ईन् प्रत्ययने लेवाथी) सर्वाक्षरसन्निपातिओ अर्थात् समस्त शास्त्रना जाणनारा, 'वागर- माणाणं ' ति० व्याख्यान करनारा(एवा चौद्रूर्वीओ)नी संपदा हती. (स्र० २३०) 'तओ' इत्यादि० अहिं कह्युं छे केः- संती कूथ्रूं अ अरो, अरहंता चेव चक्कवटी य। अवसेसा तित्थ यरा मंडलिआ आसी रायाणो ।।२३१ श्री शांतिनाथ, क्वंथुनाथ अने अरनाथ एत्रण तीर्थंकरो ज चक्रवर्तीओ हता; ग्रेष ओगणीशक्ष तीर्थंकरो मंडलिक राजाओ हता. (वाकीना तीर्थंकरो मछिनाथ ने नेमिनाथ मंडलिक पण नहोता) (स्०२३१) आ तीर्थंकरो विमानोमांथी अवतरेला छे, आ कारणथी विमानना त्रण स्थानकने कहे छे-	*********************************
तओ गेविज्जविमाणपत्थडा पं० तं०-हिट्टिमगेविज्जविमाणपत्थडे मज्झिमगोविज्जविमाणपत्थडे उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्टिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविह्रे पं० तं०-हिट्टिम २ गेविज्जविमाण- पत्थडे हेट्टिममाज्झिमगोविज्जविमाणपत्थडे होट्टिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमगेविज्जविमाण- पत्थडे तिविहे पं० तं०-मज्झिमहेट्टिमगेविज्जाविमाणपत्थडे मज्झिम २ गेविज्ज० मज्झिमउवरिमगे- * ज्यां सुधी त्रण तोर्धकरा चक्रवर्तीपदे न हता त्यां सुघो तेओ पण मंडलिको हता अने वासुपूज्य, मछिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ अने महावोरस्वामो-आ पांच तोर्धकरोए राज्य भोगव्युं नथी.	****

\*\*\*\* विज्ञ०, उवरिमगेविज्ञाविमाणपत्थडे तिविहे पं० तं०-उवरिमहेट्रिमगेविज्ञ० उवरिममडिझमगेविज्ज० ३ स्थान-उवारिम २ गोविजविमाणपत्थडे । सू० २३२, जीवाणं तिट्ठाणणिव्वतिते पोग्गले पावकम्मत्ताते चिणिसु काध्ययने उद्देशः ४ वा चिणिंति वा चिणिस्संति वा, तं०-इत्थिणिव्वत्तिते पुरिसनिव्वत्तिए णपुंसगनिव्वत्तिते, एवं प्रस्तटवर्ण-चिणउवचिणबंधउद्रिवेय तह णिज्जरा चेव । सू० २३३, तिपतेसिता खंधा अणंता पण्णत्ता, एवं नम् जाव तिगुणलुवखा पोग्गला अणंता पन्नता । सू० २३४ ॥ तिट्ठाणं समत्तं ततियं अडझयणं समत्तं ॥ \*\*\*\* २३२-मूलार्थः-ग्रेवेयकना विमानोना त्रण प्रस्तट (पाथडा) कहेला छे, ते आ प्रमाणे-हेडिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट, मध्यमग्रंवे-२३४ यकदिमान प्रस्तट अने उपरिम( उपरलो )ग्रैवेयक दिमान प्रस्तट. हेहिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ स्रत्राणि प्रमाणे-हेट्टिमहेट्टिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट, हेट्टिममध्यमग्रैवेयकाविमान प्रस्तट अने हेट्टिमउपरिमँग्रेवेयकविमान प्रस्तट. मध्यमग्रैवेयकविमानप्रस्तट त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे-मध्यमहेहिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट, मध्यममध्यमग्रैवेयक-विमान प्रस्तट, मध्यमउपरिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट. उपरिमग्रैवेयकविमान प्रस्तट त्रण प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाण-उपरिमहिद्विमेंग्रेवेयकविमान प्रस्तट, उपरिममध्यमग्रेवेयकविमान प्रस्तट, अने उपरिमउपरिमग्रेवेयकविमान प्रस्तट (स० २३२) जीवो ए त्रण स्थानकवडे उपार्जन करेला पुद्गलो पापकर्मपणाए एकठा कर्या, करे छे अने करशे, ते आ प्रमाणे-(\* \*\* \*\* \*\* \*\* स्रीवेदवडे संचित करेला, पुरुषवेदवडे संचित करेला अने नपुंसकवेदवडे संचित करेला. एवी रीते-चयन-कर्मपुर्गलोनु ग्रहण



\*\*\*\*\*\*

×××

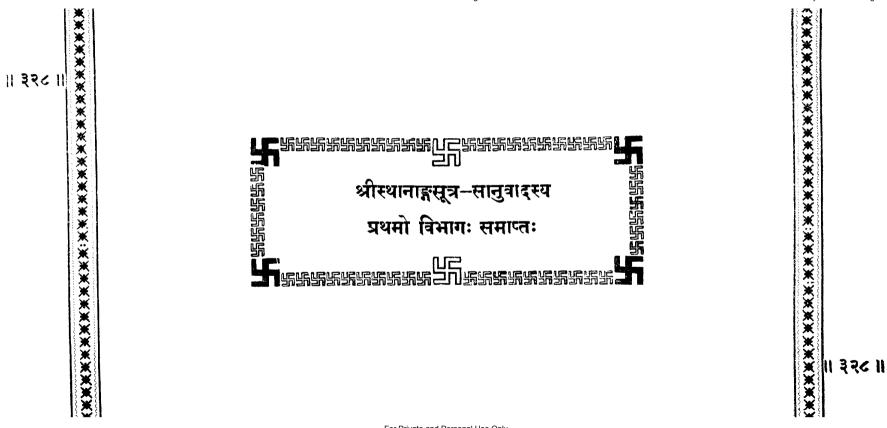
××

× ×

× ×

× ×××

\*\*\*\* मात्र, उपचयन-कर्मना अबाधाकालने छोडीने भोगववा माटे निषेक-कर्मदेलिकनी रचना करवी ते, बंधन-निकाचन करवुं ते, उदीरण-उदयमां नहिं आवेला कमोंने जीवना वर्थिविशेषवडे खेंचीने उदयमां लाववा ते, वेदन एटले भोगववुं ते, निर्जरण-जीवना प्रदेशोधी कर्मना पुद्गलोने द्र करवा ते ( स॰ २३३ ) आ चयनादि छ पदो भूत, वर्तमान अने भविष्यकाल आश्रयी जाणवा. त्रण प्रदेशिक स्कॅंघो अनंता कहेला छे एवी रीते यावत त्रण गुणवाळा रुक्ष पुद्गलो अनंता कहेला छे (मु० २३४) टीकार्थः-' तओ ' इत्यादि० लोकरूप पुरुषना ग्रीवा( कंठ )स्थानमां जे थयेला ( रहेला) ते प्रैनेयको, एवा विमानो ते ग्रैवेयक विमानो, तेना प्रस्तटो-पाथडा, ते रचनाविशेषवाळा समूहो. ( स० २३२ ) आ ग्रैवेयकादि विमानोनो वसवाट कर्मसंबंधथी थाय छे, माटे कर्मना त्रण स्थानकने कहे छे:-' जीवाण ' मित्यादि० छ सत्रो-तेमां त्रण स्थानकवडे एटले र्स्रावेदादिवडे उपार्जन करेल पुर्रगलोने पापकर्म-अशुभ कर्मपणाए उत्तरोत्तर-आगळ आगळ अशुभ अध्यवसायथी एकठा \*\*\*\* करेला, एवी रीते परिपोषण करवाथी ज विशेष संचय करेला, निकाचित करवाथी दृढ बांधेला, अध्यवसायना वशवडे उदयमां नहि आंवेल कमोंने उदयमां प्रवेश करवाथी उदीरणा करेला, अनुभव करवाथी वेदेला, जीवना प्रदेशोधकी परिशाटन-कर्म-पुद्गलोने दूर करवाथी निर्जरा करेला. अत्र संग्रहणी अईगाथा छे-' एवं चिण०' ' एव ' ामिति० जेम एक चयन त्रण कालना अभिलापवडे कह्युं तेम बधाय पदो कहेवा ( सू० २३३ ) कर्म पुद्गलात्मक छे माटे पुद्गलस्कंधो प्रत्ये त्रिस्थानकने कहे छे-' तिपएसिए ' त्यादि० स्पष्ट छे. बधा सत्रोमां जेतुं व्याख्यान करेल नथी ते सुगम छे. ( सू० २३४ ) \*\*\*\*\* ॥ त्रीजा स्थानकना चोथा उद्देशानी टीकानो अनुवाद समाप्त ॥



				शुद्धिप	त्रकम्				
पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	হ্যুৱ	ঀत्र	ঀৃষ্ঠ	पँक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	१२	करावेल	<b>क</b> रायेल	<	۶	<	जीवनो	जीवना
२	۶	२	' एवा '	शब्द न जोईए	<	२	<	दष्टिवादश्चत	द्दष्टिवाद्श्रुत
२	२	8	एवा	एवो	९	२	ઘ્	अध्यात्म	अध्यात्म-
8	१	8	अययाधे	<b>अ</b> य <b>ঘ</b> ાર્થ	2.8	۶	٩	एकम	एवम्-
8	ર	२	भावकाल	মৰকাত	88	१	ৎ	संभवतो ४	संभवतो
8	२	ه	प्रगह	प्रग्रह				विग्गहो	विग्गहो ४
8	२	१४	क्रोडपूर्व	कोडपूर्व-	१२	१	20	(पदनो अर्घ)	( पदना अर्थ
			प्रयक्तव	<b>प्</b> थकृत्व	१३	१	2	क्युं	कयुं
				(आठ भवप्रमाण)	१६	ş	२	अनंतज्ञाननो	अनंतज्ञानने
હ્	२	લ્	अनुगमनमनुगम्	अनुगमनमनुग <b>म</b> नम्	१६	१	१२	(नागरहित)	( नाश <b>र</b> हित
9	१	8	ने	अने	१६	२	५	यज्ञदत्ते	यज्ञदत्ते'

Ŷ

विहाररूप	विकाररूप	३५	१	
ए <b>कत्रप</b> णाए	एकत्वपणाए -	રૂર	२	
विक्षेप	विपक्ष			
विशेष	विशेष कहे छे के–	३९	२	۶
रोष	रोष २७	80	१	
प्रकृतियो	<b>प्र</b> कृतिओ	80	१	
	For Private and	Personal Use	Only	

प्रत्यवस्थान	३०	२	88	उदयमां	सत्तामां
<b>क</b> हेवुं	३१	२	१	आश्रयति	आश्रवंति
कहेशो के	३३	و	१	पज्जवहजाए	पज्जबनाए
भावो	३३	२	६	प्रत्येक	प्रत्येक,
पदार्थ ज	. ३४	१	<	परियारत्ता	यरियाइत्ता
संवेदनोमां	३४	१	<	हता पभू	हंता पभू
ला <b>ञ्छित</b>	३४	१	१२	मनन	मननम्
कायिकी	३४	2	१३	अननेति	अनेनेति
विकाररूप	३५	१	१	'जई' ति	'गई' त्ति
ए <b>कत्वप</b> णाए	રૂર	२	१	ज्ञान-दर्शननो	ज्ञानावरण-
विपक्ष					दर्शनावरणनो
विशेष कहे छे के-	३९	२	88	दर्शन	दर्शन
रोष ३७	80	१	१	ৰছি	₹ি/-
<b>प्र</b> कृतिओ	80	१	ક્	धारणरूप	धारणारूप

\*\*\* ×× Ж Ж Ж \*\*\*\*

३२९ अ

भीस्था-

नानुसत्र

सानुवाद

३२९ अ

××

× ×

××

\*\*\*\*

89

2<

26

२१

२२

२३

२३

२३

28

28

28

२६

22

प्रत्ययवस्थान

**क**हेलुं

कहेशो

भवो

पदार्धनो

संवेदनो

लांञ्छित

कायिका

20

22

१३

83

80

६

१२

20

৩

९

38

Ę

९

२

२

२

ł

9

2

२

9

२

२

8

२

80	۶	१२	सिद्धिनुं	सिद्धनुं	६८	२	११	चतुर्थादि समयम	i तृतोयादि समयमां
४३	2	4	अठार	अढार	६९	२	१२	जोवनी	जीवन्त
५३	, ł	3	इग्यारने पदोने	अगियार पदोने	७४	2	وا	वळो स्मरण	वळी मंत्रादिना स्मर
५३	२	ર	न्यून पुद्गल-	न्यून अर्घ	७४	۶	ৎ	फळ	फळनुं
	·		परोवर्त	पुद्गलपरावर्त	હલ	२	१२	आगाराओ	अगाराओ
५७	2	ર	बांधवामां छे	बांधवामां आवे छे	હદ્	2	९	अवि—	अव
९८	ł	8	दसंसखे	दससंखे <b>०</b>	७९	۶	૬	અર્થવહં	अर्घदंड
96	8	৩	व्याख्यादि	व्याख्या	<३	१	ৎ	अने अक्षस्य	अने मनुद्वाराए
96	२	१	पाद	पारद					अक्षस्य
५९	ર	e	बसो अडावीस	एक सो अट्ठावीस	८६	१	१०	ना यह	नावग्रह
६२	8	१२	देखतां	<b>दे</b> खतो	८९	?	Ę	व्याख्यान	व्याख्यान न करवा-
૬ ૪	२	સ્	वेदस	सवेदस				करवावडे	वडे
દ્વહ	ર	સ્	अजीवप्रत्याख्य	ान अजीवअप्रत्याख्यान	९२	2	٩	अंतर्मुहर्तवडे	जुदा जुदा अंत-
६८	,	ર	अनुप्रयोगथी	अनुपयोगथी					<u>र्मुह</u> र्तवडे

९२	۶	<	भूभाहारच्छेदे	भूमाहा <b>रच्छेदे</b>	११२	२	९	प्रववचनमां	प्रवचनमां
९४	२	<	अभवासिद्धिए	अभवसिद्धिए	११२	२	23	धनारन	थनारने
९५	ર	९	' पृढवी '	' पुढवी	११३	१	9	<b>क</b> रवुं-शक्तिने	न करवुं शक्तिने
९५	२	११	मायिक	<b>मा</b> यिक	११३	२	१०	पतिमा	प्रतिमा
९९	8	९	पादपापे	पादपोप	१२२	۶	ર	रम्यकवष	रम्यकवर्ष
१०२	२	ર્		) वे प्रकारे नैरयिको	१२२	२	۶	परिधिवडे	परिधिवडे समान
			बे प्रकारे नैरयिको	,	१२४	২	હ	वैताव्यनो	वृत्तवैताव्यनो
			कह्या छे, ते आ	``	१२४	२	९	पचीश	पचाश
			आहारको	हगतिवाळा)	१२८	8	१	बे महानदी कहेल	वे महानदी क
०२	२	१३	अपर्याप्तनामकर्मने	ो पर्याप्तनामकर्मनो				छे, ते बहु	हेल छे, तेना नाम
०७	१	१३	आहरने	आहार <b>ने</b>				समतुल्य	गंगा अने सिंधु
१०७	१	٩	शरीवाळा	शरीरवाळा				•	जेवी रीते प्रपात
680	२	۲	भिदुरवाळा	भिदुरधर्मबाळा					द्रहो कह्या तेम
298	8	9	स्पर्श कराएला	स्पर्शे नहीं <b>क</b> राएळा					नदीओ कहेवो,

				यावत् ऐरवत	१४७	Ŕ	Ę	चूलिका उपर	चूलिकानो पडखे
				क्षेत्रने विषे बे महा-	898	२	R	महा श <b>कें</b> द्र	महाशुकेंद्र
				नदीओ कहेेल छे,	१९४	ર	8	कहे	कहे छे-
				ते बहु समतुल्य	१९६	२	Ę	ਸੰਫ਼ਲ	मडंब
१२८	8	ક્	ह्द	द्रह	१५६	२	१३	जनाने	जनोने
१३३	२	હ	दूषमदूषमा	सुषमदूषमा	१६०	2	٩	लिगथी	लिंगधी
१३४	२	٩	हेवव <b>येरन</b> वए	हेमवयेरनवए	१६०	ર	8	सर्वात्मप्र <b>दे</b> शोनुं	सर्वात्मप्रदेशो
१३५	8	६	तंर्वात	तवंति	१६१	ર	د	( असंख्य )	( संख्याता )
१३९	8	٩	विरहंति	विहरंति	१६२	8	ર	बे	बब्बे बब्बे
१४२	२	q	रत्नमजाल <b>कटक</b> -	रत्नमयनाल कटक-	१६२	, १	9	<b>क</b> रीने	कल्पीने
			वडे	वडे	१६२	ર	ર	खंडने	खंड <b>कल्पीने</b>
१४३	२	২	लवखाइ	लक्लाइ	१६५	2	۲	यद्दच्छोपललब्धि	यदृच्छो <b>प</b> ल <b>ि</b> ध
१४६	8	2 2	युक्त	उक्त	१६६	ł	q	समासात	समा <b>सां</b> त
१४७	2	e	वक्षस्कार	वक्षस्कार	१६९	શ	n	करता	करतो

For Private and Personal Use Only

×

	१	و	जो कर्ये तो	जो करे तो	१९०	१	C	केवलीने	केवलोनो
K 9.90	२	९	महाणभावा	महाणुभावा	१९०	१	<	जोडनार <b>ने</b>	जोडनारनो
१७१	2	११	वे	वे	१९१	2	९	वैक्रिय ना	वैकियनो
803	2	۹	अप्रत्याखानी-	अप्रत्याख्यानो-	२००	2	१०	विचारणमां	विचारणामां
			चतुष्क	चतुष्क	२०६	8	13	विरोष	विशेषण
१७४	१	હ્	९ कषाय	९ नोकषाय	२०९	ર	۹	निदीष	निर्दोष
ووو	१	<	अने ते	अने जे	२०९	२	22	त्रणवडे	त्रण कारणव
१७४ १७७ १८३ १८३ १८२ १८८ १८८ १८० १९•	२	१०	कारण क	कारण के	२०९	२	8 8	ऐरवत	ऐरावत
१८३	२	83-88	आयुष्य	आयुष्य	२२२	१	ৎ	कमलशाली	<b>क</b> लमशाली
१८९	2	१३	चरित्रेंद्र	चारित्रेंद्र	२२५	२	२	ৰহিা	वीश
100	2	G	तेओ	तओ	२२५	२	<	उदकरस	उदकरस—
१८८	२	۲	परिचारणा छे	परिचारणा करे छे	२३०	१	۶	महिसीण	महिसीणं
१८९	२	ষ্	पओवि	पओगेवि	*3	,,	57	एंवं	एवं
१९०	ş	२	चोवोशे	सोळ	२३२	2	९	उच्छेद	उद्भव

शुद्धि-पत्रकम्

३३० अ

२३३	२	8	হালি	शील	। २९४	t	۲	मकार कम !	प्रकारे केम ?
२३३	२	<	जाति जन्म	जाति—जन्म	२५४	٢.	9	बहल	कहेल
२३६	२	22	भूतनी	भूतकाल्नी	२५४	२	ર	गच्छमां	गच्छमां उपसं <b>प</b> द
२३७	२	9	करवा थका	करतां थका	२५५	१	٩	घरानी	घरादिनी
२३८	2	2	' अबइत्त '	' अबुइत्त '	२५५	२	३	विषे	विषे
२३८	२	8	सामान्यनी	सामान्यथी	२५६	2	१२	वर्षवानुं	वर्षवाने
२३९	ર	१	[बदलो ]	[ उत्क्रम ]	२६३	2	و	रति	अरति
२३९	२	६	णिवुड्ढी,	णिवुड्ढी७,	२७०	۶	٩	कहेवि	कहेवी
२४०	१	२	दशनााभगम	दर्शनाभिगम	२७४	२	१०	दूर करवो	दूर कराववो
२४१	१	१३	आसेयादि	आज्ञेयादि	२७५	2	३	तेनो	तेना
२४१	२	<	पূर्त्रादि	पूर्वादि	२७८	२	१०	ए <b>करूपग</b> ाए	एक <b>रूपपणाए</b>
२४२	2	R	ए	जे	२८०	૨	৩	गुेणांनु	गुणोनुं
२४६	२	ৎ	करेऌं	कहेवुं	२८१	२	१	करतां थकां	करतो धको
२५२	ŗ	१०	दुक्कडंण,	दुक्कडं, ण	२८९	২	8	प्रकार	प्रकारे

२८६	२	68	परिचट्टे	परियट्टे					टीकामां त्रेवीशज
२८८	2	२	विविधे	त्रिविधे					णावेल छे,
२८८	2	१२	'कावादि'	<b>शब्द काढो नाखवो</b>					योग्य जणाय छे
२८८	*	१३	হ্বাননা আঠ	कालादि आठ ज्ञानना	३०५	8	१२	ए <b>क</b>	पा
२८८	२	80	थाय	थाय ते	३१७	२	8	ज्ञान	ज्ञान
२९५	8	٩	भवपत्ययिक	भवप्रत्ययिक	३१८	२	११	अईत्	अर्हतनुं
२९६	२	११	दवना	देवना	३२०	2	६	श्रावकना	श्रावकना मरणमा
२९७	२	88	নাহা	नाश				संबित्तप्ट मरणमां	-
२९९	8	٩	करता	करतो	३२१	2	१४	संयतपणोन	संयतपणाने
३००	3	१३		आदिग्धक्लीब	३२१	२	8	निषघ	निषेध
३•२	२	৩	उ वासादि	उपवासादि	३२३	१	9	इच्छावाळी	इच्छवाळो
<b>3</b> 0 3	१	११	पाम्या	पामवा	३२४	2	र	वेल्यानां	वल्योनां
३०४	२	७-९	बावीश	त्रेवीश	३२५	2	8	अभितीण-	अभितोण-
३०५	१	٩	बावीश	क्षेत्रसमासनी मोटी				वखते#	क्खते
	* आ इ	गुद्धिपत्रमां	केटलीक भूलो मुद्र	एणकार्थने अंगेनी नोंधी	छे.				

